226
सेठि/का/मं

मंत्र-विद्या

करणीदान सेठिया

मंत्र-विद्या

लेखक :
करणीदान सेठिया

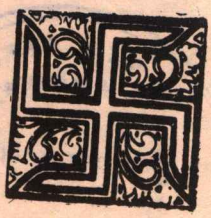

प्रकाशक :
सेठिया ब्रादर्स
६, आरमेनियन स्ट्रीट, कलकत्ता-१

प्रकाशक :
सेठिया ब्रादर्स
६, आरमेनियन स्ट्रीट, कलकत्ता-१

२२६
सेठि/क/म

द्वितीय संस्करण :
विक्रमांक—२०४०

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मूल्य : ६०.००

मुद्रक : प्रिन्स ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-११०००२

प्रकाशकीय

भारतीय विद्याओं के उत्कृष्ट ग्रन्थों का प्रकाशन करने के पावन उद्देश्य से 'सेठिया ब्रदर्स' प्रतिष्ठान का शुभारंभ कलकत्ता में किया गया है। हमारा लक्ष्य रहेगा कि हिन्दी, अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में हम साहित्य जगत् को श्रेष्ठ पुस्तकें प्रदान करें। प्रकाशन के विषय मुख्यतः दर्शन, कला, पुरातत्त्व आदि ऐसे रखना चाहेंगे जिन पर क़म ध्यान दिया जाता रहा है परन्तु जिन पर कार्य होना भारतीय विद्या (Indology) की वास्तविक सेवा है।

स्वयं हमारे देश में, एवं वाह्य देशों में शिक्षा का प्रसार बड़ी तेजी से हो रहा है और उसकी गति के समानान्तर गति बनाये रखने के लिए नानाविध स्तरीय साहित्य का प्रस्तुतीकरण नितान्त आवश्यक रहता है।

हमारा प्रकाशन-प्रतिष्ठान इस गन्तव्य तक कितना पहुंच सकेगा यह तो भविष्य के आधीन है, पर प्रारंभ में जो हमारा ध्येय है, वह निवेदित है। गुण-ग्राहक जन-वर्ग के सहयोग से ही हमारा मार्ग सहज हो सकता है।

प्रकाशनों की कड़ी में हमने सर्वप्रथम पराविद्या के सुपरिचीत लेखक श्री करणीदान जी सेठिया की पुस्तक 'तंत्रविद्या' को लिया था जो प्रथम बार सन् १९८२ में प्रकाशित हुई और जिसका पाठक-जगत् में अभिनव स्वागत हुआ। उनकी एक और सुविख्यात पुस्तक 'मंत्रविद्या' का द्वितीय संस्करण अब हमारे यहां से प्रथम बार प्रकाशित होने जा रहा है और 'सेठिया ब्रदर्स' का यह दूसरा प्रकाशन है। पहला संस्करण स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ था और वह शीघ्र ही अप्राप्य हो गया। पुस्तक की सफलता ने ही हमें उसके पुनर्मुद्रण के लिए आकर्षित किया। फलस्वरूप 'मंत्रविद्या' का द्वितीय संस्करण हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस 'मंत्रविद्या' के प्रकाशन से पहले हम श्री सेठिया जी की एक और बहुपयोगी पुस्तक 'जैन मनीषियों के अनुभूत आयुर्वेदिक प्रयोग' को प्रकाशित

करना चाहते थे परन्तु सेठिया जी के अपने अन्य व्यावसायिक कार्यों में व्यस्त् रहने की वजह से उस पर कार्य नहीं हो सका। पर अब हम बहुत जल्द उसके प्रकाशन की व्यवस्था कर रहे हैं जो प्राणी मात्र के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। ऐसा हमारा विश्वास है।

सोभाग जैन

द्वितीय संस्करण

'मंत्रविद्या' प्रथम बार सम्वत्-२०३३ में प्रकाशित हुई थी। प्रकाश में आते ही इस पर दोनों प्रकार की प्रतिक्रिया हुई जिसके विस्तार में नहीं जाना है। गुणियों और विद्वानों ने इसकी सराहना की। इससे मुझे संतोष हुआ और मेरा उत्साह बढ़ा। पुस्तक शीघ्र ही पाठकों तक पहुंच गई। शीघ्र ही अप्राप्य और दुर्लभ भी हो गई। अतः मेरे सामने इसके पुनर्मुद्रण का कार्य आ गया। पुनः इसे प्रकाशित करने से पूर्व मेरे सम्मुख मेरी दूसरी रचना 'तंत्रविद्या' के प्रकाशन का प्रश्न था। अतः मुझे ठहरना पड़ा। गत वर्ष 'तंत्रविद्या' का प्रकाशन हो चुका और इस बीच मैंने मंत्रविद्या के पहले संस्करण में आवश्यक संशोधन किया। पुस्तक यथावत है। कोई परिवर्धन या परिवर्तन नहीं है। मुझे संतोष है कि सुधी पाठकों की मांग के अनुसार पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाश में आ रहा है।

मनुष्य मात्र अपने जीवन की उन्नति, समृद्धि और सिद्धि चाहता है। इनकी प्राप्ति के लिए वह अथक परिश्रम भी साधता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कितने ही परिश्रम और प्रयत्नों के बावजूद उसे अपने लक्ष्य की उपलब्धि हो ही जाय, बल्कि प्रायः तो निराशा और पराजय ही उसके हाथ लगती है।

परन्तु एक विद्या इस भूमण्डल पर ऐसी भी है जो अद्भुत चमत्कार से भरी हुई है। यह चमत्कार पूर्ण विद्या है 'मंत्रविद्या'। मंत्रविद्या की शक्ति अन्धेरे को उजाले में बदल देती है, असंभव को संभव कर देती है, गए हुए को लौटा देती है और मौजूद को मिटा देती है।

औषध में जैसे रोगों का निवारण करने की शक्ति है, वैसे ही मंत्रों में जड़ को चैतन्त बनाने की क्षमता है। चिकित्सा जानने वाला औषध को समझता है, मंत्रों को जानने वाला मंत्रों को समझता है। मंत्र एक विज्ञान है। इसकी सत्यता का प्रमाण है, इसका प्राचीन विपुल साहित्य। विधानुवाद ग्रन्थ में लिखा

है कि प्रेम व परोपकार बुद्धि से निम्न मंत्र को नव बार पढ़कर रोगी को दवा देने से वह दवा निश्चय ही सुखकर होती है—

"ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतरूपे इदौमौषधममृतं कुरू-कुरू भगवति विधे स्वाहा"

विश्वासपूर्वक साधना करें– मंत्रों को समझें—मंत्रों का प्रयोग करें और अपना मन वांछित प्राप्त करें, पुस्तक आपके हाथ में हैं।

चूंकि मेरे सामने अब उत्तरोत्तर लेखन-कार्य की बहुलता है इस क्षेत्र के अन्वेषण-अनुसन्धान में मुझे विशेष रूप से रहना है इसलिए ग्रन्थों की बिक्री की व्यवस्था 'मेसर्स सेठिया ब्रदर्स' कलकत्ता के हाथों में सौंप दी गई है।

सरदार शहर (राजस्थान)
१०-३-८४

करणीदान सेठिया

सम्मतियां

मैंने श्री करणीदान जी सेठिया की पुस्तक मंत्रविद्या का सम्यक् प्रकार से आलोड़न किया। इन्होंने मंत्र शास्त्र के सागर को गागर में बन्द कर दिया। ग्रन्थ के देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने जैन, बौद्ध और वैदिक तथा यवनों के तंत्रों का भी समावेश इस ग्रन्थ में कर दिया है। जिन-जिन परम उपयोगी सारगर्भित, अनुभूत योगों का शास्त्रों में वर्णन मिलता है, वे सब प्रकार के अनुष्ठान इस ग्रन्थ में उपलब्ध होते हैं। ग्रंथ से ऐसी प्रतीति होती है कि आपने अनेक देशों का पर्यटन किया है और सभी प्रकार के तान्त्रिकों, विद्वानों और संप्रदायों में रहकर ज्ञान की वृद्धि की है। जैसे कहा भी है—'सारं तथा ग्राह्यम पास्य फल्गु' सार को ग्रहण करना चाहिए और निःसार का परित्याग कर देना चाहिए, इस उक्ति का आपने बड़ी अच्छी प्रकार से अवलम्बन किया है। मेरी सम्मति में यह पुस्तक हिन्दू मात्र के उपयोग में आने वाली है।

नई दिल्ली
१०-१२-१९८१

पं० ज्ञानचन्द्र वेदान्त शास्त्री
कवि-तार्किक, रिसर्च स्कॉलर तथा
१९४ ग्रन्थों के रचयिता।

श्री करणीदान जी सेठिया द्वारा लिखित 'मंत्रविद्या' पुस्तक का आद्योपान्त अध्ययन किया। पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है— मंत्रविद्या, यंत्र-विद्या तथा तंत्र-विद्या। 'सर्व जनोपयोग' उद्देश्य से पुस्तक का प्रकाशन समर्थनीय है। यह पुस्तक अपने ढंग की बेजोड़ पुस्तक है या इसको इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'मंत्रविद्या' "यथा नाम तथा गुणः" वाली सदुक्ति को चरितार्थ करने वाली है। इसमें मंत्रा-विद्या सम्बन्धी सभी विषयों का पूर्ण समावेश है। विद्वान लेखक ने अथक परिश्रम द्वारा अनेक ग्रंथों के सार से इस पुस्तक को परिपुष्ट एवं

सुसज्जित कर धार्मिक जगत् की सेवा की है, वह परम श्लाघनीय है। यह पुस्तक लेखक महोदय की सर्वतोमुखी प्रतिभा की तो परिचायक है ही साथ ही जन-समुदाय के लिए अत्यन्त उपयोगी भी है। यह पुस्तक अत्यन्त उपादेय व संग्राह्य है। इस स्तुत्य प्रयास के लिए विद्वान लेखक धन्यवाद के पात्र हैं।

फलोदी (राजस्थान)
१९-९-८३

डा० हरिकृष्ण झंगाणी
'महर्षि', ज्योतिष भास्कर, ज्योतिष शिरोमणि, एम० ए० पी-एच० डी०,
प्रधान सम्पादक—'ज्योतिष शोध पत्रिका'

पराभूमि से संवित् का जो कल्याणकारी निर्झर अवरोह क्रम से बिखरी रूप से आत्म प्रकाशन करता है वही मंत्र का यथार्थ स्वरूप है। प्रसन्नता का विषय है कि मंत्र के अनेक कल्याणकारी प्रयोगों का अनुभूत संकलन "मंत्र-विद्या" नामक ग्रंथ में कर गागर में सागर भर दिया गया है। पुस्तक बहुजन उपयोगी सिद्ध होगी।

वाराणसी
ता० १५-२-१९८३

एस० एन० खण्डेलवाल
अध्यक्ष
रिसर्च विभाग
तंत्र फाउन्डेसन

जन्म : संवत् १९४६, स्वगवास : संवत् २०२८

पुण्य स्मृति में

जिनकी अडिग धर्म-निष्ठा ने समस्त परिवार में प्रगाढ श्रद्धा का वातावरण उजागर किया, जिनके सतत कर्मयोगी जीवन ने जागतिक द्वन्द्वों से जूझने की मुझमें क्षमता जागृत की, जिनके निश्छल, सबल एवं सरल व्यक्तित्व ने मुझमें सिद्धान्तों पर डटे रहने का साहस पैदा किया, उन स्वनामधन्य, स्वर्गीय पितृचरण **श्री चौथमल जी सेठिया** की पुण्य स्मृति में

करणीदान सेठिया

प्रस्तावना

भारतवर्ष अनादि काल से ज्ञान-विज्ञान की गवेषणा, अनुशीलन एवं अनुसन्धान की भूमि रहा है। विद्या की विभिन्न शाखाओं में भारतीय मनीषियों एवं अध्येताओं ने जो कुछ किया, निःसन्देह वह यहां की विचार-विमर्श एवं चिन्तन-प्रधान मनोवृत्ति का द्योतक है। दर्शन, व्याकरण, साहित्य, न्याय, गणित, ज्योतिष आदि सभी विद्याओं में भारतीयों का कृतित्व और व्यक्तित्व अपनी कुछ ऐसी विशेषताएँ लिए हुए है, जो अन्यान्य जनों में अनेक दृष्टियों से असाधारण है।

इसी गवेषणा के परिणामस्वरूप यहां अनेक साधनाओं का प्रस्फुटन हुआ, जिनमें मन्त्रात्मक साधना का एक विशिष्ट स्थान है। 'मन्त्र' शब्द के गर्भ में मनन की परिव्याप्ति है। शब्द, शब्द के मूल अक्षर, बीजाक्षर या गंभीर परिचिन्तन का उपक्रम, जो वृद्धिगत एवं विकसित हुआ, अतल मननात्मक गहराई के परिणामस्वरूप मन्त्रात्मक विद्या का विकास हुआ, जो अक्षरों में अन्तर्निहित अपरिसीम शक्ति का परिद्योतक है। अन्तर्जीवन में सन्निहित असीम शक्ति की अक्षरीय अवतारणा का यह एक स्पष्ट निदर्शन है।

भारतीय तत्त्ववेत्ताओं और ज्ञानियों का चरम अभिप्रेत दैहिक नहीं आध्यात्मिक रहा। इसलिए मन्त्र-साधना का भी मुख्य ध्येय आत्मोन्नयन से जुड़ा; पर सांसारिक जीवन केवल आध्यात्मिक नहीं है, वरन् दैहिक भी है। अतः मन्त्र-विद्या के विकास-क्रम में हम देखते हैं; कि वह आगे चलकर भौतिक अभिसिद्धियों से भी जुड़ जाती है; पर तत्त्वज्ञ उन भौतिक अभिसिद्धियों का प्रयोग दैहिक भोग के लिए नहीं करते थे, नैमित्तिक रूप में वे अध्यात्म-उत्कर्ष, साथ ही साथ धर्म-प्रभावना के लिए उन्हें प्रयुक्त किया करते थे।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो मंत्र, उसके उपजीवी तन्त्र, यन्त्र आदि का क्रम बहुत प्राचीन है। वेद-चतुष्टयी में अथर्ववेद एक इसी प्रकार की रचना है, जिसमें मान्त्रिक प्रयोगों का विस्तीर्ण विवेचन-विश्लेषण है। जिन पाश्चात्य विद्वानों ने वैदिक वाङ्मय का भाषा, विवेचन-सरणि आदि की दृष्टि से गंभीर आलोडन-आलोचन किया है, उनके अनुसार अथर्वन् का आशय मन्त्र-प्रयोग है—वैसा मन्त्र प्रयोग, जिसके द्वारा रोगों का अपगम किया जा सके। अथर्ववेद को

अथर्वांगिरा भी कहा जाता है। अंगिरा हानि और विनाश का द्योतक है, वहां अथर्वन् सर्जन या शान्ति का सूचक है। ऐसा प्रतीत होता है, मन्त्र-विद्या के उत्तरवर्ती विकास में जहां शत्रुओं का मारण, उच्चाटन, संहनन जुड़ा, उस भाव की अभिव्यंजना अंगिरा में है।

वेदपरक साहित्य में आगे चलकर मन्त्र एवं तन्त्र-विद्या पर अनेक ग्रन्थ रचे गये तथा विविध आस्था के अनुरूप उन्हें पृथक्-पृथक् भेदों में बांटा गया, जिनमें वैष्णव, शैव और शाक्त मुख्य हैं। इनके साथ आगम शब्द का प्रयोग आया है, जो तन्त्र के अर्थ में है। आगम शब्द इनके अनादि स्रोत या गुरु-परम्परा से आते रहते क्रम के अर्थ में सन्निहित हैं। यद्यपि मन्त्र-तन्त्र आगे चलकर, जैसा कि उपर्युक्त सूक्त से स्पष्ट है, भौतिक एषणा की पूरकता से जुड़ते गये, पर उनके तात्त्विक विश्लेषण में उनका पूर्ववर्ती सात्त्विक अर्थ ही अधिकांशतः विद्यमान रहा। कायिक आगम के तन्त्रान्तर पटल में उल्लेख है :—

तनोति विपुलानर्थान्, तत्त्वमत्र समन्वितान्।
त्राणं च कुरुते यस्मात् तन्त्र मित्यभिधीयते॥

जैन-परंपरा पर दृष्टिपात करें तो मंत्र-विद्या का सम्बन्ध अत्यन्त प्राचीन पूर्व ज्ञान से जुड़ता है। भगवद्भाषित, गणधर ग्रथित द्वादशांग में बारहवां अंग दृष्टिवाद है। उसके पांच विभाग हैं—१. परिकर्म, २. सूत्र, ३. पूर्वानुयोग, ४. पूर्वगत तथा ५. चूर्णिका। चौथे विभाग पूर्वगत में चौदह पूर्व आते हैं। चौदह पूर्वों में दशवां विद्यानुप्रवाद पूर्व है, जिसका कलेवर परम्परा से एक करोड़, दस लाख पद का माना गया है। विद्यानुप्रवाद पूर्व मुख्यतः मन्त्रात्मक साधनाओं, सिद्धियों एवं उनके साधनों से सम्बद्ध है। जैन-परंपरा में ऐसी मान्यता है कि पूर्वों का ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया। इस प्रकार हम एक बहुत बड़ी मन्त्र-विद्या की ज्ञान-राशि से वंचित हो गये।

विद्यानुप्रवाद पूर्व के अतिरिक्त द्वादशांगी के दशवें अंग प्रश्नव्याकरण सूत्र में भी मन्त्रों के विश्लेषण का भाग रहा है। नन्दी सूत्र में प्रश्नव्याकरण का जो विषय-विवेचन हुआ है, उसमें प्रश्न, अप्रश्न, प्रश्नाप्रश्न, विद्यातिशय आदि का उल्लेख है। विद्यातिशय का तात्पर्य मन्त्र-विद्या से है। वर्तमान में जो प्रश्नव्याकरण उपलब्ध है, वह उससे सर्वथा भिन्न है। इसमें तो आस्रव और संवर का वर्णन है। ऐसा लगता है कि नन्दी और स्थानांग में प्रश्नव्याकरण का जैसा स्वरूप वर्णित हुआ है, वह (प्रश्न-व्याकरण) लुप्त हो गया।

संघदास गणी की वासुदेव हिंडी नामक अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है, जो पांचवीं शती की कृति मानी जाती है। उसके चतुर्थ लम्भक (अध्याय) में प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभ का चरित्र विस्तार से वर्णित है। वहां एक कथा आती है, जिससे मन्त्र-विद्या के प्रवर्तन का सम्बन्ध भगवान् ऋषभ के समय के साथ जुड़ता है। वहां कहा गया है—भगवान् ऋषभ समग्र लोक-व्यवस्थाओं को सुसम्पादित कर

श्रमण-दीक्षा स्वीकार करने को तैयार हुए। उनके सौ पुत्र थे। उन्होंने अपना राज्य वैभव, सम्पदा—सब कुछ उनमें बांट दिया। उनके कच्छ और महाकच्छ नामक दो कुमारों के पुत्र, जिनके नाम नमि और विनमि थे, उस समय कहीं बाहर गये हुए थे। ऋषभ श्रमण बन गये। साधना के लिए चल पड़े। तदनन्तर जब नमि और विनमि अपने घर आये तो उन्हें वह सब ज्ञात हुआ, जो घटित हो चुका था। वे सोचने लगे कि सबको मिला, हमें तो कुछ नहीं मिला। वे प्रभु ऋषभ की खोज में निकल पड़े। जहां प्रभु ऋषभ थे, पहुंच गये। उन्होंने सोचा, हमें भगवान् की सेवा करनी चाहिए। इसलिए जब भगवान् ऋषभ ध्यान में होते, वे हाथ में तलवार लिए प्रहरी के रूप में खड़े रहते।

एक दिन की घटना है, नागराज धरणेन्द्र भगवान् ऋषभ को वन्दनार्थ आया। उसने नमि-विनमि को भगवान् की सेवा में देखा। प्रश्न किया, वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? कुमारों ने कहा कि प्रभु जब दीक्षित हो रहे थे, तब हम कहीं दूर गये हुए थे। उनकी सम्पत्ति में से हमें कुछ भी नहीं मिला। प्रभु हमें भी कुछ दें, एतदर्थ उन की सेवा साध रहे हैं। धरणेन्द्र हंसा—कुमारो! क्या तुम नहीं देखते, ये सब कुछ छोड़ चुके हैं, ये संन्यासी और योगी हैं। जो तुम चाहते हो, वे कैसे देंगे? पर, तुम लोगों ने इतने दीर्घकाल तक भगवान् की सेवा साधी, इसलिए मैं तुम्हें वैताढ्य पर्वत के दोनों पार्श्व की दो श्रेणियां और आकाशगामिनी आदि महत्त्वपूर्ण विद्याएं प्रदान करता हूं। दोनों कुमार विद्याएं प्राप्त कर आकाश मार्ग से वैताढ्य पर्वत पर चले गये। वहां उन्होंने नगर बसाये और अपना राज्य प्रतिष्ठित किया। वे विद्याओं के धारक थे, इसलिए विद्याधर संज्ञा से प्रतिष्ठित हुए। उनकी वंश-परम्परा में विद्याधर कुल का विकास हुआ।

जैन ग्रन्थों के अनुसार जैन आचार्यों के कुलों में एक का नाम विद्याधर-कुल था। उस परम्परा में अनेक मन्त्रात्मक विद्याओं के वेत्ता तथा चामत्कारिक सिद्धियों के धारक आचार्य थे।

विद्या शब्द यहां मन्त्र के अर्थ में प्रयुक्त है। जैन-परम्परा में पहले प्रायः ऐसा ही प्रयोग होता रहा है। जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट है, वसुदेव हिंडी के उक्त कथानक से प्रकट होता है कि मन्त्र-विद्या का उद्गम ऋषभ के समय से है।

यद्यपि काफी साहित्य विलुप्त हो चुका था, परन्तु जो बच सका उसके आधार पर जैन-आचार्यों ने उत्तर काल में काफी साहित्य रचा। सुप्रसिद्ध गुजराती लेखक श्री धीरजलाल टोकरसी शाह के अनुसार श्वेताम्बर विद्वानों के मंत्र-विद्या पर लगभग पांच सौ ग्रन्थ हैं। वे सब प्राप्य नहीं हैं। श्री शाह ने अपने 'तंत्रोनुं तारण' नामक ग्रंथ में मन्त्र विद्या संबंधी १४८ ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत की है।

दिगम्बर विद्वानों ने भी मन्त्र-शास्त्र पर काफी रचनाएँ कीं।

जैन परम्परा में चौबीस तीर्थंकरों की सेवा करने वाले चौबीस देव और देवियां—यक्ष या यक्षिणियां मानी गई हैं, क्योंकि तीर्थंकर तो मुक्त हो जाते हैं।

लौकिक दृष्टि से वे किसी को कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकते। उनकी प्रभावकता को प्रतिष्ठित रखने के लिए ये यक्ष और यक्षिणियां साधकों और आराधकों को लाभान्वित करते हैं।

आगे चलकर मन्त्र और विद्या के अर्थ में जैन-परम्परा में कुछ भिन्नता आ गई। उत्तरवर्ती ग्रन्थों के अनुसार जो स्त्री देवता के द्वारा अधिष्ठित हो उसे विद्या और पुरुष देवता के द्वारा अधिष्ठित हो उसे मंत्र नाम से अभिहित किया जाने लगा।

मंत्र साधना के विकास के युग में जैनों ने अपने जैन देवी-देवताओं के अतिरिक्त इतर परम्परा के देवी-देवताओं को भी स्वीकार किया। संभवतः घण्टाकर्ण इसी कोटि के देव हैं, जिनका सम्बन्ध बौद्ध परम्परा से है, शिव के गणों में उनकी गणना है। घण्टाकर्ण के नाम पर घण्टाकर्ण कल्प नामक रचना प्राप्त होती है।

यद्यपि ऐहिक सिद्धि के लिए जैन-परंपरा में मन्त्र-विद्या के प्रयोग का निषेध है, पर जैन शासन की उन्नति और प्रभावना की दृष्टि से आचार्य को मन्त्र आदि विद्या का वेत्ता होना आवश्यक भी कहा गया है। इस प्रकार के प्रभावक आचार्यों के चरित्र-संबंधी ग्रन्थ जैन वाङ्मय में प्राप्य हैं।

१४वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आचार्य प्रभाचन्द्र द्वारा लिखित प्रभावक चरित्र एक इसी कोटि का ग्रन्थ है, जिसमें मन्त्र-विद्या-निष्णात प्रभावापन्न आचार्यों का वर्णन है। पूर्वगत मंत्र-विद्या और उत्तरवर्ती मंत्र साहित्य के बीच में हम कतिपय प्राकृत ग्रन्थों के नाम पाते हैं, जिनमें सिद्ध-प्राभृत, योनि प्राभृत, निमित्त प्राभृत तथा विद्या-प्राभृत के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये सभी अप्राप्य हैं, केवल योनि प्राभृत ही अंशतः प्राप्य है।

जैन परम्परा में यद्यपि प्राचीन साहित्य अत्यल्प मात्रा में उपलब्ध था, पर फिर भी अनेक रूपों में उसका विकास होता गया। फलतः नवकार मंत्र कल्प, लोगस्स कल्प, णमुत्थुणं कल्प, उवसग्गहर स्तोत्र कल्प, तिजयपहुत्त कल्प, भक्तामर कल्प, कल्याण-मंदिर कल्प, ऋषि-मण्डल कल्प व मंत्र भी निर्मित हुए। वर्द्धमान विद्या कल्प, ह्रींकार कल्प आदि का भी खूब प्रचलन हुआ। आचार्य के लिए सूरि मंत्र की उपासना का एक विशेष क्रम रहा।

जब बौद्ध परम्परा पर चिन्तन करते हैं तो पाते हैं कि महायान से लेकर वज्रयान, सहजयान या सिद्धयान के काल तक मन्त्र-तन्त्रात्मक साधना का बड़ा विस्तार हुआ।

इसी के समकक्ष योगमार्गियों के अन्तर्गत नाथ सम्प्रदाय का युग आता है, जहाँ नाद और ध्यान की आराधना के साथ-साथ मान्त्रिक साधना भी विकसित हुई। नाथों की साधना में ब्रह्मचर्य और आचार-शुद्धि पर बहुत बल रहा।

मन्त्र-तन्त्र के इतिहास में एक वह युग आता है, जहां पंचमकार के सेवन द्वारा

साध्य प्राप्ति का यत्न देखा जाता है। यह मन्त्र-तन्त्रात्मक जगत् का एक कुत्सित पक्ष है, पर कभी यह भी फला-फूला और फैला।

जैन परम्परा की सदैव यह विशेषता रही कि तन्त्र-साधना के प्रकार में वहां मद्य-मांसादि हेय पदार्थों के प्रयोग कभी गृहीत नहीं हुए।

अहिंसा और संयम-प्रधान धर्म होने के कारण उसमें उक्त प्रकार की अपवित्रता नहीं आई।

यों ऊपर की पंक्तियों में हमने संक्षेप में मन्त्र एवं तन्त्र के संबंध में एक विहंगावलोकन किया। यन्त्रों का भी उनमें समावेश मान लेना चाहिए क्योंकि मन्त्रों के एक विशेष प्रकार, पद्धति, वस्तु आदि द्वारा विशिष्ट लेखन के रूप में वे आते हैं।

इन पिछली शताब्दियों में जीवन का क्रम भोगोन्मुखता की ओर अधिक प्रवृत्त होता गया। इसलिए मन्त्रों से किसी रूप में आध्यात्मिक विकास सधने की जो बात थी, वह लुप्त होती गई, केवल भौतिक और वह भी अधिकांशतः वासनात्मकता तथा शत्रु के प्रति मारक और उच्चाटन आदि में प्रवृत्ति की विशेष बलवत्ता हुई। मंत्रों के नाम पर जनसाधारण को प्रवंचना का भी स्वार्थलोलुप जनों द्वारा एक उपक्रम चला। अज्ञजन मंत्रों के नाम पर ठगे जाने लगे। फलतः मन्त्रों की वास्तविकता और शक्तिमत्ता से लोगों की निष्ठा उठती गई। जनसाधारण इसे एक ढोंग और दिखावा मानने लगा। यद्यपि मन्त्रवेत्ता, मन्त्र प्रभाव, मन्त्र-शक्ति सर्वांशतः नष्ट नहीं हुई थी और न आज भी नष्ट हुई है, पर मन्त्रों के नाम पर जनसाधारण को ठगने का इतना विस्तार हो गया, प्रवंचक और ठग इतने बढ़ गये कि यथार्थ तक लोग पहुंच ही नहीं पाते।

ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि मन्त्र-तन्त्र विज्ञान पर कुछ ऐसे प्रामाणिक ग्रन्थ तैयार हों, प्रकाश में आएं जिनसे इस गरिमाशील प्राचीन भारतीय विद्या के प्रति लोगों में श्रद्धा और निष्ठा उत्पन्न हो। यदि लोग मंत्रों से सीधा आध्यात्मिक लाभ न पा सकें तो कम से कम इतना तो हो कि उनकी सिद्धि द्वारा लौकिक अनुकूलता व समृद्धि प्राप्त करें; जिससे उन्हें धर्म-चिन्तन और आचरण की, यदि वे चाहें तो सुविधा प्राप्त हो सके।

गुजराती भाषा में मन्त्र-तन्त्रात्मक प्रामाणिक साहित्य पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित हुआ है, जो लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। पर हिन्दी में ऐसा प्रामाणिक साहित्य नहीं के बराबर है।

मुझे प्रकट करते हुए हार्दिक प्रसन्नता होती है कि जैन समाज के उत्साही, अध्ययनशील युवा श्री करणीदान सेठिया ने प्रस्तुत ग्रन्थ लिख कर इस कार्य को बहुत बड़े अंश में पूरा किया है। श्री सेठिया को उनके शैशव काल से ही मन्त्र विद्या में अभिरुचि और लगन रही है। इस विषय पर जो कुछ उन्हें प्राप्त होता गया, वे उसे संचित करते गये। उन्होंने मन्त्र-तन्त्र विद्या की गवेषणा में देश के

अनेक विद्वानों और महात्माओं से सम्पर्क साधा जिनमें तन्त्र-वाङ्मय के महान् विद्वान् महामहोपाध्याय स्वर्गीय डॉ० गोपीनाथ कविराज का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

श्री सेठिया ने प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन-अजैन सभी परम्पराओं के उन मन्त्रों, तन्त्रों और यन्त्रों को प्रस्तुत किया है जो उन्हें ऐसे अनेक लोगों से प्राप्त हुए, जिनका साक्षात्फल, चमत्कार उन्हें परिदृष्ट था। श्री सेठिया ने राजस्थान एवं पंजाब की सांगलिया, अबोहर आदि धूनियों के भी उन सबल और सद्यः प्रभावकारी मन्त्रों को इस पुस्तक में संकलित किया है, जिन्हें प्राप्त कर पाना बड़ा कठिन था। साधुओं, यतियों, मान्त्रिकों और तान्त्रिकों में वर्षों पर्यटन के बाद वे इस पुस्तक को तैयार कर सके हैं।

पुस्तक में गृहीत अनेक मन्त्र भौतिक अभिसिद्धियों और एषणाओं से सम्बद्ध हैं। श्री सेठिया एक सद्गृहस्थ हैं। वे एक ऐसे भोगमय जीवन की कल्पना करते हैं, जहां भोग परिष्कृत (Sublimated) होता-होता योग में बदल जाय। इसलिए उनकी इस पुस्तक में जहां ऐसे प्रसंग आयें वहां उनका अभिप्राय पाठकों को भोगोन्मत्त नहीं बनाना है, सधे हुए भोगमय जीवन का संयमित उपभोग करते हुए अध्यात्म की ओर बढ़ना है।

लेखक ने बहुत सरल, पर सधी हुई भाषा का प्रयोग किया है, जो प्राञ्जल तो है, पर दुरूह तनिक भी नहीं।

भारत के इस प्राचीन विज्ञान पर, जो साधनालभ्य है, इस प्रकार की पुस्तक लिखने के लिए श्री सेठिया वस्तुतः धन्यवाद के पात्र हैं। उनका यह प्रयत्न निःसन्देह स्तुत्य है।

आशा है, पाठक इस पुस्तक से अवश्य लाभान्वित होंगे।

सरदार शहर
कार्तिक कृष्णा ६
सं० २०३३

डॉ० छगन लाल शास्त्री

अपनी ओर से

इस युग के महामानव, ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य के हिमाद्रि, महान् अध्यात्म-योगी आचार्य श्री तुलसी के परम श्रद्धाभिनत अन्तेवासी, जैन वाङ्मय के महान् अनुशीलक व अध्येता, ध्यान-योग के विज्ञ साधक, उद्बुद्धचेता, विचारक एवं प्रौढ़ तत्व - ज्ञानी मुनि **श्री नथमल जी**, जिन्होंने अपने श्रद्धेय अनुशास्ता **आचार्य श्री तुलसी** की वाणी को उसके गौरव के अनुरूप भाषा और शैली का परिधान देकर दिग्दिगन्त पर्यन्त प्रसृत किया, जिन्होंने मुझे सदा अध्यात्म-संपृक्त स्नेह से संवर्द्धित किया, के श्री चरणों में शत-शत वन्दन।

भारतीय विद्याओं में मन्त्र विद्या का अप्रतिम महत्व है। यह वह चामत्कारिक विद्या है, जिसने अतीत में भारतीय जीवन में एक विशिष्ट शक्ति, सामर्थ्य एवं ओज का संचार किया।

बचपन से ही इस विद्या के प्रति मेरा सहज आकर्षण रहा है। ज्यों-ज्यों अवस्था बढ़ती गई, ज्ञान भी कुछ परिपक्व होता गया, मेरी इस विषय की अभि-रुचि के बढ़ने के साथ-साथ गति भी बढ़ने लगी। ज्यों ही मुझे ज्ञात होता, अमुक व्यक्ति मन्त्र विद्या के ज्ञाता हैं, मेरी जिज्ञासा उनका सान्निध्य प्राप्त करा देती और जो भी मुझे मिलता; मैं एक निधि की तरह उसे संजोकर अपने पास स्था-पित कर लेता। बारह-तेरह वर्ष की आयु में किया गया संग्रह आज भी मेरेपास विद्यमान है।

मेरा अध्ययन जब कुछ विकसित हुआ, मैंने इस विषय के साहित्य का, जो भी मिल सका, अध्ययन करना प्रारम्भ किया। आज भी वह अध्ययन रुका नहीं है।

मेरे मन को इस बात ने सचमुच चमत्कृत कर डाला कि भारतीय विद्वानों ने मानव जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने के लिए कितने प्रयत्न किये। मन्त्र विद्या, तन्त्र एवं यन्त्र भी उसी के विभिन्न पहलू हैं, जिनके आविष्कार, साधनाएँ व विकास के हेतु लगन के साथ उन्होंने जो कुछ किया वह उन प्रयत्नों की शृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

मानव जीवन दुर्लभ है। उसका अन्तिम साध्य आवागमन या जन्म-मरण के बन्धन से उन्मुक्त होना है, जिसका साधन धर्म की आराधना है। धर्म का आधार मानस की पवित्रता, भावनाओं की उज्ज्वलता, तपमूलक आचार का अनुसरण है, पर केवल आदर्श की परिधि में नहीं, व्यावहारिक भूमिका पर जरा विचार करें, यह सब कब सध सकता है, जब मनुष्य की घर की स्थिति सन्तोष-जनक हो। दूसरे शब्दों में उसके दैनन्दिन जीवन-निर्वाह की समीचीन व्यवस्था हो, अधिक स्पष्ट कहें तो उसका सांसारिक जीवन सुखमय हो। जिस व्यक्ति के दोनों समय खाने की व्यवस्था नहीं है और रहने को स्थान तक नहीं है, जिसके बच्चे क्षुधा से पीड़ित रहते हैं, रुग्ण होने पर जिन्हें औषधि तक उपलब्ध नहीं होती, क्या उनके लिए संभव होगा, वे अपने को आत्म-ध्यान में रमा सकें। व्यवहार की भूमिका पर सोचने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ऐसा असंभव नहीं तो दुःसंभव अवश्य है।

शायद कतिपय मन्त्र-विद्या-वेत्ताओं और मंत्राराधकों के मानस में यह आया हो कि जो कुछ उन्होंने अर्जित किया है, उससे वे समाज को लाभान्वित कर सकें ताकि श्रद्धालु लोग उन प्रयोगों के द्वारा पीड़ा, रोग, शोक व कष्ट आदि से छुट-कारा पा सकें, सुख-समृद्धि अर्जित कर सकें। अतएव उन्होंने मन्त्र, तंत्र व यन्त्र-जिन्हें प्रायः गोप्य रखने की परम्परा रही है अधिकारी जनों के समक्ष उद्घाटित किये लोग लाभान्वित हुए, आज भी हो रहे हैं।

भारत से अद्भुत विद्याएँ, कलाएँ विदेशों में प्रसृत हुईं। भारतीय संस्कृति, दर्शन आदि से विश्व के बहुत से देश प्रभावित हुए। भारत अपनी जिन बातों को

पुरानी, दकियानस, असम्भव व कपोल-कल्पित मानकर छोड़ने जा रहा था, आधुनिक व पाश्चात्य जगत् ने उनमें आश्चर्यजनक अभिरुचि ली तो नये सिरे से आज उनका प्रचार-प्रसार भारत में भी होने लगा है। अब पश्चिमी दुनिया की नवीनतम अभिरुचि भारत की जिस विद्या या कला में होने लगी है, वह है तन्त्र-विद्या। ब्रह्म विद्या संबंधी बातों को अब सनक नहीं माना जाता, इसकी सीमाओं की खोज गहरी निष्ठा के साथ की जा रही है। मास्को स्थित प्राच्य अध्ययन संस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ ओरियंटल स्टडीज) में डॉ० गेरासिमोव की देखरेख में ज्ञान की तांत्रिकी शाखा में गंभीर अध्ययन और शोध किये जा रहे हैं। अमरीकी विश्वविद्यालयों में भी ज्योतिष के विभाग खोले जा रहे हैं। पश्चिमी जर्मनी में तो आज अच्छे तांत्रिक व योगी मिल जायेंगे। अपने भारत में भी अब नई दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के निकटस्थ क्षेत्र में तन्त्र संबंधी एक म्यूजियम स्थापित किया जा रहा है, जिसमें 20 लाख रुपये लगने का प्रावधान है।

मन्त्र-तन्त्र-विद्या आखिर है क्या ? वस्तुतः इस विद्या की जानकारी के संबंध में मोटी बातें समझ लेना जरूरी है। इस विद्या का आरम्भ कब से हुआ, इसका तो सम्भवतः कोई इतिहास उपलब्ध नहीं है। रामायण व महाभारत काल, मन्त्र विद्या का उत्कृष्ट काल था। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान् महावीर व भगवान् बुद्ध के काल में भी बड़ी तेजस्वी मन्त्र व तन्त्र क्रियाएँ उपलब्ध थीं। यह इस उदाहरण से ही हम जान सकते हैं कि भगवती सूत्र में श्री गौतम स्वामी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि "सव्वक्खर सन्निवाई" यानी श्री गौतम स्वामी सभी अक्षरों के संयोगों से होने वाली निष्पत्ति को जानने वाले हैं।

भगवान् महावीर के लगभग डेढ़ शताब्दी बाद भद्रबाहु द्वारा रचित उवसग्गहर स्तोत्र तदनन्तर सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित कल्याण मन्दिर स्तोत्र, मानतुंग सूरि द्वारा रचित भक्तामर स्तोत्र, नन्दिषेण मुनि द्वारा रचित' अजित शान्ति स्तवन, मानदेव सूरि द्वारा रचित तिजयपहुत्त स्तोत्र, मुनि सुन्दर सूरि द्वारा रचित संतिकर स्तोत्र आदि मंत्र शास्त्र की महान् निधि हैं। इस दो हजार वर्ष के ज्ञात इतिहास में आचार्य प्रियग्रन्थ, आचार्य वृद्धवादि, आचार्य सिद्धसेन दिवाकर, आचार्य पादलिप्त, आचार्य श्री गुप्त, आचार्य वज्रस्वामी, आचार्य मानदेव, आचार्य स्कन्दिल आचार्य नागार्जुन, आचार्य हरिभद्र, आचार्य हेमचन्द्र, आचार्य जिनदत्त, आचार्य जिनप्रभ आदि अनेक महान् विद्वान्, वैराग्यवान् आचार्य हुए हैं, जिनके द्वारा रचित महाप्रभावशाली मन्त्र, यन्त्र आदि आज भी कहीं-कहीं उपलब्ध हो सकते हैं। पांचवीं शताब्दी से लेकर दसवीं शताब्दी तक पांच सौ वर्षों में इस रहस्यमय विद्या पर केवल बौद्ध भिक्षुओं ने ही दो-ढाई हजार ग्रंथ रच डाले थे। तिब्बत, चीन, लंका, मंगोलिया, ब्रह्मा, कम्बोडिया आदि देश तो तांत्रिक बौद्ध लामाओं के गढ़ थे।

आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' भाग दो में लिखते हैं :—

"महापरिज्ञा अध्ययन में मन्त्र विद्या यद्यपि आचारांग निर्युक्ति, शीलांक कृत आचारांग टीका, जिनदास गणि द्वारा रचित आचारांग चूर्णि और अन्य आगमिक ग्रन्थों में इस प्रकार का उल्लेख उपलब्ध नहीं होता पर पारम्परिक प्रसिद्ध जनश्रुति के आधार पर यह मान्यता चली आ रही है कि आचारांग सूत्र के 'महापरिज्ञा' अध्ययन में अनेक मन्त्रों और बड़ी महत्वपूर्ण विद्याओं का समावेश था उन मन्त्रों और विशिष्ट विद्याओं का स्वल्प सत्व, धैर्य व गांभीर्य वाले साधक कहीं दुरुपयोग न कर लें, इस जनहित की भावना से पूर्व के आचार्यों ने अपने शिष्यों को इस अध्ययन की वाचना देना बन्द कर दिया और इसके परिणामस्वरूप शनैः-शनैः कालक्रम से महापरिज्ञा का अध्ययन विलुप्त हो गया। इस परम्परागत प्रसिद्ध जनश्रुति को एकान्ततः अविश्वसनीय किंवदन्ती की गणना में नहीं रक्खा जा सकता क्योंकि आचार्य वज्रस्वामी ने महापरिज्ञा अध्ययन से आकाशगामिनी विद्या की उपलब्धि की, इस प्रकार का उल्लेख अनेक ग्रन्थों में आज भी उपलब्ध होता है। आचारांग चूर्णिकार ने लिखा है—बिना आज्ञा, बिना अनुमति के महापरिज्ञा अध्ययन नहीं पढ़ा जाता था। इससे भी थोड़ा आभास होता है कि महापरिज्ञा अध्ययन में कुछ इस प्रकार की विशिष्ट बातें थीं जिनका बोध साधारण साधक के लिए वर्जनीय था।

भारत के प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय ने मन्त्र-तन्त्र विद्या को अपनाया। जैन आचार्यों, यतियों सन्तों ने भी सूक्ष्म व गम्भीर गवेषणा करके अनेकउपयोगी मन्त्रों, यंत्रों व तंत्रों की रचना की थी और उनका सफल प्रयोग भी किया था। प्रयोग अत्यन्त आवश्यकता पर, वह भी केवल संघीय प्रभावना के लिए ही कभी-कभी किया था। यदि पूर्ण रूप से खोज की जाए तो निश्चय ही बहुत बड़ा उपयोगी साहित्य मन्त्र विज्ञान पर जैन उपाश्रयों में गुटकों व पड़तों में उपलब्ध होगा। सबसे ज्यादा मुश्किल आती है तो कुंजी की। मन्त्र लिखे हैं, तन्त्र लिखे हैं, पर किसी में अक्षर छोड़ दिये हैं, किसी में विधि छोड़ दी है, किसी का अर्थ ही समझ में नहीं आ रहा है। फिर जिनको कुछ मालूम है, वे बतलाना नहीं चाहते।

मैंने एक मन्त्र देखा था, उसका विधि विधान भी लिखा था, आगे उसमें लिखा था कि मन्त्र को भुजा पर बांधने से निकिडा व निकिशा तुरन्त ड़छोतिजा हैं। काफी सोचने के बाद मालूम हुआ कि ये तो उल्टे अक्षर लिखे हैं, जैसे डाकिनी शाकिनी तुरन्त छोड़ जाती हैं आदि। चांदी व सोने की स्याही बनाकर सैकड़ों, हजारों कागज लिखकर भर दिये पर असली फार्मूलों की आज कितनों को जानकारी है, वे उन्हें (असली फार्मूले) बताने को तैयार नहीं।

मैं इससे इन्कार नहीं करता कि मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र के नाम से प्रवंचना, छल और कपट भी खूब पनपा। स्वार्थी लोगों ने जिन्हें वास्तव में मन्त्रों का न कोई

ज्ञान है और न साधना ही, भोले-भाले लोगों को खूब चकमा दिया, आज भी दे रहें हैं। इसी से लोगों में मन्त्रों, तन्त्रों और यन्त्रों के प्रति अश्रद्धा पनप रही है। इसमें मन्त्र विद्या का क्या दोष है ? बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि अर्थ-लोलुप, स्वार्थान्ध लोगों ने हमारे देश की विद्या की गरिमा और महिमा को बहुत नष्ट किया है, करते जा रहे हैं। यह बड़ा जघन्य और निकृष्ट कार्य है। जीवन का घोर पतन हैं। अस्तु !

मेरे मन में आया, कितना अच्छा हो, मैं अपने समाज को हिन्दी में मन्त्र-तन्त्र और यन्त्र मूलक एक प्रामाणिक, विश्वस्त और चमत्कार पूर्ण भेंट इस २५००वीं महावीर निर्वाण- शताब्दी पर दे सकूं। क्योंकि जैसा मैंने देखा है, गुजराती आदि कुछ समाजों में तो इस विषय पर काफी साहित्य प्रकाशित हुआ है पर अपने समाज में ऐसा साहित्य बहुत कम—नहीं के बराबर है। फलतः हिन्दी में मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र विषय पर मैंने पुस्तक लिखने का कार्य प्रारम्भ किया। जीवन के पिछले तीस वर्षों की लम्बी अवधि में मैं जो जैन सन्तों, यतियों, श्रावकों, भंडारों व उपाश्रयों से संचित कर सका था, उसे एक पुस्तक के रूप में संजोने का प्रयत्न चालू हुआ। इस बीच अपने ज्ञान का परिमार्जन करने के उद्देश्य से मैंने मन्त्र-तन्त्र साहित्य के उच्च कोटि के विद्वानों के दर्शन किये, उनसे चर्चाएँ कीं, जिनमें तन्त्र साहित्य के उच्च कोटि के अध्येता, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त भारतीय विद्वान्, नेशनल प्रोफेसर महामहोपाध्याय डॉ० गोपीनाथ जी कविराज (वाराणसी) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

वयोवृद्ध यतिवर्य श्री किशनलाल जी महाराज (कालू—बीकानेर) के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूं, जिनसे मुझे अनेक उपयोगी सुझाव प्राप्त हुए तथा जिन्होंने अनेक प्राचीन पांडुलिपियों के अवलोकन का मुझे अवसर दिया।

पुस्तक की तैयारी में मुझे जिन मित्रों से प्रेरणा, उत्साह व सहयोग मिला उनमें डॉ० छगनलाल जी शास्त्री, श्री थानमल जी दूगड़ एवं श्री चांदमल जी पूगलिया का भी आभारी हूं।

इन भावनाओं और प्रयत्नों का परिणाम है मन्त्र-तन्त्र और यन्त्र विद्या से सम्बन्ध रखने वाली यह पुस्तक, जिसे पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

मंत्र विद्या के दार्शनिक और साहित्यिक विकास के सम्बन्ध में विद्वान प्रस्तावना लेखक ने लिखा ही है, मुझे कुछ नहीं कहना है। मैं तो केवल इतना सा जोर देकर कह देना चाहता हूं कि जिन मन्त्रों, यंत्रों और तन्त्रों को मैंने प्रस्तुत किया है, मेरे विश्वास के अनुसार वे बहुत प्रामाणिक हैं।

मन्त्र-विद्या गोप्य मानी जाती रही है। मैंने वैसे अनेक सिद्ध मन्त्रों यन्त्रों एवं तन्त्रों को अनेक बड़े-बूढ़ों से प्राप्त किया है, जिन्हें वे वर्षों से गोप्य बना कर रखे हुए थे। जन-सेवा और उपकार की भावना से मेरे निवेदन पर उन्होंने

उन्हें मेरे समक्ष उद्घाटित किया और बताया कि वे उनके द्वारा अनेक बार प्रयुक्त हैं, शत प्रतिशत सफल सिद्ध हुए हैं इसमें अनेक ऐसे मन्त्र, तन्त्र एवं यंत्र हैं, जिनका चमत्कार पूर्ण परिणाम मैंने स्वयं अनुभव किया। कुछ इस प्रकार के मन्त्र एवं यन्त्र बड़े परिश्रम से खोज कर दिये हैं, जिनका शुद्ध रूप लुप्त हो गया था।

इस विद्या में मुख्यतः तीन विशिष्ट क्रियाओं का समावेश होता है—मन्त्र यन्त्र और तन्त्र।

मन्त्र : जो कुछ विशिष्ट प्रभावक शब्दों द्वारा निर्मित किया हुआ वाक्य होता है, वह मन्त्र कहा जाता है। उसका बार-बार जाप करने पर शब्दों के पारस्परिक संघर्षण के कारण वातावरण में एक प्रकार की विद्युत् तरंगें उत्पन्न होने लगती हैं तथा साधक की इच्छित भावनाओं को बल मिलने लगता है। फिर वह जो चाहता है, वही होता है। मन्त्रों के लिए उनके हिसाब से जाप की विभिन्न मात्रा में शब्द, अंक तथा विभिन्न मन्त्रों के लिए विभिन्न प्रकार के पदार्थों से बनी मालाएँ, विभिन्न प्रकार के फल-फूल, विभिन्न आसन, दिशाएँ, क्रियाएँ इत्यादि पहले से ही निर्धारित होती हैं।

यन्त्र : जिसमें सिद्ध किये हुए मन्त्रों से अभिमंत्रित कागज को अथवा किसी विशिष्ट प्रकार के निर्धारित अंकों, शब्दों व आकृतियों से लिखित पत्र को किसी विशेष धातु के बने ताबीज में रख दिया जाता है अथवा किसी की बांह में बांध दिया जाता है, गले में लटका दिया जाता है या किसी स्थान पर रख दिया जाता है या चिपका दिया जाता है, जिससे कार्य-सिद्धि होती है, वह यन्त्र कहा जाता है।

तन्त्र : यह इस विद्या का एक प्रमुख तथा विशिष्ट अंग है। तन्त्रों का सम्बन्ध विज्ञान से है। इसमें कुछ ऐसी रासायनिक वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है, जिनसे एक चमत्कारपूर्ण स्थिति पैदा की जा सके।

इस विद्या में शान्ति, वश्य, स्तंभन, उच्चाटन, मारण व विद्वेषण इन छः कर्मों की प्रसिद्धि है, परन्तु कई मन्त्र-विशारद इसमें दस कर्मों का निरूपण करते हैं, जो निम्न रूप से हैं। तान्त्रिक षटकर्म में मोहन व आकर्षण कर्म वश्य कर्म के ही भाग बतायें गए हैं।

१. **शान्ति** : जिस मन्त्र से रोग, ग्रहपीड़ा, उपसर्ग शान्ति व भयशमन हो उसे शान्ति कर्म कहते हैं।

२, **स्तंभन** : जिस मन्त्र के द्वारा मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जीवों की गति, हल-चल का निरोध हो, उसे स्तंभन कर्म कहते हैं।

३. **मोहन** : जिस मन्त्र के द्वारा मनुष्य, पशु-पक्षी मोहित हों, उसे मोहन या संमोहन कहते हैं। मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म आदि प्रायः इसी के अंग हैं।

४. **उच्चाटन** : जिस यन्त्र के प्रयोग से मनुष्य, पशु, पक्षी, अपने स्थान से भ्रष्ट हों, इज्जत और मान-सम्मान खो दें, उसे उच्चाटन कर्म कहते हैं।

५. **वशीकरण** : जिस मन्त्र के प्रयोग से अन्य व्यक्ति को वश में किया जा सके, वह व्यक्ति जैसा कहे वैसा करे, उसे वश्यकर्म कहते हैं।

६. **आकर्षण** : जिस मन्त्र के द्वारा दूर रहने वाला मनुष्य, पशु, पक्षी आदि अपनी तरफ आकर्षित हो, अपने निकट आ जाय, उसे आकर्षण कर्म कहते हैं।

७. **जृंभण** : जिस मन्त्र के द्वारा मनुष्य, पशु, पक्षी प्रयोग करने वाले की सूचनानुसार कार्य करें, उसे जृंभण कार्य कहते हैं।

८. **विद्वेषण** : जिस मन्त्र के द्वारा दो मित्रों के बीच फूट पड़े, सम्बन्ध टूट जाय, उसे विद्वेषण कर्म कहते हैं।

९. **मारण** : जिस मन्त्र के द्वारा अन्य जीवों की मृत्यु हो जाय, उसे मारण कर्म कहते हैं।

१०. **पौष्टिक** : जिस मन्त्र के द्वारा धन, धान्य, सौभाग्य, यश व कीर्ति आदि में वृद्धि हो, उसे पौष्टिक कर्म कहते हैं।

इस पुस्तक में मैंने अधिकांशतः शान्ति, पौष्टिक व वश्यकरण के ही प्रयोग दिये हैं। विद्वेषण, उच्चाटन व मारण के प्रयोग सर्वथा छोड़ दिये हैं। स्तंभन प्रयोग में केवल सर्प स्तंभन के कुछ प्रयोग दिये हैं, अन्य छोड़ दिये हैं। वैसे मन्त्रों के अन्वेषण के प्रसंग में मुझे मारण, उच्चाटन, उत्पीड़न संबंधी भी अनेक अनुभूत, सिद्ध मन्त्र, यन्त्र एवं तन्त्र प्राप्त हुए, जैसे मूठ मारना, पुतले गाड़ना, पागल बना देना, खून चालू करना आदि। नक्षत्र कल्प में एक मन्त्र आता है, जिसके द्वारा मनुष्य के आधे अंग को लकवा मारा जा सकता है। आचार्य हरिभद्र सूरि द्वारा रचित एक तन्त्र मय मन्त्र भी मुझे मिला था, जिसमें कुत्ते की ऊपर की दाढ़, बिल्ली की नीचे की दाढ़ (मन्त्र द्वारा) अभिमंत्रित कर किसी के घर की दीवाल में दबा दे तो वह घर ढह जायगा। मैंने इस पुस्तक में वैसे मन्त्र नहीं दिये हैं क्योंकि लोगों के हाथ में ऐसा माध्यम देना, जिसके द्वारा वे दूसरों को कष्ट दे सकें, मैं न्यायसंगत नहीं मानता। मेरी दृष्टि में वह अत्यन्त अशुभ व हेय कार्य है।

इसके साथ ही कई ऐसे मन्त्र भी मैंने छोड़ दिये हैं, जिन्हें सिद्ध करना सांसारिक व्यक्ति के लिए मैं उपयुक्त नहीं मानता, जैसे रंडायक्षिणी, उच्छिष्ट चांडालिनी, रतिप्रिया, यक्षिणी, जलोटिया आदि। कर्ण, पिशाचिनी का मन्त्र भी मैं देना नहीं चाहता था पर कतिपय कारणों से मुझे देना पड़ा। पर साधकों से निवेदन करूंगा के अनेक मन्त्र-विशारदों का यह दृढ़ मत है कि कर्ण-पिशाचिनी की साधना करने वाले व्यक्तियों का अन्तिम जीवन सुखमय व्यतीत नहीं होता। एतदर्थ उस मन्त्र की साधना मेरे विश्वास के अनुसार करना उचित नहीं है। मुस्लिम सम्प्रदाय का फरिश्ता साधन का एक सिद्ध व प्रसिद्ध मन्त्र मैंने इसमें दिया है। बहुत ही दृढ़ संकल्प-शक्ति वाले व्यक्ति को ऐसे मन्त्रों में हाथ देना चाहिए नहीं तो अनिष्ट की अधिक आशंका रहती है। निश्चय ही इनके साधन के समय अनेक चामत्कारिक

घटनाएँ घटती है और उनसे भयभीत हो जाने वाला व्यक्ति पागल तक बन जाता है।

कुछ शाबर मन्त्रों व जंजीरों को भी मैंने इसमें दिया है, जिनका नाम नाथ व मुस्लिम संप्रदाय में अधिक प्रयोग किया जाता है। इसमें बीजाक्षर नहीं होते और न सिद्ध करने में ज्यादा विधि-विधान ही होता है। इसमें केवल दुहाई व आण होती है फिर भी ये अत्यन्त प्रभावशाली होते हैं।

एक बार फिर मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इस कृति में मैंने वही सामग्री प्रस्तुत की है जो मुझे जैन-उपाश्रयों, पुस्तकालयों वह व्यक्तियों से प्राचीन हस्त-लिखित पड़तों व गुटकों के माध्यम से प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त साधु-संन्यासियों, फकीरों, जोगियों, साधकों व गृहस्थों से भी यत्किंचित सामग्री एकत्र की, जिसका साधन करके प्रयोग किया जा सकता है लेकिन इसकी तात्विकता और वैज्ञानिक पक्ष पर मैं नहीं गया।

मैंने इसे लोक-कल्याण की उपयोगी वस्तु माना और यह परिश्रम किया। अपने पूज्य पुरुषों का आशीर्वाद ग्रहण किया। पुस्तक कैसी हुई है और इसकी सामग्री किस प्रकार की है, यह आपके सामने है। यह प्राचीन ऋषि महर्षियों द्वारा उद्घाटित शब्द-विज्ञान कहां तक प्रभावोत्पादक है, यह गवेषणा वैज्ञानिकों, साधकों, चिन्तकों, अन्वेषकों और विचारकों पर निर्भर करती है। कहां तक इसकी सत्यता प्रमाणित हो पाती है, यह उन्हीं मनीषियों के अधिकार की बात है।

यदि पाठकों व साधकों ने इस पुस्तक से लाभ उठाते हुए अपने जीवन को कुछ भी सुखी, समृद्ध और प्रसन्न बनाया तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

६, आरमेनियम स्ट्रीट,
कलकत्ता-१

करणीदान सेठिया

मंत्र-विद्या

प्रथम खण्ड

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मंगलाचरण	१	अग्नि क्षय मंत्र	२७
मंत्र-विद्या	३	दुष्ट भय, भूत आदि भय-निवारण मंत्र	२७
विधि क्रम	३	अर्ह मंत्र	२७
मंत्र-ग्रहण-दिवस-नक्षत्र-फल	६	सर्वकामना पूरण मंत्र	२७
जप	१०	लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र	२७
सकलीकरण	१७	ऋद्धि-सिद्धि मंत्र	२७
नमस्कार-महामंत्र-कल्प	२०	चोर भयहरण मंत्र	२८
नमस्कार-मंत्रगत अक्षर मूलक मंत्र	२२	बुद्धि-वृद्धि मंत्र	२८
नमस्कार मंत्र	२३	परदेशलाभ मंत्र	२८
महान् प्रभावक नमस्कार मंत्र	२३	स्वप्न में आवाज आने का मंत्र	२८
विघ्नहरण मंत्र	२३	वशीकरण मंत्र	२८
वशीकरण मंत्र	२४	सर्वकार्य सिद्ध मंत्र	२९
सर्वरक्षा मंत्र	२४	चोर-भय-दूरकरण सिद्ध मंत्र	२९
मनवांछित-कार्य सिद्धि मंत्र	२४	वशीकरण मंत्र	२९
कारागार मुक्ति मंत्र	२४	लाभकारी उपाध्याय मंत्र	२९
जीर्णज्वर-निवारण मंत्र	२५	सर्व कार्यसिद्धि आचार्य व साहु मंत्र	२९
स्वप्न दर्शन मंत्र	२५	मंत्र-चतुष्टयी	२९
कल्याणकारी मंत्र	२५	रोगनिवारक मंत्र	२९
क्लेश नाशक मंत्र	२६	स्वप्न में शुभाशुभ कथन मंत्र	३०
सर्वकामनापूरण मंत्र	२६	वशीकरण मंत्र	३०
मनवांछित कार्यसिद्धि मंत्र	२६	वस्तु-विक्रय मंत्र	३०
विवाद विजय मंत्र	२६	नवग्रह-पीड़ा निवारण मंत्र	३०
शत्रु नाशक मंत्र	२६	वर्धमान-विद्या-कल्प	३४
सर्व सम्पत्तिदायक त्रिभुवन स्वामी विद्या मंत्र	२६	लोगस्स-विद्या-कल्प	३८

विषय	पृष्ठ
संकट निवारण मंत्र	३८
आनन्ददायक मंत्र	३८
मुकदमे में जय-प्राप्ति मंत्र	३९
भूत-प्रेत आदि निवारण मंत्र	३९
वल्लभदर्शी मंत्र	३९
विजय-प्राप्ति मंत्र	४०
यशदायक मंत्र	४०
सक्कथुई (णमोत्थुणं) विद्या कल्प	४०
विद्युतपात भय निवारण मंत्र	४०
विद्वान बनने का मंत्र	४०
सौभाग्य वृद्धि मंत्र	४१
युद्ध व वाद में जय प्राप्ति मंत्र	४१
श्री कर्ण-पिशाचिनी देवी का मंत्र	४१
सर्व भय निवारण मंत्र	४१
सुन्दर भाषण देने का मंत्र	४२
वाक् सिद्धि मंत्र	४२
मार्ग भय निवारण व बुरे स्वप्न निवारण मंत्र	४२
वशीकरण मंत्र	४२
जल भय निवारण मंत्र	४३
चिन्ता निवारण मंत्र	४३
कारागार मुक्ति मंत्र	४३
बुद्धि निर्मल मंत्र	४३
उपद्रव निवारण मंत्र	४४
सर्वभय निवारण मंत्र	४४
चन्द्रप्रज्ञप्ति-विद्या कल्प	४४
शान्तिदायक महा प्रभावक सिद्ध-शान्ति-कल्प	४५
श्री चन्द्र-कल्प	४६
यक्षिणी-कल्प	४७
श्री गौतमः स्वामी मंत्र	५२
श्री कलिकुण्डः स्वामी मंत्र	५२
श्री मणिभद्रः स्वप्न मंत्र	५२
श्री मणिभद्रः भूत-प्रेत-बाधा-निवारण मंत्र	५३
श्री घंटाकर्ण मंत्र	५३
श्री घंटाकर्णः द्रव्य-प्राप्ति मंत्र	५४
श्री सूर्य मंत्र	५४
श्री गणेश मंत्र	५४
पार्श्व यक्ष-मंत्र	५५
क्षेत्रपाल का मंत्र	५५
श्री हनुमान मंत्र (जंजीरा)	५५
श्री भैरव मंत्र (जंजीरा)	५५
श्री चक्रेश्वरी देवी का मंत्र	५६
श्री पद्मावती देवी का मंत्र	५७
श्री लक्ष्मी देवी का मंत्र	५७
श्री सरस्वती देवी का मंत्र	५७
श्री ज्वाला मालिनी देवी का मंत्र	५८
श्री कर्ण-पिशाचिनी देवी का मंत्र	५८
श्री पंचांगुली देवी का मंत्र	५९
सर्व-कामनापूर्ण मंत्र	६०
वशीकरण मंत्र	६०
सर्व-भय-निवारण मंत्र	६१
डाकिनी-शाकिनी नाश मंत्र	६१
कामण-टुमण नाश मंत्र	६१
नजर उतारने का मंत्र	६१
पर विद्याछेदन मंत्र	६२
मार्ग भय-निवारण मंत्र	६२
मृत्यु-आभास मंत्र	६२
औषधि मंत्र	६२
रोग-निवारण मंत्र	६२
ज्वर-निवारण मंत्र	६३
गर्भ-स्तंभन व शुक्र-स्तंभन मंत्र	६३
सुख-प्रसव मंत्र	६३

विषय	पृष्ठ
आंख का मंत्र	६३
कर्णमूल का मंत्र	६४
दांत के दर्द का मंत्र	६४
कखलाई का मंत्र	६४
पेट दर्द-दूर मंत्र	६४
धरण दूर: मंत्र	६४
वायु-रोग-निवारण मंत्र	६५
चिणक पर मंत्र	६५
अंडकोष-वृद्धि व खाखबिलाई मंत्र	६५
मस्सा नाशक मंत्र	६५
व्रणहर मंत्र	६६
बाला (नहखा) का मंत्र	६६
दाद का मंत्र	६६
घाव की पीड़ा का मंत्र	६६
क्रोध-शान्ति मंत्र	६६
बेचैनी दूर मंत्र	६७
भोजन पचाने का मंत्र	६७
तीर्य-स्तंभन मंत्र	६७
कान्ति बढ़ाने का मंत्र	६७
कवि बनने का मंत्र	६७
वाक्-सिद्धि मंत्र	६७
प्रवास में आरामपने का मंत्र	६८
सुन्दर भाषण देने का मंत्र	६८
डूबती नाव बचाने का मंत्र	६८
अनाज में कीड़ा नहीं पड़ने का मंत्र	६८
सूखा वृक्ष हरा हो मंत्र	६८
बच्चा दूधपीवे (बंगाली) मंत्र	६९
कुश्ती जीतने का मंत्र	६९
वृद्ध शरीर में दुर्गन्ध पैदा न हो और गले नहीं मंत्र	६९
लड़की ससुराल रहे मंत्र	७०
पशु रोग निवारण मंत्र	७०
गाय भैंस के दूध बढ़ाने का मंत्र	७०
श्वान-बोली ज्ञान मंत्र	७०
कौआ-बोली-ज्ञान मंत्र	७१
तोता-मैना-बोली-ज्ञान-मंत्र	७१
टांटिया के विष पर मंत्र	७१
बिच्छू के विष पर मंत्र	७१
सर्प-भय-नाश: घोण मंत्र	७२
सर्प-गति-बन्द-मंत्र	७२
सर्प-रेखा-स्तंभन-मंत्र	७२
सर्प को घड़े में डालने का मंत्र	७२
सामने आते सर्प को रोकने का मंत्र	७२
हाजरात-बंगाली मंत्र	७३
हांडी बांधने का मंत्र	७३
अग्नि-स्तंभन-मंत्र	७३
बारह राशि मंत्र	७४
प्रतिदिन-स्मरणीय मंत्र	७५
प्रतिवार-स्मरणीय मंत्र	७६
प्रसिद्ध सांगलिया की धूनी का सरभंग मंत्र	७६
अबोहर-गोरखनाथ सम्प्रदाय की धूनी का सरभंग मंत्र	७७
त्रिकालदर्शी हाजरात अंगूठी	७८
लाभकारी चामत्कारिक अंगूठी	७८
मुस्लिम मंत्र	८०
फरिश्ता साधन मंत्र	८०
कारावास-मुक्ति-मंत्र	८१
वशीकरण-मंत्र	८१
रात्रि-भय दूर करने का मंत्र	८२
मार्ग-भय दूर करने का मंत्र	८२
नजर, पेट व सिरदर्द मिटाने का मंत्र	८२
वृक्ष के फल खराब न होने का मंत्र	८२

विषय	पृष्ठ
पेट-दर्द या गोले का मंत्र	८३
उवसग्गहर-स्तोत्र	८३
तिजय पहुत्त स्तोत्र	८५
श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र	८७
वर्ण मंत्र	९६
बीजाक्षरों का संक्षिप्त कोष	९८

यंत्र-विद्या

द्वितीय खण्ड

विषय	पृष्ठ
यंत्र विद्या	३
श्री ऋषिमण्डल महायंत्र	५
देवी पंचांगुली महायंत्र	६
महाप्रभावक सर्वतोभन्द्र यंत्र	७
श्री घंटाकर्ण महायंत्र	८
चन्द्रप्रज्ञप्ति यंत्र	९
श्री मणिभद्रमहायंत्र	१०
चौसठ योगिनी महायंत्र	११
महाप्रभावक उवसग्गहर यंत्र	१२
भगवती पद्मावती महायंत्र	१३
विजयराज यत्र	१४
पन्द्रहिया यंत्रों का विधि-विधान	१५
ह्रीँ कारमयी-पन्द्रहिया यंत्र कल्प	१५
मुस्लिम पन्द्रहिया यंत्र कल्प	१७
पन्द्रहिया यंत्र कल्प	१८
पन्द्रहिया प्रश्नावली यंत्र	२०
पन्द्रहिया नागपश यंत्र	२१
बीसा यंत्रों का विधि-विधान	२२
बीसा यंत्र कल्प	२२
बीसा नागपाश यंत्र	२३
विघ्न हरण सांथिया बीसा यंत्र	२३
लक्ष्मी बीसा यंत्र	२४
कलह-निवारण बीसा यंत्र	२४
ऋणमुक्ति बीसा यंत्र	२५
आजीविका प्राप्ति बीसा यंत्र	२५
आत्मरक्षा बीसा यंत्र	२५
वशीकरण बीसा यंत्र	२६
सर्व-कार्य-सिद्धि बीसा यंत्र	२६
चौत्रीसिया यंत्र कल्प	२७
नवग्रह वीड़ा निवारण यंत्र	३०
एक अत्यन्त प्रभावशाली यंत्र	३२
बत्तीसिया कष्ट-निवारण यंत्र	३३
चौत्रीसिया लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	३३
पैंसठिया व्यापार-वृद्धि यंत्र	३३
बहत्तरिया वशीकरण यंत्र	३४
वशीकरण यंत्र	३४
पति वशीकरण यंत्र	३५
लड़की ससुराल रहे यंत्र	३५
व्यक्ति व सभामोहक वशीकरण यंत्र	३५
वर-वशीकरण यंत्र	३६
उवसग्गहर का लक्ष्मी वृद्धि कर यंत्र	३७
व्यापार में लाभ व वृद्धि कारक यंत्र	३८
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	३८
भाग्य वृद्धिकारी यंत्र	३८
शत्रु विजयी यंत्र	३८

विषय	पृष्ठ
मुकदमा विजयी यंत्र	३९
सर्वत्र विजयी यंत्र	४०
विघ्न हरण यंत्र	४०
अकाल-मृत्यु-निवारण यंत्र	४१
अकाल-मृत्यु-निवारण दूसरा यंत्र	४१
सर्व रोग निवारण यंत्र	४१
गर्भ स्तंभन यंत्र	४२
सुख प्रसव यंत्र	४२
सुख प्रसव यंत्र दूसरा	४२
बालक की रक्षा का यंत्र	४२
मासिक धर्मबन्द हो यंत्र	४३
पुराना-ज्वर-नाशक-यंत्र	४३
ज्वर निवारण यंत्र	४३
ज्वर निवारण बीसा यंत्र	४३
नित्य ज्वर निवारण यंत्र	४४
एकान्तर ज्वर निवारण यंत्र	४४
एकान्तर ज्वर निवारण यंत्र दूसरा	४४
मस्तक पीड़ा दूर यंत्र	४४
आंधा शीशी दूर यंत्र	४५
आंधा शीशी दूर यंत्र दूसरा	४५
आंधा शीशी दूर यंत्र तीसरा	४५
आंख दूखती रहे यंत्र	४५
कर्ण पीड़ा दूर यंत्र	४६
बन्द नाक बहे यंत्र	४६
दांत दूखता रहे यंत्र	४६
मुंह का छाला दूर हो यंत्र	४६
उदर रोग निवारण यंत्र	४७
पेट का आफरा मिटे यंत्र	४७
वायु-गोला-धरण दूर यंत्र	४७
दाद दूर हो यंत्र	४७
बाला (नहरवा) दूर यंत्र	४८
अण्डकोष वृद्धि रुके यंत्र	४८
नपुंसकता ठीक हो यंत्र	४८
स्वप्न दोष मिटे यंत्र	४९

विषय	पृष्ठ
स्तंभन शक्ति बढ़े-यंत्र	४९
मिरगी मिटे यंत्र	४९
शीतला (चेचक) मिटे यंत्र	५०
बवासीर यंत्र	५०
हैजा रोग मिटे यंत्र	५०
पीलिया रोग मिटे यंत्र	५१
शीतला (चेचक) रोग मिटे यंत्र दूसरा	५१
गुमड़ा, फोड़ा मिटे यंत्र	५२
बच्चे का सूखना बन्द हो यंत्र	५२
बच्चे के बुरे स्वप्न दूर हों यंत्र	५२
बच्चे का डब्बा रोग मिटे यंत्र	५२
भैंस के दूध देने का यंत्र	५३
गाय के दूध बढ़ाने का यंत्र	५३
स्त्री-गाय-भैंस के दूध बढ़ाना यंत्र	५३
मक्खन वृद्धि यंत्र	५३
खोया पशु वापस आए यंत्र	५४
अनाज में कीड़े नहीं पड़े यंत्र	५४
घर में आग नहीं लगे यंत्र	५४
फल वृद्धि यंत्र	५५
यात्रा सफल यंत्र	५५
द्यूत-विजय कर यंत्र	५५
कामनाशक यंत्र	५५
सम्मान वृद्धि यंत्र	५६
ज्ञान वृद्धि यंत्र	५६
वचन-सिद्धि यंत्र	५७
वैराग्योत्पत्ति कर यंत्र	५७
पक्षी आकर्षण यंत्र	५७
ऋण मुक्ति यंत्र	५८
शस्त्र न लगे यंत्र	५८
नजर न लगे यंत्र	५९
व्यंतर देव दोष निवारण यंत्र	५९
भूत, प्रेत, पिशाच आदि व्यंतर देव-दोष निवारण यंत्र	६०

विषय	पृष्ठ
खुलखुलिया निवारण यंत्र	६०
वृक्ष में फल अधिक लगे यंत्र	६०
प्रभावशाली मुस्लिम यंत्र	६०
प्रभावशाली मुस्लिम यंत्र दूसरा	६१
प्रेत निवारिणी पुतली	६२
प्रेत निवारण पलीता	६३
प्रेत निवारण पलीता	६४
चित्त नहीं उठे यंत्र	६५
छिपकली गांठ का यंत्र	६५
गोला नहीं उतरने का यंत्र	६५
सड़फ (सरण) बन्द होने का यंत्र	६६
बच्चे का रोना बन्द होने का यंत्र	६६

तंत्र-विद्या

तृतीय खण्ड

विषय	पृष्ठ
तंत्र-विद्या	३
क्लीँ बीज मंत्र	६
वाटक	६
आकर्षण संबंधी तंत्र प्रयोग	८
सम्मोहन सम्बन्धी तंत्र प्रयोग	८
वशीकरण सम्बन्धी तंत्र प्रयोग	१०
पुरुष-वशीकरण सम्बन्धी प्रयोग	११
स्त्री-वशीकरण सम्बन्धी प्रयोग	१२
कुछ अन्य तांत्रिक प्रयोग	१५
कल्पविभाग	२१
रुद्राक्ष कल्प	२१
रक्तगुंजा-कल्प	२५
मयूरशिखा कल्प	२६
सहदेवी कल्प	२७
बहेड़ा कल्प	२८
निर्गुण्डी कल्प	२८
हाथा जोड़ी कल्प	२९
श्वेतार्क कल्प	२९
नक्षत्र कल्प	३०
बान्दा नक्षत्र कल्प	३१
श्वेत सरपंखा तथा श्वेतलक्ष्मणा कल्प	३३
एकाक्षी नारियल कल्प	३४
श्री दक्षिणावर्त-शंख-कल्प	३५
गोरखमुंडी-कल्प	३६
विजया-कल्प	३७
गोरोचन कल्प	३८
औषध प्रकरण	३९
बाजीकरण सम्बन्धी प्रयोग	३९
स्तनवर्धन और उत्थापन के प्रयोग	३९
शिश्न कमजोर हो	४०
योनि-संकोचन	४०
शुक्र की कमजोरी पर	४०
कामशक्ति-वर्द्धक औषध	४१
कामोत्तेजक औषध	४१
रतिवर्द्धक लेप	४१
कामोत्तेजक औषध	४१
मुख सुगन्ध	४२
बगल (कांख) की बदबू दूर	४२
मुंह की झांई कालापन दूर हो	४२
सुभंगकरण औषध	४२
स्तंभन	४२
रत्न: भेद: विशेषता: प्रयोग	४३
जन्म-दिवस-पाषाण	४८
रत्न: उपयोग: फल: विधि	४९
राशि व ग्रह के अनुसार रत्न-धारण-विधान	५२

•••

मंगलाचरण

तेरापंथ-प्रवर्तक आचार्य भिक्षु : स्तवना

चैत्य पुरुष जग जाए।
देव ! तुम्हारा पुण्य नाम, मेरे मन में रम जाए।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ उद्गाता।
अर्हं अर्हं अर्हं अर्हं, अर्हं अर्हं त्राता।
ॐ ह्रीं श्रीं जय ॐ ह्रीं श्रीं जय, विजयध्वजा लहराए।।

ॐ जय भिक्षु भिक्षु जय ॐ, ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं।
विघ्नशमन ॐ व्याधिशमन ॐ, क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं।
नाम-मंत्र तव व्रण संरोहण सतत अमृत बरसाए।।

मिटे विषमता मन की, तन की, अनुभव की चिन्तन की।
पल-पल पग-पग मिले सफलता, तन्मयता चेतन की।
नाम-मंत्र तव भयहर विषहर, साम्य-सिन्धु गहराए।।

आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है, तुमने मन्त्र पढ़ाया।
आत्मा अचल अरुज शिव शाश्वत, नश्वर है यह काया।
आत्मा आत्मा के द्वारा ही, आत्मा में लय पाए।।

तुम निरुपद्रव हम निरुपद्रव, तुम हम सब हैं आत्मा।
तव जागृत आत्मा से हम सब, बन जाएं परमात्मा।
ॐ ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रैं ह्रः, अन्तर्मल धुल जाए।।

युवाचार्यश्रीमहाप्रज्ञजी

मंत्र-विद्या

नियत ध्वनियों के समूह को मंत्र कहते हैं। मंत्र वह विज्ञान या विधा है, जिससे शक्ति का उद्‌भव होता है। जहां मंत्र का विधिपूर्वक प्रयोग किया जाता है, वहां शक्तियों का निवास बना रहता है। मंत्र-साधन द्वारा देवी-देवता अपने आप वश में हो जाते हैं और मंत्र-योग की सिद्धि-प्राप्त साधक को संसार का समस्त वैभव सुलभ हो जाता है। इस भौतिकता प्रधान वैज्ञानिक युग में मानव सुख-सुविधा चाहता है और चमत्कार भी। पाखंडियों ने छल व प्रपंच का जाल इस प्रकार फैलाया कि केवल अपने साधारण स्वार्थ के लिए एक महान् विद्या के प्रति घृणा व अविश्वास पैदा करवा दिया। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि मंत्रों में शक्ति नहीं है या वे केवल वाग्जाल हैं। मंत्र आज भी विद्यमान हैं। चाहिए सिद्ध महा-पुरुष की छत्रछाया में साधना करने वाला। श्रद्धा, भक्ति व विश्वास से की गई साधना कभी निष्फल नहीं जाती। मंत्रों से होने वाले लाभ अचानक ही किसी की कृपा से प्राप्त नहीं हो जाते वरन् उनके द्वारा जो वैज्ञानिक प्रक्रिया अपने आप मंत्रवत् होती है, उससे लाभ होता है। मंत्रों का एक स्वतंत्र विज्ञान हैं।

विधि-क्रम

मंत्र साधना में सामान्यतया जो विधि अपनाई जाती है, उसकी कुछ मूलभूत क्रियाओं का ध्यान रखना आवश्यक है, जो निम्न प्रकार हैं—

१. स्थान पवित्र, शुद्ध व स्वच्छ होना चाहिए—जैसे देवस्थान, तीर्थभूमि, वन प्रदेश, पर्वत का उच्चस्थान, उपासनागृह और नदी का किनारा। घर में एकान्त, शान्त जहाँ ज्यादा आवाज न पहुंचे, ऐसी जगह उपासना गृह रखना चाहिए।

२. प्रभु प्रतिमा या चित्र को सम्मुख रखना चाहिए।

३. प्रत्येक मंत्र के जाप का समय व संख्या निर्धारित होती है, उसी के अनुरूप जप शुरू करना चाहिए और जितने समय तक जितनी संख्या में जप करना है, उसे विधि पूर्वक करना चाहिए। समय में फेर-फार कभी नहीं करना चाहिए।

४. वस्त्र धुला हुआ, स्वच्छ, शुद्ध व बिना सिला हुआ होना चाहिए।

५. धूप, दीप अवश्यं रखना चाहिए।

६. जब तक मंत्र की साधना चले, तब तक अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाने चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। नीतिमय जीवन बिताना चाहिए।

७. मंत्रों के शब्दों का उच्चारण शुद्ध व बहुत धीमा होना चाहिए। सबसे अच्छा है, मानस जप करें।

८. मंत्र की उपासना, ध्यान, पूजन और जप श्रद्धा व विश्वासपूर्वक करना चाहिए।

९. दिशा, काल, मुद्रा, आसन, वर्ण, पुष्प, माला, मंडल, पल्लव और दीपनादि प्रकार को जानकर ही किसी मंत्र की साधना प्रारंभ की जानी चाहिए।

दिशा—वशीकरण कर्म को उत्तराभिमुख होकर, आकर्षण कर्म को दक्षिणाभिमुख होकर, स्तंभन कर्म को पूर्वाभिमुख होकर, शान्तिकर्म को पश्चिम की ओर मुंह कर, पौष्टिक कर्म को नैऋत्य की ओर मुंह कर, मारण कर्म को ईशानाभिमुख होकर, विद्वेषण कर्म को आग्नेय की ओर व उच्चाटन कर्म को वायव्य की ओर मुंह कर साधित करना चाहिए।

काल—शान्ति कर्म को अर्धरात्रि में, पौष्टिक कर्म को प्रभात में, वशीकरण, आकर्षण व स्तंभन कर्म को दिन के बारह बजे से पहले पूर्वाह्न में, विद्वेषण कर्म को मध्याह्न में, उच्चाटन कर्म को दोपहर बाद अपराह्न में व मारण कर्म को संध्या समय में साधित करना चाहिए।

मुद्रा—वशीकरण में सरोज मुद्रा, आकर्षण कर्म में अंकुश मुद्रा, स्तंभन कर्म में शंख मुद्रा, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में ज्ञानमुद्रा, मारण कर्म में वज्रासनमुद्रा, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में पल्लव मुद्रा का उपयोग विहित है।

आसन—आकर्षण कर्म में दण्डासन, वशीकरण में स्वस्तिकासन, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में पद्मासन, स्तंभन कर्म में वज्रासन, मारण कर्म में भद्रासन, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में कुक्कुटासन का प्रयोग करना चाहिए।

वर्ण—आकर्षण कर्म में उदय होते हुए सूर्य के जैसा वर्ण, वशीकरण कर्म में रक्त-वर्ण, स्तंभन कर्म में पीतवर्ण, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में चन्द्रमा के समान सफेद वर्ण, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में धूम्रवर्ण, निषेध तथा मारण कर्म में कृष्ण वर्ण ध्यातव्य है।

तत्त्वध्यान—आकर्षण कर्म में अग्नि, वशीकरण कर्म व शान्तिकर्म में जल, स्तंभन व पौष्टिक कर्म में पृथ्वी, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में वायु व मारण कर्म में व्योम ध्यातव्य है।

पुष्प—स्तंभनकर्म में पीले, आकर्षण कर्म व वशीकरण कर्म में लाल, मारण उच्चाटन, विद्वेषण कर्म में काले, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में सफेद पुष्प प्रयोजनीय हैं।

माला—आकर्षण कर्म व वशीकरण कर्म में मूंगे की माला, स्तंभन कर्म में सुवर्ण की माला, शान्ति कर्म में स्फटिक की माला, पौष्टिक कर्म में मोती की माला, मारण, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में पुत्रजीवक की माला व्यवहार्य है।

हस्त—आकर्षण, स्तंभन, शान्ति कर्म, पौष्टिक कर्म, मारण, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में दक्षिण तथा वशीकरण में वामहस्त का प्रयोग विहित है।

अंगुलि—आकर्षण कर्म में कनिष्ठा, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में मध्यमा, वशीकरण में अनामिका, स्तंभन, मारण, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में तर्जनी का प्रयोग किया जाता है।

पल्लव—आकर्षण में वौषट्, वशीकरण में वषट्, स्तंभन व मारण कर्म में घे घे, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में स्वाहा, विद्वेषण कर्म में हुं, उच्चाटन कर्म में फट्, इस तरह पल्लव समझना चाहिए।

मंडल—वशीकरण कर्म में अग्निमंडल के बीच, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में वरुण मंडल के बीच, स्तंभन मोहन आदि में महेन्द्र मंडल के बीच, चक्र व साध्य का नाम रखना चाहिए।

दीपक व धूप—साधक को दाहिनी तरफ दीपक और बाईं तरफ धूप रखना चाहिए।

दीपनादि प्रकार—दीपन से शान्तिकर्म, पल्लव से विद्वेषणकर्म, संपुट से वशीकरण कर्म, रोधन से बन्धन, ग्रंथन से आकर्षणकर्म, विदर्भण से स्तंभन कर्म होता है। ये छः भेद हर एक मंत्र में लागू होते हैं। उदाहरण स्वरूप—

१. मंत्र के प्रारंभ में नाम की स्थापना करे तो दीपन कहा जाता है जैसे—देवदत्त ह्रीं।

२. मंत्र के अंत में नाम की स्थापना करे तो पल्लव कहा जाता है, जैसे— ह्रीं देवदत्त।

३. मंत्र के मध्य भाग में नाम की स्थापना करें तो संपुट कहा जाता है, जैसे—ह्रीं देवदत्त ह्रीं।

४. मंत्र के प्रारंभ में व मध्य में नामोल्लेख करें तो रोधन कहा जाता है जैसे—देव ह्रीं दत्त ह्रीं।

५. एक मंत्राक्षर दूसरा नामाक्षर, तीसरा मंत्राक्षर चौथा नामाक्षर इस तरह संकलित करें तो ग्रंथन कहा जाता है, जैसे ह्रीं दे ह्रीं व ह्रीं द ह्रीं त्त।

६. मंत्र के दो दो अक्षरों के बाद एक एक नामाक्षर रक्खें तो उसे संकलित कहते हैं जैसे—ह्रीं ह्रीं दे ह्रीं ह्रीं व ह्रीं ह्रीं द ह्रीं ह्रीं त्त।

मंत्र-ग्रहण: दिवस : नक्षत्र: फल

दिवस-फल इस प्रकार है—रविवार : धनलाभ, सोमवार : शान्ति, मंगलवार : आयुष्यक्षय, बुद्धवार : सौन्दर्य लाभ, गुरुवार : ज्ञान-वृद्धि, शुक्रवार : सौभाग्य, शनिवार : वंशहानि।

मंत्र-ग्रहण : नक्षत्र-फल इस प्रकार है—अश्विनी-शुभ, भरणी-मरण, कृत्तिका-दुःख, रोहिणी-ज्ञानलाभ; मृगशीर्ष-सुख, आर्द्रा-बन्धुनाश, पुनर्वसु-धन, पुष्य-शत्रुनाश, अश्लेषा-मृत्यु, मघा-दुःखमोचन, पूर्वा फाल्गुनी-सौन्दर्य, उत्तरा फाल्गुनी-ज्ञान, हस्त-धन, चित्रा-ज्ञानवृद्धि, स्वाति-शत्रुनाश, विशाखा-दुःख, अनुराधा-बंधुवृद्धि, ज्येष्ठा-पुत्र हानि, मूल-कीर्तिवृद्धि, पूर्वाषाढ़ा-यशवृद्धि, उत्तराषाढ़ा-यशवृद्धि, श्रवण-दुःख, धनिष्ठा-दारिद्रय, शतभिषा-बुद्धि, पूर्वाभाद्रपद व उत्तरा भाद्रपद-सुख, रेवती-कीर्तिवृद्धि।

मकर संक्रान्ति, कर्क संक्रान्ति, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, सोमवार-अमावस्या, मंगलवार-चतुर्दशी, रविवार-सप्तमी हो तो मंत्र ग्रहण करने में शुभ हैं।

पंचोपचार पूजा : आह्वान, स्थापन, सन्निधीकरण, पूजन व विसर्जन को पंचोपचार पूजा कहते हैं।

हवन, तर्पण, मार्जन : मंत्र-साधना में पूजा, ध्यान, जप व चौथा कार्य हवन आता है। मंत्र-देवता की पूजा करनी आवश्यक होती है, वैसे ही ध्यान करना जरूरी होता है। मंत्र का जाप करना भी जरूरी होता है और वैसे ही हवन करना भी। सामान्यतया दशम अंश होम करना होता है। जैसे १०००० मंत्र का जाप किया गया है तो दशमांश १००० अग्नि देवता को योग्य द्रव्यों की आहुति देनी होती है। जहां विशिष्ट क्रिया-स्वरूप मंत्र का पुरश्चरण करना होता है, वहां पूजा, ध्यान, जप व हवन के बाद तर्पण, ब्रह्म-भोजन तथा मार्जन आदि क्रिया करनी होती है। सामान्यतया हवन का दशमांश तर्पण तर्पण का दशमांश ब्रह्म-भोजन और ब्रह्म-भोजन का दशमांश मार्जन करना होता है।

तर्पण—मंत्र बोलकर देवता को जल अर्पण करने को तर्पण कहते हैं।

ब्रह्मभोजन—ब्राह्मणों को मिष्ट भोजन कराया जाय, उसको ब्रह्म भोजन कहते हैं।

मार्जन—मंत्र बोलकर शरीर पर जल का छींटा देने को मार्जन कहते हैं, जिससे शरीर-शुद्धि होती है।

योग्य द्रव्यों के अभाव में यदि अग्नि देवता को आहुति न दी जा सके तो मंत्र-विशारद कहते हैं कि जितनी हवन की संख्या हो, उससे चार गुना जाप और कर लेना चाहिए। जैसे १० हजार जाप किसी मंत्र का किया तो दशम अंश--१००० होम करना होता है तो ४००० जप और कर लेना चाहिए।

आसन : विशेष

जिसके द्वारा शारीरिक व मानसिक स्थिरता प्राप्त हो, उस बैठक में स्थिर होना आसन कहलाता है। आसनों से स्वास्थ्य-रक्षा, सहन-शक्ति का विकास व मानसिक एकाग्रता निष्पन्न होती है। आसनों के लिए एकान्त, अनुकूल संयोग, समाधि-सहित ध्यान हो सके व जहां किसी प्रकार की चिन्ता व भय प्राप्त होने की आशंका न हो, ऐसा स्थान होना चाहिए। महर्षि पतंजलि ने योग के आठ अंगों में तीसरा अंग आसन बताया है। कुछ आसनों का यहां विवरण दिया जा रहा है, जो ध्यान साधना में सहायक हैं।

१. **पर्यंकासन**—इसे सुखासन भी कहते हैं। दोनों जंघाओं के नीचे का भाग पांव के ऊपर करके बैठे यानी पालथी मारकर बैठें और दाहिना व बायां हाथ नाभि कमल के पास ध्यान-मुद्रा में रखें।

२. **वीरासन**—दाहिना पैर बाईं जंघा पर व बायां पैर दाहिनी जंघा पर रख कर स्थिरता से बैठें।

३. **वज्रासन**—वीरासन की मुद्रा में पीठ की तरफ से लेकर दाहिने पैर का अंगूठा दाहिने हाथ से और बायें पैर का अंगूठा बायें हाथ से पकड़े तो वज्रासन होता है।

४. **पद्मासन**—दायां पैर बाईं जंघा पर रखें और बायां पैर दाईं जंघा पर। एड़ियां परस्पर मिली हुई हों। दोनों घुटने जमीन से स्पर्श न करें तो पद्मासन होता है।

५. **भद्रासन**—पुरुष-चिह्न के आगे पांव के दोनों तलुए मिलाकर उनके ऊपर दोनों हाथ की उंगलियां परस्पर एक के साथ करने के बाद दसों उंगलियां ठीक तरह से दीखती रहें, इस प्रकार हाथ जोड़कर बैठना भद्रासन है।

६. **दण्डासन**—जिस आसन में बैठने से उंगलियां, गुल्फ व जंघा भूमि से स्पर्श करें, इस प्रकार पांवों को लम्बे कर बैठना दण्डासन कहा जाता है।

७. **उत्कटिकासन**—गुदा और एड़ी के संयोग से दृढ़तापूर्वक बैठें तो उत्कटि-कासन होता है।

८. **गो दोहिकासन**—गाय दुहने को बैठते हैं, उस तरह बैठना, ध्यान करना, गो दोहिकासन कहलाता है।

९. **कायोत्सर्गासन**—खड़े-खड़े दोनों भुजाओं को लम्बी कर घुटने की तरफ बढ़ाना या बैठे-बैठे काया की अपेक्षा नहीं रखकर ध्यान करना कायोत्सर्गासन कहलाता है।

[**नोट**—ध्यान करने को खड़े रहते हैं, उस समय हाथों को दाहिनी बाईं ओर ज्यादा फैलाना नहीं चाहिए। सीधे हाथ रखकर खड़े रहते समय पांवों की उंगलियों के बीच में चार अंगुल अन्तर रखना व एड़ियों के बीच में चार अंगुल से कम अन्तर रखकर खड़े रहना चाहिए। इस तरह खड़े रहने से से जिन-मुद्रा बन जाती है और ध्यान करने में यह बहुत ही उपयोगी है। अतः अनुकूलता व शारीरिक शक्ति के अनुसार अपनी आसन-सिद्धि कर लेनी चाहिए। ध्यान करने के लिए बैठें तब झुककर अथवा शरीर को शिथिल बनाकर नहीं बैठना चाहिए, जिससे श्वास की नली व रीढ़ की हड्डी सीधी रहे और श्वास रोकने व निकालने में बाधा न आवे। जो इस तरह सुखासन पर बैठते हैं, उनका ध्यान अच्छा जमता है।]

हाथों की मुद्राएं

आवाहन आदि पंचोपचार पूजा में मुद्राओं का भी विधान है। कुछ मुद्राओं का विवरण निम्न रूप से है :

आवाहन मुद्रा—दोनों हाथ बराबर कर अंजलि की तरह अंगूठों को अनामिका के मूल पर्व के पास लगायें, इसे आवाहनी मुद्रा कहते हैं।

स्थापन-मुद्रा—आवाहन मुद्रा को उल्टा करके बतायें तो स्थापन-मुद्रा हो जाती है।

सन्निधान-मुद्रा—दोनों हाथों की मुट्ठियां बन्द कर अंगूठों को ऊपर सीधा करके रखें, इसे सन्निधान मुद्रा कहते हैं।

सन्निरोध-मुद्रा—दोनों हाथों की मुट्ठियां बन्द कर अंगूठों को भी भीतर दबा लें, इसे सन्निरोध मुद्रा कहते हैं।

अवगुण्ठन-मुद्रा—दोनों हाथों की मुट्ठियां बन्द कर दोनों तर्जनी उंगलियों को लम्बा करें व अंगूठों को मध्यम उंगलियों पर रखें, इसे अवगुण्ठन मुद्रा कहते हैं।

अस्त्र-मुद्रा—दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा उंगली लम्बी करें, इसे अस्त्र-मुद्रा कहते हैं।

ध्यान रखने योग्य बातें

मंत्र-साधना करते समय निम्नांकित बातों पर ध्यान रखना चाहिए :

१. स्वच्छ रहना चाहिए व स्वच्छ वस्त्र पहनना चाहिए।

२. स्थान स्वच्छ व शुद्ध होना चाहिए। हर रोज झाड़ू लगाकर उसे गीले कपड़े से पोंछना चाहिए।

३. नीच व्यक्तियों के साथ वार्तालाप व उनका स्पर्श नहीं करना चाहिए। इससे दूषित परमाणुओं से पवित्रता नष्ट होती है।

४. असत्य नहीं बोलना चाहिए, क्रोध नहीं करना चाहिए तथा जहां तक हो सके मौन रखना चाहिए।

५. चित्त स्थिर व स्वस्थ रखना चाहिए।

६. भोजन सात्त्विक व हल्का होना चाहिए और वह भी एक समय हो तो बहुत ही अच्छा रहे।

७. भोजन व पानी लेते समय मूल मंत्र से अभिमंत्रित कर ग्रहण करना चाहिए।

८. जमीन पर सोना चाहिए। वह भी जहां साधना की जाय उसी के पास व नीचे कपड़ा बिछा कर सोना चाहिए व अंधेरे में नहीं सोना चाहिए।

९. हजामत नहीं बनानी चाहिए तथा गरम पानी से स्नान नहीं करना चाहिए।

१०. किसी को शाप या आशीर्वाद नहीं देना चाहिए।

११. अपना नित्यकर्म बराबर करते रहना चाहिए।

१२. किसी भी धर्मशास्त्र की व व्यक्ति की निन्दा नहीं करनी चाहिए।

१३. काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, हिंसा, असत्य से जहां तक हो सके, बचना चाहिए।

१४. निर्भय होना चाहिए, मंत्र-देवता व गुरु की उपासना, श्रद्धा, भक्ति तथा विश्वासपूर्वक करनी चाहिए।

•••

जप

मोक्ष-प्राप्ति के लिए, ग्रह-शान्ति के लिए, सर्व प्रकार की सिद्धि के लिए भारतीय महर्षियों ने जप को उत्तम साधन माना है।

जप तीन प्रकार के बताए हैं—मानस जप, उपांशु जप तथा वाचिक जप।

मानस-जप—जिस जप में मन्त्र की अक्षर पंक्ति के एक वर्ण से दूसरे वर्ण, एक पद से दूसरे पद तथा शब्द और अर्थ का मन द्वारा बार-बार मात्र चिन्तन होता है, उसे मानस जप कहते हैं। यह साधना की उच्च कोटि का जप कहलाता है।

उपांशु-जप—जिस जप में केवल जिह्वा हिलती है या इतने हलके स्वर से जप होता है, जिसे कोई सुन न सके, उसे उपांशु जप कहा जाता है। यह मध्यम प्रकार का जप माना जाता है।

वाचिक जप—जप करने वाला ऊंचे-नीचे स्वर से, स्पष्ट तथा अस्पष्ट पद व अक्षरों के साथ मन्त्र का बोलकर पाठ करते हैं, उसे वाचिक जप कहते हैं।

दो तरह के और भी जप बताए हैं—सगर्भ जप और अगर्भ जप। सगर्भ जप प्राणायाम के साथ किया जाता है और जप के प्रारम्भ में व अन्त में प्राणायाम किया जाय, उसे अगर्भ जप कहते हैं। इसमें प्राणायाम और जप एक-दूसरे के पूरक होते हैं।

मन्त्र-विशारद कहते हैं कि वाचिक जप एक गुना फल देता है, उपांशु जप सौ गुना फल देता है और मानस जप हजार गुना फल देता है। सगर्भ जप मानस जप से भी श्रेष्ठ है। मुख्यतया साधकों को उपांशु या मानस जप पर ही अधिक प्रयास करना चाहिए।

श्री सिंह तिलकसूरि ने मंत्राधिराज कल्प में निम्न रूप से तेरहं प्रकार के जप बताये हैं—

रेचक-पूरक-कुंभा गुण त्रय स्थिर कृति स्मृति हक्का।
नादो ध्यानं ध्येयैकत्वं तत्त्वं च जप भेदाः॥

१. रेचक जप, २. पूरक जप, ३. कुंभक जप, ४. सात्त्विक जप, ५. राजसिक जप, ६. तामसिक जप, ७. स्थिरकृति जप, ८. स्मृति जप, ९. हक्का जप, १०. नाद जप, ११. ध्यान जप, १२. ध्येयैक्य जप, १३. तत्त्व जप।

१. **रेचक जप**—नाक से सांस को बाहर निकालते हुए जो जप किया जाता है, रेचक जप कहलाता है।

२. **पूरक जप**—नाक से सांस को भीतर लेते हुए जो जप किया जाय, पूरक जप कहलाता है।

३. **कुंभक जप**—सांस को भीतर स्थिर करके जो जप किया जाय, उसे कुंभक जप कहते हैं।

४. **सात्त्विक जप**—शान्ति कर्म के लिए जो जप किया जाता है, उसे सात्त्विक जप कहते हैं।

५. **राजसिक जप**—वशीकरण आदि के लिए जो जप किया जाय, उसे राजसिक जप कहते हैं।

६. **तामसिक जप**—उच्चाटन व मारण आदि के लिए जो जप किया जाय, वह तामसिक जप कहलाता है।

७. **स्थिरकृति जप**—चलते हुए सामने विघ्न देखकर स्थिरतापूर्वक जो जप किया जाता है, उसे स्थिरकृति जप कहते हैं।

८. **स्मृति जप**—दृष्टि को नाक के अग्र भाग पर स्थिर कर मन में जो जप किया जाता है, उसे स्मृति जप कहते हैं।

९. **हक्का जप**—सांस लेते समय या बाहर निकालते समय हक्कार का विलक्षणतापूर्वक उच्चाटन हो, उसे हक्का जप कहते हैं।

१०. **नाद जप**—जप करते समय भंवरे की आवाज की तरह अन्तर में आवाज उठे, उसे नाद जप कहते हैं।

११. **ध्यान जप**—मंत्र-पदों का वर्णादिपूर्वक ध्यान किया जाय, उसे ध्यान जप कहते हैं।

१२. **ध्येयैक्य जप**—ध्याता व ध्येय की एकता वाला जप ध्येयैक्य जप कहलाता है।

१३. **तत्त्व जप**—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—इन पांच तत्त्वों के अनुसार जो जप किया जाय, तत्त्व जप कहा जाता है।

मंत्र-जप कहां करना चाहिए

मंत्र-विशारद कहते हैं कि घर में किया हुआ जप एक गुना फल देता है, पवित्र वन या उद्यान में किया हुआ जप हजार गुना फल देता है, पर्वत पर किया गया जप दस हजार गुना फल देता है, नदी पर किया हुआ जप एक लाख गुना फल

देता है, देवालय व उपाश्रय में किया गया जप एक करोड़ गुना फल देता है तथा भगवान् के समक्ष किया गया जप अनन्त गुना फल देता है।

जप के लिए आसन

पत्थर या शिला पर बिना कोई आसन बिछाये जप कभी नहीं करना चाहिए। सबसे अच्छा यह है कि काठ के पट्टे पर ऊनी वस्त्र, कम्बल या मृगचर्म बिछाकर उस पर बैठकर जप करना चाहिए। यदि काठ का पट्टा उपलब्ध न हो तो ऊनी वस्त्र या मृगचर्म बिछा कर उस पर बैठकर जप करना चाहिए।

मंत्र-विशारदों की मान्यता है कि—बांस का आसन व्याधि व दरिद्रता देता है, पत्थर का आसन बीमारी लाता है, धरती का आसन दुःखानुभव कराता है, काष्ठ का आसन दुर्भाग्य लाता है, तिनकों का आसन यशनाश कराता है, पत्तों का आसन चित्त-विक्षेप कराता है।

कपास, कम्बल, व्याघ्र व मृगचर्म का आसन ज्ञान, सिद्धि व सौभाग्य प्राप्त कराता है।

काले मृगचर्म का आसन ज्ञान व सिद्धि प्राप्त कराता है। व्याघ्र चर्म का आसन मोक्ष व लक्ष्मी प्राप्त कराता है, रेशम का आसन पुष्टि कराता है, कम्बल का आसन दुःख नाश कराता है, कई रंगों की कम्बल का आसन सर्वार्थ-सिद्धि देने वाला होता है।

मंत्र-जप कब करना चाहिए

सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण—उत्तम काल कहलाता है।

कर्क संक्रान्ति व मकर संक्रान्ति—मध्यम काल है।

रविवार व अमावस्या—कनिष्ठ काल है।

तालाब या नदी में कमर तक के जल में खड़े होकर मूल मंत्र का १०८ जप तो करना ही चाहिए।

सात्त्विक मंत्रों के लिए जप तीनों समय उत्तम माना गया है यानी—सूर्योदय के एक घंटा पहले से एक घंटा बाद तक, मध्याह्न के एक घंटा पहले से एक घंटा बाद तक व सूर्यास्त से एक घंटा पहले से एक घंटा बाद तक।

मंत्र-जप के समय माला का हाथ कहां रहना चाहिए

१. प्रातःकाल नाभि पर हाथ रखकर जप करना चाहिए।

२. मध्याह्न में हृदय के आगे हाथ रखकर जप करना चाहिए।

३. संध्याकाल में मुख के आगे हाथ रखकर जप करना चाहिए।

यदि यह नहीं बन सके तो सामान्य रूप से हाथ को हृदय के पास स्पर्श करते हुए माला से जप करना चाहिए।

मंत्र-जप के समय कपड़े कैसे होने चाहिए

सामान्यतया सफेद, धुले हुए स्वच्छ वस्त्र हों, पर अलग-अलग मंत्रों के जप के समय अलग-अलग रंगों के वस्त्र का विधान है। अतः जिस-जिस मंत्र में जिस रंग के वस्त्र बताये गए हों, उन्हीं रंगों के वस्त्र पहनने चाहिए। परन्तु सिले हुए वस्त्र कभी नहीं पहनने चाहिए। मुख्यतया एक वस्त्र कमर से लेकर नीचे तक चोल पट्टे की तरह यानी लूंगी के समान बांधना चाहिए व एक वस्त्र गले से लेकर कमर तक लटका हुआ होना चाहिए।

मंत्र-जप-निषेध

मंत्र-जप-विशारद निम्न प्रकार से जप करने का निषेध करते हैं—

१. नग्न होकर जप नहीं करना चाहिए।
२. सिले हुए वस्त्र पहनकर जप नहीं करना चाहिए।
३. शरीर व हाथ अपवित्र हों तो जप नहीं करना चाहिए।
४. मस्तक के बाल खुले रखकर जप नहीं करना चाहिए।
५. आसन बिछाये बिना जप नहीं करना चाहिए।
६. बातें करते हुए जप नहीं करना चाहिए।
७. अन्य मनुष्यों की उपस्थिति में जप नहीं करना चाहिए।
८. हाथ व मस्तक ढके बिना जप नहीं करना चाहिए।
९. अस्थिर चित्त से जप नहीं करना चाहिए।
१०. रास्ते चलते हुए व रास्ते में बैठकर जप नहीं करना चाहिए।
११. भोजन करते समय जप नहीं करना चाहिए।
१२. निद्रा लेते समय जप नहीं करना चाहिए।
१३. उल्टे-सीधे बैठकर या पैर लम्बे करके जप नहीं करना चाहिए।
१४. छींक नहीं लेनी चाहिए, खखारना नहीं चाहिए, थूकना नहीं चाहिए, नीचे के अंगों को स्पर्श नहीं करना चाहिए व भयभीत अवस्था में भी जप नहीं करना चाहिए।
१५. अंधकार वाले स्थान में जप नहीं करना चाहिए।
१६. अशुद्ध व अशुचि युक्त स्थान में जप नहीं करना चाहिए।

जप के सम्बन्ध में किसी कवि ने बड़ा ही सुन्दर कहा है—

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख मांहि।
मनवा तो चहुं दिशि फिरे, तो यह सुमिरन नाहिं॥ — संत कबीर

गणना व माला

जप की गणना के तीन प्रकार बतलाये गए हैं: वर्ण-माला-जप, अक्ष-माला-जप व कर-माला-जप।

वर्ण माला-जप

वर्णमाला के अक्षरों के आधार पर जप-संख्या की गणना की जाय, उसे वर्ण माला-जप कहते हैं। जैसे प्रत्येक मंत्र के शेष में अं, आं, कं, तं आदि लगा दिये जाते हैं और पूरी वर्णमाला के ५० अक्षर लगाने के बाद ५० की एक माला का क्रम निर्धारित कर लिया जाता है।

अक्ष-माला-जप

मनकों की माला पर जो जप किया जाता है, उसे अक्ष-माला-जप कहते हैं। अक्ष-माला में १०८ मनकों की माला को प्रधानता प्राप्त है और उसके पीछे भी व्यवस्थित वैज्ञानिक रहस्य है।

पंच परमेष्ठी को नमस्कार करके उनके एक सौ आठ गुण रूप मंत्र का जाप करते हैं। ये १०८ गुण निम्न प्रकार से हैं :—

बारस गुण अरहंता, सिद्ध अट्ठे व सूरि छतीसं।
उज्झाया पणवीसं, साहु सत्तबीस अट्ठसयं॥

अर्थात्—अर्हत् के बारह गुण, सिद्धों के आठ गुण, आचार्यों के छत्तीस गुण, उपाध्यायों के पच्चीस गुण व साधुओं के सत्ताईस गुण-सर्व मिलाकर पंचपरमेष्ठी के १०८ गुण होते हैं, इसी कारण नवकर वाली (माला) के भी १०८ मनके होते हैं।

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली का कथन है कि : जीवन् जगत् और सृष्टि का प्राणाधार सूर्य है, जो कि एक मास में एक वृत्त पूरा कर लेता है। खगोलीय वृत्त ३६० अंशों का निर्मित है और यदि इसकी कलाएं बनाई जायं तो ३६० + ६० = २१६०० सिद्ध होती हैं। चूंकि सूर्य छः महीने तक उत्तरायण तथा शेष छः महीने दक्षिणायन में रहता है, अतः एक वर्ष में दो अयन होने से यदि इन कलाओं के दो भाग करें तो एक भाग १०८०० का सिद्ध होता है। सामंजस्य हेतु अन्तिम बिन्दुओं से संख्या को मुक्त कर दें तो शुद्ध संख्या १०८ बच रहती है इसलिए भारतीय धर्म ग्रंथों में उत्तरायण सूर्य के समय सीधे तरीके से तथा दक्षिणायन सूर्य के समय दायें-बायें तरीके से १०८ मनकों की माला फेरने का विधान है, जिससे कार्य सिद्धि में पूर्ण सफलता मिलती है।

भारतीय कालगति में एक दिन रात का परिणाम ६० घड़ी माना है, जिसके ६० × ६० = ३६०० पल तथा ३६०० × ६० = २१६००० विपल सिद्ध होते हैं। इस प्रकार इसके दो भाग करने से १०८००० विपल दिन के और इतने ही रात के सिद्ध होते हैं और शुद्ध शुभकार्य में अहोरात्र का पूर्व भाग दिन को ही उत्तम माना है, जिसके विपल १०८००० हैं अतः उस शुभ कार्य में १०८ मनकों की माला को प्रधानता देना तर्क-संगत और वैज्ञानिक है।

माला कितनी फेरनी चाहिए, किस हाथ से, कौन सी उंगलियों से किस वस्तु की बनी माला होनी चाहिए, इस सम्बन्ध में अलग-अलग विधान बतलाये गए हैं। सामान्यतया निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

१. माला बनाते समय अर्हं का जाप करते रहना चाहिए।

२. गौतमीय तंत्र में कहा है—

मुखे मुखंतु संयोज्य, पुच्छे पुच्छं तु योजयेत् ।
गो पुच्छ सदृशी माला, यद्वा सर्पाकृतिः शुभा ॥

मनकों का मुख के साथ मुख व पुच्छ के साथ पुच्छ मिलाकर माला पिरोनी चादिए। गो पुच्छ अथवा सर्पाकृति माला शुभ होती है।

मनकों का स्थूल भाग मुख व पतला भाग पुच्छ कहलाता है। वैसे ही रुद्राक्ष का ऊपर का भाग मुख व नीचे का भाग पुच्छ कहलाता है। पहले मोटे मनके पिरोये जायं फिर पतले मनके, उसे गोपुच्छ माला कहते हैं। और बीच में मोटे व बाजू में पतले मनके पिरोये जायं उसे सर्पाकृति माला कहते हैं। इन्हीं मालाओं को प्रयोग में लेना चाहिए।

३. माला बनाने में जो धागा काम में लेते हैं, उसके लिए कहा गया है कि सफेद धागा पौष्टिक एवं शान्तिकारक, लाल धागा आकर्षण-वशीकरण, पीला धागा स्तंभन, काला धागा मारण आदि कार्य में प्रयुक्त किया जाता है।

४. माला अनेक तरह की होती है जैसे : सोना, चांदी, मुक्ता, स्फटिक, चंदन, तुलसी, मूंगा, शंख, अकलबेर, केरवा, वैजयन्ती, पुत्रजीवक, सूत, रेशम व रुद्राक्ष आदि।

सूर्य का प्रतीक स्फटिक मोक्षकामी व्यक्तियों की माला में प्रयुक्त होता है। मूंगे और रक्तचन्दन की माला आकर्षण, वशीकरण व श्रीप्राप्ति के कर्मों में उपयोगी मानी गई है। रुद्राक्ष की माला का अपना महत्त्व है। रुद्राक्ष पापनाशक है और सर्वसिद्धि प्रदान करता है अतः रुद्राक्ष की माला सर्वोत्तम है। प्लास्टिक, रेडियम आदि की माला का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए।

५. ग्रहों के जप में विविध मालाओं का अलग-अलग महत्त्व है। मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरण आदि में १५ मनकों की माला, मोक्ष प्राप्ति व अभिचार कर्म में २५ मनकों की माला, मोक्षसिद्धि के लिए ५० व १०० मनकों की माला, प्रिय-प्राप्ति के लिए ५४ मनकों की माला और समस्त प्रकार की सिद्धि के लिए १०० मनकों की माला का विधान किया गया है। २७ मनकों की माला पुष्टि दायिनी, ३० मनकों की माला धन दायिनी मानी गई है।

६. उंगली से जप की गणना करने से एक गुना फल मिलता है, रेखा से जप की गणना करने से आठ गुना फल मिलता है। पुत्रजीवक के बीज की माला से गणना करने से दस गुना, शंख के मनकों की माला से गणना करने से सौ गुना,

मूंगे की माला से हजार गुना, स्फटिक की माला से दस हजार गुना, मोती की माला से लाख गुना, पद्माक्ष की माला से दस लाख गुना, सोने की माला से करोड़ गुना अधिक फल मिलता है परन्तु रुद्राक्ष की माला से गणना करने से अनन्त गुना अधिक फल मिलता है।

७. माला दाहिने हाथ में ही रखनी चाहिए।

८. माला पृथ्वी पर गिरनी नहीं चाहिए, उस पर धूल व गर्द नहीं जमनी चाहिए।

९. माला अंगूठे, मध्यमा व अनामिका से फेरना ठीक है। दूसरी उंगली तर्जनी से भूलकर भी माला नहीं फेरना चाहिए।

१०. मनकों के नाखून नहीं लगना चाहिए।

११. माला में जो सुमेरु होता है, उसे लांघना नहीं चाहिए। यदि दूसरी माला फेरना हो तो वापस माला बदल कर फेरें। मनके फिराते समय सुमेरु जमीन को कभी भी न छुए, यह ध्यान रखने योग्य है।

१२. माला फिराते समय हाथ व माला पर एक कपड़ा रखना चाहिए पर वह कपड़ा माला फेरते समय पौरवों के बीच नहीं आना चाहिए।

१३. नई माला अर्हं का जाप करते हुए पिरोनी चाहिए एवं अच्छे मुहूर्त में ही वह पिरोई जानी चाहिए।

माला पिरोने के बाद 'ओं ह्रीं अर्हं नमः' मंत्र बोलते हुए उसे पंचामृत में धोकर एक भोजपत्र पर भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति के आगे रखकर निम्न मंत्र को १०८ बार बोलकर कुंकुम, फूल आदि अर्पित कर फिर माला का ग्रहण करना चाहिए।

ओं ह्रीं रत्नैः सुवर्णैर्बीजैर्या रचिता जप मालिका।
सर्व जापेषु सर्वाणि वाञ्छितानि प्रयच्छतु॥

तत्पश्चात् माला को मस्तक से छुआ कर फिर जप की गणना में काम में लेना चाहिए।

कर-माला-जप

हाथ की उंगलियों के पौरवों पर जो जप किया जाता है, उसे कर-माला-जप कहते हैं। नित्य सामान्यतः बिना माला के भी जप किया जा सकता है परन्तु विशिष्ट कार्य या अनुष्ठान-प्रयोग में माला व्यवहार में लाई जाती है। कर-माला आवर्त सात होते हैं :

१. शंखावर्त २. नन्दावर्त ३. नव पदावर्त ४. ओंकारावर्त ५. ह्रीं कारावर्त ६. श्रीं कारावर्त ७. सिद्धावर्त।

●●●

सकलीकरण

किसी भी मंत्र की साधना अर्थात् जप शुरू करने से पहले जो आवश्यक क्रिया करनी होती है, उसे सकलीकरण कहते हैं। कई विद्वान् इसे अंगन्यास व भूतशुद्धि भी कहते हैं। ज्वालामालिनी-कल्प के रचयिता इन्द्रमुनि व भैरव पद्मावती-कल्प के रचनाकार मल्लिषेण मुनि इसे सकलीकरण क्रिया ही कहते हैं।

जो असकल है, अपूर्ण है, उसे पूर्ण करने वाली क्रिया को सकलीकरण कहते हैं। साधक का शरीर मंत्र बीजों की धारणा के बिना अपूर्ण है। उसको मंत्र बीजों की स्थापना के द्वारा सकल करना होता है इसलिए सकलीकरण संकेत यथार्थ है। इस क्रिया के द्वारा साधक की आत्म-रक्षा होती है इसलिए इसको आत्म-रक्षा-विधान भी कह सकते हैं।

सकलीकरण क्रिया में सबसे पहले करन्यास करना चाहिए। करन्यास अर्थात् उंगलियों के पौरवों पर 'ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रौं, ह्रः' इन पांच शून्य बीजों की स्थापना करनी होती है। जैसे बाएं हाथ की तर्जनी उंगली द्वारा दायें हाथ के अंगूठे पर ह्रां, तर्जनी उंगली पर ह्रीं, मध्यमा उंगली पर ह्रूं, अनामिका पर ह्रौं और कनिष्ठा पर ह्रः मंत्र बीजों की स्थापना करनी चाहिए। फिर उस हाथ का उपयोग 'अंगन्यास' के लिए करना चाहिए, जो निम्न प्रकार से है :

सबसे पहले मस्तक पर हाथ रखकर कहना चाहिए—

१. ओं णमो अरहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

फिर मुंह पर हाथ रखकर कहना चाहिए —

२. ओं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदन रक्ष रक्ष स्वाहा।

फिर हृदय पर हाथ रखकर कहना चाहिए—

३. ओं णमो आयरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

फिर नाभि पर हाथ रख कर कहना चाहिए—

४. ओं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभि रक्ष रक्ष स्वाहा।

फिर घुटनों पर हाथ रखकर कहना चाहिए—

५. ओं णमो सव्व साहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

उपरोक्त क्रिया के बाद 'क्षिप ओं स्वाहा' मंत्र से भूत शुद्धि करनी चाहिए, जो इस प्रकार है :

पैरों में पीत रंग का 'क्षि' है, ऐसा संकल्प करना।
नाभि में श्वेत रंग का 'प' है, ऐसा संकल्प करना।
हृदय में लाल रंग का 'ॐ' है, ऐसा संकल्प करना।
मुंह में नील रंग का 'स्वा' है, ऐसा संकल्प करना।
ललाट में कस्तूरी जैसा श्याम रंग का 'हा' है, ऐसा संकल्प करना।

इसी क्रम को फिर विलोम करना—

ललाट में कस्तूरी जैसा श्याम रंग का 'हा' है, ऐसा संकल्प करना।
मुंह में नील रंग का 'स्वा' है, ऐसा संकल्प करना।
हृदय में लाल रंग का 'ॐ' है, ऐसा संकल्प करना।
नाभि में श्वेत रंग का 'प' है, ऐसा संकल्प करना।
पैरों में पीत रंग का 'क्षि' है, ऐसा संकल्प करना।

इस मंत्र में 'क्षि' पृथ्वी-बीज है।
'प' जल-बीज है।
'ॐ' तेज-बीज है।
'स्वा' वायु-बीज है।
'हा' आकाश-बीज है।

इस प्रकार शरीर की रचना करने वाले पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पंच-भूत बीजों की विशिष्ट रंग की धारणा करने से भूत-शुद्धि पूर्ण होती है और इससे जप के लिए सुन्दर भूमिका का निर्माण होता है।

यह जो रंगों के अक्षर बताये गये हैं, उनका समय समय पर चिन्तन करते रहना चाहिए, जिससे सकलीकरण करते समय यह क्रिया शुद्धि-पूर्वक हो सके।

उपरोक्त क्रिया के बाद ओं आं ईं ऊं औं अः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः इस मंत्र से पूर्वादि दिशाओं का बन्धन करे।

इस प्रकार दिशा बन्धन करने के बाद साधक मन में इस प्रकार की कल्पित धारणा करे कि एक नगर है, जिसमें मैं साधना करने बैठा हूं। उस नगर के चारों तरफ फिरता हुआ स्वर्णमय किला है। फिर दिशा बन्धन मंत्र से दिशा बन्धन कर जो जल है, उसको दसों दिशाओं में छांटे। बाद में एक कल्पित खाई का ध्यान करे, जो पूरी पानी से भरी है। उसमें समस्त जलचर जीव हैं, ऐसा कल्पित ध्यान कर निम्नलिखित अमृत-मंत्र से स्नान करे—

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय २
सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय सं हं क्ष्वीं
क्ष्वीं हंसः अ सि आ उ सा सर्वमिदममृतं भवतु स्वाहा।

इस मंत्र से प्रभु पार्श्वनाथ भगवान् का अभिषेक करे और उसी जल से अपने मस्तक में तिलक करे, ऐसा करने से मंत्राराधन संबंधी सर्व उपद्रव शान्त होते हैं।

इसके बाद वज्रपंजर रूप आत्मरक्षा नमस्कार स्तोत्र का पाठ करना चाहिए—

ओं परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम्।
आत्मरक्षाकरं वज्रपंजरामं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥
'ओं णमो अरहन्ताणं' शिरस्कं शिरसिस्थितम्।
ओं णमो सव्व सिद्धाणं, मुखे भुखपटं वरम् ॥ २ ॥
ओं णमो आयरियाणं, अंगरक्षाति शायिनीम्।
ओं णमो उवज्झायाणं, आयुधंहस्तयोर्दृढ़म् ॥ ३ ॥
ओं णमो लोए सव्वसाहूणं मोचके पादयोः शुभे।
एसो पंच नमुक्कारो शिलावज्रमयी तले ॥ ४ ॥
सव्व पावप्पणासणो वप्रो वज्रमयोत्वहिः।
मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरङ्गार खातिका ॥ ५ ॥
'स्वाहा' न्तं च पदंज्ञेयं 'पढमं हवइ मंगलं।
वप्रोपरि वज्र मयं पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी।
परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्व सूरिभिः ॥ ७ ॥
यश्चैव कुरुते रक्षां, परमेष्ठि पदैः सदा।
तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

●●●

नमस्कार-महामंत्र-कल्प

णमो अरहंताणं ।
णमो सिद्धाणं ।
णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं ।
णमो लोए सव्वसाहूणं ।

एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावपणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

समस्त मंत्रों में नमस्कार-मंत्र महान् है । वह चिन्तामणि के समान है । इस मंत्र के एक एक अक्षर में अष्ट महासिद्धि, नव निधि व चवदह पूर्व का ज्ञान भरा हुआ है ।

आचार्य हेमचन्द्र ने कहा है—

हरइ दुहं कुणइ सुहं, जणइ जसं सोसए भवसमुद्दं ।
इहलोय-पारलोइय-सुहाण मूलं नमुक्कारो ।।

नमस्कार महामंत्र दुःख हरता है, सुख करता है, यश उत्पन्न करता है, भव समुद्र का शोषण करता है । वह इस लोक व परलोक के सर्व सुखों का मूल है ।

अन्यत्र भी कहा है—

नमस्कारसमो मंत्रः, शत्रुञ्जयसमो गिरिः ।
वीतरागसमो देवो, न भूतो न भविष्यति ।।

नमस्कार जैसा मंत्र, शत्रुञ्जय जैसा पर्वत, वीतराग जैसे देव—न भूतकाल में हुए हैं और न होंगे ।

जो गुणइ लक्खमेगं, पुण्णइ विहिइ जिणनमुक्कारं ।
सो तइअभवे सिज्झइ, अहवा सत्तट्ठमे जम्मे ।।

जो मनुष्य पूर्ण विधि सहित नमस्कार मंत्र का एक लाख जाप कर लेता है, वह तीसरे या सातवें या आठवें भव में सिद्ध हो जाता है ।

नमस्कार-मंत्र-साधन-विधि

नमस्कार मंत्र की साधना विधिपूर्वक करनी चाहिए। अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार साधक इसका अनुष्ठान करे।

मंत्र-विशारद कहते हैं कि इस मंत्र का नौ लाख जाप कर लेने से नरक-गति का बन्ध-निवारण होता है। अनेक प्रकार की सिद्धियां व संपत्तियां प्राप्त होती हैं। यदि नित्य प्रति ५०० जाप करें तो ५ वर्ष में और यदि १००० जाप करें तो ढाई वर्ष में जाप पूर्ण हो जाता है। प्रतिदिन एक माला का जाप करें तो २५ वर्ष में नौ लाख जाप पूर्ण होता है। यदि अनुष्ठान पूर्वक सकलीकरण-क्रिया सहित इस मंत्र का एक लाख जाप करें तो तीर्थंकर-गोत्र का बन्ध होता है, जीवन का सर्वतोमुखी विकास होता है।

सामान्य रूप से इस मंत्र के अनुष्ठान में निम्नलिखित विधि-विधान व धारणाएं कर लेनी चाहिए—

१. पूर्व की ओर मुंह कर पद्मासन या सुखासन में बैठना चाहिए। श्वेतमाला रखनी चाहिए। भूमि पर सोना चाहिए।

२. एकान्त स्थान हो, सौ सौ हाथ दूर तक की भूमि पर अशुचि-पदार्थ न हो।

३. पांच परमेष्ठी की पांच प्रतिमाओं की स्थापना करनी चाहिए। सुगन्धित धूप व गाय के घृत का दीपक करना चाहिए।

४. रोज सुबह पंच महाव्रतधारी साधुओं का वन्दन करे, आयंबिल या एकाशन करे, मौन रक्खे, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे।

५. सुबह, शाम प्रतिक्रमण करे और प्रतिक्रमण में 'लोगस्स' के ध्यान के समय 'पंच परमेष्ठी आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं' बोलकर २४ लोगस्स का ध्यान करे।

६. जप की संख्या का परिमाण निश्चित कर लेना चाहिए। प्रतिदिन एक जितना ही जप होना चाहिए। कम नहीं होना चाहिए।

७. जप का स्थान, माला, वस्त्र आदि एक ही रखने चाहिए। वे शुद्ध होने चाहिए।

८. बुद्धि निर्मल, हृदय शुद्ध तथा चित्त एकाग्र रखकर जप करना चाहिए।

९. जप का उद्देश्य पहले ही स्पष्ट कर लेना चाहिए। जैसे— सर्व जीवों को जिन-शासन का भक्त बनाएं, सर्व जीवों का हित हो, भव्य आत्माएं कर्म-मुक्त हों, सकल संघ का कल्याण हो, मेरी आत्मा कर्म-मुक्त हो—आदि का चिन्तन कर जप प्रारंभ करना चाहिए।

१०. श्वेत वस्त्र धारण करना चाहिए। जहां तक हो सके एक ही सफेद वस्त्र लुंगी (चोल पट्टे) की तरह बांधकर उसे ही शरीर पर डाल लेना चाहिए।

११. आसन श्वेत व ऊनी होना चाहिए। जहां तक हो सके, एक काठ के पाटे पर ऊनी आसन बिछाकर उस पर बैठना चाहिए।

●●●

नमस्कार-मंत्रगत अक्षर मूलक मंत्र

चतुरक्षरी मंत्र

अरहंत।

इसका चार सौ बार जाप करें तो लाभदायक है।

पंचाक्षरी मंत्र

अ सि आ उ सा।

इसका पांच सौ जाप नित्य करें तो अति उत्तम है।

षडक्षरी मंत्र

अरहंत सिद्ध।

इसका तीन सौ जाप नित्य करें तो उत्तम है।

सप्ताक्षरी मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं नमः।

इस मंत्र का जाप बहुत ही कल्याणकारी है। सर्व ज्ञान प्रकाशक सर्वज्ञ समान यह मंत्र है।

अष्टाक्षरी मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं।

इस मंत्र का ११०० जाप करने से अत्यन्त शान्ति प्राप्त होती है।

नवाक्षरी मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्षीं स्वाहा।

इस मंत्र का मन में ही जाप करें तो दुष्ट मनुष्य का, तस्कर का भय मिट जाता है। अनावृष्टि में भी इस मंत्र का उपयोग करें तो चामत्कारिक फल होता है। महाभय के समय या मार्ग में चोर आदि के भय-निवारण के लिए इस मंत्र का जाप करता जाए और चारों दिशाओं में फूंक देता जाए तो भय मिट जाता है।

चतुर्दशाक्षरी मंत्र

ॐ ह्रीँ अर्हं णमो अरहंताणं ह्रीं नमः।

इस चवदह अक्षर वाले मंत्र को केवली विद्या-मंत्र कहते हैं।

पचदशाक्षरी मंत्र

ॐ अरहंत सिद्ध सयोगी केवली स्वाहा।

इस मंत्र को पंच परमेष्ठी व गुरु पंचक भी कहते हैं। इसमें सोलह अक्षर होने से यह षोडशाक्षरी के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसका २०० बार जाप करने से उपवास का फल प्राप्त होता है। १२५००० जाप करने से अकस्मात् धन की प्राप्ति होती है, विद्याध्ययन में सहायता मिलती है।

बाईस अक्षरी मंत्र

ॐ णमो अरहताणं श्रीमद् वृषभादिवर्धमानान्तेभ्यो नमः।

इस मंत्र को भी केवली-विद्या-मंत्र कहा जाता है।

पैंतालीस अक्षरी मंत्र

ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं,
ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीँ णमो उवज्झायाणं,
ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्व साहूणं।

परमेष्ठी मुद्रा में इसका नित्य जाप करने से दुष्ट मनुष्य व चोरों का भय दूर होता है, विपत्तियों का निवारण होता है।

नमस्कार-मंत्र

महान् प्रभावक नमस्कार-मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीँ श्रीँ णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीँ श्रीँ णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीँ श्रीँ णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीँ श्रीँ णमो लोए सव्व साहूणं।

विधि—शुभ मुहूर्त में साधना प्रारंभ करे, शुद्ध वस्त्र पहने, स्फटिक या सूत की माला से जाप शुरू करे। २७ दिन तक सुबह, दोपहर व रात को—तीनों समय प्रत्येक पद की ९ माला फेरे। पहले दो पदों की पूर्व की ओर मुंह करके—प्रत्येक पद की नौ-नौ माला फेरे। तीसरे पद की उत्तर की ओर मुंह करके नौ माला फेरे, चौथे पद की पश्चिम की ओर मुंह करके नौ माला फेरे और पांचवें पद की दक्षिण की ओर मुंह करके नौ माला फेरे। सत्ताईस दिनों में जाप पूर्ण होगा। यह अत्यन्त ही प्रभावशाली मंत्र है। जाप के दिनों में चामत्कारिक घटनाएं हो सकती हैं।

विघ्नहरण नमस्कार-मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ ऐं णमो अरहंताणं, ॐ क्लीं पैं णमो सिद्धाणं, ॐ क्ष्रौं बैं णमो आयरियाणं, ॐ श्रीं रैं णमो उवज्झायाणं, ॐ ब्लूं लौं णमो लोए सव्व साहूणं।

विधि— एकान्त शुद्ध स्थान में, शुद्ध वस्त्र धारण कर शुभ मुहूर्त में जाप शुरु करें। १२५०० जाप करने से हर प्रकार की विघ्न बाधा दूर होती है।

वशीकरण-नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं ॐ ह्रीँ णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्व साहूणं, ॐ ह्रीँ णमो णाणस्स, ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स, अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को १२५००० जाप करके सिद्ध करले। फिर जिसको वश करना हो, 'अमुक' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम बोले—२१ बार उच्चारण करे। एक बार उच्चारण करे, एक गांठ पगड़ी या साफे के दे। इस प्रकार २१ गांठ देकर पगड़ी या साफा सिर पर धारण कर, जिसे वश करना हो, उसके पास जावे तो वश हो।

सर्वरक्षा-नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप-णासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं, ॐ ह्रीँ हूँ फट्।

विधि—इस मंत्र का स्मरण प्रत्येक कार्य में सुखप्रद है। नित्यप्रति खूब ध्यान-पूर्वक इसका जाप करना चाहिए। यह सर्वथा आनन्द दायक महामंत्र है।

मनवाञ्छित कार्य-सिद्धि-नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं, सिद्धाणं, सूरीणं, उवज्झायाणं, साहूणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—प्रातःकाल उठकर, स्नान कर, स्वच्छ पंचरंगी धोती पहन कर, मूंगे की माला से ३२०० जाप करे, धूप करे तो मनः कामना सिद्ध होती है।

कारागार-मुक्ति-नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो सव्व साहूणं, झुलु झुलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु मुलु स्वाहा।

विधि—जिस व्यक्ति को कारावास (कैद) हो गया हो, वह इस मंत्र का १२५००० जाप करे। जाप पूरा होने पर या बीच में ही उसे कारागार से छुट-कारा मिल जायेगा। जाप के समय धूप, दीप अवश्य रक्खे।

दूसरा मंत्र

मंत्र—णं हू साव्वस एलो मोण, णं यज्झावउ मोण, णं यारियआ मोण, णंद्धासि मोण, णंताहंरअ मोण।

विधि—यह मंत्र नमस्कार मंत्र के ३५ अक्षरों पर बना है। हो सके तो इस का ७, ११ या २१ दिनों में १२५००० जाप कर लेना चाहिए और यदि १२५००० जाप पूरे न कर सके तो बन्दीगृह में जब जब समय मिले, इसका पाठ करता जाए। जाप करते समय मन स्थिर रक्खे। कारावास से अवश्य छुटकारा मिलेगा। अदालत में अपील करे तो वह जरूर मान्य होगी।

जीर्ण ज्वर-निवारण-नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्व साहूणं, ॐ ह्रीँ णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं।

विधि—एक सफेद धुली चद्दर लेकर, उसके कोने पर, एक मंत्र बोले, एक गांठ दे, फिर खोल दे, फिर मंत्र बोले, गांठ दे और खोल दे—इस प्रकार १०८ बार मंत्र बोले व गांठ दे तथा खोल दे। अन्तिम गांठ उसी तरह बंधी हुई रहने दे। वह गांठ बंधी चद्दर रोगी को ओढ़ा दे। गांठ वाला भाग रोगी के सिरहाने रखे। जब तक ज्वर नहीं छूटे, चद्दर रक्खे। एक दिन के अन्तर से, दो दिनों के अन्तर से, तीन दिनों के अन्तर से या चार दिनों के अन्तर से ज्वर आता हो तो छूट जायेगा। प्रतिदिन जाप करता रहे, धूप देता रहे।

स्वप्न दर्शन नमस्कार मंत्र

मंत्र—चउबीस तीर्थंकर तणी आण, पंच परमेष्ठी तणी आण, चउबीस तीर्थंकर तणी तेजी, पंच परमेष्ठी तणी तेजी, ॐ ह्रीं अर्हं उत्पत्तये स्वाहा।

विधि—रवि पुष्य योग आए उस संध्या को स्नान कर सुगन्धित तेल, चन्दन का लेप कर सुगन्धित फूलों की माला गले में पहन कर, पवित्र स्थान पर शुद्ध वस्त्र धारण कर खड़ा होकर पूर्व दिशा के सम्मुख मुंह करके, स्फटिक की माला से एक माला फेरे, इस तरह चारों दिशाओं में एक-एक माला फेरे, इसके बाद जो कार्य मन में सोचा हो, उसका चिन्तन कर धरती पर सो जाय तो दो घंटे रात बाकी रहे तब स्वप्न में उस कार्य के शुभाशुभ का आभास हो। उस दिन सफल न हो तो दो दिन तक प्रयोग चालू रखें।

कल्याणकारी नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ अ सि आ उ सा नमः।

विधि—यह सर्वसिद्धि मंत्र है। इसका १२५००० जाप होने से मंत्र सिद्धि होती है। सर्व प्रकार की सम्पत्ति व सिद्धि मिलती है। महा कल्याणकारी मंत्र है।

क्लेश नाशक नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

विधि—पूर्व की ओर मुंह कर प्रातः स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप प्रारम्भ करे। १२५००० जाप कर लेने से क्लेश का नाश होता है। यह अत्यन्त प्रभावक व शान्तिदायक है।

सर्व कामना पूरण मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

विधि—इसकी प्रतिदिन एक माला फेरने से कल्पवृक्ष के समान यह मनुष्य की सर्वकामनाएं पूरी करता है।

मन वांछित कार्य-सिद्धि नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त्त में जाप शुरू करे। इसका १२५००० जाप कर लेने से मन वांछित कार्य पूर्ण होता है।

विवाद विजय नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ हंस ॐ ह्रीं अर्हं ऐं श्रीं अ सि आ उ सा नमः।

विधि—इस मंत्र को २१ बार स्मरण कर वाद-विवाद प्रारम्भ करे तो विजय प्राप्त हो।

शत्रु-नाशक नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ अमुकं दुष्टं साधय साधय अ सि आ उ सा नमः।

विधि—इस मंत्र की २१ दिन सुबह रोज एक माला फेरे। फिर जब काम पड़े, १०८ बार जाप करने मात्र से शत्रु के भय, क्लेश व आपत्ति का निवारण होता है। अमुक की जगह शत्रु का नाम उच्चारण करे।

सर्व सम्पत्तिदायक त्रिभुवन स्वामी विद्या मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ अ सि आ उ सा चुलु चुलु हुलु हुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियं मे कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—यह त्रिभुवन स्वामी की विद्या है। यह मंत्र चमेली के २४००० फूल लेकर प्रत्येक फूल पर एक-एक मंत्र पढ़े व भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति पर अर्पण कर दे। जाप पूरा होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर प्रतिदिन एक माला फेरने से पुत्र-प्राप्ति व लक्ष्मी-प्राप्ति होती है।

अग्निक्षय नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ णमो ॐ अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरहंताणं नमः।

विधि—इस मंत्र को १२५०० जाप करके सिद्ध कर ले। फिर जब भी आवश्यकता हो, जल को २१ बार अभिमंत्रित कर अग्नि पर गिराने से अग्नि तुरन्त शान्त हो जायेगी।

दुष्टभय, भूत आदि भय-निवारण : नमस्कार-मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय जंभय जंभय अंधय अंधय वधिरय वधिरय मूकवत् कारय कारय कुरु कुरु ह्रीँ दुष्टान् ठः ठः ठः।

विधि—जिस समय शत्रु सामने आक्रमण करने आए तो मुट्ठी बंद करके इस मंत्र का १०८ बार जाप करे। वह मुट्ठी शत्रु के सामने करे तो शत्रु स्वयं परास्त हो जायेगा। किसी के भूत पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो, मुट्ठी बंद करके इस मंत्र का १०८ बार उच्चारण करे व झाड़े तो उपद्रव निश्चय ही शान्त हो। ईशान कोण की तरफ मुंह करके आधी रात के समय आठ रात्रि तक इस मंत्र की साधना करे, धूप-दीप करे, ११०० जाप करे तो व्यन्तर-देव का उपद्रव शान्त हो।

अर्हं मंत्र

सर्वकामना-पूरण-अर्हं मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ अर्हं नमः।

विधि—शुभ दिन, शुभ नक्षत्र में पूर्व की ओर मुंह करके जाप प्रारम्भ करे। १२५०० जाप करे। इससे सर्व-कामना-पूर्ति होती है।

लक्ष्मी-प्राप्ति-अर्हं मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ ह्रँ अर्हं णमो अरहंताणं ह्रीँ नमः।

विधि—शुभ मुहूर्त में पीले वस्त्र धारण कर पीली माला से जाप शुरू करे। १२५००० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। लक्ष्मी प्रसन्न होती है। फिर प्रतिदिन एक माला फेरे। बड़ा श्रेष्ठ मंत्र है।

ऋद्धि-सिद्धि-अर्हं मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—शुद्ध होकर प्रतिदिन प्रातः सायं बत्तीस बार इस मंत्र का जाप करे तो सर्व प्रकार की ऋद्धि, सिद्धि प्राप्त होती है।

चोर-भय-हरण-अर्ह मंत्र

मंत्र—ॐ णमो अरहंताणं आभिणी मोहिणी मोहय मोहय स्वाहा।

विधि—पहले २१ दिन तक प्रतिदिन प्रातः पूर्व की ओर मुंह करके एक माला का जाप करते हुए मंत्र सिद्ध कर ले। फिर रास्ते चलते वक्त इसका स्मरण करने से रास्ते में चोर का भय नहीं होगा।

बुद्धि-वृद्धि-अर्ह मंत्र

मंत्र—ॐ णमो अरहंताणं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।

विधि—इस मंत्र से मालकांगनी के तेल को अभिमंत्रित कर प्रतिदिन बताशे के ऊपर दश बूंद डालकर खाए। ऊपर से दूध-खीर का भोजन करे। पानी अल्प ले। इससे बुद्धि-वृद्धि होती है।

परदेश-लाभ-अर्ह मंत्र

मंत्र—ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो भगवईए चंदावईए महाविज्जाए भत्तट्ठाए गिरे गिरे हुलु हुलु चुलु चुलु मयूरवाहिनिए स्वाहा।

विधि—पौष कृष्णा १० के दिन उपवास करके इस मंत्र का जाप प्रारम्भ करे। १०००० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर शुभ मुहूर्त में जब भी विदा होकर जिस ग्राम या नगर में व्यापार करने जाए, उसमें प्रवेश करने से पूर्व इस मंत्र की एक माला फेर ले। मंगलवार को प्रवेश नहीं करे। अत्यन्त लाभ व धन-प्राप्ति होती है। फिर प्रतिदिन एक माला का जाप करता रहे।

स्वप्न में आवाज आने का अर्ह मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ अर्ह क्ष्वीं स्वाहा।

विधि—ललाट पर चन्दन का तिलक करके इस मंत्र की एक माला फेरकर सो जाए तो स्वप्न में प्रश्न का उत्तर मिलेगा। एक रात्रि में वैसा न हो तो तीन रात्रि तक वह प्रयोग चालू रखे।

वशीकरण-अर्ह मंत्र

मंत्र—ॐ णमो अरहंताणं अरे अरिणि मोहिणि अमुकं मोहय मोहय स्वाहा।

विधि—१२५००० जाप करके पहले इस मंत्र को सिद्ध कर ले। चावल अथवा पुष्प को १०८ बार अभिमंत्रित कर जिस स्त्री के सिर पर गिराए, वह वश हो। 'अमुकं' के स्थान पर उसका नाम बोलना चाहिए।

सर्व-कार्य-सिद्ध-अर्हं-मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीँ स्वाहा, ॐ ह्रीँ श्रीँ णमो अरहंताणं।

विधि—प्रतिपदा (एकम), षष्ठी व एकादशी, शुक्रवार तथा सोमवार को श्वेत वस्त्र धारण कर ईशान कोण की ओर मुंह कर श्वेत माला पर इसका जप करे, आहार स्वल्प ले। इससे सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

चोर-भय-दूर-करण-सिद्ध मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं सिद्धदेवं नमः।

विधि—पहले २१ दिन तक प्रतिदिन प्रातः पूर्व की ओर मुंह करके एक माला फेरे। फिर जब कहीं यात्रा करनी हो, इस मंत्र को सात बार बोलकर वस्त्र के किनारे गांठ दे ले तो यात्रा में चोर का भय नहीं होगा।

वशीकरण-सिद्ध-मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीँ णमो सिद्धाणं।

विधि—द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी व मंगलवार को लाल वस्त्र धारण कर लाल माला से जप करे। साथ ही साथ छठे तथा बारहवें तीर्थंकर का जप करे। यह सर्ववशी मंत्र है।

लाभकारी उपाध्याय-मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्लूं णमो उवज्झायाणं।

विधि—चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी व बुधवार को नीले वस्त्र धारण कर, पश्चिम की ओर मुंह कर नीली माला से जाप करे तो अत्यन्त लाभ होता है।

सर्व-कार्य-सिद्धि : आचार्य व साहु मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्लूं णमो लोए सव्व साहूणं।

विधि—पंचमी, दशमी, अमावस्या, पूर्णमासी व शनिवार को काले वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर, काली माला पर जाप करे तो सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

मंत्र-चतुष्टयी

रोगनिवारक नमस्कार-मंत्र

मंत्र—ॐ णमो आमो सहि पत्ताणं, ॐ णमो खेलो सहि पत्ताणं, ॐ णमो जलो सहि पत्ताणं, ॐ णमो सव्वो सहि पत्ताणं, स्वाहा।

विधि—इस मंत्र की प्रतिदिन एक माला फेरने से सर्व प्रकार के रोगों की पीड़ा शान्त हो जाती है। रोगी का कष्ट कम हो जाता है।

स्वप्न में शुभाशुभ कथन : नमस्कार मंत्र

मंत्र—ॐ णमो अरिहा ॐ भगवउ बाहुबलीस्सय इह समणस्स अमले विमले निम्मल नाण पयासिणी ॐ णमो सव्व भासई अरिहा सच्च भासई केवलीणं एं एणं सच्च वयणेणं सच्च होउ मे स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का ध्यान रात्रि के समय खड़े-खड़े कायोत्सर्ग में करे। नींद आए, उस समय भूमि पर सो जाए। इससे स्वप्न में शुभाशुभ का भान होता है।

वशीकरण-नमस्कार-मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीँ णमो भगवओ ॐ पासनाहस्स थंभय सव्वाओ ई ई अँ जिणाणए मा इह, अहि हवंतु, ॐ क्षीँ क्षूँ क्षौँ क्षः स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का १२५०० जाप कर पहले इसे सिद्ध कर ले। फिर सफेद पुष्प को १०८ बार अभिमन्त्रित कर राज्याधिकारी को सुंघाए तो वह वशंगत हो जाता है, सर्व कार्य सफल होते हैं।

वस्तु-विक्रय : नमस्कार-मंत्र

मंत्र—नट्ठ ट्ठ मयट्ठाणे, पणट्ठ कमट्ठ नट्ठ संसारे।
परमट्ठ निट्ठियट्ठे, अट्ठगुणा धीसरं वंदे ।।

विधि—इस मंत्र की साधना कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन संध्या बीत जाने के पश्चात् एक पहर रात जाने पर प्रारंभ करें। जाप करते वक्त धूप, दीप रखें व गुग्गुल का हवन करें। प्रतिदिन दो हजार जाप करें। ११००० जाप होने पर मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध होने के बाद जिस वस्तु का विक्रय करना हो, उस वस्तु को इस मंत्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर फिर बाजार में विक्री के लिए निकाले तो मुंह मांगे दाम आए तथा तुरन्त विक्री हो।

नवग्रह-पीड़ा-निवारण : नमस्कार-मंत्र

जिस व्यक्ति को जिस ग्रह की दशा हो, उसे उसी दशा की विधि के अनुसार जाप आदि करना चाहिए। सवेरे उठकर, स्नान कर, विधि अनुसार वस्त्र व माला का उपयोग कर पूजन करना चाहिए। इससे ग्रह-पीड़ा शान्त होती है।

सूर्य-दशा

ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं।

इस मंत्र की दश माला का जाप करे।

ॐ ह्रीँ पद्मप्रभ नमस्तुभ्यं मम शान्तिः
शान्तिः ।

इस मंत्र की एक माला जाप करें। भगवान् पद्मप्रभ के अधिष्ठायक देव कुसुम की उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके लाल वस्त्र, लाल आसन, लाल माला, लाल फूल, कुंकुम का स्वस्तिक तथा लाल चन्दन द्वारा पूजा करनी चाहिए।

चन्द्र-दशा

ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं ।

इस मंत्र की दश माला का जाप करें।

ॐ ह्रीँ चन्द्रप्रभ नमस्तुभ्यं मम शान्तिः
शान्तिः ।

इस मंत्र की एक माला का जाप करे।

भगवान् चन्द्रप्रभु के अधिष्ठायक देव विजय की उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके श्वेत वस्त्र, श्वेत आसन, श्वेत माला, श्वेत पुष्प व इससे पूजा करनी चाहिए।

मंगल-दशा

ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं ।

इस मंत्र की दश माला का जाप करे।

ॐ ह्रीँ वासुपूज्यप्रभो नमस्तुभ्यं मम शान्तिः
शान्तिः ।

इस मंत्र की एक माला का जाप करे।

भगवान् वासुपूज्य के अधिष्ठायक देव सुरकुमार की उत्तर या पूर्व की ओर मुंह कर लाल वस्त्र, लाल आसन, लाल माला, लाल चन्दन तथा लाल सुपारी से पूजा करनी चाहिए।

बुद्ध-दशा

ॐ ह्रीँ णमो उवज्झायाणं ।

इस मंत्र की दश माला का जाप करें।

ॐ ह्रीँ शान्तिनाथ प्रभो नमस्तुभ्यं मम
शान्तिः शान्तिः ।

इस मंत्र की एक माला का जाप करे।

शान्तिनाथ प्रभु के अधिष्ठायक देव गरुड़ की पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके नीले वस्त्र, नीले आसन, नीली माला, नीले फूल व नीले रंग के सांथिये से पूजा करनी चाहिए।

गुरु-दशा

ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं ।

इस मंत्र की दश माला जाप करे ।

ॐ ह्रीँ ऋषभदेव प्रभो नमस्तुभ्यं मम
शान्तिः शान्तिः ।

इस मंत्र की एक माला का जाप करे ।

ऋषभदेव प्रभु के अधिष्ठायक देव गोमुख की उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके पीले वस्त्र, पीले आसन, पीली माला, पीले पुष्प व पीले रंग के सांथिये से पूजा करनी चाहिए ।

शुक्र-दशा

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं ।

इस मंत्र की दश माला जाप करे ।

ॐ ह्रीँ सुविधिनाथ प्रभो नमस्तुभ्यं मम
शान्तिः शान्तिः ।

इस मंत्र की एक माला का जाप करे ।

सुविधिनाथ प्रभु के अधिष्ठायक देव अजित की पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके श्वेत वस्त्र, श्वेत आसन, श्वेत माला व श्वेत धातु से पूजा करनी चाहिए ।

शनि-दशा

ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्वसाहूणं ।

इस मंत्र की दश माला का जाप करे ।

ॐ ह्रीँ मुनिसुव्रत प्रभो नमस्तुभ्यं मम
शान्तिः शान्तिः ।

इस मंत्र की एक माला का जाप करे ।

मुनि सुव्रतनाथ प्रभु के अधिष्ठायक देव वरुण की पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके आसमानी वस्त्र, आसमानी आसन, अकलखेर की माला, उर्द के लड्डू, चावल को आसमानी रंग में रंगकर उसके सांथिये व तेल के दीपक से पूजा करनी चाहिए ।

राहु-दशा

ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्वसाहूणं ।

इस मंत्र की दश माला का जाप करे ।

ॐ ह्रीँ नेमिनाथ प्रभो नमस्तुभ्यं मम
शान्तिः शान्तिः ।

इस मंत्र की एक माला का जाप करे।

नेमिनाथ प्रभु के अधिष्ठायक देव भृकुटि को पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके आसमानी वस्त्र, आसमानी आसन, अकलखेर की माला, कमलकाकड़ी के फूल, काले तिल के लड्डू व आसमानी रंग से रंगे हुए चावल के सांथिये से पूजा करनी चाहिए।

केतु-दशा

ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्वसाहूणं।

इस मंत्र की दश माला का जाप करे।

ॐ ह्रीँ पार्श्वनाथ प्रभो नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः।

इस मंत्र की एक माला का जाप करे।

पार्श्वनाथ प्रभु के अधिष्ठायक देव पार्श्व की उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके नीले वस्त्र, नीले आसन, नीली माला, नीले फूल, पिश्ते की बरफी, मरुवे के फूल व नीले रंग से रंगे हुए चावल के सांथिये से पूजा करनी चाहिए।

वर्धमान-विद्या-कल्प

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं; ॐ णमो अरहओ भगवओ महई महावीर वद्धमाण सामिस्स सिज्झउ मे भगवई महई महाविज्जा ॐ वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाण वीरे जए विजए जयंते अपराजिए अणिहिए ॐ ह्रौं ह्रः ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—पहले पंचांग अर्थात् दो हाथ, दो पैर तथा मस्तक—इन पाँच अंगों पर हाथ फेरे, पवित्र करे। फिर भूमि शुद्ध करने के लिए निम्नांकित मंत्र बोले :—

ॐ भूरसि भूतधात्रि सर्वभूतहिते भूमिशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मंत्र बोलकर तीन बार दाहिने हाथ से, घड़ी की सुइयाँ जिस प्रकार घूमता हैं, उसी प्रकार वास-क्षेप से भूमि शुद्ध करे ॥१॥

फिर

ॐ अमले विमले सर्वतीर्थजले पां पां वाँ वाँ अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।

यह मंत्र बोलता हुआ अंजलि में समग्र तीर्थों का जल है, ऐसा संकल्प कर, ललाट से पैर के तलुओं तक स्नान करता हूँ, ऐसा विचार करे ॥२॥

फिर

ॐ ह्रीँ ह्वीँ क्ष्वीँ पाँ पाँ वस्त्रशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मंत्र बोलता हुआ वस्त्रों पर हाथ फेरता हुआ उन (वस्त्रों) की शुद्धि करे ॥३॥

फिर

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः।

इन पाँचों शून्य-बीजों से कर-न्यास करना चाहिए। कर-न्यास अर्थात् अंगुलियों के पौरवों पर पाँचों शून्य-बीजों की स्थापना करनी होती है, जो इस प्रकार है—बाएँ हाथ की तर्जनी अंगुली द्वारा दाएँ हाथ के अंगूठे पर ह्रां, तर्जनी अंगुली पर ह्रीं, मध्यमा अंगुली पर ह्रूं, अनामिका अंगुली पर ह्रौं और कनिष्ठा अंगुली पर ह्रः—मंत्र-बीजों की स्थापना करे ॥४॥

फिर

ॐ विद्युत् स्फुलिङ्गे सर्वकल्मषं दह दह स्वाहा ।

यह मंत्र बोलते हुए तीन बार भुजाओं का स्पर्श करके पाप का शमन करे ।।५।।

फिर

ॐ विमलाय विमलचित्ताय ह्वीं क्ष्वीं स्वाहा ।

यह मंत्र बोलते हुए हृदय पर हाथ फेरते हुए हृदय-शुद्धि करे ।।६।।

फिर

'णमो अरहताणं' बोलकर अंगूठे में न्यास करे ।

'णमो सिद्धाणं' बोलकर तर्जनी में न्यास करे ।

'णमो आयरियाणं' बोलकर मध्यमा में न्यास करे ।

'णमो उवज्झायाणं' बोलकर अनामिका में न्यास करे ।

'णमो लोए सव्वसाहूणं' बोलकर कनिष्ठा में न्यास करे ।

फिर

हृदय में ह्रां, कंठ में ह्रीं, तालु में ह्रूं, भौंओं के बीच ह्रैं, मस्तक—ब्रह्म-रन्ध्र—में ह्रौं का क्रमशः बाएँ हाथ से न्यास करे ।

फिर

बाईं तरफ 'कु' का न्यास करे, बाईं कुक्षि में 'रु' का न्यास करे । बायें पैर में 'कु' का न्यास करे । दाहिने पैर में 'ल्ले' का न्यास करे, दाहिनी कुक्षि में 'स्वा' का न्यास करे, दाहिनी तरफ 'हा' का न्यास करे ।

फिर

उल्टे क्रम से दाहिनी तरफ 'हा' का न्यास करे, दाहिनी कुक्षि में 'स्वा' का न्यास करे, दाहिने पैर में 'ल्ले' का न्यास करे, बाएँ पैर में 'कु' का न्यास करे, बाईं कुक्षि में 'रु' का न्यास करे, बाईं तरफ 'कु' का न्यास करे ।

इस प्रकार 'कुरुकुल्लेस्वाहा' इस रक्षा-मंत्र से अशुभ स्वप्न, अशुभ निमित्त, अग्नि, बिजली, शत्रु आदि के भय से रक्षण होता है ।।७।।

फिर

क्षिप ॐ स्वाहा ।

इस मंत्र से निम्नांकित रूप में सकलीकरण करना चाहिए :—

पैर में पीत वर्ण का 'क्षि' है, ऐसा संकल्प करना ।

नाभि में श्वेत वर्ण का 'प' है, ऐसा संकल्प करना ।

हृदय में लाल वर्ण का ॐ है, ऐसा संकल्प करना ।

मुँह में नील वर्ण का 'स्वा' है, ऐसा संकल्प करना

ललाट में कस्तूरी जैसा श्याम वर्ण का 'हा' है, ऐसा संकल्प करना।

फिर

उल्टे क्रम से—

ललाट में श्याम वर्ण का 'हा' है, ऐसा संकल्प करना।

मुँह में नील वर्ण का 'स्वा' है, ऐसा संकल्प करना।

हृदय में लाल वर्ण का ॐ है, ऐसा संकल्प करना।

नाभि में श्वेत वर्ण का 'प' है, ऐसा संकल्प करना।

पैर में पीत वर्ण का 'क्षि' है, ऐसा संकल्प करना।

इस प्रकार पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—इन पांच तत्त्वों का विचार करते हुए सकलीकरण होता है।

'ॐ ॐ नमः'—यह सर्व-साधारण अर्थ-सूचक मंत्र है। इसे बोलकर सामने जहाँ वर्धमान विद्या यंत्र पर लिखकर बन्द करके रखी हुई हो, उसकी पूजा करे। तत्पश्चात् उसे खोलकर स्थिर करे, बीच में बिन्दु लिखकर मंडलों—आवर्तों की पूजा करे। उसके पश्चात् आवाहन आदि पंचोपचार पूजा निम्नांकित रूप में मुद्राओं सहित करे।

ॐ ह्रीँ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान स्वामिन् ! एह्येहि संवौषट्।

यह मंत्र बोलकर आवाहनी मुद्रा से आवाहन करे।।१।।

ॐ ह्रीँ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान स्वामिन् ! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

यह मंत्र बोलकर स्थापनी मुद्रा से स्थापन करे अर्थात् भगवान् को हृदय-कमल में स्थापित करे।।२।।

ॐ ह्रीँ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान स्वामिन् ! मम संनिहितो भव वषट्।

यह मंत्र बोलकर संनिधापनी मुद्रा से संनिधापन करे अर्थात् भगवान् का सामीप्य करे।।३।।

ॐ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान स्वामिन् ! पूजान्तं यावदत्रैव स्थातव्यम्।

यह मंत्र बोलकर संनिधि-न्यास का निरोध करे अर्थात् भगवान् के सामीप्य को स्थिर करे।।४।।

ॐ ह्रीँ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान स्वामिन् ! परेषामदृश्यो भव।

यह मंत्र बोलते हुए अवगुंठनी मुद्रा से अवगुंठन यानी आच्छादन करे।।५।।

ॐ ह्रीँ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान् स्वामिन् ! गन्धादीन् गृहाण गृहाण नमः।

यह मंत्र बोलते हुए वासक्षेप से पूजा करनी चाहिए, अमृत मुद्रा से, जीवित हैं, ऐसा संकल्प करना चाहिए तथा भगवान् समवसरण में विराजित हैं, ऐसा ध्यान करना चाहिए।।६।।

फिर विघ्न-नाश के लिए दश दिशाओं को बाँधना चाहिए।।७।।

वर्धमान विद्या के मूल मंत्र का जाप करने के लिए सौभाग्य-मुद्रा, परमेष्ठी-मुद्रा, प्रवचन-मुद्रा, सुरभि-मुद्रा तथा अंजलि-मुद्रा—ये पाँच मुद्राएँ बतलाई गई हैं।

वर्धमान विद्या के मूल मंत्र का १०८ जाप करना चाहिए। जाप में नकरवाली (माला) के सुमेरु का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। भौं नहीं हिलानी चाहिए, होठ नहीं फड़फड़ाने चाहिए, दाँत खुले नहीं करने चाहिए। जाप पूरा करने के बाद अस्त्र-मुद्रा में आसन से हिलना चाहिए। जितना जाप बतलाया गया है, उतना जाप करने के बीच में यदि ऊंघ आ जाए तो जाप निष्फल हो जाता है। वैसा हो जाए तो जाप को फिर से शुरू करना चाहिए।

फिर

ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मन्त्रहीनं च यत्कृतम्।
तत् सर्वं कृपया देव ! क्षमस्व परमेश्वर ! ॥

यह श्लोक उच्चारित कर निम्नांकित मंत्र बोलना चाहिए—

ॐ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान स्वामिन् !
पुनरागमनाय स्वस्थानं गच्छ गच्छ यः यः यः।

यह मंत्र बोलते हुए संहार-मुद्रा से (देव का) विसर्जन करे। सुषुम्णा नाड़ी से श्वास लेते हुए हृदय-कमल में भगवान् को फिर स्थापित करे।

इस प्रकार इस विद्या का नित्य जाप करे।

वर्धमान विद्या का जाप करनेवाले "इमं विज्जं पउंजामि सिज्झउ मे पसिज्झउ" को एक सौ बार बोलकर जाप प्रारंभ करें तो वह (जाप) शीघ्र सफल होता है।

मंत्र—ॐ णमो भगवओ महई महावद्धमाण सामिस्स सिज्झउ मे भगवई महई महाविज्जा वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जये विजये जयंते अपराजिए स्वाहा।

विधि-फल—नित्यप्रति २१ बार या १०८ बार जाप करके भोजन करना चाहिए। इसके प्रभाव से सौभाग्य मिलता है, आपत्तियों का नाश होता है, राज्य में सम्मान होता है, आयुष्य लम्बा होता है, सद्गति प्राप्त होती है। किसी भी ग्राम या नगर में प्रवेश करने से पहले यदि उपर्युक्त मंत्र का २१ बार जाप करें तो अनेक कार्य सुसंपन्न होते हैं।

गोरोचन, कुंकुम, केसर, जूही का फूल, श्रीफल, कपूर, कस्तूरी—इन सबका चूर्ण बनाकर, चन्द्रमा अनुकूल हो, सौभाग्य-योग हो तो इस चूर्ण को उपर्युक्त मंत्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, तिलक करके जाए तो राज्य-कार्यों में सफलता प्राप्त हो।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में भगवान् की मूर्ति के आगे जूही के पुष्पों से १००० जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब कभी काम पड़े, पवित्र होकर इक्कीस बार मुँह को अभिमन्त्रित कर जहाँ जाए, सबको प्रिय लगे। इस मंत्र से अन्न के दाने को अभिमन्त्रित कर अन्न के भण्डार में रख दिया जाए तो भण्डार अखूट हो। यदि इस मंत्र के द्वारा कान को अभिमन्त्रित कर सो जाए तो स्वप्न में शुभ-अशुभ का भान हो। इस मंत्र से हाथों को अभिमन्त्रित कर जुए में जाए तो निश्चय ही सफल हो।

लोगस्स-विद्या-कल्प

संकट निवारण मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ ऐं लोगस्स उज्जोयगरे,
धम्म तित्थयरे जिणे, अरहंते कित्तइस्सं,
चउवीसंपि केवली, मम मनोवाञ्छितं
कुरु कुरु ॐ स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करे। प्रातः स्नान कर, शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर, सफेद आसन व सफेद माला का प्रयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह करके कायोत्सर्ग-आसन में एक माला का जाप करे या १४ दिन में १२५०० जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। सिद्ध होने पर संकट के समय मंत्र के तीन बार स्मरण मात्र से संकट दूर होगा, मान बढ़ेगा।

आनन्ददायक मंत्र

ॐ क्राँ क्रीँ ह्राँ ह्रीँ उसभमजियं च वंदे,
संभवमभिनंदणं च, सुमइं च पउमप्पहं,
सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे स्वाहा।

विधि—शुक्ल पक्ष में सोमवार से इसका जाप प्रारंभ करे। पद्मासन में प्रतिदिन एक माला का जाप करे। सफेद वस्त्र, आसन तथा माला का प्रयोग करे। पूर्व की ओर मुंह रखे। सफेद पदार्थों का भोजन करे। सात दिन तक मौन रखे। एकान्त स्थान में एकाग्रतापूर्वक सात दिन में १२५०० जाप करे। इससे मंत्र सिद्ध हो जाता है। यह अत्यन्त प्रसन्नतादायक मंत्र है।

मुकदमे में जय-प्राप्ति मंत्र

ॐ ऐं ऊँ झूं झीं सुविहिं च पुप्फदंतं,
सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च, विमलमणंतं
च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि स्वाहा।

विधि—लाल वस्त्र, लाल आसन तथा लाल माला का प्रयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह करके २१ दिन तक रोज एक माला का जाप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध होने पर राज-दरबार, कोर्ट-कचहरी के काम पर जाते समय २१ बार इस मंत्र को मन में स्मरण कर लेने से विजय, सफलता प्राप्त होती है।

भूत-प्रेत आदि निवारण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे
मुणिसुव्वयं नमि जिणं च, वंदामि रिट्ठनेमिं,
पासं तह वद्धमाणं च—मम वाञ्छितं
पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

विधि—पीले वस्त्र, पीला आसन, पीली माला का उपयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर जाप शुरू करे। ११००० जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध होने पर भूत-प्रेत आदि के भय के समय एक माला फेरने से संकट टल जायेगा। अनार की कलम से अष्टगन्ध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधने से ज्वर उतर जायेगा। रविपुष्य नक्षत्र में लिखकर पास में रखने से यात्रा में किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

वल्लभदर्शी मंत्र

ॐ ह्रीं एवं मए अभिथुया विहूयरयमला
पहीणजरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा
मे पसीयंतु स्वाहा।

विधि- शुभ मुहूर्त में आकाश की ओर मुंह करके एक ही दिन में पांच हजार जाप करे। इससे यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब भी कहीं जाना हो, मन में सात बार इस मंत्र का स्मरण कर, दोनों हाथ मुंह पर फेरकर जाए तो सर्व कार्य सफल हों। जिस किसी के पास जाकर कोई वस्तु मांगे तो यदि उस व्यक्ति के पास वह वस्तु हो तो वह उसे अवश्य देगा।

विजय-प्राप्ति मंत्र

ॐ अम्बराय किर्त्तिय-वंदिय-महिया, जे ए
लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग बोहिलाभं,
समाहिवरमुत्तमं दिंतु स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके ग्यारह दिन में १५००० जाप कर यह मंत्र सिद्ध कर ले। फिर इक्कीस बार इस मंत्र का स्मरण कर, जो स्वर चलता हो, उस तरफ का पैर आगे रखकर कार्य करने जाए तो वह कार्य अवश्य सफल होता है। कचहरी आदि का कार्य उसे देखते ही सध जाता है। लोग प्रसन्न होते हैं, सम्मान करते हैं।

यशदायक मंत्र

ॐ ह्रीँ ऐं ॐ जीँ जीँ गीँ गीँ चंदेसु
निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु
मनोवाञ्छितं पूरय पूरय स्वाहा।

विधि—दीपावली, नवरात्र या रविपुष्य नक्षत्र के दिन चौबिहार उपवास कर, एकासन से चन्दन की माला पर एक हजार जाप करे, तो यश, कीर्ति बढ़ती है, हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

सक्कथुई (णमोत्थुणं) विद्या कल्प

विद्युत्पात भय निवारण मंत्र

ॐ णमोत्थुणं अरहंताणं, भगवंताणं, आइगरणं तित्थयराणं
ॐ ह्रां ह्रीँ ह्रूं ह्रौँ ह्रः स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करे। प्रातः स्नान कर, शुद्ध, सफेद वस्त्र धारण कर, सफेद आसन व सफेद माला का प्रयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह करके १०८ दिन तक रोज एक माला का जाप करे। सिद्ध होने पर संकट के समय मंत्र के तीन बार स्मरण मात्र से विद्युत्पात का भय दूर होगा।

विद्वान् बनने का मंत्र

ॐ णमो सयंसंबुद्धाणं ह्रौँ भ्रौँ स्वाहा।

विधि—उपरोक्त विधि के अनुसार १०८ दिन तक रोज एक माला का जाप करे तो कवित्व-शक्ति प्राप्त हो, आगम आदि ग्रन्थों का ज्ञाता हो।

सौभाग्य वृद्धि मंत्र

ॐ ह्रीँ पुरिसुतमाणं अणलिअ पौरूसाणं अर्हं
अ, सि, आ, उ, सा, नमः।

विधि—शुभ मुहूर्त में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके जाप शुरू करे, १०८ दिन तक रोज एक माला का जाप करे, सौभाग्य की वृद्धि होती है।

युद्ध व वाद में जय प्राप्ति मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं पुरिससीहाणं पुरिसपुण्डरीयाणं
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॐ झ्रौँ स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में पूर्व की ओर मुंह करके १२००० जाप करके मंत्र सिद्ध कर ले। जब जरूरत हो, माला का जाप करके युद्ध में जाए तो जय प्राप्त हो। वाद में जावे तो जीत हो, रास्ते में हाथी का भय हो तो उसका संकट टले। लेख प्रतियोगिता में जय हो।

श्री कर्ण-पिशाचिनी देवी का मंत्र

ॐ ह्रीँ अर्हं णमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं,
लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं मम
शुभा शुभं दर्शय दर्शय कर्णपिशाचिनी नमः स्वाहा।

विधि—प्रतिदिन स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहनकर, पूर्व की ओर मुंह कर, रुद्राक्ष की माला से जाप शुरू करे। दसों दिशाओं में एक-एक माला फेरे। एकासन करे। इस तरह इक्कीस दिन तक एक आसन से रोज दसों दिशाओं में एक-एक माला फेरे। २१ दिन बाद जब जरूरत हो, रात के समय एक माला फेरकर जमीन पर सो जाय, चन्दन घिसकर कान पर लगाये। स्वप्न में प्रश्न का सम्पूर्ण उत्तर प्राप्त होगा। सिद्ध करते समय कान में बीच-बीच में चटका चलेगा, घबरायें नहीं।

सर्व भय निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, ऐं ह्रीँ सर्व भय निद्रा विनाशकाय नमः।

विधि—शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करे। प्रातः स्नान कर, शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर, सफेद आसन व सफेद माला का प्रयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह करके एक माला का जाप करे। १४ दिन में १२५०० जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। सिद्ध होने पर राज्य-संकट, किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उत्पन्न संकट के समय तीन बार स्मरण मात्र से संकट दूर होगा।

सुन्दर भाषण देने का मंत्र

ॐ णमो बोहिदयाणं, जीवदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं,
अरहंताणं नमो भगवईए, देवयाए सव्व सुयनायाए वार संग
जणणी ए अरहंत सिरिए ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा।

विधि—१०००० जाप कर पहले मंत्र सिद्ध कर ले, फिर व्याख्यान में जाने से पहले एक बार पढ़ ले, फिर व्याख्यान दे। अत्यन्त सफलता होगी व वाक् सिद्धि भी होगी। व्याख्यान में जाने से पहले एक माला का उपरोक्त मंत्र का पाठ करे।

वाक् सिद्धि मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-
चक्कवट्टीणं, मम परमैश्वर्ये कुरु कुरु ह्रीँ हंसः स्वाहा।

विधि—पूर्व की ओर मुंह कर, सफेद आसन, सफेद माला व सफेद वस्त्र से शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करे। मस्तक पर बायां हाथ रखकर एक लाख जाप करे। फिर रोज एक माला का जाप करे तो वाक् सिद्धि हो।

मार्ग भय निवारण व बुरे स्वप्न निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं,
अप्पडिदृयवर, नाणदंसण, धराणं, विअट्टछउम्माणं
ऐं स्वाहा।

विधि—प्रतिदिन एक माला का जाप करे तो बुरे स्वप्न नहीं आवेंगे। सम्मान बढ़े, कहीं जाना हो तो तीन बार मंत्र का उच्चारण करके जावे तो अपशकुन न हो।

वशीकरण मंत्र

ॐ णमो जिणाणं जावयाणं केवलजिणाणं परमोहिजिणाणं
सर्व रोप प्रशमिनि जंभिनि स्तंभिनि मोहिनी स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में एक काष्टपात्र पर मंत्र लिखे। शुभ मुहूर्त में ही एक अलग कमरे में उस काष्टपात्र मंत्र की स्थापना करे। बायें तरफ पार्श्व प्रतिमा की स्थापना करे। मयूरशिखा मूल काष्टपात्र के आगे रखे। बिना सिलाई किए हुए वस्त्र पहन कर १०८ दिन तक प्रतिदिन एक माला का जाप करे। फिर जहां भी जावे मयूरशिखा मूल पास में रखे तो सर्वत्र सम्मान मिले, वशीकरण हो।

जल भय निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं तिन्नाणं, तारयाणं क्म्ल्व्यूँ स्वाहा।

विधि— १०००० जाप करके पहले मंत्र को सिद्ध कर ले। फिर जल यात्रा में जाने से पहले एक माला उपरोक्त मंत्र की जप कर जावे तो जल के सभी प्रकार के भय का नाश होगा— शत्रु भी शत्रुता छोड़ देंगे।

चिन्ता निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं बुद्धाणं बोहयाणं स्वाहा।

विधि—लगातार छह महीने तक एक माला का एकाग्र मन से काकेष्ठाधान पास में रखकर जाप करे तो हर चिन्ता से मुक्त हो, जिस कार्य का चिन्तन करें वही कार्य सफल हो।

कारागार मुक्ति मंत्र

ॐ णमो जिणाणं मुत्ताणं मोयगाणं ज्म्ल्व्यूँ
म्म्ल्व्यूँ ह्मल्व्यूँ क्ष्म्ल्व्यूँ अ सि आ उ सा नमः बंधि
मोक्ष कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—रात दिन १००० जाप उपरोक्त मंत्र का करते रहे तो कारागार से मुक्ति मिले।

बुद्धि निर्मल मंत्र

ॐ णमो सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं मम नाणाइसयं
कुरु ह्रीँ नमः।

विधि—प्रतिदिन उपरोक्त मंत्र की एक माला का जाप करते रहें तो बुद्धि निर्मल हो— दूसरे के मनोभाव जानने की शक्ति प्राप्त हो।

उपद्रव निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-
मव्वावाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं
मम शांति निरुपद्रव निर्भयं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—भोजपत्र पर केशर, कपूर से मंत्र लिखे। खीर, फल, नारियल, श्वेत पुष्प से पूजा करे—लोबान धूप करे। मंत्र की एक माला रोज फेरे तो ७ दिन या २१ दिन में हर उपद्रव शांत हो।

सर्व भय निवारण मंत्र

ॐ णमो जिणाणं जियभयाणं कित्तणेणसभयाइं
उवसंमतु ह्रीँ स्वाहा।

विधि—भोजपत्र पर गोरोचन व कुंकुम से लिखे। लाल डोरे से कमर में बांध ले तो हर प्रकार के भय से रक्षा होगी।

चन्द्रप्रज्ञप्ति-विद्याकल्प

मंत्र—नमिऊण असुर सुर गरुल भुयंग परिवंदिये गए किलेसे अरहे सिद्धायरिये उवज्झाये सव्वसाहूणं।

विधि—एक तेले या आयंबिल की तपस्या करे। उत्तर की ओर मुंह करके एकासन पर १२५०० जाप करे तो सर्व कार्य सिद्ध हों। मंत्र सिद्ध होने पर निम्नांकित रूप में प्रयोग करे—

नमिउण—एक सांस में २१ बार गुणे तो चोर का भय टले।

असुर—चौविहार तेला करे। तेले की रात एक आसन पर, उत्तर की ओर मुंह करके १२००० जाप करे तो वैमानिक देव उपस्थित हो।

सुर—एक सांस में ३२ बार गुणे तो पिशाच, राक्षस आदि का भय टले।

गरुल—उत्तर की ओर मुंह करके ५०० बार गुणे तो नागदेव का भय टले।

भुयंग—एक सांस में ३२ बार गुणे तो नाग-सर्प का भय टले।

परि—एक सांस में ७ बार गुणे तो परदेश जाते समय भय टले।

वंदिये—एक सांस में १०८ बार गुणे तो अग्नि शांत हो।

गए—एक सांस में १०८ बार गुणे तो हाथी का भय टले।

किलेसे—एक सांस में १०८ बार गुणे तो झगड़ा, क्लेश मिटे।

अरहे—एक सांस में १०८ बार गुणे तो शत्रु का भय टले।

सिद्धा—एक सांस में १२१ बार गुणे व प्रातः २७ माला फेरे तो नव निधि प्राप्त हों।

यरिये—एक सांस में १०८ बार गुणे तो चोर-भय टले, बड़ा आदमी वशगत हो।

उत्तज्झाये—एक सांस में १०८ बार गुणे तो बड़ा उपद्रव टले।

सव्वसाहूणं—एक सांस से २१ बार गुणे तो बड़ा उपद्रव टले तथा २७ दिन तक प्रतिदिन २७ माला फेरे तो सर्व व्याधि टले, आनन्द हो।
इन दिनों नौकारसी करे, ब्रह्मचर्य से रहे।

शान्तिदायक महाप्रभावक सिद्ध-शान्ति-कल्प

अन्तःकरण-शुद्धि-मंत्र—क्षि प ॐ स्वाहा।

नमस्कार-मंत्र—ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

मंगल-भावना-मंत्र—सर्वे वै सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्॥

मूल मंत्र—ॐ शान्तिः।

विधि—१. एक एकान्त कमरे का चयन करे। उसे नित्य साफ करे, कपड़े से पोंछे।

२. एक नियत स्थान पर बाजोट रखे। उस पर ॐकार का एक सुन्दर चित्र रक्खे, नीचे श्वेत वस्त्र रखे। परम शान्तिदायक परमात्मा का प्रतीक उसे माने।

३. साधक बाजोट के सामने उत्तर की ओर मुंह करके बैठे। स्नान करे, शुद्ध वस्त्र व आसन रखे।

४. साधक बाजोट पर अपनी दाहिनी तरफ अगरबत्ती करे, बाईं तरफ घृत का दीपक करे।

५. जप के लिए माला—स्फटिक, रजत या श्वेत सूत की हो।

६. शुक्ल पक्ष में एकम या दशमी को प्रारंभ करे और उस तिथि को सोमवार या गुरुवार हो तो श्रेयस्कर होगा।

७. तीन मास में १२५००० जाप करने होंगे।

८. उपर्युक्त सारी बातें होने के बाद सबसे पहले अन्तःकरण-शुद्धि-मंत्र पांच बार बोलना चाहिए।

९. तत्पश्चात् हाथ जोड़कर, मस्तक नमाकर नमस्कार मंत्र से नमस्कार करना चाहिए।

१०. उसके अनन्तर मंगल-भावना-मंत्र बोलकर मंगल-भावना करनी चाहिए।

तदनन्तर मूल मंत्र का जाप शुरू करना चाहिए। प्रतिदिन १० माला फेरनी चाहिए तथा रात्रि को सोने से पहले शुद्ध वस्त्र पहन कर, तीन बार नमस्कार-मंत्र तथा तीन बार मंगल-भावना-मंत्र बोलकर मूल मंत्र की तीन माला फेरनी चाहिए। किसी अत्यावश्यक कारण से यदि प्रातः १० माला न फेर सके तो जितनी माला बाकी रहे, उतनी माला रात को और फेर ले।

यह प्रयोग बहुत सुख-शान्तिप्रद, विघ्न-बाधाओं को टालने वाला तथा लाभ व श्री देने वाला प्रसिद्ध अचूक प्रयोग है।

कहा जाता है, अचलगढ़ (आबू) के महान् योगी श्री शान्तिविजयजी महाराज ने इसी मंत्र का अनुष्ठान किया था।

श्री चन्द्र-कल्प

मंत्र—श्री चन्द्रमूर्तये नमः ॐ ऐं श्रीँ क्लीँ क्रोँ क्रोँ कलंकरहिताय। सर्वजन-वल्लभाय क्षीरवर्णाय ॐ ह्रीँ श्रीँ चन्द्रमूर्तये नमः।

विधि—चन्द्रमा की एक रजत-प्रतिमा—चाँदी की मूर्ति बनाए। चन्द्रमा के एक हाथ में शंख, दूसरे हाथ में कमल, तीसरे हाथ में पुष्प-माला तथा चौथे हाथ में कलश हो। इस प्रकार की मूर्ति बनाकर चाँदी के खरगोश पर सवारी करवाए। पूर्णिमा को सोमवार आए, उस दिन से मंत्र का जाप प्रारंभ करे। छः महीने में १२५००० जाप पूरे करने चाहिए। जप-साधना के काल में सफेद वस्त्र, सफेद मोतियों की माला तथा सफेद आसन का प्रयोग करना चाहिए। दूध, चावल या सफेद पदार्थ का ही भोजन करना चाहिए। जप करने वाला साधक जीवित खरगोश पास में रखे। स्वयं भोजन करने से पहले खरगोश को भोजन कराए—फिर खुद भोजन करे, छः मास तक यह सारा क्रम चालू रखे। पूर्व दिशा की ओर मुँह करके जाप करे। अभक्ष्य पदार्थ तथा कन्द-मूल का भोजन न करे। ब्रह्मचर्य का पालन करे, सत्य बोले, अल्प निद्रा ले, भूमि पर सोए। इस प्रकार जाप पूर्ण होने पर चन्द्रदेव दर्शन देंगे। वरदान मांगने से वरदान देंगे। राज-दरबार में यश बढ़ेगा, सर्वप्रियता प्राप्त होगी।

कहा जाता है, जगत्-सेठ ने इसी मंत्र की साधना की थी।

यक्षिणी-कल्प

यक्षिणी-कल्प कई प्रकार के प्राप्त होते हैं। मुझे एक वट-यक्षिणी, रतिकरी यक्षिणी, कामिनी यक्षिणी आदि का सात यक्षिणी-कल्प मिला। दूसरा नटी यक्षिणी सुरसुन्दरी यक्षिणी, चित्रनी यक्षिणी आदि का सतरह यक्षिणी-कल्प प्राप्त हुआ। एक चौबीस यक्षिणी-कल्प भी उपलब्ध हुआ, जिसे यहाँ दिया जा रहा है।

यक्षिणी-नाम

१. विचित्रा, २. विभ्रमा, ३. विसाला, ४. सुलोचना, ५. बाला, ६. मदना, ७. धूम्रा, ८. मानिनी, ९. शतपत्रिका, १०, मेखला, ११. विकला, १२. लक्ष्मी, १३. कालकरणी, १४. महाभय, १५. माहिन्द्रीका, १६. श्मशानी, १७. वट यक्षिणी, १८. चन्द्रिका, १९. चक्रपाली, २०. भीषणा, २१. जनरंजिका, २२. विशाला, २३. शोभना तथा २४. शंखिनी।

विचित्रा

मंत्र—ऐं विचित्रै विचित्र रूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करने से विचित्रा नामक यक्षिणी सिद्ध होती है।

प्राप्ति—अजरामरत्व का वरदान देती है।

विभ्रमा

मंत्र—ॐ ह्रीँ भर भर स्वाहा।

विधि—एक लाख जाप करे तथा तीन कोनों का यज्ञ-कुण्ड बनाकर उसमें दुग्ध, घृत व मधु से दशांश हवन करे तो विभ्रमा नामक यक्षिणी सिद्ध होती है।

प्राप्ति—साधक के स्त्री-रूप में रहती है तथा चिन्तित अर्थ देती है।

विसाला

मंत्र—एं विशाले ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ एहि एहि ह्राँ विभ्रम भुये स्वाहा।

विधि—श्मशान में दो लाख जाप करे। गुग्गुल व घृत का दशांश हवन करे।

प्राप्ति—साधक के स्त्री रूप में रहे। ५०० व्यक्तियों तक का भोजन दे। साधक अन्य स्त्री के साथ संगम न करे।

सुलोचना

मंत्र—ॐ लैं लैं सुलोचने सिद्धं देहि देहि स्वाहा।

विधि—पर्वत पर या नदी के किनारे तीन लाख जाप करे। घृत से दशांश हवन करे तो सुलोचना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—आकाशगामिनी दो पादुकाएँ भेंट करे, जिससे जहाँ चाहे जा सके।

मदना

मंत्र—ऐं मदने मदनबिटंबिनी आत्मीय ममं देहि देहि श्रीँ स्वाहा।

विधि—राज-द्वार पर एक लाख जाप करे तथा जातिपुष्प व दूध से दशांश हवन करे तो मदना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—एक गुटिका भेंट करे, जिसे मुँह में रखने से अदृश्य हो जाने की शक्ति प्राप्त होती है।

मानिनी

मंत्र—ऐं मानिनी ह्रीं ऐहि ऐहि सुंदरी हस हस समीह मे सगमकं स्वाहा।

विधि—जहाँ चौपाये जानवर रहें, वहाँ बैठकर १२५००० जाप करे व लाल फूल व तीन मधुर वस्तुओं से दशांश होम करे तो मानिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—साधक के पास स्त्री रूप में आकर उससे संभोग करे, उसके बाद एक तलवार भेंट दे, जिससे वह विद्याधर बनने की शक्ति प्राप्त करे।

हंसिनी

मंत्र—हंसिनी हंसयाने क्लीं स्वाहा।

विधि—नगर-द्वार पर एक लाख जाप करे व कमलपत्र से दशांश हवन करे तो हंसिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—साधक को अंजन भेंट करे, जिससे पृथ्वी के अन्दर की वस्तुएँ देखी जा सकें।

शतपत्रिका

मंत्र—शतपत्रिके ह्रां ह्रीं ध्वीं स्वाहा।

विधि—वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करे व घृत से दशांश हवन करे तो शतपत्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—पृथ्वी में गड़े खजाने को बताये।

मेखला

मंत्र—ह्लूं मम मेखले ग ग ह्रीं स्वाहा।

विधि—पलाश वृक्ष के नीचे १४ दिन तक जाप करे तो मेखला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—प्रतिदिन ५०० रुपये तक भेंट दे।

विकला

मंत्र—विकले ऐं ह्रीं श्रीं ह्लूं स्वाहा।

विधि—घर में तीन मास तक जाप करे तो विकला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—अणिमा (छोटा होना) आदि विद्या दे।

लक्ष्मी

मंत्र—ऐं कमले कमलधारिणी हंस स्वाहा।

विधि—लाल कनेर के फूलों से एक लाख जाप करे। कुंड में गुग्गुल से दशांश हवन करे। इससे लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—पांच विद्या दे तथा मनवांछित धन दे।

कालकर्णी

मंत्र—क्रौं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा।

विधि—ब्रह्म वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करे, मधु-मिश्रित दशांश हवन करे तो कालकर्णी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—सैन्य-स्तंभन, अग्नि-स्तंभन, मधु-स्तंभन तथा गर्भ-स्तंभन की विद्या दे।

महाभय

मंत्र—ह्रीं महाभय ष्ठीं स्वाहा।

विधि—श्मशान में जहाँ मुर्दा जलाया गया हो, वहाँ बैठकर एक लाख जाप करे तो महाभय नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—रसायन दे, जिसके खाने से वृद्धावस्था नहीं आये व वृद्धावस्था हो तो युवा हो जाय।

माहिन्द्री

मंत्र—माहिन्द्री कुल कुल युल युल स्वाहा।

विधि—इन्द्रधनुष के उदय के समय निर्गुण्डी वृक्ष के नीचे बैठकर १२००० जाप करे तो माहिन्द्री नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—आकाशगामिनी, पातालगामिनी, नगरप्रवेश, वचनसिद्ध, देव, भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, बेताल, झोंटिंग आदि को दूर करने की शक्ति दे।

श्मशानी

मंत्र—ह्रां ह्रीं स्युः श्मशान वासिनी स्वाहा।

विधि—श्मशान में नग्न होकर ४ लाख जाप करे तो श्मशानी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—एक पट्ट दे, जिससे अदृश्य होकर तीनों लोकों में घूम सके।

वटयक्षिणी

मंत्र—ऐं कपालिनी ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं हंस ह्स्ब्लीं फुट् स्वाहा।

विधि—वट वृक्ष के नीचे बैठकर चांदनी रात में तीन लाख जाप करे तो वट नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—साधक की स्त्री के रूप में रहकर वस्त्र, अलंकार स्वर्ण, गंध व पुष्प आदि दे।

चन्द्रिका

मंत्र—ओं नमो भगवती चन्द्रिकाय स्वाहा।

विधि—शुक्ल पक्ष की रात्रि में एक लाख जाप करे तो चन्द्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—अमृत रसायन दे, जिससे हजार वर्ष तक जीवित रहने की शक्ति प्राप्त हो।

घंटाकर्णी

मंत्र—ऐं घंटे पुर क्षोभय क्षोभय राजा नाम क्षोभय क्षोभय भगवती गंभिरः श्वरप्लीं स्वाहा।

विधि—बजते हुए घंटे के साथ बीस हजार जाप करे तो घंटाकर्णी यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—इतनी शक्ति दे कि पूरे नगर को भयभीत कर सके।

भीषणा, जनरंजिका, विशाला

मंत्र—भीषणा, क्षपेत माता छिते चिरं जीवितं कर्मव्या साधकेन भगिन्या जनरंगिनी कालोंजन रंगिके स्वाहा।

विधि—एक लाख जाप से भीषणा सिद्ध हो जायेगी। उसके सिद्ध होने से जनरंजिका सिद्ध हो जायेगी। ५० हजार और जाप से विशाला सिद्ध हो जाएगी।

प्राप्ति—विशाला स्त्री के समान तथा जनरंजिका दासी के समान रहेगी तथा भीषणा इन दोनों के पंच की स्थिति में रहेगी।

शोभना

मंत्र—ओं अशोक पल्लवा कार कर तले सु शोभना श्रीं क्षः स्वाहा।

विधि—लाल वस्त्र व माला से तीनों समय १४ दिन तक जाप करे तो शोभना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—साधक की स्त्री के समान रहेगी।

शंखिनी

मंत्र—ओं शंखधारिणी शंखाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं ग्लीं श्रीं स्वाहा।

विधि—सूर्योदय के समय शंखमाला से १० हजार जाप करे। कनेर के फूल, सफेद गाय के घृत तथा आठ प्रकार के धान्य सहित दशांश हवन करे तो शंखिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति—अन्न व पांच रुपये प्रतिदिन दे।

[**नोट** : इस कल्प में बाला नामक यक्षिणी का विधि-विधान पूर्णतया छूट गया है। चक्रपाली यक्षिणी के स्थान पर घंटाकर्णी यक्षिणी का विधि-विधान दिया है तथा धूम्रा यक्षिणी के स्थान पर हंसिनी यक्षिणी का विधि-विधान दिया है। लगता है, बाला यक्षिणी का विधान भूल से छूट गया है तथा चक्रपाली व धूम्र के स्थान पर घंटाकर्णी व हंसिनी का विधि विधान दिया गया है अथवा इन दोनों

के दो-दो नाम रहे हों। जैसा पुरानी पड़त (प्राचीन प्रति) में उपलब्ध हुआ, ज्यों का त्यों यहाँ दिया गया है।]

श्री गौतम स्वामी : मंत्र

मंत्र—ओं नमो भगवओ गोयमस्स बुद्धस्स अरकीण महाणस्स अवतर अवतर ओं अरिकणस्स स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में पूर्व की ओर मुंह करके धूप-दीप सहित जाप शुरू करे। १२५००० जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। फिर जब भी काम पड़े, १०८ बार चावल अभिमंत्रित कर प्रमुख मिठाई के बर्तन में डाल दे। बर्तन का ढक्कन पूरा नहीं खोले तो मिठाई समाप्त नहीं होगी।

श्री कलिकुण्ड स्वामी : मंत्र

मंत्र—ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने अप्रति चक्रेजये विजये अजिते अपराजिते स्तंभे स्वाहा।

विधि—छः मास तक एकाशन करे तथा नित्यप्रति एक माला फेरे तो मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब भी वाद-विवाद व झगड़े के समय २१ बार मंत्र बोलकर जाय तो जय हो, सर्वजन वश हों, दुष्ट जनों के मुंह बंद हों। अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही १०० कोस दूर हो रही व होने वाली घटनाओं की पूर्व जानकारी हो। शत्रु आक्रमण करने आये तो उसकी ओर मुंह करके तीन दिन तक इसकी माला फेरे तो शत्रु-भय टले।

ग्रन्थ संख्या 1390

दूसरा मंत्र

ओं ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन्! आगच्छ
आगच्छ आत्म मंत्रान् रक्ष रक्ष पर मंत्रान् छिन्द
छिन्द मम सर्व समीहितं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

विधि—पौष कृष्णा १० को रविवार हो, उस दिन इस मंत्र का जाप प्रारंभ करना चाहिए। भगवान् पार्श्वनाथ व चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति सामने रखनी चाहिए। छः महीने तक नित्यप्रति एक माला फेरनी चाहिए। छः महीनों में चक्रेश्वरी देवी प्रत्यक्ष दर्शन देगी या स्वप्न में वरदान देगी।

1390

श्री मणिभद्र : स्वप्न मंत्र

मंत्र—ॐ आँ ह्रीं क्रीं क्ष्वीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं ओं नमो भगवते मणिभद्र जिन शासन भक्ताय ह्रिली ह्रिली मिली मिली किली किली चक्षुं माय स्वाहा।

विधि—प्रथम लाल कनेर के ७ हजार पुष्प से जाप कर मंत्र सिद्ध करे। सिद्ध होने के बाद सफेद फूल ५४, लाल कनेर के फूल १०८ ले। हर एक फूल पर मंत्र पढ़कर सिरहाने के नीचे रखे। फिर मणिभद्र जी से रात को शुभाशुभ पूछे, उत्तर मिले।

श्री मणिभद्र : भूत-प्रेत-बाधा-निवारण-मंत्र

मंत्र—श्री मणिभद्र देव एषः योगः फलतु।

एक बार बोलना।

ओं नमो भगवते मणिभद्राय, क्षेत्रपालाय, कृष्णरूपाय, चतुर्भुजाय, जिन शासन भक्ताय, नव नाग सहस्रबलाय, किन्नर किं पुरुष गन्धर्व राक्षस भूत प्रेत पिशाच सर्व शाकिनीनां निग्रहं कुरु कुरु स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

विधि—उत्तर दिशा की ओर मुंह करके, लाल रंग की माला से तीन दिन में १२५०० जाप करे, आयंबिल या एकाशन करे, ब्रह्मचर्य का पालन करे, दीपक अखंड रखे, मंत्र सिद्ध हो। फिर रोज एक माला का जाप करे, भूत-प्रेत आदि की सर्व बाधाएं दूर होंगी।

श्री घंटाकर्ण मंत्र

भारतीय मंत्र-यंत्र साहित्य में 'घंटाकर्ण' का स्थान अन्यतम कहा जाता है। इसका प्रयोग अव्यर्थ, स्वल्प श्रमसाध्य एवं सुखद माना जाता है।

कहते हैं कि 'घंटाकर्ण' देव सेनापति कार्तिकेय के तृतीय पार्षद थे। अन्य कोई ध्वनि सुनना वे पसन्द नहीं करते थे। इस संकल्प की पूर्ति हेतु उन्होंने अपने कान के समीप घंटाएं लटका लीं। फलतः उनके कानों में अनिच्छित कोई शब्द प्रविष्ट ही नहीं होता था। उनका प्रभाव अमोघ माना जाता है।

यंत्र और मंत्र के क्षेत्र में 'घंटाकर्ण' मंत्र-साधना सम्प्रदायानुसार प्रचलित देखने को मिलती है। फिर भी कुछ साधनाएं व्यापक एवं सर्वोपयोगी भी दृष्टिगत होती हैं, जिनके कुछ प्रयोग यहां तथा मंत्र-सम्बन्धी प्रकरणों में दिये गए हैं।

साधना में भू-शुद्धि, भूत-शुद्धि आदि क्रियाएं नित्य कर्म में रहनी चाहिए। अनुष्ठान में प्रायः सभी नियमों का पालन किया जाता है। तीर्थस्थल, एकान्त स्थान, स्वस्थ मानस मंत्र सिद्धि के लिए आवश्यक है।

मूल मंत्र

ओं घंटाकर्णो महावीरः सर्व व्याधि विनाशकः।
विस्फोटक भये प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबलः॥

यत्र त्वं तिष्ठसे देव ! लिखितांक्षर पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वात पित्त कफोद्भवाः ।।
तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णे जपात्क्षयं ।
शाकिनी भूत वेतालाः, राक्षसा प्रभवन्ति न ।।
नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दंश्यते ।
अग्नि चोर भयं नास्ति, ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ।।
ह्रीं घंटाकर्णो नमोस्तुते ओं नर वीर ठः ठः ठः स्वाहा ।।

विधि—उत्तर दिशा की ओर मुंह करके लाल रंग की माला से जाप प्रारंभ करे, शुद्ध वस्त्र पहने। ७२ दिन में सवा लाख जाप होने चाहिए। अन्त में दशांश हवन, तर्पण आदि करना चाहिए। हवन किशमिश, बादाम, चारोली, नारियल आदि से करे। ७२ दिन में मंत्र सिद्धि हो जायगी। इससे अनेक बाधाएं व अरिष्ट शान्त होते हैं।

श्री घंटाकर्णः द्रव्य-प्राप्ति-मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मीं पूरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—धनतेरस को ४० माला, रूप चौदस को बयालीस माला तथा दीपावली को तेतालीस माला का जाप करे। वह वर्ष निश्चय ही लक्ष्मी प्राप्ति के लिए उत्तम होगा। उत्तर की ओर मुंह करके जाप करना चाहिए। सफेद वस्त्र, सफेद ऊनी आसन, लाल माला का व्यवहार करना चाहिए।

श्री सूर्य-मंत्र

मंत्र—ओं नमो नारायणाय।

विधि—शुभ दिन, शुभ योग में इस मंत्र का जाप शुरू करे। १६०००० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। यह अत्यन्त प्रभावशाली मंत्र है। सर्व कामनाओं की पूर्ति करता है।

श्री गणेश मंत्र

मंत्र—ओं श्रीं ह्रीं घ्रीं क्लिं लुं गं गणपतये वर वर दे सर्व भस्मानय कुरु स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करे। पूर्व की ओर मुंह करके ३१ दिन तक रोज २१ माला फेरे, गणेश सिद्ध हो, वर दे।

पार्श्व यक्ष-मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं पार्श्व यक्ष दिव्य रूप महर्षण एहि एहि आं क्रों ह्रीं नमः।

विधि—इस मंत्र का १० लाख जाप व दशांश हवन से पार्श्वनाथ भगवान् के शासन का अधिष्ठायक यक्ष पार्श्व सिद्ध हो जाता है।

क्षेत्रपाल का मंत्र

मंत्र—ओं क्षां क्षीं क्षुं क्षें क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः।

विधि—शुभ दिन, शुभ योग में जाप शुरू करे। १२५०० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है, क्षेत्रपाल प्रसन्न हो जाता है, वरदान देता है। फिर प्रतिदिन एक माला का जाप करे।

श्री हनुमान-मंत्र (जं जी रा)

मंत्र—ओं हनुमान पहलवान, बरस बारह का जवान, हाथ में लड्डू मुख में पान, खेल खेल गढ़ लंका के चौगान, अंजनी का पूत राम का दूत, छिण में कीलौ नौ खंड का भूत, जाग जाग हड़मान हुंकाला, ताती लोहा लंकाला, शीश जटा डग डेरूं उमर गाजे, बज्र की कोटड़ी बज्र का ताला, आगे अर्जुन पीछे भीम, चोर नार चम्पे ने सींव, अजरा झरे भरया भरे, ईं घट पिंड की रक्षा राजा रामचन्द्र जी लक्ष्मण कुंवर हड़मान करे।

विधि—२१ दिन तक रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध करे। हनुमान मंदिर में अगरबत्ती करे। इक्कीसवें दिन मंदिर में एक नारियल व लाल कपड़े की एक ध्वजा चढ़ावे। जाप के बीच चमत्कार हो तो घबराये नहीं। यह मंत्र भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, नजर, टपकार व शरीर की रक्षा के लिए अत्यन्त सफल है।

श्री भैरव मंत्र (जं जी रा)

मंत्र—ओं गुरूजी काला भैरूं कपला केश, काना मदरा, भगवां भेस, मार मार काली पुत्र बारह कोस की मार, भूतां हात कले जी, खूंहां गेडिया, जां जाऊं भैरूं साथ, बारह कोस की रिद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो, सुत्यो होय तो जगाय ल्यावो, बैठ्या होय तो उठाव ल्यावो, अनन्त केसर की भारी ल्यावो, गौरां पार्वती की बिछिया ल्यावो, गेले की रस्तान मोय, कुवे की पणियारी मोय, हाटां बैठ्या बाणिया मोय, घर बैठी बणियाणी मोय, राजा की रजवाड़ मोय, महलां बैठी राणी मोय, डकणी को सकणी को, भूतणी को, पलीतणी को, ओपरी को, पराई को, लाग कुं, लपट कुं, धूम

कुं, धक्का कूं, अलीया को, पलीया को, चौड़ को, चौगट को, काचा को, कलवा को, भूत को, पलीत को, जिन को, राक्षस को, बैरियां से बरी कर दे, नजरां जड़ दे ताला, इता भैरव नहीं करे तो पिता महादेव की जटा तोड़ तागड़ी करे, माता पार्वती का चीर फाड़ लंगोट करे, चल डकणी सकणी, चौड़ूं मैला बाकरा, देस्यूं मद की धार, भरी सभा में द्यूं ओलमो कहां लगाई थी बार, खप्पर में खा, मुसाण में लौटे, ऐसे कुण काला भैरूं की पूजा मेटे, राजा मेटे राज से जाय, प्रजा मेटे दूध-पूत से जाय, जोगी मेटे ध्यान से जाय, शब्द सांचा ब्रह्म बाचा चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि— शनिवार की रात को जाप शुरू करे। एक तिकोना पत्थर बनावे। उसके ऊपर तैल, सिन्दूर व पान चढ़ावे, अपने सामने स्थापना करे। एक नारियल रक्खे, रोज तेल का दीपक करे, धूप खेवे, छड़-छड़ीला, कपूर, केसर, लौंग धूप में डाले। रोज २१ बार मंत्र पढ़े। इक्कीसवें दिन भैरूं सिद्ध होगा। दर्शन दे तब बाकला, पान-सुपारी आदि दे, बकरे की पूरी कलेजी दे। एक बोतल शराब की धार दे। इससे भैरूं सिद्ध हो जायगा। फिर मंत्र में आये सर्व प्रयोजनों में वह पूर्णतः कार्य करेगा।

श्री चक्रेश्वरी देवी का मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं चक्रेश्वरी, चक्रवारुणी, चक्रधारिणी चक्रवेगेन मम उपद्रवं हन हन शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—इस मंत्र की २१ दिन तक १० माला प्रतिदिन फेरनी चाहिए। इसके बाद रोज एक माला का जाप करे। हर उपद्रव को शान्त करे व अत्यन्त लाभ दे।

मंत्र दूसरा

मंत्र— ओं नमो चक्रेश्वरी चिन्तित कार्यकारिणी मम स्वप्ने श्रुताश्रुतं कथय कथय दर्शय दर्शय स्वाहा।

विधि— शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करे। १२५०० जाप होने के बाद एक माला फेरे। जिज्ञासित का स्वप्न में उत्तर मिले।

मंत्र तीसरा

मंत्र—ओं ह्रीं क्लीं श्रीं चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—दीवाली की रात को चांदी की कलम से यक्षकर्दम की स्याही से भोजपत्र पर लिखे, चांदी के मादलिये में डालकर पास में रखे या भुजा पर बांध

ले। जहां जाय जय हो, भूत या प्रेत का भय दूर हो तथा ज्वर आदि रोग का नाश हो।

श्री पद्मावती देवी का मंत्र

मंत्र—ओं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय पार्श्वनाथाय भक्ताय क्षिप्रगति सहिताय मम दुःखं निग्रह निग्रह स्वाहा।

विधि—भगवान् पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म-दिवस के दिन दस माला का जाप करे, फिर रोज एक माला का जाप करे तो हर प्रकार की विघ्न-बाधा का नाश होता है।

मंत्र दूसरा

मंत्र—ओं क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै नमः।

विधि—शुभ मुहूर्त में जाप करे। १२५०० जाप करे। देवी स्वप्न में दर्शन देगी। १२५००० जाप करे तो देवी प्रत्यक्ष दर्शन देगी।

श्री लक्ष्मी देवी का मंत्र

मंत्र—ओं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

विधि—पूर्व की ओर मुंह करके पीले वस्त्र व पीले रंग की माला का प्रयोग करे। कमरा साफ रखे। मार्गशीर्ष नक्षत्र व गुरुवार हो, उस दिन इस मंत्र का जाप शुरू करे। भक्तामर स्तोत्र के २६वें श्लोक की तीन माला फेर कर इस मंत्र का जाप चालू करे। लक्ष्मी की मूर्ति सामने रखे। पीले फूल चढ़ावे। रोज १० माला का जाप करे। एक लाख जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। लक्ष्मी प्रत्यक्ष दर्शन देती है।

श्री सरस्वती देवी का मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं ऐं ह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः।

विधि—यह सरस्वती का सिद्ध मंत्र है। इस मंत्र का शुभ मुहूर्त में पूर्व की ओर मुंह करके जाप शुरू करे। सफेद वस्त्र, सफेद आसन तथा सफेद माला का प्रयोग करे। ११००० जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र से ब्राह्मी घृत अभिमंत्रित कर खाये तो वाणी में सरस्वती विराजमान होगी।

मंत्र दूसरा

मंत्र—ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनी देवी सरस्वती मम जिह्वाग्रे वद वद ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा।

विधि—उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में इस मंत्र की एक माला का जाप करे, सफेद वस्त्र व सफेद माला का प्रयोग करे, रात को ११–१२ बजे के बीच लाल चन्दन से जिह्वा पर ह्रीं लिखे। निश्चय ही महापंडित बने।

मंत्र तीसरा

मंत्र—ओं ज्रौं ज्रौं शुद्धबुद्धिं प्रदेहि श्रुत देवीमर्हत तुभ्यं नमः।

विधि—पूर्व की ओर मुंह करके रविवार पुष्य नक्षत्र में जाप शुरू करे। १२५०० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर रोज एक माला का जाप करे। एक कागज पर अष्टगंध या हिंगुल से लिखकर व्याख्यान देते समय पाट पर पास रखे तो श्रेष्ठ व्याख्यान दे।

श्री ज्वाला मालिनी देवी का मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं क्लीं आं क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हंसःय ह्रीं ज्वाला मालिनी देवदत्तस्य सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—लाल माला से २१ दिन तक प्रतिदिन एक माला का जाप करे तो मंत्र सिद्ध हो। सवा पैसे की सीरनी बांटे। अबीर को २१ बार ऊपर के मंत्र से अभिमंत्रित कर जिसके सिर पर गिरावे, वह वश्य हो।

श्री कर्णपिशाचिनी देवी का मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं लोगहियाणं, लोग पईवाणं, लोगपज्जो यगराणं मम शुभाशुभं दर्शय दर्शय कर्णपिशाचिनी नमः स्वाहा।

विधि—प्रति दिन स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर, रुद्राक्ष की माला से जाप शुरू करे। दसों दिशाओं में एक माला फेरे। एकाशन करे। इस तरह इक्कीस दिन तक एक आसन से रोज दसों दिशाओं में एक-एक माला फेरे। २१ दिन बाद जब जरूरत हो, रात के समय एक माला फेर कर जमीन पर सो जाय, चन्दन घिसकर कान पर लगाये। स्वप्न में प्रश्न का सम्पूर्ण उत्तर प्राप्त होगा। कान में बीच में चटका चलेगा, घबराये नहीं।

मंत्र दूसरा

मंत्र—ओं कर्णपिशाचिनी महादेवी रति प्रिये स्वप्न कामेश्वरी पद्मावती त्रैलोक्य वार्ता कथय कथय स्वाहा ।

विधि—एक एकान्त कमरे का चयन करे । कमरे को साफ करके गोबर का चौका दे । एक बाजोट उसमें रखे और उस पर अगरबत्ती जलाए । पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जाय, प्रतिदिन एक माला फेरे । माला जपते समय अगर-बत्ती अवश्य जलती रहनी चाहिए । साधना प्रारंभ करे, उस दिन उपवास रखना चाहिए । नौ दिन साधना करनी है । अन्तिम दिन शराब, खांड व गुग्गुल का हवन करना चाहिए । उसी स्थान में सोना चाहिए तथा तीन दिन तक कुंआरी कन्या को खीर, रोटी का भोजन कराना चाहिए । तीसरे रोज एक-एक चुनड़ी, एक-एक कांचली व कुछ दक्षिणा देनी चाहिए । इस प्रकार इसकी साधना करने के बाद जब कोई प्रश्न करे, उस समय ७ बार मंत्र जप कर दाहिना हाथ दाहिने कान पर रखे, तुरंत देवी कान में उत्तर देगी ।

श्री पंचांगुली देवी का मंत्र

ध्यान मंत्र—ओं पंचागुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने ।
अधिष्ठात्री करस्यासौ, शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ।।

मंत्र—ओं नमो पंचागुली पंचागुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषेणीमध्ये शेकनीमध्ये गुणीमध्ये गारुड़ी मध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ओं ठं ठं ठं स्वाहा ।

विधि—कार्तिक मास में जब हस्त नक्षत्र प्रारंभ हो, उस दिन से साधना प्रारंभ करे । मार्गशीर्ष के हस्त नक्षत्र में पूर्ण करे । प्रतिदिन एक माला का जाप करे । जाप शुरू करने से पहले ध्यान मंत्र का एक बार उच्चारण करे—फिर जाप शुरू करे, जाप के बाद नित्य पंच मेवा की दस आहुतियों से अग्नि में हवन करे । इस प्रकार साधना करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है । देवी का एक चित्र बाजोट पर रख कर, उसके सामने बैठकर साधना करनी चाहिए । हस्त नक्षत्र रूप आधार पर स्थित हाथ की पांच उंगलियों के प्रतीक स्वरूप देवी का एक चित्र बनवा लेना चाहिए ।

चित्र कल्पना

शनि की अर्थात् मध्यमा उंगली के प्रथम पोरवे के आधे भाग पर देवी का मुकुट सहित मस्तक होगा। उसके पीछे सूर्य मंडल होगा। देवी के आठ हाथ होंगे, जिनमें दाहिनी तरफ पहला हाथ आशीर्वाद का हो, दूसरे हाथ में रस्सी, तीसरे हाथ में तलवार, चौथे हाथ में तीर हो। बाईं तरफ पहले हाथ में पुस्तक, दूसरे हाथ में घंटा, तीसरे हाथ में त्रिशूल और चौथे हाथ में धनुष हो। गले में आभूषण, ललाट में तिलक, कानों में कुण्डल, कमर पर आभूषण व सुन्दर वस्त्र हों। पैर मणिबन्ध रेखा के नीचे तक आयें। इस तरह देवी का चित्र बनाना चाहिए।

फल—हस्त रेखा सामुद्रिक जानने वाला व्यक्ति यदि इसकी एक बार साधना कर ले और फिर रोज हाथ को इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर उसे सर्वांग पर फेरे तो वह इसके फलस्वरूप हस्तरेखा द्वारा जन्मकुंडली बनाने में हाथ देखकर फल कहने में ही सदा सफल नहीं होता, उसके सूक्ष्म रहस्यों से भी परिचित होता है। पंचागुली देवी हस्त रेखाओं की अधिष्ठात्री देवी हैं। कहते हैं, पाश्चात्य विद्वान् कीरो भी इसकी ही साधना किया करता था। पंचागुली देवी का यंत्र भी है, जिसे यंत्र प्रकरण में विधि सहित दिया गया है। साधना करते समय यंत्र को भी बाजोट पर रखना चाहिए।

सर्व-कामना पूरण मंत्र

मंत्र—कोदर तपसी रामसुख, पीथल मोती हीर।
भोप दीप सुख श्याम जी, भिक्षु शिष्य बडवीर॥

विधि—शुभ मुहूर्त में एक तेले की चौविहार तपस्या द्वारा इसे प्रारंभ करे। सफेद वस्त्र, सफेद आसन, सफेद माला का उपयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर पद्मासन से जाप चालू करे। तीन दिन में १२५०० जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जिस किसी भी कार्य के लिए जाना हो तो पहले हाथ-मुंह धोकर दोनों हाथ मुंह के सामने कर ९ बार मंत्र का उच्चारण कर हाथ, मुंह व शरीर पर फेर ले, फिर जाय। अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

वशीकरण-मंत्र

मंत्र—ओं हुं फट्।

विधि—जिस किसी के सामने खड़े होकर सौ बार इस मंत्र का उच्चारण कर ले तो साधक जो कहेगा, सामने वाला वही करेगा।

मंत्र दूसरा

मंत्र—ओं हाँ ग जूं सः (अमुक) मे वश्य वश्य स्वाहा।

विधि—पहले इस मंत्र का १२५०० जाप करके इसको सिद्ध कर ले। फिर प्रतिदिन एक माला फेर कर सोये। लौंग, सुपारी, इलायची, पान या पानी को १०८ बार इस मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर खिलायें-पिलायें तो वह (सुपारी आदि खाने वाला या पानी पीने वाला व्यक्ति) वश में हो।

सर्व-भय-निवारण मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं एं नमः स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में पूर्व की ओर मुंह करके जाप शुरू करे। १२५०० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद निम्न रूप से प्रयोग में लाया जा सकता है—

१. सात बार जाप करके शत्रु का नाम लेकर मुंह पर हाथ फेरे, शत्रु वश में हो।

२. एक माला फेर कर जो भी कार्य शुरू करे, सफल हो।

३. मुकदमा या विवाद में २१ बार पढ़कर जावे, सफल हो।

४. व्यापार के लिए जिस गांव या नगर में जाय वहां की नदी या तालाब पर पहले एक माला फेरे, फिर प्रवेश करे, सफल हो।

डाकिनी-शाकिनी नाश मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं कुर कुले स्वाहा।

विधि—यह नागदमनी महाविद्या है। इसके स्मरण मात्र से डाकिनी, शाकिनी, राक्षस आदि का नाश होता है।

कामण-टुमण नाश मंत्र

मंत्र—ओं जङ्घा चारणाणं ॐ ह्रीं विज्जा चारणाणं ॐ ह्रीं वेउव्विय ईड्ढिपत्ताणं ॐ ह्रीं आगासगामीणं नमः स्वाहा।

विधि—रविवार के दिन इस मंत्र को भोजपत्र पर यक्षकर्दम स्याही से लिखे। मादलिया में डालकर पास में रक्खे तो उसके ऊपर कोई कामण, टुमण करेगा तो उस पर असर नहीं होगा। उसकी कीर्ति व इज्जत उत्तरोत्तर बढ़ती रहेगी।

नजर उतारने का मंत्र

मंत्र—ओं नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्वज्वर नाशाय ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को दीपावली के दिन इसकी एक माला फेर कर सिद्ध कर ले, फिर पानी को सात बार अभिमंत्रित कर पिलाने से लगी नजर उतर जायेगी।

परविद्याछेदन मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीं उग्गतवचरणाणं ॐ ह्रीं दित्ततवाणं ॐ ह्रीं तत्ततवाणं ॐ ह्रीं पडिमापडिवन्नाणं नमः स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को १०८ बार पढ़कर मोरपंख से झाड़ा देना चाहिए। फलतः दूसरों के द्वारा किया हुआ अनिष्ट प्रयोग नष्ट हो जायेगा। भूत-प्रेत का दोष टलेगा, शीत ज्वर, उष्ण ज्वर दूर होगा।

मार्गभय-निवारण मंत्र

मंत्र—ओं नमो वज्रे वज्रमयी कायाकोट अवर की ओट कदे न लागे पिंड कूं चोट ॐ ह्रीं फुट स्वाहा।

विधि—पहले इस मंत्र को ११००० जाप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर जब भी यात्रा करे, ३ बार गुण कर यात्रा करें। मार्ग के सर्वभय टल जायेंगे।

मृत्यु-आभास मंत्र

मंत्र—ओं नमो बाहुली, महा बाहुली अमुकस्य शुभाशुभं कथय स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का ११००० जाप कर पहले इसको सिद्ध कर लें। फिर रोगी मनुष्य के सिर से पैर तक के माप का एक सफेद वस्त्र या डोरी लें। उसको प्रातःकाल सात बार सूर्य के सामने खड़े होकर इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। 'अमुकस्य' के स्थान पर रोगी का नाम लें। वह वस्त्र या डोरी अभिमंत्रित कर रोगी के सिर-हाने पर रख दे। दूसरे दिन प्रातःकाल वह कपड़ा या डोरी माप कर देखें। परिमाण से छोटी निकले तो निकट भविष्य में मृत्यु होगी, ऐसा समझना चाहिए।

औषधि मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं सर्वते सर्वते श्रीं क्लीं सर्वोषधि-प्राणदायिनी नैऋत्ये नमो नमः स्वाहा।

विधि—किसी भी रोग के लिए कोई भी औषधि आरंभ करने से पहले इस मंत्र को पढ़े, फिर औषधि शुरू करे तो शीघ्र लाभ हो।

रोग-निवारण मंत्र

मंत्र—ओं नमो पार्श्वनाथाय ह्रीं नमो धरणेन्द्रपद्मावती नमो नमः।

विधि—इस मंत्र की प्रातःकाल शुद्ध पवित्र होकर, सफेद वस्त्र पहन कर, पूर्व की ओर मुंह करके २१ दिन तक नित्य एक माला फेरे तो रोग का निवारण होता है, विघ्न टलता है।

ज्वर-निवारण मंत्र

मंत्र—ओं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतं श्रावय मम सर्व रोगान् प्लावय प्लावय रः रः रः स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को २१ दिन तक नित्यप्रति ५ माला फेर कर सिद्ध कर ले। फिर जल को २१ बार अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाने से एकान्तर ज्वर, रोज आने वाला ज्वर तथा सन्धिवात आदि सर्व रोग अवश्य अच्छे होते हैं।

गर्भ-स्तंभन व शुक्र-स्तंभन मंत्र

मंत्र—ओं रहु रहु हो श्वेत वर्ण पुरुष रहु रहु हो हरि धवल पुरुष रहु रहु हो शंख चक्र गदाधर रहु रहु।

विधि—कुमारी कन्या के हाथ से कते हुए सूत के ७ डोरे ले। प्रत्येक डोरे पर एक-एक बार मंत्र पढ़कर उनको मिला ले। फिर सात बार मंत्र पढ़कर एक गांठ दे। इस तरह १६ गांठ दे। उसे स्त्री की कमर में बांध दे तो गर्भ-स्तंभन हो व पुरुष की कमर में बांध दे तो शुक्र-स्तंभन हो।

सुख-प्रसव मंत्र

मंत्र—मुक्ताः पाशाः विमुक्ताशाः मुक्ता सूर्येण रश्मयः मुक्तासर्वभयाद्गर्भ एहि मां चिर मां चिर स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को शुभ मुहूर्त में ११००० जाप करके सिद्ध कर ले। फिर जब आवश्यकता हो, जल को आठ बार अभिमंत्रित कर पिलाने से प्रसव सुखपूर्वक हो जाता है।

आंख का मंत्र

मंत्र—ओं नमो सलस समुद्र सोल समुद्र में पंखणी क झरै, अमकड़ीया की आंख अमी संचरे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—नमक की सात डली व थोड़ी राख बारह बार अभिमंत्रित कर आंख के छुआ कर अग्नि में डाल दे तो आंख दुखती रहे।

दूसरा मंत्र

मंत्र—शान्ति, कुन्थु अरहो अरिट्ठनेमि, जिनंद पास होई समरंताणं निच्चं चक्खु रोग पणासई।

विधि—किसी भी आंख के रोग पर एक माला फेर कर झाड़ा दे, ठीक हो।

कर्णमूल का मंत्र

मंत्र—बनाह गठि बनरी तो डाटे हनुमान कंटा बिलारी वाघी थनैली कर्णमूल सब जाय। रामचन्द्र का वचन पानी पथ हो जाय।

विधि—सात बार मंत्र पढ़कर राख से झाड़ने पर कर्णमूल को लाभ होता है।

दांत के दर्द का मंत्र

मंत्र—अग्नि बांधौं अग्नीश्वर बांधौं, सौ लाल विकराल बांधौं, सौ लोह लोहार बांधौं, कञ्च के निहाय वज्र धन दांत विहाय तो महादेव की आन।

विधि—सात बार मंत्र पढ़कर फूंकने से दांत का दर्द तुरन्त दूर होता है। यदि नारा उखड़ा हो तो हाथ की तर्जनी उंगली से झाड़ना चाहिए।

कखलाई का मंत्र

मंत्र—ॐ नमो काखलाई भरी तलाई जहँ बैठे हनुमन्त आई, पचे न फूटे चले न नाल, रक्षा करे गुरु गोरख बाल।

विधि—इस मंत्र का २१ बार उच्चारण करते हुए नीम की डाली से झाड़ा देना चाहिए।

पेट दर्द-दूर : मंत्र

मंत्र—ॐ नमो इट्टी मीट्टी भस्म कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—१२५०० जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। २१ बार पानी को अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाये तो पेट का दर्द दूर हो।

धरण दूर : मंत्र

मंत्र—ॐ चरणी चरणी माणस तेरी सरणी माणस का आसा पासा छांड रे धरणी न छोडे तो चतुरंग नाथ जी री आज्ञा फुरे ठः ठः स्वाहा।

विधि—प्रथम १२५००० जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। फिर जब भी आवश्यकता हो, पेट पर हाथ फेरता जाय और मंत्र पढ़ता जाय तो धरण अच्छी होगी।

वायु-रोग-निवारण मंत्र

मंत्र—ओं नमो अजब कंकोल गड़ीयो वाय फिरंग रगत वाय, चेपियो वाय, अनंत सर्वे वाय नाशय नाशय दह दह पच पच भख भख हन हन ॐ फुट् स्वाहा।

विधि—प्रथम १२५०० जाप करके मंत्र सिद्ध कर ले, फिर पांच रंग के रेशम के धागों को लेकर ९ गांठ दे। हरेक गांठ पर १०८ बार धूप-दीप सहित मंत्र पढ़े। फिर गले के बांधे तो हर प्रकार का वायु रोग मिटे।

चिणक पर मंत्र

मंत्र—चणकिली, मणकेली, नीबीतीती, जीमती जीमातीति 'अमुक' चिणक गमायतीति भलो कियो म्हारी बाई।

विधि—दो कंकड़ ले, एक चिणक पर रक्खे, एक हाथ में रक्खे। एक बार मंत्र बोले तथा हाथ वाला कंकड़ चिणक वाले कंकड़ से छुआ दे। इस प्रकार सात बार करे, चिणक ठीक हो जायगी।

अंडकोष-वृद्धि व खाखबिलाई मंत्र

मंत्र—ओं नमो नलाई-ज्यां बैठ्या हनुमत आई पके न फुटे, चले बाल जति रक्षा करे। गुरु रखवाला, शब्द सांचा पिंड काचा चलो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

विधि—नीम की डाली से २१ बार झाड़े तो अंडकोष-वृद्धि तथा खाखबिलाई ठीक हो।

मस्सा नाशक मंत्र

मंत्र—ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में ११००० जाप कर इस मंत्र को सिद्ध कर ले। फिर २१ बार पढ़कर लाल सूत में एक गांठ दे और हर २१ बार पढ़कर एक गांठ दे। इस तरह तीन गांठ देने पर ६३ बार मंत्र पढ़ लिया जायगा। इस सूत को दाहिने पैर के अंगूठे में बांध देने से खूनी बवासीर की पीड़ा दूर होती है।

व्रणहर मंत्र

मंत्र—ॐ णमो जिणाणं जावयाणं पुसोणि अं ए एणि सव्ववायेण वणमापच्चं उमाघुष उमा फुट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि—इस मंत्र से राख अभिमंत्रित कर व्रण (जिनको वण भी कहते हैं) जो बालकों के शरीर पर हो जाते हैं, उन पर अथवा शीतला के व्रणों पर लगावे तो मिट जाते हैं ।

बाला (नहरवा) का मंत्र

मंत्र—ॐ नमो मरहर दे संक सारी गांव महामा सिधुर चौद सै बालै कियो विस्तार बालो उपनो कपाल भांप या हुंति यो गीहुं ओ तोड़ कीजै नै उबाला किया । पाचे फूटे पीड़ा करे तो विप्रनाथ जोगी री आज्ञा फुरे ।

विधि—कुमारी कन्या के हाथ से कते सूत की डोरी करके—७ गांठ मत्र पढ़कर दे, पैर के बांध दे । बाला ठीक हो जायगा ।

दाद का मंत्र

मंत्र—ॐ गुरुभ्यो नमः देव देव पूरी दिशा मेरुनाथ दलक्षना भरे विशाहतो राजा वैरधिन आज्ञा राजा वासुकी के आन हाथ वेगे चलाव ।

विधि—इस मंत्र को पानी पर पढ़कर वह पानी पिलाने से दाद दूर होता है ।

घाव की पीड़ा का मंत्र

मंत्र—सार सार बिजै सार बांधूं सात बार फूटे अन न ऊपजे घाव सीर राखे श्री गोरखनाथ ।

विधि—इस मंत्र को सात बार पढ़कर घाव पर फूंके तो पीड़ा कम हो, घाव भरे ।

क्रोध-शान्ति मंत्र

मंत्र—हलीं ठीं ठीं क्रोध प्रशमन ह्रीं ह्रीं हां क्लीं सः सः स्वाहा ।

विधि—इस मंत्र को सात बार पढ़कर पहनने के वस्त्र के एक कोने में गांठ लगाने से, जिस व्यक्ति के उद्देश्य से मंत्र का जप किया जाय, वह चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष, समीप पहुंचते ही उसका क्रोध शान्त हो जायगा ।

बेचैनी दूर मंत्र

मंत्र—ॐ हंसः हंसः।

विधि—किसी कारण से कोई स्त्री-पुरुष बेचैनी अनुभव करते हों तो उस समय उपरोक्त मंत्र से पानी को २० बार अभिमन्त्रित कर पिलाने से तुरन्त बेचैनी दूर होती है।

भोजन पचाने का मंत्र

मंत्र—ओं नमो आदेश गुरु को अगस्त्यं कुंभकरणं च शर्ति च वडवानलः आहार पाचनार्थाय स्मरत भीमस्य पंचकम् स्फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—खाना खाने के बाद सात बार मंत्र पढ़कर पेट पर हाथ फेरे तो अधिक खाया हुआ खाना हजम हो जाता है।

वीर्य-स्तंभन मंत्र

मंत्र—ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय मनोभिलाषितं स्तंभनं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि—दूध को १०८ बार अभिमंत्रित कर पीने से वीर्य-स्तंभन होता है।

कान्ति बढ़ाने का मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं कंकाला काली मधुमातंगी मदविह्वली मनमोहिनी मकर-ध्वजे स्वाहा।

विधि—यह स्नान मंत्र है। इसको पढ़कर स्नान करने से कान्ति बढ़ती है।

कवि बनने का मंत्र

मंत्र—ॐ ऐं हं ऐं हं वद वद स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का १०००० जाप कर लेने से मनुष्य कवि बनने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

वाक्-सिद्धि मंत्र

मंत्र—ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचा सिद्धि बिना पर्वत गते द्रां द्रीं द्रूं द्रें द्रौं द्रः।

विधि—मस्तक पर बायां हाथ रखकर एक लाख जाप करे तो वचन-सिद्धि हो।

प्रवास में आराम पाने का मंत्र

मंत्र—गच्छ गौतम शीघ्रत्वं ग्रामेषु नगरेषु च आसनं वसनं शय्यां ताम्बूलं यच्च कल्पयेत् ।।

विधि—प्रवास में जिस नगर जाना हो, उसके समीप पहुंचने पर सात बार इस मंत्र को पढ़े। फिर नगर में प्रवेश करे तो अपने आप समीचीन सुख-सुविधा प्राप्त होगी।

सुन्दर भाषण देने का मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं कीर्ति कौमुदी वागेश्वरी प्रसन्न वर दे कीर्ति मुख मन्दिरे स्वाहा।

विधि—प्रतिदिन एक माला फेरे। व्याख्यान में जाने से पहले एक बार पढ़ ले, फिर व्याख्यान दे, अत्यन्त सफलता होगी।

डूबती नाव बचाने का मंत्र

मंत्र—ओं ह्रीं थंभेउ जल जलणं दुट्ठं थंभेउ स्वाहा।

विधि—शुभ मुहूर्त में ११००० जाप से मंत्र सिद्ध कर ले। जब आवश्यकता पड़े, नाव डूबती हो, इसके गुणन मात्र से नाव डूबने से बच जायगी।

अनाज में कीड़ा नहीं पड़ने का मंत्र

मंत्र—ओं नमो भगवउ रिद्ध करी सिद्ध करी वृद्धि करी, अणिमा, महिमा ए धान सुलै तो बालीनाथ अचल गुसांई की आण।

विधि—पहले इस मंत्र को २१ दिन तक नित्यप्रति एक माला फेर कर सिद्ध करे। फिर नदी के किनारे २१ कंकड़ों को अभिमंत्रित कर अनाज में रक्खे तो उसमें कीड़े नहीं पड़ें।

सूखा वृक्ष हरा हो मंत्र

मंत्र—ओं नमो आदेश गुरु कूं अघोर अघोर महा अघोर अजर अघोर वजर अघोर अंड अघोर पिंड अघोर सिव अघोर संगति अघोर चन्द अघोर सूरज अघोर पवन अघोर पाणी अघोर जमी अघोर आकाश अघोर अनादि पुरुष बूजंत हो अलील ए घट पिंड का रखवाला, जल में न डूबणा अगन में न बलणा सहस्रधारा न कटणा, जमीन के पेट होय लिप जाणा सूका रूंख हरिया होणा। ओं अघोर मंत्र सोहं।

विधि—पहले ११००० जाप करके इस मंत्र को सिद्ध कर ले फिर जो वृक्ष सूख रहा हो, उसके पास जाकर पूर्व की ओर खड़ा होकर पानी भरे हुए कांसे के प्याले में नौ बार मंत्र पढ़कर पानी को वृक्ष के चारों ओर छिड़क दें, वृक्ष हरा हो जायगा।

बच्चा दूध पीवे (बंगाली मंत्र)

मंत्र—आंदूनी कांदूनी कूल तोरे बासा, पोरेर छेले कांदिए कोरियाछो तामासा नाक काटबो, चूल काटबो, बेचिबो वालो कि यार हाटे न कांदो चूप कोरे थाको, भावेर कीले लो कोरे थाको माहादेवेर बोले कार दोहाई माहादेवेर दोहाई।

विधि—एक कटोरी पानी से भरे, उस पर तीन बार मंत्र पढ़े, प्रत्येक बार फूंक मारे, फिर उस पानी से मुंह धोए, नाभि के लगावे व स्तन धोवे, बच्चा दूध पीवे।

कुश्ती जीतने का मंत्र

मंत्र—ओं नमो आदेश गुरु को, अंगा पहरूं, भुजंगा पहरूं पहरूं लोहा सार, आते का हाथ तोड़ूं, पैर तोड़ूं मैं। हनुमन्त वीर उठ उठ नाहर सिंह वीर तूं जा उठ सोलह सौ सिंगार मेरी पीठ लगै माही हनुमन्त वीर लजावे तोहि पान सुपारी नारियल अपनी पूजा लेहु आपना सा बल मोहि पर देहु मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—किसी भी मंगलवार को गेरू का चौका लगाकर, लूंगी का लंगोट बांध कर धूप, दीप देकर हनुमान जी की पूजा करे। फिर उसी दिन से ४० दिन तक प्रति दिन १०८ की संख्या में मंत्र का जप करे तथा मंगलवार के दिन पान सुपारी एवं खोपरे का भोग रखे। अन्य दिन भोग के लिए लड्डू रखा करे। यों मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय अर्थात् कुश्ती लड़ने से पूर्व हनुमान जी को दंडवत् करके ७ बार इस मंत्र को अपने ऊपर पढ़कर अखाड़े में उतरे तो अपने प्रतिद्वन्द्वी पर विजय प्राप्त होती है।

मृत शरीर में दुर्गन्ध पैदा न हो और गले नहीं : मंत्र

मंत्र—समाद गायत्री सत्ये भाव ओं गुरुजी सोधो धरती खोदो समाध, साढ़े तीन हाथ की गुफा घोर घोर महाघोर अजर घोर वज्र घोर हंसो हंस अलख निरंजन गले तो माता पृथ्वी लाजे, चाम गले तो गुरु गोरख लाजे, सवा हाथ बत्तीस आंगल, ब्रह्मा खोदी, विष्णु टाली, शंकर गौरां मिट्टी डाली, कहे नर ध्यान, अमर तन होई, पड़े न कीड़ा, आवे न खसबोई, घोर गायत्री सम्पूर्ण सही, अनन्त करोड़ सन्तां में बैठकर बाबा गुरु गोरखनाथ कही।

विधि—मनुष्य के मृत होने के बाद जिस शरीर को पृथ्वी में गाड़ा जाय या दो-तीन दिन बाद जलाया जाय तो वह मृत शरीर गलने लगता है और उसमें दुर्गन्ध उत्पन्न होने लगती है। इसलिए जब शरीर मृत हो जाय तो यह मंत्र ७ बार पढ़कर सात फूंक शरीर के मार दे तो उस शरीर में दुर्गन्ध पैदा नहीं होगी। जो शरीर पृथ्वी में गाड़ा जाय, उसे गड्ढा खोदकर अन्दर रखने के बाद सबसे पहले सात चिमटी धूल सात बार मंत्र पढ़कर डाल दे, वह मृत शरीर न सड़ेगा न गलेगा।

लड़की ससुराल रहे : मंत्र

मंत्र—ॐ नमो भोगराज भयंकर परिभूय उत उधरई जोई जोई देखै मारकर तासो सो दिखै पाव परंता ॐ नमो ठः ठः स्वाहा।

विधि—सांभर नमक की १०८ कांकरी अभिमंत्रित कर खिलाए तो लड़की ससुराल रहे। रूठ कर नहीं आवे।

पशु-रोग-निवारण : मंत्र

मंत्र—हाँ हीं हूं हौं हः।

विधि—यह पंचाक्षर मंत्र अत्यन्त प्रभावशाली है। गाय के गले में जो घंटी लटकी रहती है उस घंटी में खड़िया मिट्टी से मंत्र लिख कर गाय के गले में बांध दे। उस घंटी की आवाज जितनी दूर सुनी जायेगी, उतनी दूर तक के हर पशु की रोग-पीड़ा शान्त हो जायगी।

गाय भैंस के दूध बढ़ाने का मंत्र

मंत्र—ओं हीं कराली पुरुष मुख रूपा ठः ठः।

विधि—उपरोक्त मंत्र से २१ बार जल अभिमंत्रित कर गाय भैंस के आंचल पर रोज लगाने से दूध बढ़ता है।

दूसरा मंत्र

मंत्र—ओं हुंकारिणे प्रसर शतीत।

विधि—कार्तिक शुक्ला १४ के दिन एक माला फेरने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर रोज घास अभिमंत्रित कर खिलाने से दूध बढ़ता है।

श्वान-बोली-ज्ञान : मंत्र

मंत्र—ॐ स्फि स्फि काली स्वाहा।

विधि—नीम के वृक्ष के मूल के पास अर्ध रात्रि में बैठकर धूप, दीप, नैवेद्य से इष्ट देव का पूजन कर, इसका जाप प्रारंभ करे। १०००० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। साधक श्वान की बोली समझने लगता है। जाप एक आसन में करे। एक दिन में नहीं हो सके तो दूसरे दिन करे।

कौआ-बोली-ज्ञान : मंत्र

मंत्र—ॐ क्रां का का।

विधि—मस्तक पर कौए की पूंछ रखकर चितासन पर बैठकर रात्रि में ७००० जाप करे। साधक कौए की बोली समझने लगेगा।

तोता-मैना-बोली-ज्ञान : मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीं शुक शुक बोधय बोधय स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का रात्रि में १०००० जाप करने से साधक तोता-मैना की बोली समझने लगेगा।

टांटिया के विष पर मंत्र

मंत्र—टांटियो विष टांटियो अलकियो टांटियो परमेश्वर तो पीलो कियो अल-कियो टांटियो महादर स्यामी झाड़ो दियो उतर ज्या विष टांटियो।

विधि—जब शरीर के किसी भी भाग में टांटिये ने डंक लगा दिया हो तो तुरन्त एक लोहे का टुकड़ा लेकर डंक की जगह पर उस लोहे के टुकड़े को फेरते जाएं व मंत्र बोलते जाएं। १०-१५ बार बोलने से सूजन नहीं आयेगा व डंक की जगह टिकड़ी नहीं बंधेगी, जलन समाप्त होगी।

विच्छू के विष पर मंत्र

मंत्र—(१) तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रसादात् एष योगः फलतु।
(२) आँ कँ खँ स्वाहा।

विधि—पहले एक की संख्या वाला मंत्र एक बार बोले, फिर दो की संख्या वाला मंत्र १०८ बार बोले, झाड़ा दे, विष उतर जायगा।

दूसरा मंत्र

मंत्र—ॐ पक्षि स्वाहा।

विधि—यह मंत्र १०००० जाप कर लेने से सिद्ध हो जाता है। फिर जब काम पड़े, २१ बार पढ़कर झाड़ा देने से विष उतर जायगा।

तीसरा मंत्र

मंत्र—शान्तिनाथ शान्ति करो, विष हरो।

विधि—फाल्गुन महीने के किसी भी शनिवार को आम के वृक्ष के नीचे सूर्योदय से आधा घंटा पहले खड़े होकर हथेली पर थूक कर वृक्ष के कोंपल व नीमझर की तरह जो आमझर लगता है, उसे लेकर दोनों हाथों से मसलता जाये, पन्द्रह मिनट तक मंत्र बोलता जाये। इस तरह ८ दिन तक रोज करे। इससे मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जिस किसी के बिच्छू ने डंक मारा हो, यदि दाहिनी तरफ डंक मारा हो तो साधक दाहिने हाथ से उसका दाहिना हाथ पकड़े व अपने बायें हाथ से उसकी पीठ पर हाथ रखकर झाड़ा दे। ५-७ बार मंत्र बोलने से ही विष उतर जायगा।

सर्प-भय-नाश : घोण-मंत्र

मंत्र—ॐ नमो भगवते श्री घोणे हर हर दर दर सर सर धर धर मथ मथ हरसा हरसा क्ष क्ष व व ह्म्ल्व्यूँ क्ष्म्ल्व्यूँ ध्म्ल्व्यूँ र्म्ल्व्यूँ वम्ल्व्यूँ सर्पस्थ गति स्तम्भं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का तीनों समय स्मरण करने से सर्प का भय मिटता है।

सर्प-गति-बन्द : मंत्र

मंत्र—हुं क्षूं ठः ठः।

विधि—इसके जाप से सर्प की गति बन्द होती है।

सर्प-रेखा-स्तंभन

मंत्र—ॐ ह्रीं ह्रीं गरुड़ाज्ञा ठः ठः।

विधि—यह मंत्र जप कर एक लकीर निकाल दे तो सर्प उस लकीर का उल्लंघन नहीं करेगा।

सर्प को घड़े में डालने का मंत्र

मंत्र—ॐ ल ल ल ल ला ला कुरु स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का जाप करने मात्र से सर्प घड़े में प्रविष्ट हो जायगा।

सामने आते सर्प को रोकने का मंत्र

मंत्र—ॐ प्ल सर्प कुलाय स्वाहा अशेष कुल सर्प कुलाय स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का १०००० जाप करके पहले सिद्ध कर ले। फिर जब आवश्यकता हो, सात बार बोलकर मिट्टी को अभिमंत्रित कर सर्प के सामने फेंके तो वह दूर भाग जायगा।

हाजरात : बंगाली मंत्र

मंत्र—काली माता काली माता ओतो ते।

विधि—२१ दिन तक नित्य प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर अगरबत्ती जलाकर पूर्व की ओर मुंह करके प्रति दिन तीन माला का जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। कपूर का काजल बनाकर उसमें तिल्ली का तेल मिला कर हाजरात चढ़ायें, अगरबत्ती खेवें। हाजरात चढ़ाने की विधि मुस्लिम हाजरात मंत्र में आगे बताई गई है। उसमें पीर साहब का आवाहन होता है। इसमें काली माता या हनुमान जी का आवाहन होता है।

हांडी. बांधने का मंत्र

मंत्र—जल बाँधूं, जलाई बाँधूं, जल की बाँधूं काई, चूल्हे चढ़ी हांडी बाँधूं, बाँधूं तेल कढ़ाई, सेंस मण लकड़्यां का भार बाँधूं, बाँधूं अग्नी माई, मेरी बाँधी नहीं बँधे, तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

विधि—११ दिन में १२५०० जाप करके मंत्र सिद्ध करे। फिर सात कांकरी व थोड़ी-सी राख लेकर ११ बार इस मंत्र से अभिमंत्रित कर हांडी में गिरा दे तो हांडी का पानी या जो भी उसमें होगा, गर्म नहीं होगा।

अग्नि-स्तंभन-मंत्र

मंत्र—ॐ नमो कोरा करुवा, जल से भरिया। ले गौरां के सिर पर धरिया। ईश्वर ढोले, गिरज्या न्हाय, जलती आग शीतल हो जाय। सत्य नाम आदेश गुरु को।

विधि—इस मंत्र को २१ दिन तक रोज १००० जाप कर सिद्ध कर ले। फिर जब भी काम पड़े, कोरे मिट्टी के बर्तन में जल भर कर, उसे २१ बार अभिमंत्रित कर जल का छींटा दे तो जलती आग बुझ जाए।

●●●

बारह राशि : मंत्र

मेष-राशि

लक्ष्मीनारायण मंत्र—ॐ श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः।

वृष-राशि

वासुदेव मंत्र—ॐ क्रीं उत्तर थायठधृताय नमः।
विश्वरूप मंत्र—ॐ ह्रीं विश्वरूपाय नमः।

मिथुन-राशि

कृहम मंत्र—ॐ क्रीं कृहमाय नमः।
केशव मंत्र—ॐ क्रीं केशवाय नमः।

कर्क-राशि

हिरण्यगर्भ मंत्र—ॐ ह्रीं स्वाव्यास हिरण्यगर्भव्यरूपाय नमः।
हरिवंश मंत्र—ॐ ह्रीं हरिहराय नमः।

सिंह-राशि

मुकुन्द मंत्र—ॐ बालमुकुन्दाय नमः।
मदनगोपाल मंत्र—ॐ क्रीं मदनगोपालाय नमः।

कन्या-राशि

परमानन्द मंत्र—ॐ ह्रीं परमात्मने नमः।
पीताम्बर मंत्र—ॐ ह्रीं पीताम्बराय परमात्मने नमः।

तुला-राशि

राम मंत्र—श्री रामाय नमः।

वृश्चिक-राशि

नारायण मंत्र—ॐ नमो नारायणायेभिमंत्र सर्वार्थ साधकः।
जानुकी मंत्र—ॐ क्रीं जानुकी रामाय नमः।

धन-राशि

भगवान् मंत्र—ॐ ह्रीं क्रीं भगवते नमः।
धरणीधर मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणीधराय नमः।

मकर-राशि

ब्रह्मतारक मंत्र—ॐ श्रीं वत्साय उपेन्द्राय नमः।

कुम्भ-राशि

गोपाल गोविन्द मंत्र—श्री गोपालगोविन्दाय नमः।
श्याम मंत्र—ॐ क्रीं ह्रीं सान्मने श्यामरामाय नमः।

मीन-राशि

दामोदर मंत्र—ॐ ह्रीं दामोदराय नंदनाय नमः।
चक्रपाणि मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथांगचक्राय नमः।

प्रतिदिन स्मरणीय मंत्र

एकम को एक अक्षरी मंत्र—'ॐ'
दूज को दो ,, ,, —'ॐ ह्रीं'
तीज को तीन ,, ,, 'ह्रींकार'
चौथ को चार ,, ,, सिद्धिचक्रं
पंचमी को पांच ,, ,, णमो सिद्धाणं
छट्ठ को छह ,, ,, ॐ सिद्धेभ्यो नमः
सप्तमी को सात ,, ,, णमो अरहंताणं
अष्टमी को आठ ,, ,, ॐ णमो अरहंताणं
नवमी को नव ,, ,, ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिनानाम्
दशमी को दस ,, ,, चत्तारि मंगल पद नमः
एकादशी को ग्यारह ,, ,, ॐ ॐ ह्रीं हंस श्रीं हंस ह्रीं ॐ ॐ
द्वादशी को बारह ,, ,, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः
त्रयोदशी को तेरह ,, ,, ॐ अर्हत् सिद्ध सयोग केवली स्वाहा

चतुर्दशी को चौदह अक्षर मत्र श्रीमद् वृषभादिवधमानान्तेभ्यो नमः
पंचदशी (पूर्णिमा) को पंद्रह ,, ॐ ह्रीं नभमण्डलवते भाले चन्द्ररेखा नमः
अमावस्या—३० अक्षरी ,, ॐ जोग्गे मग्गे तच्चे भूदे भव्वे भविस्से अक्खे पक्खे जिण पारिस्से स्वाहा···ॐ ह्रीं स्वर्हं नमो नमोऽर्हताणं ह्रीं नमः।"

प्रतिवार स्मरणीय मंत्र

वार—

अपराजित वार आदित्यवार—णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।

सोमवार—१६ अक्षर—अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः

मंगलवार—६ अक्षर—अरहंत सिद्ध

बुधवार—५ अक्षर—अ सि आ उ सा

गुरुवार—४ अक्षर—अरहंत

शुक्रवार—२ अक्षर—सिद्ध

शनिवार—१ अक्षर—ॐ

विधि— प्रातःकाल स्नान के पश्चात् एक सफेद धोती शरीर पर लपेट कर पूरब या उत्तर की ओर मुंह करके प्रति दिन व वार के मंत्र का सफेद रंग की माला या रुद्राक्ष माला से जाप करे तो सुख-समृद्धि, धन-धान्य की वृद्धि, परिवार में प्रेम व शान्ति हो। हर प्रकार से मान-सम्मान का वृद्धि कारक है।

प्रसिद्ध सांगलिया की धूनी का सरभंग मंत्र (जंजीरा)

मंत्र—ॐ गुरूजी सेत घोड़ा सेत पलान चढया बाबा महमदा पठान कोल हिन्दू कोल मुसलमान, कोल का बांध्या जमीन आसमान, तारिया गुरु, जागिया मुसाण, मैं सेया बावा रहमान, तले धरतरी धीर धरावे ऊपर अमर सकल पर सोये, सरभंग पुन सकल पर वापे, सरभंग इन सकल पर गाजे, सरभंग चंद सकल पर वापे, सरभंग सूरज सी किरण, सूरज सी जोत में, सरभंगी सब का संगी, सब को भेद बतावो, ऊंचा नीचा राजा पकडूं, भ्रान्त कबहु न लाऊं, मैं ओघड़ का चेला, फिरूं अकेला, न कोई शीश निवाऊं, मैं भटियारी कामणगारी घर घर लाय लगाद्यूं नारी, कामन टुमन करूं सनेवा, राखूं बरसता मेहवा, शिखर चोढ़द्यूं वाणी पढंता, कबहुं न मांगे पाणी, जोर करे तो जाने न द्यूं, इन्द्री पकड़ निवाऊं, राजा करद्यूं काला मिढा, हाकिम करद्यूं भैंसा, नौ नाथां में बोलूं ऊंचा ऊंचा कया त्यागी, कया वैरागी, कया भोपा भरडा भांड इतरे की तो मुंड माई मच्छेरी का माथा मुंड, मच्छेरण्डी

का मुंडा माथा, मत बांध कूड़ कपट का गाथा, जोगी बड़ा जगत के भीतर, तां तक ध्यान धरिया, जोगसर कूख से करद्यूं न्यारा, उल्टा चरखा चलाऊं, उल्टा साद समेटूं बाणी गोरखा बोल्या उल्टी बाणी, कुए ऊपर चादर टाणी, मड़ मसान धूनी घाली आसन डेरा डालूं, जगत् बुलाऊं डेरे, हरी लीरी बावन भैरूं, छप्पन कलवा, नौ नारसिंह, सात बायां बीच बायली, वा ही म्हारी दासी, उठ मूठ कामन, करतूत, छल, छतर, धक्का, धूम, भूत, पलीत, जीन, खयस, कचीया मुसाण, जलोटिया, फलोटिया, डाकिनी, साकिनी, नजर, टपकार, छत्तीस रोग, बहत्तर बलाय, बंध करता लाय, मेरा हकाला कारज सही नहीं करो तो राजा रामचन्द्र की करोड़ करोड़ बार दुहाई, फिरे छठ सोद अन आसमान खोदूं तीजी ताली इतरे में अटकाऊं नाड़ा, कदेई न निकसे बाला, सूखा छोड़ गरब में राखे, तीजी घड़ी बदाऊं बाला, धीरी कर उपकार चलाऊं आखर आगे चाले न पाखर मारूं मेख वजर को टाकर, मंत्र उड़द के गोला बाऊं, पत्थर फोड़ के उड़ाऊं, सीधाई का मूसा पकड़ ठोकद्यूं धड़ माई टिकालीया मुसाण की छाई, लागे फकड़ की टकर, जंगी सा बादशाह होज्या सूख साक लकड़। सरभंग लीला जाप संपूर्ण सही, सत की गद्दी बैठ के बीजी आपो आप कही।

विधि—४१ दिन तक हर रोज सुबह, दोपहर तथा शाम को कुए पर जाप करने—५१ बार मंत्र पढ़ने से वह सिद्ध हो जायेगा। एक अन्न खाना, एक समय खाना, दक्षिण के अतिरिक्त तीन कूंटों—दिशाओं में दीपक करना, तीन बार भोग लगाना, उठते समय शराब, मिठाई तथा बाकलों का भोग लगाना—अपेक्षित है। जितने कार्य मंत्र में लिखे हैं, वे सब संपन्न होंगे।

अबोहर—गोरखनाथ सम्प्रदाय की धूनी का प्रसिद्ध सरभंग मंत्र (जंजीरा)

मंत्र—ॐ गुरुजी मैं सरभंगी सबका संगी, दूध मांस का इकरंगी, अमर में एक तमर दरसे, तमर में एक झांई, झांई में पड़झांई दरसे वहां दरसे मेरा साईं, मूल चक्र सरभंग का आसन, कुण सरभंग से न्यारा है, वांहि मेरा श्याम विराजे ब्रह्म तंत से न्यारा है, ओघड़ का चेला, फिरूं अकेला, कभी न शीश नवाऊंगा, पत्र पूर पत्रंतर पूरूं, ना कोई भ्रांत लावूंगा, अजर बजर का गोला गेरूं, परबत पछाड़ उठाऊंगा, नाभी डंका करो सनेवा, राखो पूर्ण बरसता मेवा, जोगी जुग से है न्यारा, जुग से कुदरत है न्यारी, सिद्धां की मूंछ्यां पकड़ो, गाड़ देवो धरणी मांही, बावन भैरूं, चौसठ जोगण, उल्टा चक्र चलावै बाणी, पेड़ू में अटकै नाड़ा, ना कोई मांगै हजरत भाड़ा मैं भटियारी आग लगाद्यूं, चोरी चकारी बीज बारी, सात रांड दासी म्हांरी,

बाना धारी कर उपकारी कर उपकार चलावूंगा, सीवो, दावो, ताप तेजरो, तोडूं तीजी ताली खट चक्र का जड़द्यूं ताला कदेई न निकसे गोरख बाला, डकणी, शकणी, भूतां, जांका करस्यूं जूता, राजा पकडूं, हाकम करद्यूं मुंह काला, नौ गज पाछा ठेलूंगा, कुवे पर चादर घालूं, आसन घालूं गहरा, मड़ मसाणा धूणो धुकाऊं नगर बुलाऊं डेरा, ये सरभंग का देह, आप ही कर्ता, आप ही देह, सरभंग का जाप सम्पूर्ण, सही—संत की गद्दी बैठ के गुरु गोरखनाथ जी कही।

विधि—एकान्त स्थान धूणा जलाए। उसमें एक चिमटा रोपे। नित्य प्रति धूणे में एक रोटी पकाए। वह रोटी काले कुत्ते को खिला दे— पहले उस रोटी को चिमटे पर चढ़ाए, फिर कुत्ते को खिलाए। २१ दिन तक जाप करे। प्रतिदिन उस धूणे के पास आसन पर बैठकर २१ बार मंत्र पढ़े। इस प्रकार मंत्र सिद्ध हो जायेगा। फिर किसी भी ज्वर पर तीन काली मिर्च सात बार मंत्र पढ़कर रोगी को चबादे, ज्वर शान्त होगा। भूत, प्रेत, यक्ष, डाकिनी, शाकिनी, नजर, टपकार आदि पर ७ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दे, तुरन्त ठीक होंगे। कोर्ट, कचहरी आदि में जाए तो तीन बार मंत्र पढ़कर जाए, जो भी कार्य होगा, सफल होगा।

त्रिकालदर्शी हाजरात अंगूठी

जैसे हाजरात अंगूठे पर चढ़ाई जाती है, वैसे ही इसके लिए अंगूठी भी बनाई जाती है। दोनों एक समान ही कार्य करते हैं। अंगूठी सोना, चांदी, तांबा या चाहे जिस धातु की बनवा लें। स्फटिक का एक चौकोर, अच्छा नग लें। अंगूठी बनवाकर तैयार रक्खें, नग बाद में जड़ाएं। अंगूठी बन जाने के बाद श्मशान से चिता का एक कोयला लाकर पीस लें। थोड़ा सा कपूर का काजल बना लें। काले सांप का केंचुल जलाकर राख कर लें। तीनों को समभाग लेकर, थोड़ा गर्म कर अंगूठी में डाल दें—चारों ओर फैला दें। तत्पश्चात् दो बूंद चमेली का तेल उसके ऊपर गिरा दें। निम्नांकित मंत्र २१ बार पढ़ें। पढ़ने के साथ प्रत्येक बार अंगूठी पर फूंक मारते जाएं।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्मशानवासिनी महाकालिके आगच्छ आगच्छ, अवतर अवतर, पितून् दर्शय दर्शय ह्रीं स्वाहा।

विधि—यह मंत्र पढ़ने के बाद स्फटिक के नग को उस अंगूठी में जड़वा दें। त्रिकालदर्शी अंगूठी तैयार है। अब इसका प्रयोग भी उसी तरह करना है, जिस तरह अंगूठे पर हाजरात चढ़ाते समय करते हैं। इसमें आह्वान श्रीगणेशजी महाराज का करना है। प्रयोग करते समय अंगूठी के ठीक बीच में दृष्टि को स्थिर रखना है। दृष्टि स्थिर होते ही नीचे का काला भाग सफेद नजर आने लग जायेगा इससे वर्तमान, भूत तथा भविष्य तीनों काल की बात जानी जा सकती है। खोई

हुई वस्तु के सम्बन्ध में जाना जा सकता है। हाजरात चढ़ाते समय अगरबत्ती अवश्य रखनी चाहिए। बच्चा १०-१२ साल से ऊंचा नहीं होना चाहिए। देवगण वाले बच्चे पर हाजरात बहुत समीचीनतापूर्वक चढ़ती है।

लाभकारी चामत्कारिक अंगूठी

यह अंगूठी भक्तामर स्तोत्र की पहली गाथा (श्लोक), ऋद्धि तथा मंत्र द्वारा बनाई जाती है।

गाथा—

भक्तामर प्रणतमौलिमणि प्रभाणामुद्द्योतकं दलितपापतमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादावालम्बनं भवजले पततां जनानाम्॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं, णमो जिणाणं ह्रां ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे, फुट् विचक्राय झ्रीं झ्रीं स्वाहा।

मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीँ ह्रुं श्रीँ क्लीँ ब्लुं क्रौं क्रौं ह्रीँ नमः।

अंगूठी बनाने का विधान

एक रत्ती शुद्ध सोना, बारह रत्ती शुद्ध चांदी तथा सोलह रत्ती शुद्ध तांबा—सारे उनतीस रत्ती धातु रवि पुष्य नक्षत्र के दिन मिलाकर एक अंगूठी नक्षत्र रहते ही बनवाएं। फिर पंचामृत से धोकर उसे भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति के आगे बाजोट पर रखकर भक्तामर-गाथा ऋद्धि तथा मंत्र का पाठ प्रारंभ करें। एक बार बोलें व अंगूठी के ऊपर चन्दन का तिलक करें। फिर गाथा, ऋद्धि तथा मंत्र बोलें व तिलक करें। इस प्रकार १०८ बार गाथा, ऋद्धि व मंत्र का जाप करें तथा अंगूठी पर तिलक करें। फिर दाहिने हाथ की तर्जनी (अंगूठे के पास वाली) अंगुली में अंगूठी पहन लें। भोजन करते समय बायें हाथ में पहन लें। हाथ धोने के बाद फिर दाहिने हाथ में धारण कर लें। पूजा के बाद अंगूठी पहनते समय—९ नवकार गुणकर पहनें।

यह अंगूठी दरिद्रता का नाश करती है, लक्ष्मी का लाभ करती है, विघ्न-बाधाएं दूर करती है। कुमारी कन्याओं तथा स्त्रियों को मने-वाञ्छित फल देती है।

मुस्लिम-मंत्र

हाजरात

मंत्र—विशमिल्लाहररहमान नीर रहीम, ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर मैंदर मादर दस्तगीर मदत मेरा पीरान पीर करो घोड़े पर भीड़ चढ़ो हजरत पीर हाजर सो हाजर।

विधि—आधी रात के वक्त या सुबह पश्चिम की ओर मुंह कर उल्टी माला से (माला के मनके पीछे से आगे को सरकाते हुए) २१ दिन तक रोज एक माला फेरकर मंत्र सिद्ध कर ले। फिर जिस दिन हाजरात चढ़ानी हो, उस दिन सवेरे आठ बजे से पहले पहले सीधे, सच्चे बालक को लाकर उसके दाहिने हाथ के अंगूठे पर काली स्याही लगा दे। बालक स्नान आदि किया हुआ पवित्र हो। नाखून पर लगाई गई काली स्याही में लड़के को देखने के लिए कहे। जब लड़का साधक से यह कहे कि मुख दीखने लग गया तो कहा जाए, दो आदमी आएं। वे आ जाएं, तब दो और, फिर दो और फिर दो। इस प्रकार आठ आदमी आ जाएं तो उनसे कहे, झाड़ू वाले को बुलाओ, भिश्ती को बुलाओ, पानी छिड़कवाओ, फर्श वाले से फर्श मंगवाओ, बिछवाओ, दो कुर्सी और तख्त मंगवाओ, गद्दी बिछवाओ। यह सब हो जाने पर कहा जाए कि पीरान पीर साहब से जाकर अर्ज करो कि आपका भक्त ···(साधक का नाम) आपको याद कर रहा है, मुन्शी साहब को साथ लेकर पधारें। जब पीरान पीर साहब आकर कुर्सी पर बैठ जाएं तो मुन्शी साहब से कहें कि पीरान पीर साहब से अर्ज करें कि आपका भक्त··· (साधक का नाम) आपसे प्रश्न पूछता है। लड़के को उत्तर मिलेगा। अगर लड़का वह उत्तर न समझ सके तो मुन्शी साहब से कहे कि हमें···भाषा में लिखकर समझाएं या दिखाएं। मुन्शी साहब लड़के को इच्छित भाषा में लिखकर समझा देंगे—दिखला देंगे। काम पूरा होने पर पीरान पीर साहब से जाने की अर्ज करे और तकलीफ देने के लिए माफी मांगे। फिर लड़के के अंगूठे की स्याही धो डालें।

नोट—मंत्र सिद्ध करते वक्त 'विशमिल्लाहररहमान नीर रहीम' केवल एक बार ही बोलना है। सिद्ध करते समय व हाजरात चढ़ाते समय निरन्तर लौंग, इलायची, लोबान धूप खेता जाए अर्थात् एक मिट्टी के बर्तन में अंगारे या उपले रखकर उन पर लौंग, इलायची और लोबान डालता जाए।

आठ-नौ वर्ष के बालक पर हाजरात अच्छी चढ़ती है।

फरिश्ता-साधन-मंत्र

मंत्र—विशमिल्लाहररहमान नीर रहीम, वैजा वतस्तम वतस्तम जब्बारि।

विधि—शुक्ल पक्ष में सोमवार, गुरुवार या शुक्रवार को रात के सवा नौ

बजने के बाद साधना प्रारंभ करे। ढाई हाथ सफेद, शुद्ध कपड़ा बिछाए। पश्चिम की ओर मुंह करके उस पर बैठे। मस्तक पर एक वस्त्र रखे। दाहिनी तरफ पानी का एक लोटा रखे। बाईं तरफ बतासे या चने, एक लगा हुआ मीठा पान, जिसमें एक लौंग हो, रखे, अगरबत्ती जलाए, इत्र (केवड़ा, गुलाब या चमेली) के चार फोहे रखे। प्रत्येक वस्तु उपर्युक्त मंत्र इक्कीस-इक्कीस बार पढ़-पढ़कर रखे। 'दोजानां' आसन यानी बायां पैर कूल्हे के नीचे मोड़कर व दाहिने पैर मोड़कर कूल्हे से परे रखे। ४१ दिन तक रोज तीन घण्टे निरन्तर जाप करे। 'विशमिल्लाह' वाला पैरा जाप शुरू करते वक्त केवल एक बार ही बोले। तत्पश्चात् मंत्र का जाप चालू करे। जाप के समय प्यास लगे तो उस लोटे से पानी पी ले। ब्रह्मचर्य से रहे, तामसिक पदार्थ न खाए, किसी प्रकार की अशुचि---अपवित्रता न हो। जाप प्रारंभ करे, उसके तीसरे दिन चार इत्र फोहों में से एक रखे, तीन मस्जिद में चढ़ा दे। बतासे हर रोज भिखमंगों में बांट दे। ११वें दिन फिर नये फोहे उसी पहलेवाले क्रम से रखे। बीच-बीच में चमत्कार हो सकते हैं पर बिल्कुल नहीं घबराना चाहिए। वरना नुकसान भी हो सकता है। जाप के समय सांस नहीं तोड़ना चाहिए। इस तरह जाप करते-करते बीच-बीच में एक बार सांस लेते हुए भी जाप कर लेना चाहिए।

कारावास-मुक्ति-मंत्र

मंत्र—'विशमिल्लाहररहमान नीर रहीम', ला यमल्हा इल्हा अन्ता शुभाने का इनी कुन्तो मिनह ज्वाल मीन।

विधि—कारागार में हो, अपील की सुनवाई न हो रही हो, जेल होने का अंदेशा हो तो इस मंत्र का ४१ दिन तक जाप करे। सफलता मिलेगी। परन्तु मामला सच्चा होना चाहिए। 'विशमिल्लाह' वाला पैरा केवल एक बार ही बोलना है।

वशीकरण-मंत्र

मंत्र—'विशमिल्लाहररहमान नीर रहीम' आलमोति हो वल्लाह।

विधि---शुक्रवार से जाप शुरू करे। एक महीने तक हर रोज एक माला फेरे। फिर इस मंत्र से अभिमंत्रित कर किसी को कोई वस्तु खिलाए, वह वश हो।

दूसरा-मंत्र

मंत्र--'विशमिल्लाहररहमान नीर रहीम' सलामुन कौलुनमिनर्रविवर्रहीम तनजोलुल अजीजुर्रहीम।

विधि—एक बार 'विशमिल्लाह' उच्चारित कर मंत्र को सात बार अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर पढ़कर, उन हाथों को अपने मुंह पर फेर कर जहां जाए, वह वश में हो, साधक की इच्छा पूरी करे।

रात्रि-भय दूर करने का मंत्र

मंत्र—बाबा फरीद की कामरी अब अंधियारी निश, तीन चीज बाँधूं नाहर, चोर, विष।

विधि—रात को सोते समय इस मंत्र को तीन बार पढ़कर, हथेली पर फूंक मार कर ताली बजा दे, फिर कोई पास नहीं आयेगा।

मार्ग-भय दूर करने का मंत्र

मंत्र—लाहा अला उवा आला कुवाता ई हला विहल हिल आलियल आजिम।

विधि—यात्रा के समय मार्ग में भय लगता हो तो उसी समय धूल लेकर, तीन बार यह मंत्र पढ़कर फूंक दे, धूल बिखेर दे, भय दूर होगा।

नजर, पेट व सिर दर्द मिटाने का मंत्र

मंत्र—'विशमिल्लाहररहमान नीर रहीम' अल हम्दो लिल्लाहे रबील आलमीन हर रहमान नीर रहीम माले की यो मीदीन याका नाम बदोया का नस्ता हीन अहदेई नसरातल मुस्तकी मासरातल गेरील मगदुबे वल दुवालीन आमीन।

विधि—पेट-दर्द हो तो पेट पर, मस्तक में दर्द हो तो मस्तक पर हाथ फेरता जाए, मंत्र बोलता जाए, यों २१ बार मंत्र पढ़ने पर दर्द दूर हो जायेगा। नजर लगी हो तो २१ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दे, ठीक हो जायेगा।

वृक्ष के फल खराब न होने का मंत्र

मंत्र—(१) 'सुराकातेहा' विशमिल्लाहररहमाने रहीम–आल हन्दु लिल्हाहैरवि हल आल आमिन आर रहमाने रहीम माले के इया ओमेद्दिन इया काना वो दोइया काना आस्ताईन–एहे देना ससेरातल, लजिना मस्ता किया से तलराल जिना आन आमता आलाय हीम गायरील मक हुवे आलाय हीम वालिद्दालिन आमिन।

(२) कुहलहो अहलाहो आहद आहलाहो सामाद लाम अलिद वा लाम इयुलाद वालाम इया कुहलदु ऊ फावान आहद।

विधि—एक लोटा शुद्ध पानी लेकर उस पर पहला मंत्र एक बार पढ़े। फिर दूसरा मंत्र तीन बार पढ़कर फूंक दे। इस प्रकार तीन बार करके फूंक दे। फिर वह पानी उस वृक्ष पर छींटे, जिसके बहुत फल आते हैं पर खराब हो जाते हैं। फिर वे (फल) कतई खराब नहीं होंगे।

पेट-दर्द या गोले का मंत्र

मंत्र—अल्ला अल्ला की कोटर्ग अल्ला अल्ला की खाई, गोला बुढ़ी ठिकाणे नहीं आवे तो हजरत अल्ली की दुहाई।

विधि—होली, दीवाली तथा ग्रहण के दिन दो-दो माला फेरे। आवश्यकता होने पर २१ बार मंत्र पढ़े, पेट पर हाथ फेरते जाए, दर्द ठीक हो जायेगा।

उवसग्गहर-स्तोत्र

'उवसग्गहर' स्तोत्र की गाथाओं के सम्बन्ध में काफी मत-भेद है। वर्तमान में उपलब्ध पांच गाथाओं के अतिरिक्त छठी गाथा का होना भी माना जाता है। पर, कहा जाता है कि स्तोत्र के रचयिता आचार्य भद्रबाहु स्वामी द्वारा उसका संहरण कर लिया गया। कई सात गाथाओं का होना मानते हैं तथा कई नौ, तेरह, बीस व सत्ताईस गाथाओं तक का होना मानते हैं। पर, १७वीं शताब्दी से पूर्व की हस्तलिखित प्रतियों में छः या सात गाथाओं से अधिक देखने में नहीं आतीं। वर्तमान में पाँच गाथाओं का स्तोत्र ही अधिक प्रचलित तथा प्रसिद्ध है। वैसे तो कहीं-कहीं इसके रचयिता के सम्बन्ध में भी मत-भेद है। जैसे सतरहवीं शताब्दी की दिगम्बरीय पट्टावली के अनुसार आचार्य मानतुंग सूरि इस स्तोत्र के रचयिता हैं। इन सब विवादों में न जाकर केवल प्रसिद्ध पाँच गाथाएँ यहाँ दी जा रही हैं। पाँच गाथाओं का एक यंत्र व पहली गाथा का 'लक्ष्मी वृद्धिकरण' यंत्र आगे के पृष्ठों में विधि-विधान सहित दिया है। वैसे पूर्णचन्द्रसूरि ने प्रथम गाथा के ८ यंत्र, दूसरी गाथा के २ यंत्र, तीसरी गाथा के ५ यंत्र, चौथी गाथा का १ यंत्र तथा पांचवीं गाथा का १ यंत्र—इस प्रकार कुल १७ यंत्र बताये हैं एवं पार्श्वदेव गणी ने प्रथम गाथा के ८ यंत्र, दूसरी गाथा के २ यंत्र, तीसरी गाथा के १० यंत्र, चौथी गाथा का एक भी नहीं व पाँचवीं गाथा का १ यंत्र—कुल २१ यंत्र बताये हैं। इस पुस्तक में इन सबको न देकर केवल दो यंत्र दिये गये हैं।

पांचों गाथाएं भावार्थ सहित निम्नांकित रूप में हैं—

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥

देव आदि द्वारा कृत उपद्रवों को दूर करनेवाला पार्श्व यक्ष जिनका सेवक है,

जो कर्म-समूह से मुक्त हैं, जो विषैले सर्पों के विष को संपूर्णतः ध्वस्त करनेवाले तथा मंगल व कल्याण के आवास हैं, उन भगवान् पार्श्व को मैं वन्दन करता हूं।

विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥२॥

जो मनुष्य (मंत्राराधक) 'विसहर व फुलिंग' शब्द-गर्भित मंत्र का हमेशा जाप करता है, उसके ग्रह-दोष, भूतादि बाधा, रोग, महामारी, दुर्जन—शत्रु तथा ज्वर का विनाश होता है।

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥

मंत्र तो दूर की बात है, आपको प्रणाम करना भी बड़ा फलप्रद है। आपको प्रणाम करनेवाले मनुष्य तथा पशु-पक्षी तक दुःख और दुर्गति नहीं पाते।

तुहसम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥

भगवन्! आपसे चिन्तामणि तथा कल्पवृक्ष के तुल्य सम्यक्त्व-दर्शन का लाभ कर लेने पर प्राणियों के सब विघ्न मिट जाते हैं, वे अजरामर-स्थान—मोक्ष-पद प्राप्त कर लेते हैं।

इअ संथुओ महायस! भत्ति-भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिणचंद ॥५॥

हे महा यशस्विन्! इस प्रकार भक्ति से परिपूर्ण हृदय से मैंने आपका स्तवन किया है। हे आराध्य देव! हे पार्श्व! हे जिनचन्द्र! मुझे जन्म-जन्म में सम्यक्त्व-बोधि दें।

विधि—प्रातःकाल सूर्योदय से पहले स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्ति के सामने अथवा पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके, धूप-दीप करके सुखासन में स्थित हो, दोनों होंठ मिलाकर, ऊपर-नीचे के दांत परस्पर न छुआते हुए, जिह्वा को स्थिर रखते हुए दृष्टि नाक के अग्रभाग पर रखे। इस तरह इस स्तोत्र का जाप प्रारंभ करे। इस स्तोत्र की प्रतिदिन एक माला फेरे। प्रत्येक मनके पर पांचों पद बोले। स्तोत्र से पूर्व एक माला नमस्कार महामंत्र की फेरे। इससे दुष्ट ग्रह, भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि के भय तथा सर्व प्रकार के रोग नष्ट होते हैं, सुख, सन्तति व सम्पत्ति की वृद्धि होती है, सर्व कार्यों में सिद्धि होती है।

इस स्तोत्र से जो मंत्र बनता है, उसके सम्बन्ध में पृथक्-पृथक् मान्यताएं हैं। श्री समयसुन्दर मुनि द्वारा रचित उवसग्गहरवृत्ति में निम्नांकित रूप में मंत्र का उल्लेख हुआ है—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग ॐ नमः स्वाहा।

साधक पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके पद्मासन में बैठे। सबसे पहले "श्रीभद्रबाहुस्वामिप्रसादात् एष योगः फलतु" ऐसा कहे, फिर इस बीज-मंत्र की एक माला गुने। तत्पश्चात् स्तोत्र का २७ बार पाठ करे, संकट दूर हो, आनन्द हो, मंगल हो।

श्री मानदेव सूरि रचित तिजय पहुत्त स्तोत्र

तिजयपहुत्तपयासय, अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं।
समयक्खित्तठिआणं, सरेमिचक्कं, जिणंदाणं ॥१॥

तीन जगत् के ऐश्वर्य का प्रकाश करने वाले, आठ महा प्रातिहार्य से युक्त, ऐसे, विशेष काल क्षेत्र में स्थित जिनेन्द्रों के समूह को अर्थात् यंत्र को स्मरण करता हूँ।

पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर समूहो।
नासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥२॥

२५, ८०, १५ व ५० इस तरह एक सौ सत्तर तीर्थंकरों का समूह भक्ति युक्त भव्य जीवों के समस्त पाप-कर्मों का नाश करे।

बीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा।
गहभूअरक्ख साइणि, घोरुवसग्गं पणसंतु ॥३॥

२०, ४५, ३० व ७५ इस तरह एक सौ सत्तर जिनेश्वर मंगलादि ग्रह, भूत-व्यंतर विशेष, राक्षस और शाकिनियों से उत्पन्न घोर उपसर्ग—संकट का नाश करें।

सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो।
वाहिजलजलणहरिकरि, चोरारिमहाभयं हरउ ॥४॥

७०, ३५, ६० व ५ इस तरह एक सौ सत्तर जिनवरों का समूह, व्याधि, जल, अग्नि, शेर, हाथी, चोर व शत्रु आदि के भय का नाश करे।

पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा।
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥

देवों तथा दैत्यों द्वारा प्रणमित ५५, १०, ६५ व ४० इस प्रकार एक सौ सत्तर जिनवर मेरे शरीर की रक्षा करें।

ॐ हरहुंहः सरसुंसः हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः।
आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥६॥

'ॐ' यह परमेष्ठी वाचक है। हरहुंहः इन चार अक्षरों से 'पद्मा, जया, विजया, अपराजिता' इन चार देवियों का ग्रहण होता है। 'सरसुंसः' यह चार बीज अक्षर उपसर्ग-निवारण के लिए हैं। इस प्रकार मंत्र के बीजाक्षर सहित साधक का नाम ॐ के साथ यंत्र में लिखें। यह सर्वतोभद्र नाम का यंत्र है।

ॐ रोहिणि पन्नत्ति, वज्जसिंखला तहयवज्ज अंकुसिआ।
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥७॥
गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्टतह य अच्छुता।
माणसि महमाणसिआ, बिज्जादेवी ओ रक्खंतु ॥८॥

ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृंखला, वज्राकुंशी. चक्रेश्वरी, नरदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गांधारी, महाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसी और महामानसी—ये सोलह विद्या देवियां (मेरा) रक्षण करें।

पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं।
विविहरयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥

पन्द्रह कर्मभूमि के क्षेत्र में उत्पन्न, अनेक प्रकार के रत्नों के वर्ण से शोभायमान, एक सौ सत्तर तीर्थंकर (मेरे) पापों का नाश करें।

चउतीसअइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहरकयसोहा।
तित्थयरा गयमोआ, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥१०॥

चौतीस अतिशय युक्त. आठ महाप्रातिहार्य से सुशोभित, मोहरहित तीर्थंकरों का प्रयत्नपूर्वक ध्यान करना चाहिए।

ॐवरकणसंखविहुम, मरगयघणसन्निहं विगयमोहं।
सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअंवंदे स्वाहा ॥११॥

श्रेष्ठ स्वर्ण, शंख, प्रवाल, नीलम, मणि व मेघ के समान वर्ण वाले, मोह रहित, सब देवों द्वारा पूजित एक सौ सत्तर जिनेश्वरों को मैं नमस्कार करता हूँ 'ॐ' यह शब्द परमेष्ठीवाचक है और स्वाहा शब्द देवों निमित्त बलि देते समय बोला जाता है।

ॐ भवणवइ वाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ।
जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु ममं स्वाहा ॥१२॥

भुवनपति. वानव्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक आदि जो कोई दुष्ट—मेरे लिए अनिष्टकर देव हों, वे सब शान्त हों।

चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं।
एगंतराइगहभूअ, साइणिमुग्गं पणासेइ ॥१३॥

इसे चन्दन तथा कपूर से काष्ठ-फलक (काठ की तख्ती) पर लिखकर, जल प्रक्षालित कर पिया जाय तो एकान्तरादि ज्वर, ग्रह, भूत, शाकिनी आदि के उपद्रव तथा मोगक रोग का आवेश नष्ट होता है।

इअ सत्तरिसय जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं।
दुरिआरि विजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥१४॥

यह एक सौ सत्तर तीर्थंकरों का यंत्र सम्यग् मंत्र है। इसका घर में प्रतिलेखन किया जाये तो यह पाप और शत्रु पर विजय करता है। इसकी निर्भ्रान्त हो, सदा अर्चना करनी चाहिए।

श्रीमानदेवसूरि द्वारा रचित यह तिजयपहुत्त स्तोत्र व यंत्र अत्यंत प्रभावशाली है। प्रतिदिन प्रातः इस स्तोत्र का पाठ करने वाला मनुष्य अनेक विघ्न-बाधाओं को सरलता से पार कर जाता है। इसका यंत्र, जो सर्वतोभद्र के नाम से विख्यात है, विधि-विधान सहित यंत्र-भाग में दिया गया है।

मंत्र

हरहुंहः सरसुंसः ॐ क्लीं ह्रीं ह्रं फट् स्वाहा।

इसकी एक माला फेर कर स्तोत्र का एक बार पाठ करने से शत्रु भी शत्रुता छोड़ देता है।

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

आद्याक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत् स्थितम्।
अग्निज्वालासमं नादं, बिन्दुरेखासमन्वितम् ॥१॥
अग्निज्वालासमाक्रान्तं, मनोमलविशोधनम्।
देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥२॥

आदि—प्रथम अक्षर 'अ' तथा अन्त्य अक्षर 'ह'—इन दोनों अक्षरों के वीच सब वर्ण—अक्षर आ जाते हैं। अग्निज्वाला के समान (तेजोमय) अन्त्य नाद अक्षर 'ह' के ऊपर बिन्दु व रेफ करने से 'अर्हं' शब्द बनता है। सारांश यह है कि वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'अ' है और आखिरी 'ह'। इन दोनों में आखिरी अक्षर 'ह' के ऊपर रेफ और अनुस्वार लगा देने से 'अर्हं' शब्द निष्पन्न होता है। वह—'अर्हं' शब्द अग्नि की ज्वाला के समान देदीप्यमान है, मन का पाप रूपी मल साफ करता है—मन को निर्मल बनाता है। ऐसे ज्योतिर्मय अर्हं पद की हृदय-कमल में स्थापना कर मैं उसे नमन करता हूँ।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥३॥

'अर्हं'—यह अक्षर (अक्षर-समुच्चय) ब्रह्मस्वरूप है, पंच परमेष्ठियों का वाचक है तथा सिद्ध-चक्र का सद् बीज है। मैं उसका सर्व प्रकार से ध्यान करता हूँ।

ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्यः, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः।
ॐ नमः सर्वसूरिभ्य, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥४॥
ॐ नमः सर्वसाधुभ्य, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः।
ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्यश्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥५॥

अर्हत्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन तथा सम्यक् चारित्र—इन आठों को ॐ कार के साथ बारंबार नमस्कार हो।

श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेत-दर्हदाष्टकं शुभम्।
स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितम् ॥६॥

यह अर्हत् आदि का अष्टक (इन आठों का मंत्र) शुभ बीजाक्षरों के साथ अलग-अलग आठों दिशाओं में विन्यस्त किया हुआ कल्याण तथा लक्ष्मी (सम्पत्ति) के लिए होता है।

आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षेत्तु मस्तकम्।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥७॥
पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षतु घण्टिकाम्।
सप्तमं रक्षेन्नाभ्यन्तं, पादान्तं चाष्टमं पुनः ॥८॥

अर्हत् आदि आठों पद क्रम से—प्रथम अर्हत् पद शिखा की, दूसरा सिद्ध पद मस्तक की, तीसरा आचार्य पद दोनों आंखों की, चौथा उपाध्याय पद नासिका की, पांचवां साधु पद मुख की, छठा ज्ञान पद कण्ठ (गले) की, सातवां दर्शन पद नाभि की तथा आठवां चारित्र पद पैरों की रक्षा करे।

पूर्वं प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्वयब्धि पञ्चषान्।
सप्ताष्टादशसूर्यांकान्, श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक् ॥९॥
पूज्यनामाक्षराद्यास्तु, पंचातो ज्ञानदर्शनः।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सान्तः समलंकृतः ॥१०॥

पहले प्रणव—ॐ लिखकर, फिर सकार के पश्चाद्वर्ती अक्षर हकार, रेफ सहित हकार (ह्र्) के साथ दूसरा स्वर—आकार, चौथा स्वर—ईकार, पांचवां स्वर—उकार, छठा स्वर—ऊकार, सातवां स्वर—एकार, आठवां स्वर—ऐकार, दशवां स्वर औकार तथा ग्यारहवां स्वर अः, ऊपर बिन्दु (अनुस्वार) सहित अनुक्रम से "ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रूं ह्रूं, ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः" लिखे। तत्पश्चात् पूज्यों (पंच परमेष्ठियों) के पहले अक्षर—अ, सि, आ, उ, सा लिखकर, फिर 'सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो' लिखकर अन्त में नमः से सुशोभित ह्रींकार लिखें। इस प्रकार दोनों

पदों—पद-समुच्चय को मिलाकर लिखने से "ॐ ह्रां ह्रीं (ह्रिं) ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः" यह सत्ताईस अक्षरों का मूल मंत्र तैयार हो जाता है। इसमें प्रथम नौ बीजाक्षर हैं तथा बाद के अठारह शुद्धाक्षर। यह महाप्रभावक श्री ऋषि मंडल स्तवन यंत्र का मूल मंत्र सर्वमनोवाञ्छित फलदायक है। (बीजाक्षरों में 'ह्रीं' तथा शुद्धाक्षरों में 'नमः, गणना में नहीं लिए जाते।

जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधि समावृतः।
अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥११॥
तन्मध्ये संगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, तारामण्डलमण्डितः ॥१२॥
तस्योपरि सकारान्तं, बीजमध्यस्य सर्वगम्।
नमामि बिम्बमार्हत्यं, ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥१३॥

जम्बू वृक्ष को धारण करने वाला (जम्बू) द्वीप, जो चारों ओर लवण समुद्र से वेष्टित—घिरा हुआ है, (वह द्वीप)। आठों दिशाओं के स्वामी अर्हत् आदि आठ पदों से विभूषित है। उसके मध्य-भाग में मेरु नामक पर्वत है, जो लाखों कूटों—चोटियों से सुशोभित है। उसके चारों तरफ एक के ऊपर एक ज्योतिश्चक्र परिक्रमा देते हैं। इसलिए वह पर्वत बहुत सुन्दर दिखाई देता है। उस (मेरु) पर्वत के ऊपर सकारान्त—सवर्ण के पश्चाद्वर्ती वर्ण ह—बीज की स्थापना कर, घाति कर्म रूपी अंजन—कालिमा से रहित भगवान् के बिम्ब की ललाट (कपाल) में स्थापना कर मैं नमस्कार करता हूं।

अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्यतोज्झितम्।
निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं धनम् ॥१४॥
अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम्।
तामसं विरसं बुद्धं, तैजसं शर्वरीसमम् ॥१५॥
साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम्।
परापरं परातीतं, परंपरपरापरम् ॥१६॥
सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्भृतं भ्रान्तिवर्जितम्।
निरञ्जनं निराकाङ्क्षं, निर्लेपं वीतसंशयम् ॥१७॥
ब्रह्माणमीश्वरं बुद्धं, शुद्धं सिद्धमभङ्गुरम्।
ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकम् ॥१८॥

अर्हत् भगवान् का ध्यातव्य बिम्ब—अक्षय—जन्म-मरण न होने से क्षय रहित, निर्मल—कर्मरूपी मल से रहित, शान्त, अपरिमित, अज्ञानरहित, इच्छारहित, अहंकाररहित, श्रेष्ठ तथा श्रेष्ठ में भी श्रेष्ठ धन है, उद्धततारहित—स्वभावस्थ, शुभ, स्वच्छ, शान्तिरूप होने से सात्त्विक, त्रैलोक्याधिपति होने से

राजस, कर्म-नाश करने की अपेक्षा तामस, शृंगार आदि रस रहित होने से विरस —नीरस, ज्ञानमय तथा पूनम की रात के समान ज्योत्स्नामय है, अर्हत् की अपेक्षा से साकार, सिद्ध की अपेक्षा से निराकार, ज्ञानात्मक रस-संवलित होने से सरस, विषयादि रस से रहित होने से विरस, उत्कृष्ट, क्रमानुक्रम से उत्कृष्ट से भी उत्कृष्ट है, अर्हत् की अपेक्षा से सकल—कलासहित, सिद्ध की अपेक्षा से निष्कल—कला-रहित, परितुष्ट, भवभ्रमणरहित, भ्रान्तिरहित, निरंजन—कर्म-कालिमारहित, इच्छारहित, लेपरहित, संशयरहित है, ब्रह्मरूप, ईश्वररूप, बुद्धरूप है, शुद्ध, सिद्ध, अविनश्वर, ज्योतिः स्वरूप, देव-पूजित होने से महादेव तथा लोक एवं अलोक का प्रकाशक है। ऐसे अर्हत् का ध्यान करना चाहिए।

अर्हदाख्यः सवर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः।
तुर्यस्वर समायुक्तो, बहुध्यानादि मालितः॥१९॥
एक वर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम्।
पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरम्॥२०॥

अर्हत् का वाचक सकारान्त—सकार का पश्चाद्वर्ती हकार है। वह रेफ तथा बिन्दु—अनुस्वार से विभूषित तथा चतुर्थ स्वर—'ई' से युक्त होकर 'ह्रीं' बीजवर्ण निष्पन्न होता है, जो ध्यान करने योग्य है। यह बीजाक्षर—एक उज्ज्वल रंग का है, दूसरा श्याम रंग का है, तीसरा लाल रंग का है, चौथा नीले रंग का है तथा पाँचवां पीले रंग का है। यह हकार अत्यन्त उत्कृष्ट है।

अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमाः।
वर्णैः निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः॥२१॥

इस 'ह्रीं' बीजाक्षर में ऋषभ आदि चौबीसों तीर्थंकर विराजमान हैं। उनका अपने-अपने वर्णों के साथ ध्यान करना चाहिए।

नादश्चन्द्रसमाकारो, बिन्दुर्नीलसमप्रभः।
कलारुणसमासान्तः स्वर्णाभः सर्वतो मुखः॥२२॥
शिरः संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः।
वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मण्डलं स्तुमः॥२३॥

ह्रीं बीजाक्षर की नादकला अर्धचन्द्र की आकृतिवाली तथा उज्ज्वल वर्णवाली है, अर्धचन्द्र के ऊपर के बिन्दु का रंग काला है, हकार का मस्तक लाल रंग का प्रभावाला है, उस (हकार) का अवशिष्ट भाग चारों ओर सोने की तरह पीत वर्ण है। मस्तक भाग में संलीन—सम्यक् मिलित ईकार नीले वर्णवाला है। इस प्रकार इस ह्रींकार में अपने वर्ण के अनुसार तीर्थंकरों के मण्डल—समूह की स्थापना की जाती है। ऐसे ह्रींकार की मैं स्तवना करता हूं।

चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ, नादस्थितिसमाश्रितौ।
बिन्दुमध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥
पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिश्रितौ।
शिर ई स्थितिसंलीनौ, पार्श्वमल्लिजिनोत्तमौ ॥२५॥

चन्द्रप्रभ तथा सुविधिनाथ—इन दो तीर्थंकरों की अर्धचन्द्राकार नाद-कला में, तीर्थंकर नेमिनाथ व मुनि सुव्रत की अर्धचन्द्राकार के ऊपर संस्थित बिन्दु में, पद्मप्रभ और वासुपूज्य—इन दो तीर्थंकरों की कला की जगह मस्तक में, तीर्थंकर पार्श्वनाथ व मल्लिनाथ की मस्तक के साथ मिले हुए ईकार में स्थापना करे।

शेषास्तीर्थकराः सर्वे, रहः स्थाने नियोजिताः।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥२६॥
गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः।
सर्वदा सर्वलोकेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥२७॥

शेष सोलह तीर्थंकरों की स्थापना रकार तथा हकार के स्थान में—तन्मध्य करे। यों माया-बीज में चौबीस तीर्थंकरों की स्थापना का क्रम है। वे तीर्थंकर—उत्तम जिनेश्वर राग, द्वेष और मोह से रहित हैं, सभी पाप-कर्मों से मुक्त हैं। वे सर्वदा सब लोकों में सुखप्रद हों।

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसन्तु पन्नगाः ॥२८॥

देवों के देव—पूज्य श्री जिनेश्वर देव के चक्र—मण्डल—समूह की प्रभा से आच्छादित मेरे सभी अंगों को सर्प-जाति के जीव पीड़ा न करें।

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं, मां मा हिंसतु नागिनी ॥२९॥

अट्ठाईसवें श्लोक के अर्थ की तरह इसका अर्थ है। केवल 'सर्प-जाति के जीवों' के स्थान पर 'नागिनी जाति के जीव' समझ लें।

इसी प्रकार निम्नांकित रूप में संकेतित श्लोकों का अर्थ जानें—

देवदेव ०	गोनसा	॥३०॥	गोह-जाति के जीव पीड़ा न करें।
देवदेव ०	वृश्चिकाः	॥३१॥	बिच्छू-जाति के जीव पीड़ा न करें।
देवदेव ०	काकिनी	॥३२॥	काकिनी जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ०	डाकिनी	॥३३॥	डाकिनी जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ०	याकिनी	॥३४॥	याकिनी जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ०	राकिनी	॥३५॥	राकिनी जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ०	लाकिनी	॥३६॥	लाकिनी जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ०	शाकिनी	॥३७॥	शाकिनी जाति के देव पीड़ा न करें।

देवदेव ० हाकिनी ।।३८।। हाकिनी जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० राक्षसाः ।।३९।। राक्षस जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० भैरवाः ।।४०।। भैरव जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० भेकसाः ।।४१।। भेकस जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० किन्नराः ।।४२।। किन्नर जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० व्यन्तराः ।।४३।। व्यन्तर जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० देवताः ।।४४।। सर्व जाति के देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० तस्करा ।।४५।। चोरगण पीड़ा न करें।
देवदेव ० वह्नयः ।।४६।। अग्नि पीड़ा न करें।
देवदेव ० शृंगिणः ।।४७।। सींगवाले जीव पीड़ा न करें।
देवदेव ० दंष्ट्रिणः ।।४८।। दाँतों से काटनेवाले जीव पीड़ा न करें।
देवदेव ० रेपलाः ।।४९।। रेपल जाति के जीव पीड़ा न करें।
देवदेव ० पक्षिणः ।।५०।। पंखों वाले जीव पीड़ा न करें।
देवदेव ० भञ्जकाः ।।५१।। तोड़-फोड़ करने वाले प्राणी पीड़ा न करें।
देवदेव ० जृंभकाः ।।५२।। जृंभक देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० तोयदाः ।।५३।। जल में रहने वाले जीव पीड़ा न करें।
देवदेव ० सिंहकाः ।।५४।। सर्व जाति के सिंह पीड़ा न करें।
देवदेव ० शूकराः ।।५५।। सर्व जाति के सूअर पीड़ा न करें।
देवदेव ० चित्रकाः ।।५६।। चीता जाति के प्राणी पीड़ा न करें।
देवदेव ० हस्तिनः ।।५७।। सर्व जाति के हाथी पीड़ा न करें।
देवदेव ० भूमिपाः ।।५८।। पृथ्वी के स्वामी--राजा पीड़ा न करें।
देवदेव ० शत्रवः ।।५९।। सर्व शत्रु पीड़ा न करें।
देवदेव ० ग्रामिणः ।।६०।। क्षेत्र की रक्षा करने वाले देव पीड़ा न करें।
देवदेव ० दुर्जनाः ।।६१।। दुष्ट जन पीड़ा न करें।

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं, मां मा हिंसन्तु व्याधयः ।।६२।।

देवों के देव श्री जिनेश्वरदेव के चक्र-मण्डल की प्रभा से आच्छादित मेरे सभी अंगों को व्याधियां पीड़ित न करें।

श्री गौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिरर्हः (र्हं) सर्वनिधीश्वरः ।।६३।।

श्री गौतम गणधर के स्वरूप तथा उसकी लब्धियों—ज्योतियों से भी अधिक ज्योति अर्हत् भगवान् की है क्योंकि वे सब विद्यानिधियों के अधिपति हैं।

पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः।
स्वः स्वर्गवासिनो देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ।।६४।।

पाताल लोक वासी भुवन पति देव, पृथ्वी वासी व्यन्तर आदि देव, स्वर्ग में रहने वाले वैमानिक देव— सब मेरी रक्षा करें।

येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः।
ते सर्वे मुनयो दिव्या, मां संरक्षन्तु सर्वतः ॥६५॥

जो अवधिज्ञान की लब्धिवाले हैं, जो परमावधि ज्ञान की लब्धिवाले (द्वादश गुणस्थानवर्ती) हैं, वे दिव्य—उत्तम मुनिगण मेरी सब प्रकार से रक्षा करें।

भुवनेन्द्र-व्यन्तरेन्द्र-ज्योतिष्केन्द्र-कल्पेन्द्रेभ्यो नमः।
श्रुतावधि-देशावधि-परमावधि-सर्वावधि-बुद्धि-ऋद्धि प्राप्त-
सर्वौषधिप्राप्तानन्तबलर्द्धिप्राप्त-रसर्द्धिप्राप्त-विक्रयर्द्धिप्राप्त-
क्षेत्रर्द्धिप्राप्ताक्षीणमहानसर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः ॥६६-६७॥

भुवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क व कल्पवासी देवों के इंद्रों को तथा श्रुतावधि, देशावधि, परमावधि व सर्वावधि बुद्धि-ऋद्धि प्राप्त, सर्वौषधि-ऋद्धि, अनन्तःबल-ऋद्धि प्राप्त, रस-ऋद्धि, वैक्रिय ऋद्धि क्षेत्र ऋद्धि व अक्षुण्ण-महानस (रसोई-घर) ऋद्धि प्राप्त मुनियों को नमस्कार हो।

ॐ श्री ह्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती।
जयाम्बा विजया क्लिन्ना ऽजिता नित्या मदद्रवा ॥६८॥
कामांगा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी।
माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥६९॥
एताः सर्वा महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्-त्रये।
मम सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं लक्ष्मीं धृतिं मतिम् ॥७०॥

श्री, ह्री, धृति, लक्ष्मी, गौरी, चण्डी, सरस्वती, जया, अम्बिका, विजया, क्लिन्ना, अजिता, नित्या, मदद्रवा, कामांगा, कामबाणा, नन्दा, नन्दमालिनी, माया, मायाविनी, रौद्री, कला, काली तथा कलिप्रिया—ये सभी महान् देवियां तीनों लोक में विद्यमान हैं। ये सब मुझे कान्ति, लक्ष्मी, धृति (धैर्य) तथा बुद्धि प्रदान करें।

दुर्जना भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा।
ते सर्वे उपशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः ॥७१॥

दुष्ट जन, भूत, वेताल, पिशाच, मुद्गल तथा राक्षस आदि सभी मिथ्यात्वी व भयंकर परिणाम वाले जीव देवाधिदेव श्रीजिनेश्वरदेव के प्रभाव से शान्त हों।

दिव्यो गोप्यः मुदप्राप्यः श्रीऋषिमण्डलस्तवः।
भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्-त्राणकृतेऽनघः ॥७२॥

यह ऋषिमण्डल-स्तवन अत्यन्त दुर्लभ व प्रभावशाली है, गोप्य— गुप्त रखने योग्य है। भगवान् महावीर ने इसे (तीनों) लोकों की रक्षा करने वाला तथा पाप रहित कहा है।

रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ।
श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥७३॥

युद्ध, राज्य-द्वार, अग्नि, पानी, दुर्ग (किला), हाथी व सिंह से प्राप्त भय तथा श्मशान व घोर जंगल में प्राप्त संकट इस स्तोत्र के स्मरण करने से दूर हो जाते हैं।

राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदम्।
लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥७४॥

राज्य से भ्रष्ट शासक अपना राज्य, अधिकार से च्युत पदाधिकारी अपना पद, धन खोये हुए व्यक्ति अपना धन—इस स्तोत्र के प्रभाव से पुनः प्राप्त कर लेते हैं।

भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम्।
धनार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥७५॥

इस (ऋषिमण्डल) स्तोत्र के स्मरण मात्र से पत्नी की इच्छा रखने वाले को पत्नी, पुत्र की कामना वाले को पुत्र तथा धन की आकांक्षा वाले को धन की प्राप्ति होती है।

स्वर्णे रौप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत्।
तस्यैवाष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वती ॥७६॥

इस ऋषिमण्डल स्तोत्र का यंत्र सोने, चांदी या कांसे के पत्र पर अथवा वस्त्र पर लिखकर जो मनुष्य उसका पूजन करता है, उसके घर में आठों महासिद्धियां शाश्वत—सदा निवास करती हैं।

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे।
धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशनम् ॥७७॥

यह दिव्य श्रेष्ठ यंत्र भोजपत्र पर (अष्टगन्ध से) लिखकर (मादलिये में डाल कर) गले, मस्तक या हाथ में धारण करने से सब प्रकार के भय सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैस्तथा।
वातपित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥७८॥

यह यंत्र धारण करने वाला मनुष्य भूत, प्रेत, (नव) ग्रह, यक्ष, पिशाच,

मुद्गल, राक्षस आदि के संकट तथा वात, पित्त, कफ से उत्पन्न रोगों के उपद्रव से मुक्त हो जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठ-वर्तिनः शाश्वता जिनाः।
तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः ॥७९॥

स्वर्ग, पाताल व भूतल—इन तीनों लोकों में वर्तमान जो शाश्वत जिनेश्वर देव हैं, उनके स्तवन, वन्दन एवं दर्शन से जो फल प्राप्त होता है, वह (फल) इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से होता है।

एतद् गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्।
मिथ्यात्ववासिनो दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥८०॥

यह महान् स्तोत्र गुप्त रखने योग्य है। जिस किसी को इसे नहीं देना चाहिए। मिथ्यादृष्टि (व्यक्ति) को इसे देने से बालहत्या का पाप लगता है।

आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलिम्।
अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥८१॥

आयंबिल आदि तप करके, चौबीस जिनेश्वरों की पूजा करके मनोवाञ्छित कार्य की सिद्धि के हेतु इस मंत्र का आठ हजार जाप करना चाहिए।

शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने।
तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति च सम्पदः ॥८२॥

जो व्यक्ति प्रातःकाल (शुद्ध मन से, मन, वचन व काया की एकाग्रता से) इस स्तोत्र का पाठ करता है, मूल मंत्र का १०८ जाप करता है, उसके शरीर में किसी प्रकार का रोग नहीं होता। उसे सब प्रकार की सम्पदाएं प्राप्त होती हैं।

अष्टमासावधि यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत्।
स्तोत्रमेतन्महातेजस्त्वर्हद्-बिम्बं स पश्यति ॥८३॥
दृष्टे सत्यार्हते बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम्।
पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दसम्पदाम् ॥८४॥

नित्य प्रातः आठ मास तक (मन, वचन व काया की शुद्धि पूर्वक, एकाग्रता से) जो इस ऋषि-मण्डल स्तोत्र का पाठ करता है, वह अर्हत् भगवान् का तेजोमय बिम्ब देखता है। इस प्रकार अर्हत् भगवान् का महातेजस्वी बिम्ब देखने वाला वह भव्य पुरुष निश्चय ही सातवें भव में मोक्ष, जो परम आनन्दमय है, प्राप्त करता है।

विश्ववन्द्यो भवेद्ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते।
गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्तते ॥८५॥

इस प्रमाण से ऋषि-मण्डल स्तोत्र का ध्यान करने वाला मनुष्य जगत् में वन्दन

करने योग्य बनता है, कल्याण पाता है। वह मोक्ष पद में अधिष्ठित हो, फिर वापिस संसार में नहीं आता—जन्म-मरण से छूट जाता है।

इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तवानामुत्तमं परम्।
पठनात् स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमव्ययम् ॥८६॥

यह स्तोत्र सब स्तोत्रों में महान् स्तोत्र है। स्तवनों में यह सर्वोत्तम है। इसके पठन, स्मरण तथा जप से प्राणी मोक्ष पद प्राप्त करता है।

इति श्री गौतमस्वामिकृत ऋषिमण्डल स्तोत्र समाप्त।

वर्णमंत्र

वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर सर्व-शक्तिशाली मंत्र है। उसके गुनने व मनन करने से विशिष्ट शक्ति का उपार्जन होता है, इससे इष्टकर्म की सिद्धि होती है और विविध प्रकार के भय से रक्षण होता है। हम सिद्धियां व चमत्कार चाहते हैं, सामान्य परिश्रम से ही सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं और जब निष्फल हो जाते हैं तो निराश होकर सभी ओर से आस्थाहीन बन जाते हैं—मंत्रों पर, शब्दों पर विश्वास नहीं होता, परन्तु पूरी तरह विषय को न समझ सकने के कारण हमें भटकाव हो जाता है। वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के उच्चारण से मनुष्य के शरीर पर विशिष्ट प्रभाव पड़ता है। ओकल्ट रिसर्च कॉलेज के प्रिंसिपल करमकर ने एक बार बताया कि 'र' अक्षर को बिन्दु सहित यानी 'रं' का एक हजार बार उच्चारश करें तो आपके शरीर की उष्णता एक डिग्री बढ़ जाएगी व 'ख' को बिन्दु सहित उच्चारण करते रहें तो आपके लीवर की शिकायत मिट जाएगी। इन्हीं अक्षरों से बीजाक्षर बनते हैं और उन्हीं से मंत्र और वे अपना विशिष्ट कार्य करते हैं। यहां यह और स्पष्ट करना चाहता हूं कि प्रत्येक अक्षर को अनुस्वार लगाने के बाद ही मनन करना चाहिए जैसे —अं ऊं कं सं दं आदि। प्रत्येक वर्ण को ह्रींकार से युक्त करके जप करने से शीघ्र फल की प्राप्ति होती है, जिस प्रकार ह्रीं रं ह्रीं रं ह्रीं रं ह्रीं आदि।

मंत्र व्याकरण में वर्णमंत्र की शक्ति का निर्देश निम्न रूप से किया गया है : —

अ—मृत्युनाशक है।
आ—आकर्षण करने वाला है।
इ—पुष्टिकर व हर-बीज है।
ई—आकर्षण करने वाला है।
उ—शक्ति देने वाला है।
ऊ—उच्चाटन करने वाला है।
ऋ—क्षोभण करने वाला है।
ॠ—विद्वेषण करने वाला है।
ए—वश्य करने वाला है।
ऐ—पुरुष वश्य करने वाला है।
ओ—लोक वश्य करने वाला है।
औ—राज्य वश्य करने वाला है।

अं—हाथी वश्य करने वाला है।
अः—मृत्यु का नाश करने वाला है।
क—विष-बीज है।
ख—स्तोभ-बीज है।
ग—गणपति-बीज है।
घ—स्तंभन, मारण व ग्रहण बीज है।
ङ—असुर बीज है।
च—सुर-बीज व चन्द्र-बीज है।
छ—लाभ-बीज, मृत्युनाशक बीज है।
ज—ब्रह्मराक्षस-बीज है।
झ—चन्द्र-बीज है; धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष देने वाला तथा राजा को वश करने वाला है।
ञ—मोहन बीज है।
ट—क्षोभण बीज है, चित्त को कलंकित करने वाला है।
ठ—चन्द्र बीज है। विष व मृत्यु का नाश करने वाला है।
ड—गरुड़ बीज है।
ढ—कुबेर बीज है। उत्तर दिशा में मुंह करके चार लाख जाप करने से सिद्ध होता है। धन-धान्य की वृद्धि करता है।
ण—असुर बीज है।
त—अष्ट वस्तु का बीज है।
थ—यम बीज है तथा मृत्यु-भय का नाश करता है।
द—दुर्गा बीज है तथा वश्य व पुष्टि करता है।
ध—सूर्य बीज है। यश व सुख देने वाला है।
न—ज्वर बीज है। ज्वर का नाश करता है।
प—वीरभद्र व जल बीज है। सर्व विघ्नों का नाश करता है।
फ—विष्णु बीज है। धन-धान्य की वृद्धि करता है।
ब—ब्रह्म बीज है। वात, पित्त, श्लेष्म का नाश करता है।
भ—भद्र काली बीज है।
म—माला, अग्नि व रुद्र बीज है। स्तंभन, मोहन, विद्वेषण करने वाला है। भूत-प्रेत, पिशाच आदि का नाश करता है।
य—वायु बीज है। उच्चाटन करने वाला है।
र—अग्नि बीज है। उग्र कर्म करने वाला है।
ल—इन्द्र बीज है, इसे तंत्र बीज भी कहते हैं। धन-धान्य व सम्पत्ति देने वाला है।
व—वरुण बीज है। विष व मृत्यु का नाश करता है।
श—सूर्य बीज है। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष देता है।
ष—वाग्बीज है। ज्ञान सिद्धि व वचन सिद्धि देने वाला है।
स—लक्ष्मी बीज है। इसका एक लाख जप करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है।
ह—शिव बीज है इसे गगन बीज भी कहते हैं।
क्ष—पृथ्वी बीज है, इसे नृसिंह बीज भी कहते हैं।

मंत्र व्याकरण में प्रत्येक वर्ण के विशिष्ट लक्षण बताए गए हैं, जैसे 'अ' अक्षर के लिए कहा गया है कि गोल आकार के आसन, स्वर्ण जैसे वर्ण, केशर जैसी गंध, नमक जैसे स्वाद, जम्बूद्वीप जैसे विस्तार, चार मुख, आठ हाथ, काली आँख, जटा व मुकुट धारण करने वाले, श्वेतवर्ण मोतियों के आभूषण वाले, अत्यंत बलवान्, गम्भीर व पुल्लिग जैसे लक्षण वाले अ-कार का मैं ध्यान करता हूं।

इस तरह मंत्र-शास्त्र में प्रत्येक वर्ण का विशिष्ट चित्र निर्माण किया हुआ है, जिसमें अनेक रहस्य भरे हैं। प्रत्येक वर्ण का उसके चित्र के अनुसार ध्यान करने से शक्ति मिलती है तथा इष्ट कर्म की सिद्धि होती है।

साध्वीश्री राजीमती जी अपनी पुस्तक 'योग की प्रथम किरण' में लिखती हैं कि प्राचीन भारतीय चित्त-विशेषज्ञों ने जप और अलाप को दार्शनिक तथा वैज्ञानिक तत्त्व कहा है। उनकी धारणा में देव-दर्शन और कामना-पूर्ति का आधार नाद से प्रगट होने वाली शब्दाकृतियां ही थीं। भारतवर्ष में बहुत पहले (पूर्व काल में) ही राग-रागिनियों के रंगरूप और आकार का पता लग चुका था।

बीजाक्षरों का संक्षिप्त कोष

ॐ—प्रणव, ध्रुव, विनय और तेजस् बीज है।
ऐं—वाग् और तत्त्व बीज है।
क्लीं—काम-बीज है।
ह्सौं ह्सौं ह्सौं—यह शक्ति बीज है।
हो—शिव और शासन बीज है।
क्षि—पृथ्वी बीज है।
प—अप् बीज है।
स्वा—वायु बीज है।
हा:—आकाश बीज है।
हीं—माया और त्रैलोक्य बीज है।
क्रौं—अंकुश और निरोध बीज है।
आ—पाश-बीज है।
फट्—विसर्जन और चलन बीज है।
वषट्—दहन बीज है।
वोषट्—आकर्षण और पूजा ग्रहण बीज है।
संवौषट्—आकर्षण बीज है।
ब्लूं—द्रावण बीज है
ब्लैं—आकर्षण बीज है
ग्लौं—स्तंभन बीज है।
क्ष्वीं—विषापहार बीज है।
द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स:—ये पांच वाण बीज है।
हूं—द्वेष और विद्वेषण बीज है।
स्वाहा—हवन और शान्ति बीज है।
स्वधा—पौष्टिक बीज है।
नम:—शोधन बीज है।
श्रीं—लक्ष्मी बीज है।
अर्हं—ज्ञान बीज है।
इं—विष्णु बीज है।
क्ष: फट्—शस्त्र बीज है।
य:—उच्चाटन और विसर्जन बीज है।
जूं—विद्वेषण बीज है।
श्लीं—अमृत बीज है।
क्षीं—सोम बीज है।
हंस—विष को दूर करने वाला बीज है।
ह्म्ल्व्यूं—पिंड बीज है।

क्ष—कूटाक्षर बीज है।
स्वीं, क्ष्वीं, हंसः—वाग्भव बीज है।
क्षिप ॐ स्वाहा—शत्रु बीज है।
हाः—निरोधन बीज है।
ठः—स्तंभन बीज है।
ब्लौं—विमल पिंड बीज है।
ग्लैं—स्तम्भन बीज है।
घे घे—वध बीज है।
द्रां द्रीं—द्रावण संज्ञक है।
ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः—शून्य रूप बीज है।

बीजाक्षरों के लिए कुछ सांकेतिक शब्द :—

ॐ तार—ध्रुव, वेदादि, नैगमादि श्रुत्यादि।
ह्रीं—माया, लज्जा, शक्ति, शिव, पार्वती, भुवनेश, गिरिजा—नाम और बीज है।
हुं—वर्म, कवच, त्रितत्त्व, क्रोध, छंद बीज।
ग्लौं—नर बीज।
हूँ—कूंच दीर्घ वर्म, दीर्घ तनुच्छद है।
नमः—शिरोमं, अग्निवाच, वनिता, अग्निप्रिया, दहनप्रिया, पावक, द्विठः-ठद्वयं है।
आं ह्रीं क्रों—ये तीन पाशादि-बीज हैं।

एं, ह्रीं, श्रीं—त्रिबीज है।
त्रीं—तारा बीज है।
त्रा—चंडी बीज है।
स्त्रीं—स्त्री बीज है।
स्वीं—इन्दु बीज है।
क्ष्मं—पीठ बीज है।
जँ—सृष्टि बीज है।
नः—मल बीज है।
यः—अचल बीज है।
ऐं—वाग् बीज है।

•••

द्वितीय खण्ड

यंत्र-विद्या

यंत्र-विद्या

यंत्रों का केन्द्र-बिन्दु सूर्य है और इसका मूल है शक्ति। इनके प्रयोग से व्यक्ति के हृदय में अद्‌भुत ज्ञान व अद्‌भुत तेज का उद्‌भव होता है। भारत में यंत्रों का विशिष्ट स्थान है। सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी इनकी सिद्धि के माध्यम से उच्चस्तरीय ज्ञान एवं लाभ प्राप्त कर सकता है। यंत्रों की पूजा व लेखन का भी एक विशेष प्रकार है। सामान्यतया निम्नलिखित विधि-विधान को ध्यान में रखना आवश्यक है :—

१. स्थान पवित्र व एकान्त होना चाहिए।

२. स्नान आदि करके धुले हुए शुद्ध वस्त्र पहनने चाहिए।

३. समय—रवि पुष्य, रवि हस्त, रवि मूल, गुरु पुष्य नक्षत्र, दीपावली, होली, नवरात्र, विजयदशमी, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, तीर्थंकरों के जन्म-दिन, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, अपना चन्द्र स्वर चलता हो तब या अच्छा मुहूर्त निकलवाकर लिखना चाहिए—साधना प्रारंभ करनी चाहिए।

४. लेखनी—अर्थात् कलम चमेली, जूही, अनार, तुलसी आदि वृक्षों की डाली की या चांदी व स्वर्ण निर्मित होनी चाहिए।

५. स्याही— लाल, काली, केसर, हिंगलु, कुंकुम, पंचगंध, यक्षकर्दम या अष्ट गंध की होनी चाहिए।

६. धूप — लोबान, गुग्गुल, नवरंगी या दशांग धूप का प्रयोग करना चाहिए।

७. पत्र — स्वर्ण, रजत या ताम्र पत्र, काष्ठ अथवा तालपत्र, भोजपत्र या उत्तम कोटि का कागज व्यवहार में लाना चाहिए।

८. ताबीज यानी मादलिया—स्वर्ण, रजत या ताम्र का ही प्रायः प्रयोग में आता है। बनाते समय लोहे का स्पर्श नहीं होना चाहिए। ताबीज का मुंह लाख से बन्द करना चाहिए।

९. ताबीज गले में धारण करना चाहिए। वह अधिक फलप्रद होता है। वैसा न करे तो भुजा पर धारण करना चाहिए। जेब में भी रखा जा सकता है।

१०. प्रभु प्रतिमा या चित्र के सामने बैठकर लिखना चाहिए।

११. साधना करने के बाद यंत्र को एक कांसे की थाली में रख कर फल, फूल व नैवेद्य चढ़ा देना चाहिए।

१२. पूजा—चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, फल व नैवेद्य आदि से करनी चाहिए।

१३. जितने अधिक यंत्र लिखे जायेंगे, उतनी ही यंत्रों में शक्ति बढ़ेगी। जितने यंत्र लिखे, उनमें से एक को रखकर बाकी सभी को गेहूं के आटे की गोलियों में भरकर समुद्र या नदी में डाल देना चाहिए।

पंचगन्ध स्याही—केसर, चन्दन, कस्तूरी, कपूर व गोरोचन से बनती है।

यक्षकर्दम स्याही—केसर, चन्दन, कस्तूरी, कपूर व अगर से बनती है।

यक्षकर्दम स्याही का दूसरा प्रकार—चन्दन, केसर, अगर, कस्तूरी, गोरोचन, हिंगलु, रक्तचन्दन, अम्बर, सुनहरी वर्क, मरचकंकोल (चिरच), बरास (कपूर), कंकोभु से बनती है।

अष्टगन्ध स्याही—चन्दन, रक्तचन्दन, केसर, कस्तूरी, गोरोचन, सिन्दूर, अगर, तगर से बनती है। (कल्प संग्रह में इसका उल्लेख है)।

अष्टगन्ध स्याही (दूसरा प्रकार)—चन्दन, केसर, कस्तूरी, अगर, तगर, गोरोचन, अंकोल व भीमसेनी कपूर से बनती है।

नवरंगी धूप—अगर, लोबान, ब्राह्मी, नखला, राल, छड़छड़ीला, चन्दन, गिरी व गुग्गुल। गुग्गुल सब वस्तुओं से दूना होता है। नखला घृत में सेका जाता है।

दशांग धूप—शिलारस, गुग्गुल, चन्दन, जटामांसी, लोबान, राल, उसीर, नखला, भीमसेनी कपूर तथा कस्तूरी से बनता है।

यंत्र किस पर लिखा जाय—शान्ति कर्म व वशीकरण में भोजपत्र पर, स्तंभन कर्म में हाथी के चमड़े पर, विद्वेषण कर्म में गधे के चमड़े पर, उच्चाटन कर्म में कौए की पांख पर, मारण कर्म में मनुष्य की हड्डी पर यंत्र लिखे जाते हैं।

श्री ऋषिमण्डल महायंत्र

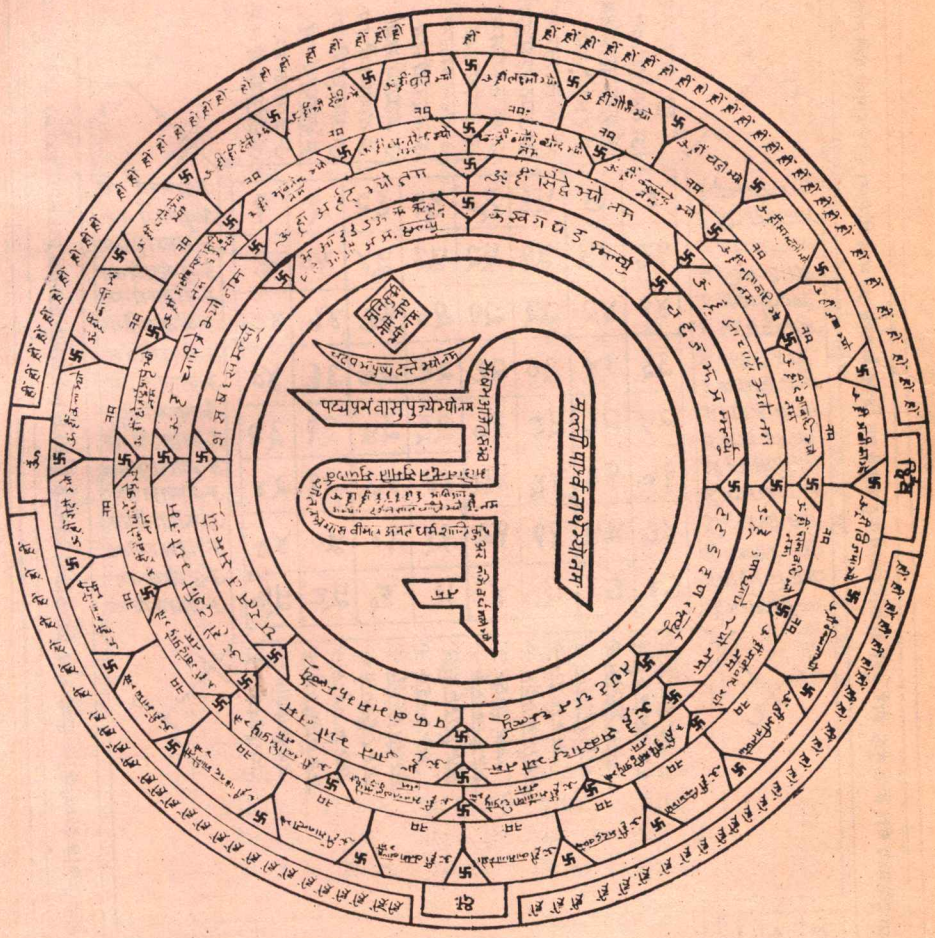

नोट : इसका विधि-विधान मंत्र भाग में ऋषिमंडल स्तोत्र के भावार्थ में पूर्ण रूप से दिया हुआ है।

देवी पंचांगुली महामंत्र

ॐ नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडस्थापिनी चौंसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेममध्ये पिशाचमध्ये झोटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषेणीमध्ये शोकनीमध्ये गुणध्मये गारुडीमध्ये विनारी मध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये चौर कष्ट भूक प्रपेरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्री पंचांगुली देवी तणा वज्र निर्धार पड़े ओं ठं ठं स्वाहा।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

८	७	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४१	४२	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

ॐ सूर्यपुत्रायै नमः
ॐ संतसायै नमः
ॐ कृष्णावरन्यै नमः
ॐ रक्षायै नमः
ॐ कालरात्रै नमः
ॐ अमावस्यै नमः
ॐ श्रीछिन्यै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ चरमन्यै नमः
ॐ कालायै नमः
ॐ करयायै नमः
ॐ वागेश्वर्यै नमः
ॐ अग्नहोत्री नमः
ॐ चक्रेश्वर्यै नमः
ॐ कामाक्षे नमः
ॐ वीजयायै नमः

ॐ ब्रह्मन्यै नमः
ॐ कुमार्यै नमः
ॐ वाराही नमः
ॐ इन्द्रायै नमः
ॐ संकायै नमः
ॐ कंकाली नमः
ॐ कराली नमः
ॐ कालंद्री नमः
ॐ महाकालैदी नमः
ॐ चंडाली नमः
ॐ ज्वाला पुष्पे नमः
ॐ कामाक्ष नमः
ॐ कामात्यै नमः
ॐ भद्रकाली नमः
ॐ इर्यायै नमः
ॐ अंबकायै नमः

ॐ ललनायै नमः
ॐ गौर्यायै नमः
ॐ सुमंगलायै नमः
ॐ रोहण्यै नमः
ॐ कपलीयै नमः
ॐ शूलकरायै नमः
ॐ कड्न्यै नमः
ॐ त्रिपुरायै नमः
ॐ कुरुकल्ले नमः
ॐ भैरवी नमः
ॐ पद्मावत्यै नमः
ॐ चंडायै नमः
ॐ नारसंही नमः
ॐ नरसहै नमः
ॐ हुंमकतक्ष नमः
ॐ प्रेतायै नमः

ॐ महाइवयै नमः
ॐ पदमन्यै नमः
ॐ वैष्णावै नमः
ॐ वचाच्यै नमः
ॐ यमघंटा नमः
ॐ हरसद्धी नमः
ॐ थरइचत्यै नमः
ॐ तातलायै नमः
ॐ चउचडै नमः
ॐ सर्वतै नमः
ॐ पदमपुत्रै नमः
ॐ तारायै नमः
ॐ चित्रन्यै नमः
ॐ वारन्चै नमः
ॐ विधटेवा नमः
ॐ जृभन्यै नमः

विधि– शुभ मुहूर्त में सफेद वस्त्र, सफेद आसन से पूर्व की ओर मुंह कर, अनार की कलम व अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिख, ताम्रपत्र पर खुदवा लें। मंत्र का सात बार जाप कर सर्वांग पर हाथ फेरे—इसके प्रभाव से हस्तरेखाविद की भविष्यवाणी सफल होगी। यह सौभाग्यशाली, रोग नाशक व भूत, प्रेत बाधा नाशक प्रभावापन्न यंत्र है।

—महाप्रभावक सर्वतोभद्र यंत्र—

ह्म्ल्व्यूं	ॐ ह्रीं श्रीं रोहिणै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं प्रज्ञप्तै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं भैरव यक्ष रक्षाः	ॐ ह्रीं श्रौं वज्रश्रृंखलाये नमः	ॐ ह्रीं श्रीं वज्रांकुश्यै नमः	ह्म्ल्व्यूं
ॐ ह्रीं श्रीं महा-माणस्ये नमः	२५ ह	८० र	क्षि	१५ हुं	५० हः	ॐ ह्रीं श्रीं चक्रेश्वर्यै नमः
ॐ ह्रीं श्रीं माणस्ये नमः	२० स	४५ र	प	३० सुं	७५ सः	ॐ ह्रीं श्रीं नरदत्ताये नमः
ॐ ह्रीं श्रीं कपिल-पिंगल यक्ष रक्षाः	क्षि	प	ॐ	स्वा	हा	ॐ ह्रीं श्रीं पूरण-भद्र यक्ष रक्षाः
ॐ ह्रीं श्रीं अच्छु-प्ताये नमः	७० ह	३५ र	स्वा	६० हुं	५ हः	ॐ ह्रीं श्रीं कालियै नमः
ॐ ह्रीं श्रीं वैरो-ट्याये नमः	५५ स	१० र	हा	६५ सुं	४० सः	ॐ ह्रीं श्रीं महा-कालियै नमः
ह्म्ल्व्यूं	ॐ ह्रीं श्रीं मानव्ये नमः	ॐ ह्रीं श्रीं महाज्वालाये नमः	ॐ ह्रीं श्रीं माणभद्रयक्ष रक्षाः	ॐ ह्रीं श्रीं गंधार्यै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं गोर्यै नमः	ह्म्ल्व्यूं

विधि यह महा प्रभावशाली यंत्र पुष्य नक्षत्र या अपने नाम का उत्कृष्ट मुहूर्त निकलवाकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखे। धूप, दीप, नैवेध, इत्र, फल, फूल से पूजा करे। स्वर्ण के ताबीज में डालकर लाख से बन्द करके गले में धारण करे तो भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि व्यंतर देवों की क्रूर दृष्टि से रक्षा करता है। हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। चांदी की या कांसे की थाली में अष्टगन्ध से लिखकर इस यंत्र के जल

स प्रक्षालन कराकर वह जल रोज रोगी को पिलाने से ज्वर, हिचकी, मस्तक दर्द, पेट का दर्द, घबराहट व वायु आदि कितने ही रोगों में लाभ होता है। जैसे कहा है :—

सत्तरीसयनो महिमा अनंत,
तुच्छ बुद्धि किम जाणे तंत !

यह १७० के सर्वतोभद्र यंत्र की महिमा है।

श्री घंटाकर्ण महायंत्र

ॐ	घं	टा	क	र्णो	म	हा	वी	रः	स	र्व	व्या
ता	क्ष	र	पं	क्ति	भि	रो	गा	स्त	त्र	प्र	धि
खि	त्क्ष	यं	शा	कि	नी	भू	त	वे	ता	ण	वि
लि	पा	स	र्प	ण	दं	स्य	ते	अ	ला	श्य	ना
वा	ज	च	घं	टा	क	र्णो	न	ग्नि	रा	न्ति	श
दे	र्णे	न	ह्रीं	र	ठः	ठः	मो	चौ	क्ष	वा	कः
से	क	स्य	ब्लूं	वी	स्वाहा	ठः	स्तु	र	सा	त्त	वि
ष्ठ	न्ति	त	क्लीं	र	न	ॐ	ते	भ	प्र	पि	स्फो
ति	या	णं	श्रीं	ह्रीं	ॐ	स्ति	ना	यं	भ	त्त	ट
त्वं	स्ति	र	म	ले	का	ना	नः	न्ति	व	क	क
त्र	ना	यं	भ	ज	रा	त्र	त	वाः	द्ध	फो	भ
य	लः	व	हा	म	क्ष	र	क्ष	रं	प्ते	प्रा	य

विधि—यह यंत्र रविपुष्य अथवा शुभ नक्षत्र में चांदी या तांबे के पत्र पर अथवा कांसे की थाली पर खुदवाना चाहिए या भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखना चाहिए। रविहस्त, रविमूल, गुरुपुष्य या दीवाली में भी लिखा जा सकता है। विशेषतः कांसे की थाली में खुदवाना चाहिए। फिर शुद्ध जल से स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर, पंचामृत से अभिषेक करना चाहिए। फिर एक बाजोट पर थाली को यानी यंत्र को विराजमान कर चन्दन, केसर से पूजा करें। थाली के एक तरफ अगर के १०८ टुकड़े तथा दूसरी तरफ दीपक व लाल रंग के जूही आदि के १०८ फूल रखे। साधक व्यक्ति मंत्र बोले। एक मंत्र बोलने पर पास बैठा एक व्यक्ति थाली में एक फूल चढ़ावे व दूसरा पास बैठा व्यक्ति अगर का टुकड़ा धूप में छोड़े व थाली के बेलन से घंटा दे। इस तरह १०८ बार करके थाली में नारियल व पंच रत्न की एक पोटली तथा चांदी का एक रुपया चढ़ाये। फिर बाजोट सहित लाल कपड़ा बांधकर उस पर चांदी का बर्क, चन्दन व फूल का हार चढ़ाये। धन-तेरस को चालीस माला, रूपचौदस को बयालीस माला तथा दीवाली को तयालीस माला घंटाकर्ण महामंत्र की फेरे। यंत्र पास में रखे। जप-घर में इसका स्थापन करे। क्षुद्र उपद्रव शान्त होंगे। सुख-सौभाग्य की वृद्धि होगी।

चन्द्रप्रज्ञप्ति यंत्र

ओं	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ब्लूं	न	मि
ग	ए	कि	ले	से	अ	उ
ये	ये	स	व्व	सा	रि	ण
दि	झा	स्वा	हा	हु	हे	अ
वं	त्त	मः	न	णं	सि	सुर
रि	उ	ये	रि	य	द्धा	सुर
प	ग	यं	भु	ल	रु	ग

विधि—रविपुष्य नक्षत्र में सोने, चांदी, तांबे या भोजपत्र पर इसे लिख कर विधिपूर्वक पूजा करे। उस दिन व समापन के दिन चौविहार उपवास करे। एकांत स्थान में इस मंत्र को लिखे तथा सफेद वस्त्र धारण कर सफेद माला से इसका जाप प्रारंभ करे। १२५०० जाप होने से यंत्र व मंत्र सिद्ध होता है। इससे मनवांछित कार्य सिद्धि होती है। अकस्मात् धन प्राप्त होता है। इसे पंचमी, दशमी या पूर्णिमा को शुरू करना चाहिए।

श्री मणिभद्र महायंत्र

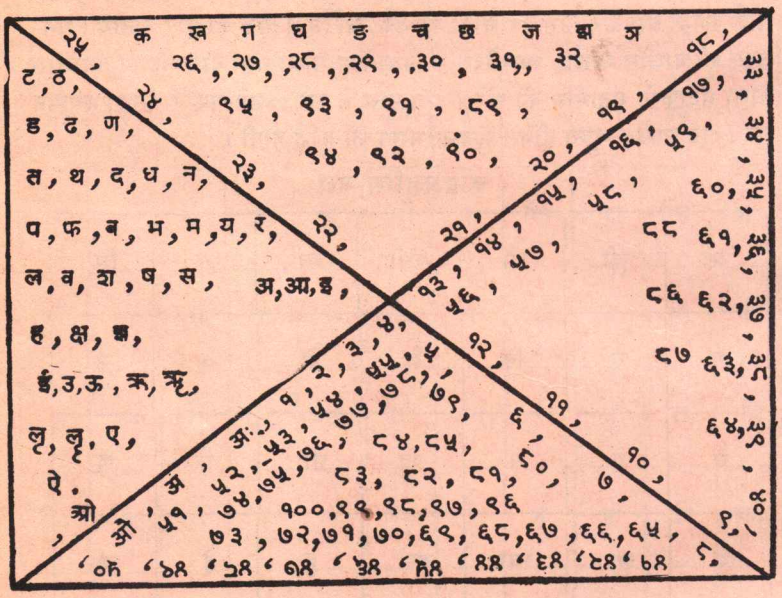

विधि—यह मणिभद्र महाराज का सौ अक्षरों वाला महायंत्र है। दीवाली के दिन चौविहार उपवास करके अष्टगन्ध या पंचगंध से सोने, चांदी, तांवे या भोजपत्र पर दीवाली की रात्रि को लिखकर मध्य रात्रि के समय गुंजा की झाड़ी की जड़ में गाड़ दे। दूसरे दिन प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में मौनपूर्वक जाकर निकाल लाए। घर आकर पवित्र स्थान में स्थापना करे व पूजन करे। प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक पूजन करता रहे। यह महा प्रभावक यंत्र है। घर में आनन्द रहता है, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

चौसठ योगिनी महायंत्र

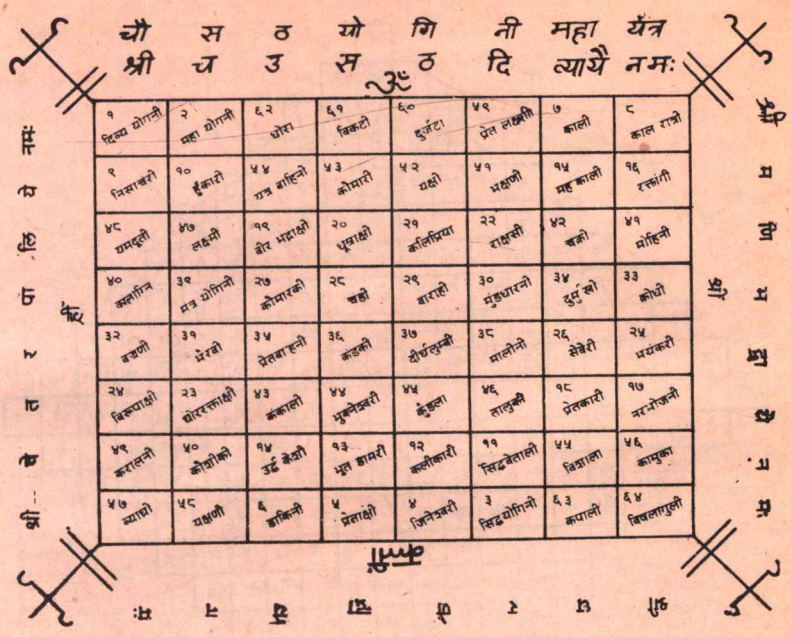

विधि—यह चौसठ योगिनियों का प्रभावक यंत्र है। यह यंत्र कृष्ण-पक्ष की अष्टमी रविवार या चर्तुदशी रविवार को पूर्व दिशा की ओर मुंह कर अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखना चाहिए अथवा चांदी, सोने या तांबे के पत्र पर खुदवा कर घर में पूजन के लिए रखा जा सकता है। पूजन में रखने के बाद नित्य धूप, दीप करना चाहिए। शरीर की दुर्बलता, पुराना ज्वर तथा किसी भी प्रकार की शारीरिक व्याधि के लिए सात दिन तक नित्य एक बार चांदी की थाली में अष्टगंध से लिखकर जल प्रक्षालित कर पिलाने से पूर्ण लाभ मिलता है। इस यंत्र को धारण करने से भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, व्यंतर आदि देवों का दूषित प्रभाव अथवा दोष नहीं होते हैं। यंत्र को पानी में घोलकर वह पानी घर में चारों कोनों में छिड़कने से व्यंतर देव सम्बन्धी दोष निवारण होता है। ऋद्धि, सिद्धि व समृद्धि का आगमन होता है, प्रतिकूल तांत्रिक व मांत्रिक प्रभावों को नष्ट करता है।

महाप्रभावक उवसग्गहर यंत्र

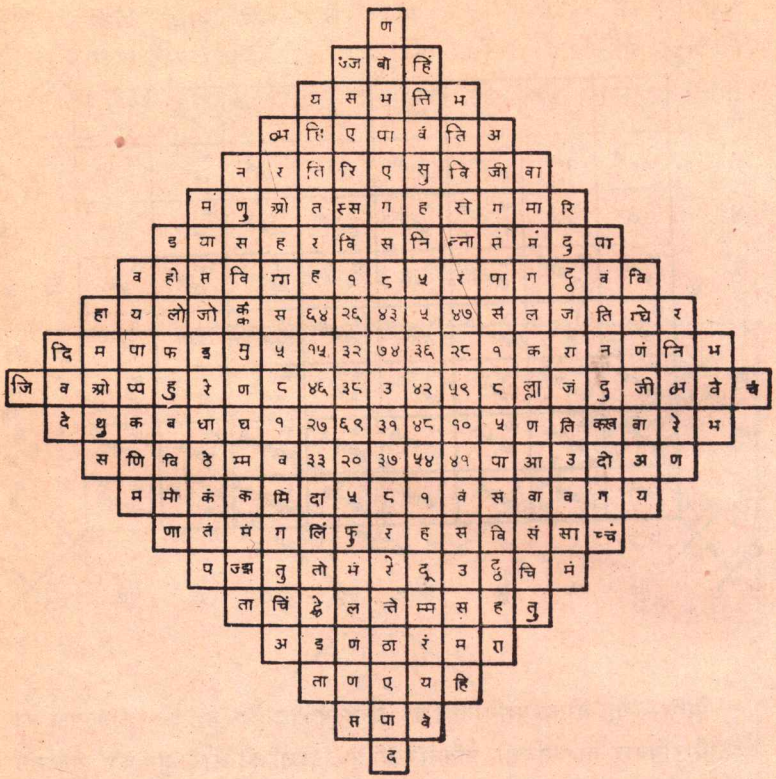

विधि—यह उवसग्गहर यंत्र पांच गाथा का सर्व प्रचलित यंत्र है। इसे रवि पुष्य, गुरु पुष्य, रविहस्त नक्षत्र या दीवाली अथवा शुभ मुहूर्त में सफेद कपड़े पहन, पूर्व की ओर मुंह करके अष्टगंध से भोजपत्र पर सोने, चांदी या अनार की कलम से लिखना चाहिए। धूप, दीप करना चाहिए। सोने की मादलिये में डालकर, धूप खेकर दाहिने हाथ या गले में धारण करने से सर्व प्रकार के भय, दुष्ट ग्रह व रोग शान्त होते हैं। भूत, प्रेत दोष मिटे, लक्ष्मी प्राप्त हो, मान-सम्मान बढ़े, कोर्ट-कचहरी में विजय हो, राज दरबार में सम्मान हो। घर में सोने, चांदी या तांबे के पत्र पर खुदवा कर रखे तथा प्राण-प्रतिष्ठा करके रोज पूजन करे तो अखूट भंडार रहे और इसको धोकर पानी पीवे तो गुमड़े, फोड़े, भूत-प्रेत भय, चोर भय दूर हो। गर्भवती स्त्री के बिना कष्ट सन्तान हो।

भगवती पद्मावती महायंत्र

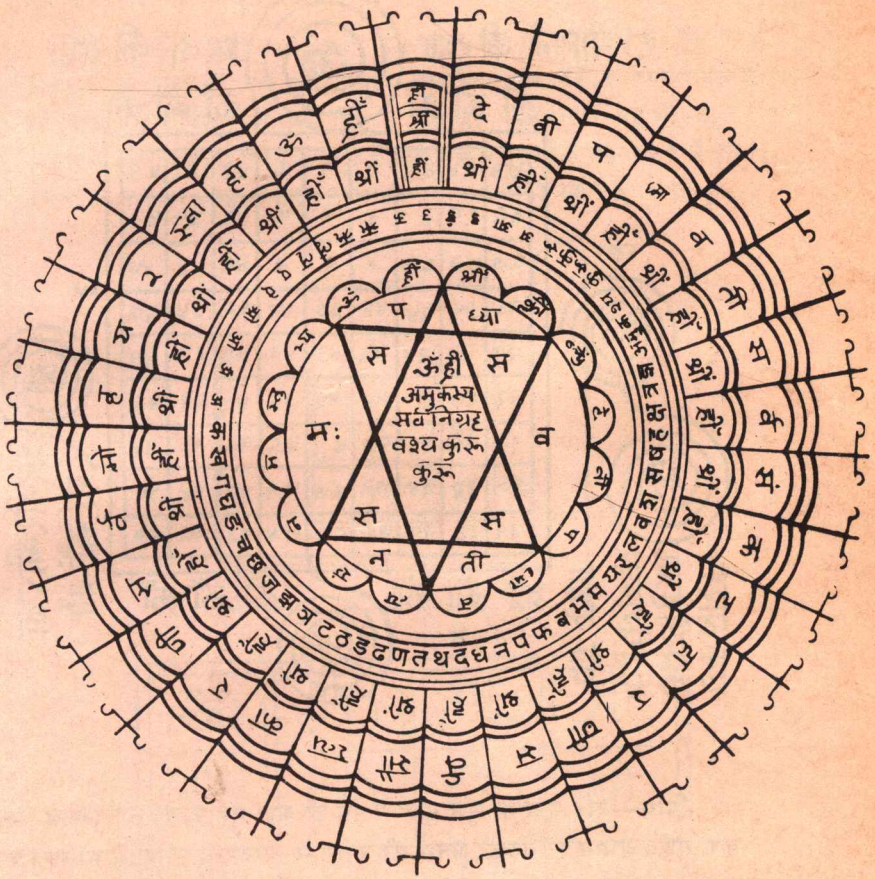

मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं पद्मावती सर्व संकट हरणी सर्व सौख्य करणी सर्व मोहय मोहय स्वाहा ।

विधि—यह यंत्र कुंकुम, कपूर, कस्तूरी व गोरोचन से भोजपत्र पर लिखे । जूही के पुष्प पर १००००० जाप करे । फिर दाख १०००, शर्करा १००, खारक खंड १०००, चन्दन खंड १०००, नारिकेल खंड १००० तथा श्वेत वस्त्र पहनकर नव रात्र में द्विप्रहर पर मध्याह्न-वेला में चावल के साथ हवन करे ।

विजयराज यंत्र

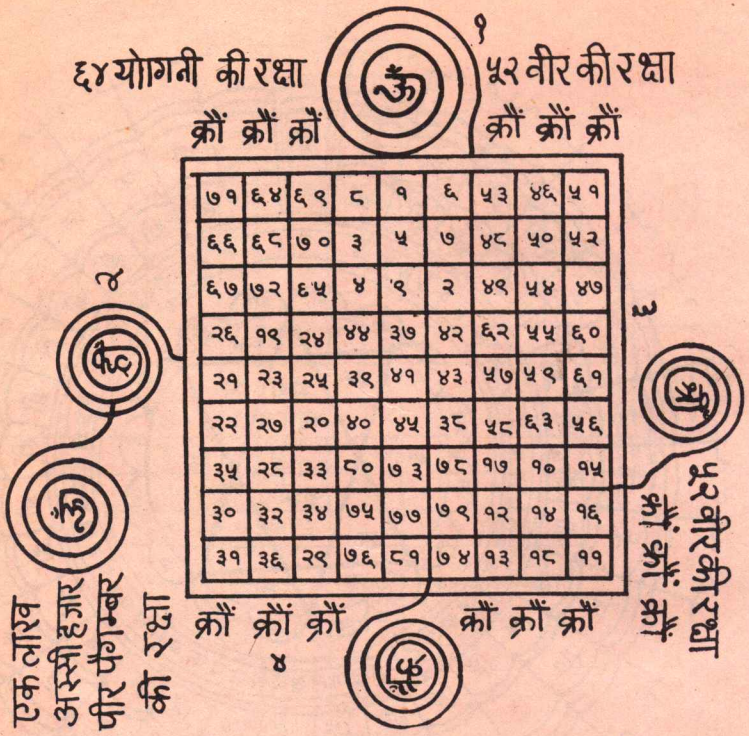

७१	६४	६९	८	१	६	५३	४६	५१
६६	६८	७०	३	५	७	४८	५०	५२
६७	७२	६५	४	९	२	४९	५४	४७
२६	१९	२४	४४	३७	४२	६२	५५	६०
२१	२३	२५	३९	४१	४३	५७	५९	६१
२२	२७	२०	४०	४५	३८	५८	६३	५६
३५	२८	३३	८०	७३	७८	१७	१०	१५
३०	३२	३४	७५	७७	७९	१२	१४	१६
३१	३६	२९	७६	८१	७४	१३	१८	११

विधि—रवि पुष्य या शुभ मुहूर्त में पूर्व की ओर मुंह करके, सफेद वस्त्र पहन कर, सफेद आसन पर बैठकर अनार की कलम से, अष्टगन्ध स्याही से भोजपत्र पर लिखे अथवा चांदी या तांबे के पत्र पर खुदवाये। रोज दशांग धूप से पूजन करे। लिखने का शुभारम्भ बड़े अक्षरों से यानी ८१-८०-७९-७८ इस तरह कम होते अक्षरों से १ तक लिखे। जिस खाने में जो अक्षर हों वे उसीमें लिखें। यह अत्यन्त शुभप्रद, भाग्योन्नायक तथा लक्ष्मीप्रद यंत्र है। इससे हर प्रकार के भय का नाश होता है। शत्रु से रक्षा होती है। कोर्ट, कचहरी के काम के समय प्रतिदिन सुबह, दोपहर व शाम को एक यंत्र लिखे व गिरा दे तो मुकदमे में जीत हो। जब तक कोर्ट में सफल न हो तब तक रोज लिखे।

पन्द्रहिया यंत्रों का विधि-विधान

ह्रींकारमयी पन्द्रहिया यंत्र कल्प

बहुत जगह मैं घूमा हूँ—बहुत ही पड़तें, गुटके व कागज मैंने देखे हैं। एक जगह छोड़कर और कहीं भी मुझे ह्रींकारमयी पन्द्रहिया यंत्र (शिव ताण्डव यंत्र भी इसको कहते हैं) देखने को नहीं मिला। मुझे जो पड़त मिली वह भी बहुत ही पुरानी व जीर्ण अवस्था में थी—बहुत ही परिश्रम व दूसरों के सहयोग से मैं उसकी नकल उतार सका। यह दो तरह से लिखा जाता है। दोनों प्रकार ही दे रहा हूं—

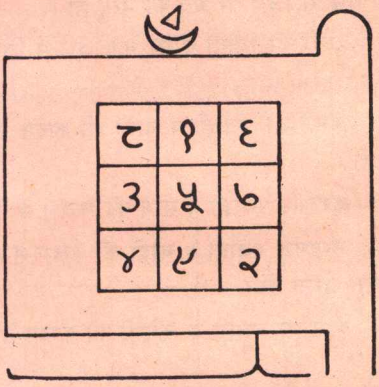

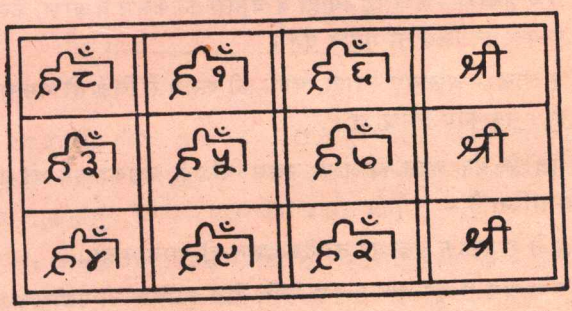

मूल मंत्र—ॐ ह्रीँ भुवनेश्वर्यै नमः।

यंत्र साधना के समय मूल मंत्र की हर रोज एक माला का जाप करना चाहिए।

विधि—योग्य, शुद्ध व एकान्त स्थान में पूर्व दिशा की ओर भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति की स्थापना करनी चाहिए। उसके आगे बैठकर यंत्र लिखना चाहिए। दशांगधूप या गुग्गुल की धूप करना चाहिए, घृत का दीपक होना चाहिए। प्रत्येक

यंत्र लिखने के बाद उसका पूजन करे। चावल, पुष्प, खोपरे का टुकड़ा, पान, सुपारी अनुक्रम से छुआने चाहिए।

उपरोक्त यंत्रों को गिनती में लिखने से अलग-अलग फल की प्राप्ति होती है—

१. १० हजार—केसर, कस्तूरी या गोरोचन की स्याही व चमेली की कलम से लिखे तो वशीकरण हो।

. २० हजार—चिता के कोयलों की स्याही व लोहे की कलम से श्मशान की भूमि पर लिखे तो शत्रु का उच्चाटन हो, विनाश हो और धतूरे के रस व कौए की पांख से लिखे तो शत्रु की मृत्यु हो।

३. ३० हजार—हल्दी की स्याही व सेह की शूल से लिखे तो शत्रु का स्तंभन हो।

४. ४० हजार—केसर की स्याही व चांदी की कलम से लिखे तो देव दर्शन हो, प्रसन्न हों।

५. ५० हजार—अष्टगंध स्याही व सोने की कलम से लिखे तो मोहन हो।

६. ६० हजार—अष्टगंध स्याही व चांदी की कलम से लिखे तो खोई अचल सम्पत्ति वापस प्राप्त हो।

७. ७० हजार—अष्टगंध स्याही व चमेली की कलम से लिखे तो द्रव्य प्राप्त हो।

८. ९० हजार—अष्टगंध स्याही व चमेली की कलम व आम्र, केला, वट वृक्ष के पत्ते पर लिखे तो महान् बने।

९. १ लाख—अष्टगंध स्याही, चांदी की कलम से लिखे तो भगवान् की कृपा हो। सर्व कार्य सिद्धि हो।

इन यंत्रों के अंक भरने की अलग-अलग विधि है, उसका फल भी अलग-अलग है, जो निम्नांकित है—

१. १ से ९ तक के अंक भरे तो देव-दर्शन हो, सन्तान हो।

२. २ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ लिखे तो वशीकरण हो।

३. ३ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १-२ लिखे तो भूमि प्राप्त हो। व्यापार वृद्धि हो।

४. ४ से ९ तक लिखे, फिर १-२-३ लिखे तो द्रव्य प्राप्त हो, देव-दोष दूर हो।

५. ५ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १-२-३-४ लिखे तो यह अशुभ है अतः इसे न लिखे।

६. ६ से लेकर ६ तक लिखे, फिर १-२-३-४-५ लिखे तो कन्या प्राप्त हो, उस पर कोई मारण का प्रयोग नहीं कर सकेगा।

७. ७ से लेकर ६ तक लिखे, फिर १ से ६ तक लिखे तो मोहन हो, अनेक लोग वश हों।

८. ८ से लेकर ६ तक लिखे, फिर १ से ८ तक लिखे तो शत्रु के उच्चाटन हो, अशुभ चिन्तन करने वाला विपत्ति में पड़े।

६. ६ से प्रारंभ करे, फिर १ से ८ तक के अंक लिखे तो सर्व कार्य सिद्ध हो।

मुस्लिम पन्द्रहिया यंत्र कल्प

एक जगह मुझे मुस्लिम पन्द्रहिया यंत्र कल्प की पड़त भी एक यति की लिखी मिली, उसको भी मैं यहां दे रहा हूँ—

۷۸۶

۸	۱	۶
۳	۵	۷
۴	۹	۲

मंत्र

अजवत, अत हयलं, वातत हयलं, जवा जतन हयलं, तात तयलं, हतत हयलं, वातत हयलं, जतत हयलं, हतत हयलं, ततत हयलं, अजावत अलेकंवी, अवस्ता अलेकंवी, य अल्लाह य वुदः फलाना काम मेरा हासल होय।

विधि—यंत्र लिखते समय उपरोक्त मंत्र को बार-बार पढ़ते रहें। आंगन को सफेद माटी से पोत कर उस पर बैठ कर लिखना शुरू करे। १५०० यंत्र लिखे—आम के पत्ते पर लिखे—जब तक सम्पूर्ण नहीं हो तब तक कुत्ते को नहीं देखे तो यंत्र सिद्ध हो जावेगा। शेष के दिन यंत्र बहते हुए पानी में बहा दे।

यंत्र लेखन विधि

१. महावरी की स्याही से सोने की कलम से लिखे तो मोहन हो।

२. गोरोचन की स्याही से चमेली की कलम से लिखे तो वशीकरण हो।

३. हल्दी की स्याही से सेह की सूल से लिखे तो स्तंभन हो।

४. धतूरे के रस से कौए की पांख से लिखे तो मृत्यु हो।

५. श्मशान के कोयले की स्याही से लोहे की कलम से लिखे तो उच्चाटन हो।

६. केसर की स्याही से रूपा की कलम से लिखे तो देव-दर्शन हो।

७. भिलावे के रस से लोहे की कलम से लिखे तो शत्रु तकलीफ में पड़े।

पन्द्रहिया यंत्र-कल्प

यह अति प्रसिद्ध व प्रभावशाली यंत्र है। यह यंत्र एक से लेकर नौ के अंक तक नौ कोठों में ही भरा जाता है। इसको जिधर से भी गिना जावे, योगफल १५ ही आयेगा। यह पन्द्रहिया यंत्र मुख्यतया चार प्रकार का बनता है। इसकी अलग-अलग वर्ण व संज्ञा होती है, जैसे—

८	१	६
३	५	७
४	९	२

वर्ण—ब्राह्मण, संज्ञा—वादी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यंत्र मिथुन, तुला, कुंभ के चन्द्र में लाल चन्दन, हिंगलु या अष्टगंध से लिखा जाना चाहिए।

वर्ण—क्षत्रिय, संज्ञा—आतसी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यंत्र धन व मेष के चन्द्र में काली स्याही में बरास (कपूर) मिलाकर लिखा जाना चाहिए।

४	३	८
९	५	१
२	७	६

२	९	४
७	५	३
६	१	८

वर्ण—वैश्य, संज्ञा—खाखी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यंत्र वृषभ के चन्द्र में अष्टगंध से लिखा जाना चाहिए।

वर्ण—शूद्र, संज्ञा—आवी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यंत्र वृश्चिक और मीन के चन्द्र में काली स्याही से लिखा जाना चाहिए।

६	७	२
१	५	९
८	३	४

इन चारों यंत्रों के अलग-अलग फल हैं। ब्राह्मण जाति वाले यंत्र का फल सर्व-श्रेष्ठ माना गया है। अतः उसी के विधि-विधान का यहाँ उल्लेख किया जाता है। उसे सिद्ध करने में निम्नलिखित वस्तुओं की आवश्यकता होती है—

लापसी, पूरी, अनार की कलम, अष्टगंध स्याही, चावल, गुग्गुल, पुष्प, खोपरे के टुकड़े २१, नागर बेल के पान २१, सुपारी २१, घृत का दीपक, एक कोरा घड़ा।

विधि—योग्य, शुद्ध व एकान्त स्थान में पहले पूर्व दिशा की ओर घड़े की स्थापना करनी चाहिए। उसके सामने भोजपत्र बिछाना चाहिए। उसके ऊपर के भाग में घृत का दीपक हो, नीचे के भाग में धूप का धूपिया हो, जिसमें गुग्गुल का धूप करना चाहिए। लापसी, पूरी आदि को भोजपत्र के बायें आधा-आधा रखना चाहिए। तत्पश्चात् अनार की कलम से भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र लिखना चाहिए। यह यंत्र लिखते समय 'ह्रीँ' या 'ॐ ह्रीँ श्रीँ' मंत्र का जाप करते रहना चाहिए। यंत्र लिखने के बाद उसका पूजन करे। चावल, पुष्प, खोपरे का टुकड़ा, पान, सुपारी अनुक्रम से छुआने चाहिए। साथ में धूप भी करते रहना चाहिए। इसी प्रकार से दूसरा यंत्र लिखे और पूर्ववत् उसका पूजन करे। इस तरह २१ यंत्र लिखे और पूजन करे। फिर मंत्र का ६००० जाप करे। इस प्रकार २१ दिन करे, जिससे सवा लाख जाप पूरा हो जायेगा। मंत्र और यंत्र की सिद्धि हो जायेगी। अन्त में हवन, तर्पण आदि विधिपूर्वक करे।

इन यंत्रों के अंक भरने की अलग-अलग विधि है, उसका फल भी अलग-अलग है, जो निम्नांकित है—

१. १ से ९ तक के अंक भरे तो हनुमान जी दर्शन दें।

२. २ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ लिखे तो राज्याधिकारी वश में हो।

३. ३ से लेकर ९ तक लिखे फिर १-२ लिखे तो व्यापार वृद्धि हो।

४. ४ से ९ तक लिखे, फिर १-२-३ लिखे तो जिसके ऊपर देवी-देवता का दोष हो गया हो या किसी ने उच्चाटन आदि कर दिया हो वह दूर हो जायेगा।

५. ५ से लेकर ९ तक लिखे फिर १-२-३-४ लिखे तो यह अशुभ है। स्थान-भ्रष्ट कराता है, अतः इसे न लिखे।

६. ६ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ५ तक लिखे तो उस पर कोई मारण का प्रयोग नहीं कर सकेगा।

७. ७ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ६ तक लिखे तो अनेक मनुष्य वश हों।

८. ८ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ८ तक लिखे तो अशुभ चिन्तन करने वाला विपत्ति में पड़े।

९. ९ से प्रारंभ करे, फिर १ से ८ तक के अंक लिखे तो धन की वृद्धि हो।

इसको गिनती में लिखने से अलग-अलग फल की प्राप्ति होती है—

१००० लिखने से सरस्वती प्रसन्न होती है, विष का नाश होता है।

२००० लिखने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है, दुःख का नाश होता है। शत्रु वश में होता है, उत्तम खेती होती है, मंत्र-तंत्र की सिद्धि होती है।

३००० लिखने से वशीकरण होता है, मित्र की प्राप्ति होती है।

४००० लिखने से भगवान् व राज्याधिकारी प्रसन्न होते हैं, उद्योग-धन्धा प्राप्त होता है।

५००० लिखने से देवता प्रसन्न होते हैं, वन्ध्या के गर्भ रहता है।

६००० लिखने से शत्रु का अभिमान टूटता है, खोई वस्तु वापिस मिलती है, एकान्तर ज्वर मिटता है, नीरोग रहता है।

१५००० लिखने से मनवांछित कार्य में सफलता मिलती है।

शुभ कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके यंत्र लिखना चाहिए। सफेद माला, सफेद वस्त्र तथा सफेद आसन होना चाहिए। साधना के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन, सात्त्विक भोजन, शुद्ध विचार रक्खे जाने चाहिए।

लिखने के बाद एक यंत्र को रख कर बाकी सभी को आटे की गोलियों में भरकर मछलियों को खिला देना चाहिए या नदी में बहा देना चाहिए।

चांदी या सोने के मादलिये में डाल कर पुरुष को दाहिने हाथ और स्त्री को बायें हाथ में या गले में धारण करना चाहिए।

पन्द्रहिया प्रश्नावली यंत्र

२	७	६
९	५	१
४	३	८

'ओं नमो भगवती मातंगिनी सर्वकार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्र को तीन बार बोलकर अपने मन में कार्य का चिन्तन कर इन नौ अक्षरों में से चाहे जिस पर उंगली रखें। फल निम्न रूप से है—

अंक १ का फल—धन लाभ होगा या मान-सम्मान मिलेगा।
अंक २ का फल—धन-क्षय या किसी प्रकार का अनिष्ट हो सकता है।
अंक ३ का फल—मित्र-संयोग या प्रिय-मिलन होगा।
अंक ४ का फल—व्याधि या कोई रोग होगा।
अंक ५ का फल—सर्व कार्य अर्थात् जिस कार्य का मन में चिन्तन किया है, वह सफल होगा।
अंक ६ का फल—कलह, किसी से झगड़ा या अप्रिय संवाद हो सकता है।
अंक ७ का फल—सन्तान प्राप्ति होगी—पुत्र हो सकता है।
अंक ८ का फल—मृत्यु हो सकती है या मरणान्तक कष्ट हो सकता है।
अंक ९ का फल—समाज तथा राज्य में सम्मान वृद्धि हो सकती है। किसी मुकदमे में विजय प्राप्त हो सकती है।

पन्द्रहिया नागपाश यंत्र

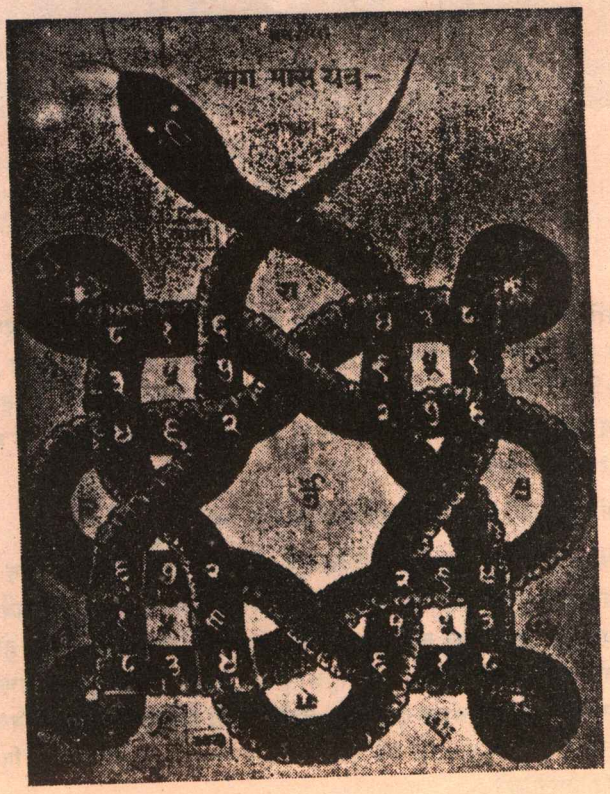

विधि—भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा के सामने बैठकर पूर्व की ओर मुंह करके, शुद्ध सफेद वस्त्र पहन कर, रवि पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर अष्टगंध स्याही व कनेर की कलम से लिखकर मादलिया में डाल कर दाहिनी भुजा में बाँधे, तिजोरी में रखे, पूजा के स्थान में रखे, हर रोज धूप खेवें—सर्व कार्य में सिद्ध-हस्त है।

वीसा यंत्रों का विधि-विधान

वीसा यंत्र कल्प

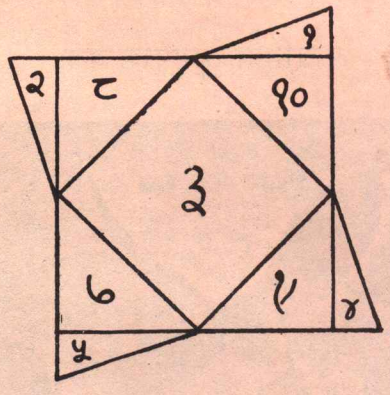

विधि—अच्छे, शुभ दिन व शुभ लग्न में यंत्र-लेखन शुरू करना चाहिए। पूर्व की ओर मुँह करके बैठे। धवल भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से रोज एक यंत्र लिखे। नाना प्रकार के सुगन्ध-द्रव्य—चन्दन, अगर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, कुंकुम व पुष्प आदि से ८८ दिन तक नित्य पूजन करे। निम्नलिखित मंत्र का ८८ दिन में १०००० जाप करे।

मंत्र—ओं ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मम वांछितं देहि देहि स्वाहा।

अन्तिम दिन वट वृक्ष या नदी किनारे २१ यंत्र लिखे। दशांश हवन करे। खीर, खांड, मधु, पंचामृत, पंचगव्य से हवन करे। अर्धरात्रि के समय पार्वती को सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ तर्पण व भोज्य करावे। इससे सर्व प्रकार की सिद्धि होती है, वर प्राप्त होता है। यह मोहन, स्तंभन, आकर्षण, वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण, प्राणदायक, धन-धान्य वृद्धिकर, प्रभावशाली एवं चमत्कार पूर्ण विद्या है। एक यंत्र रखकर बाकी को आटे की गोलियों में भर कर सुबह नदी में प्रवाहित कर दें, घृत का दीपक करे।

बीसा नागपाश यंत्र

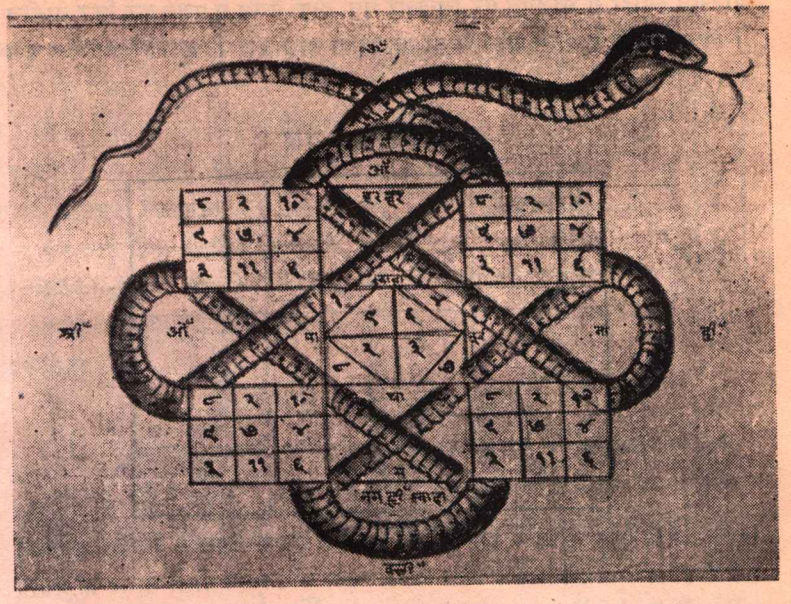

विधि— भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा के सामने बैठकर, पूर्व की ओर मुंह करके, शुद्ध सफेद वस्त्र पहन कर, रवि पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर अष्टगंध स्याही से कनेर की कलम से लिख कर मादलिया में डाल कर दाहिनी भुजा में बांधे, तिजोरी में रखे, पूजा के स्थान में रखे, हर रोज धूप खेवें, सर्व कार्य में सिद्धहस्त है।

विघ्नहरण साथिया बीसा यंत्र

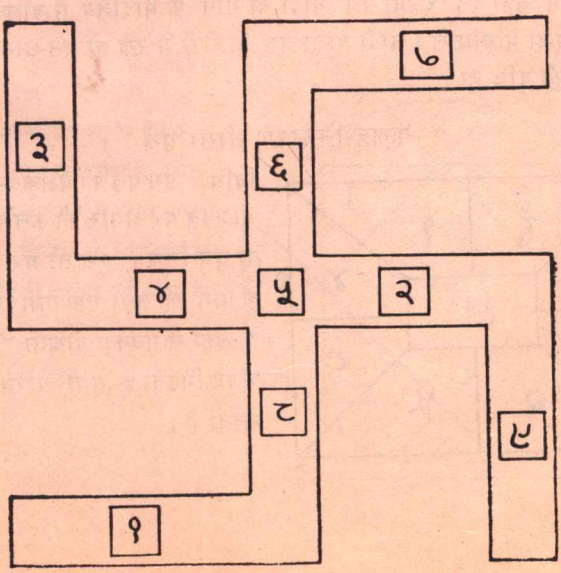

विधि—इस यंत्र को सिद्धियोग, दीपावली या होली के दिन अनार की कलम से व अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर धूप, दीप नैवेद्य से पूजन कर फिर ताबीज में डाल दाहिनी भुजा में बांध ले तो यह विघ्न-बाधाओं को हटाकर अत्यन्त शुभ फल देने वाला है।

लक्ष्मी बीसा यंत्र

महालक्ष्म्यै	५		नमः
९	श्रीँ		६
ॐ	१ ४ ७ ८		ह्रीँ
३	क्लीँ		२

विधि—रवि पुष्य नक्षत्र में इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखे। ६२ दिन तक रोज एक-एक यंत्र लिखे। पीला वस्त्र, पीला आसन एवं पीली माला का प्रयोग करे। पूर्व की ओर मुंह रखे। धूप, दीप, फल, फूल, नैवेद्य से उस यंत्र की पूजा करे। "ओं श्रीँ ह्रीँ क्लीँ महा लक्ष्म्यै नमः" मंत्र की एक माला प्रतिदिन फेरे। यह क्रम ६२ दिन तक चालू रखे। तत्पश्चात् ६३ वें दिन एक चांदी के पत्र पर यंत्र को खुदवा कर उन ६२ यंत्रों को चांदी के पत्र वाले यंत्र के नीचे रखकर पूजा करे। फिर ६२ यंत्रों में से एक यंत्र पास में रखे, बाकी यंत्रों को आटे की गोलियों में रख कर नदी में बहा दे। ६२वां यंत्र चांदी या सोने के मादलिये में डालकर गले या दाहिनी भुजा में बांध ले। चांदी वाला यंत्र तिजोरी में रखे तो धन-धान्य, सम्मान, सौभाग्य की वृद्धि हो।

कलह-निवारण बीसा यंत्र

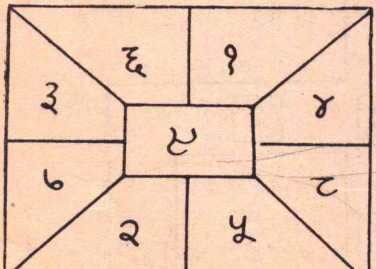

विधि—इस यंत्र को यक्षकर्दम स्याही से भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखे। दो यंत्र लिखे। एक तो घर के मुखिया के पास रहे तथा एक ऐसी जगह लगा दे, जहाँ से सबको दीखता रहे। इससे कलह मिटता है तथा परिवार में प्रेम बढ़ता है।

ऋणमुक्ति वीसा यंत्र

विधि—इस यंत्र को ४० दिन में ५००० हजार की संख्या में भोजपत्र पर केसर से लिखे। मंगलवार के दिन से लिखना शुरू करे। धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करके आखिरी दिन एक यंत्र दाहिनी भुजा पर बांध ले। बाकी के यंत्र आटे की गोलियों में बन्द कर नदी में बहा दें, तो थोड़े ही दिनों में ऋण से मुक्ति हो जायेगी।

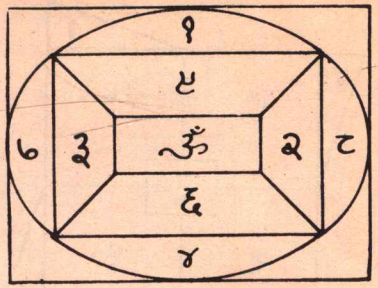

आजीविका प्राप्ति बीसा यंत्र

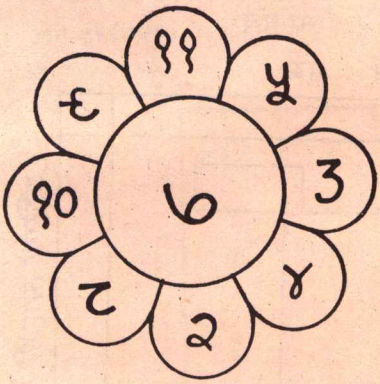

विधि—इस यंत्र को मंगलवार या गुरुवार के दिन से लिखना शुरू करे। भोजपत्र पर अष्टगंध स्याही से अनार की कलम से लिखे। प्रतिदिन २०१ यंत्र लिखे। जब ५००० यंत्र लिखे जा चुकें तो आखिरी यंत्र अपनी दाहिनी भुजा पर बांध ले। बाकी के यंत्र आटे की गोलियों में बन्द कर नदी में बहा दें।

आत्मरक्षा बीसा यंत्र

विधि—इस यंत्र को शुक्ल पक्ष पुष्य नक्षत्र के दिन अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करके, त्रिलोह के तावीज में बन्द कर दाहिनी भुजा पर बांध ले तो आत्परक्षा होती है। कहीं भी जाने में भय नहीं होगा।

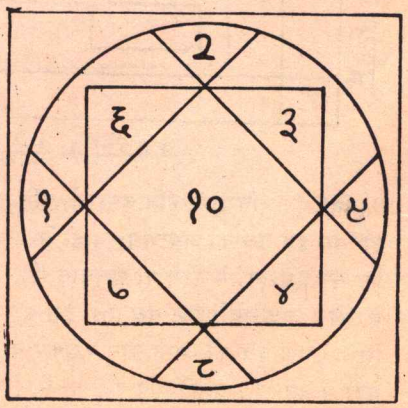

वशीकरण बीसा यंत्र

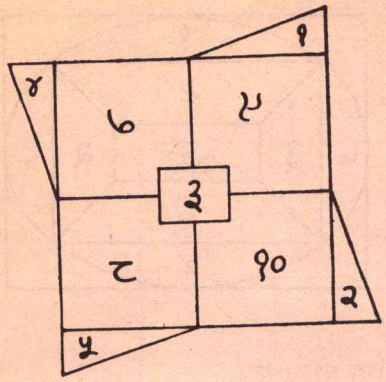

विधि—भोजपत्र पर अष्टगंध स्याही से अनार की कलम से २० दिन तक हर रोज यह यंत्र २०-२० लिखें तो मोहन हो। कहते हैं कि रोज ४० करके लिखे तो देव उपस्थित होता है। जब तक साधना करे, चावल, दूध व सफेद पदार्थ का भोजन करे।

सर्व-कार्य-सिद्धि बीसा यंत्र

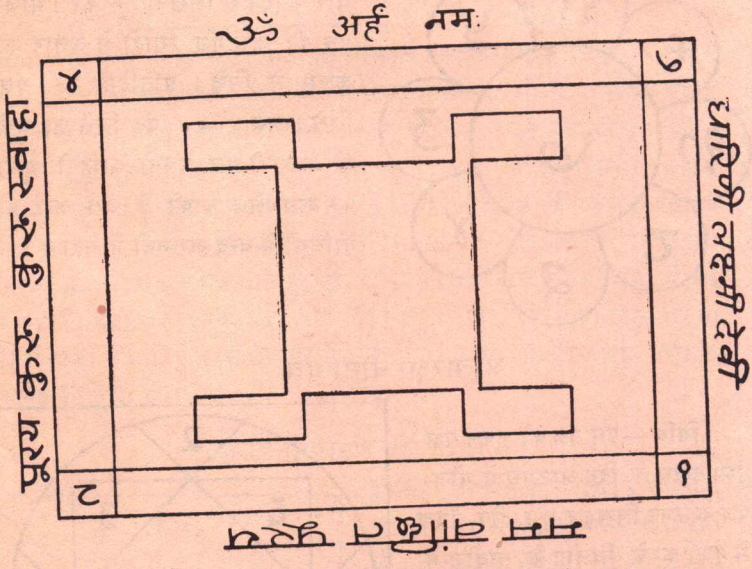

विधि—रवि पुष्य, रवि हस्तार्क, रवि मूल नक्षत्र अथवा अपना चन्द्र स्वर चलता हो तब इस यंत्र को अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर या सोने, चांदी या तांबे के पत्र पर चढ़ते अक्षरों से लिखे या खुदवाए, फिर प्रतिष्ठा, अभिषेक व पूजन कर तिजोरी में रखे। यह सर्वोत्कृष्ट यंत्र है। इस मंत्र का १२५०० जाप करे। इतने ही यंत्र लिखे। एक यंत्र को अपने पास रखकर बाकी गेहूं के आटे की गोलियों में डाल कर नदी में बहा दे। बाकी बचे यंत्र को तिजोरी में रख दे। अत्यन्त लाभप्रद है।

अन्य प्रयोग

१. किसी को वश में करना हो तो १ के अंक से लिखना शुरू करे।

२. किसी का आकर्षण करना हो तो ४ के अंक से लिखना शुरू करे।

३. किसी का उच्चाटन करना हो तो ५ के अंक से लिखना शुरू करे।

४. धन या यश प्राप्त करना हो तो ६ के अंक से लिखना शुरू करे।

५. किसी वस्तु की जानकारी प्राप्त करनी हो तो ५ के अंक से लिखना शुरू करे।

चौत्रीसिया यंत्र कल्प

मुझे एक चौत्रीसिया यंत्र कल्प की राजस्थानी भाषा में लिखी एक पड़त देखने को मिली—जिसको मैंने उसी रूप में नोट किया था—यहां मैं उसको उसी रूप में दे रहा हूँ—

११	८	१	१४
५	१०	१५	४
२	१३	१२	७
१६	३	६	९

अथ चौत्रीस के जंत्र मंत्र का ब्यौरा—

१. आद भवन चौत्रीस भराय, आदर, रक्षा बहुत बड़ाय ।।१।।

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ काला गोरा क्षेत्रपाला जहां जहां भेजीए तहांई कर वाला, गाजंत आया, बाजंत जाय, द्योरंत जाव, उडंत जाव, काला कलवा वाटका घट का, चाले का, भोव का, वराईण का, चुहड़ का, चमारी का, प्रगट करे इस घर की आद रक्षा बड़ाई करे, गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

२. दुजे घर तै जो अनसरै, रोग जहां लो सब परहरै ।।२।।

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ पद्मावती प्रसादात् रोग दुःख बीनास नांई, गुरू की शक्ति मेरी भक्ती फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

३. तीजे ठास जात घर आवे ।।३।।

मंत्र—ॐ एं तां विश्वधारनी झगड़ा जीतनी कुरु करु स्वाहा, गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

४. चौथे घर उच्चाट लगावे ।।४।।

मंत्र—ॐ ह्रीँ ब्राह्मणी रः रः रः ठः ठः ठः।

विधि—लूण राई का होम, मंत्र जाप १०८ बार।

५. पंचम घर थंभण करै, सब कोई ।।५।।

मंत्र—ॐ अजता अजत सास ताई सः वः षः अः अमुक मुख बंधन कुरु स्वाहा।

६. छठे घर झट कंचन फुन होय ।।६।।

मंत्र—ॐ नमो जहां जहां जाय वेग कारज करु धनषुन वीर धन लै आव वेग ले आव, धनषुन वीर की वाचा फुरः कुरु स्वाहा। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

विधि—एक सौ छत्तीस यंत्र लिखना, १३६ दिन में रोज एक यंत्र लिखना, जव की रोटी खाणी, घीव नहीं खाणा—और उस यंत्र को रोज जव के आटे में डाल कर नदी में बहा देना—१३७ वें दिन यंत्र लिखकर दाहिने गोडे के नीचे दबाकर रखना। यंत्र देवता ले जावेगा, कुछ रुपये रख जावेगा—मंत्र जाप करता रहे।

७. सात में घर मोहन करै नर नार ।।७।।

मंत्र—ॐ नमो सर्व मोहनी मेल राजा पाय पेल जो मैं देखुं मार मार करंता, सोई मेरे पांव पडंता, रावल मोह देवल मोह स्त्री मोह पुरुष मोह नार सिंह वीर तेरी शक्त फुरे, दाहिना चालै नारसींघ, बायां चालै हनवंत मेरे पिंड प्रान का रीछपाल होई मोह जहां मेरा मन चालै तहां मोह गुरु की शक्त मेरी भक्त फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

विधि—१३६ बार जाप करना, जहां जावे वहां सफल होय।

८. आठ में घर तै होय उजाड़ ।।८।।

मंत्र—ॐ नमो ॐ लमोल वोटा हनवंत वीरवज्र ले बैठा काकड़ा सुपारी पीले पान मेरे दुश्मन घर उजाड़ करो, काढ़ो प्राण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

विधि—शत्रु के घर में गाडना, उजाड़ होय।

९. नौ में घर तै हाजरात कहावे ।।९।।

मंत्र—ॐ नमो कामरू देश नै कामख्या आई, ता डंड राता ही माई, राता वस्त्र पहरि आई, राता जाप जपती आई, काम छै, काम छै, काम धारणी रक्त पाट पहरणी परमुख बोलती आई बेग मंत्र उतार लेही, मेरी भक्ति गुरु की शक्ती फुरो मंत्र इश्वरो वाचा ।

विधि—लड़की को लाल वस्त्र पहनाकर बैठावे, दीपक जलावे—अंगूठे पर काजल लगाकर मंत्र बोलकर हजरात चढ़ावे ।

१०. दसमें घर फल उपजे सारा, धरती, नारी, तीरजंच विचारा ।।१०।।

मंत्र— ॐ नमो मन पवन वणरा के राव बंधै गरम रहै ॐ हठा ॐ कचे मासो फुलै कपास पुरै मासे होई नीकास नदी अपुठी गंगा बहै । अर्जुन साधे बाण पुरै मासै निकासै सही सतो हणवंत जती की आण, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र इश्वरो वाचा ।

विधि—यंत्र लिखकर कमर के बांधे, सन्तान होवे, खेत में गाड़े तो अनाज अच्छा निपजे ।

११. इग्यारमें घर तै लीखै जो कोई, लिख मेटे जीव नहीं कोई ।।११।।

मंत्र—काल भैरो कंकाल का ती वाहि कलेजा भुंज काली रात का लाभै अरू चढै मसाण, जिस हम चाहें तिस तुं आण कड़ी तोड़ कलेजा फोड़ नौमै द्वार मै द्वार लोहु जोल, आव तो छरै न आवतो कलेजा फुटे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र इश्वरो वाचा ।

विधि—११६ यंत्र लिखे, मंत्र की १०८ जाप करे, कौवे की पांख व श्मशान के कोयले की राख से लिखे—तो शत्रु की मृत्यु हो ।

१२. बारहमें घर तै लीख जो कोई टोटा नहीं नफा फुन होई ।।१२।।

मंत्र—ॐ गणपाणी पत रह मसाणी सो मैं मंगु ले ले आउ काची नदी क व मै दीप फुल फुल म्हा फुल जपै जगत दस कोस पंच कोसी गाहक ले आउ गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र इश्वरो वाचा ।

विधि—१३६ यंत्र लिखे हाट में गाडे बहुत ग्राहक आवे ।

१३. तेरवां घर तै लिखे सुजान, प्रानी सुं करै है निदान ।।१३।।

१४. चौदह घर तै चौदह विद्या कही, लीख लीख पीव पंडीत हो सही ।।१४।।

मंत्र—ॐ ह्रीँ वाग वादनी सरस्वती मम विद्या प्रसादं कुरु स्वाहा ।

विधि—यंत्र १३६ लिखे, लिख लिख के पानी में घोल कर पीवे तो पंडित हो ।

१५. पन्द्रह घर ते लिखे मन लाय, गुप्त ही आये गुप्त ही जाय ।।१५।।

मंत्र—ॐ नमो उच्छिष्ट चंडालिनी क्षोभणी क्षोभणी द्रव आण पुंरपंर सुंख कुरु कुरु स्वाह । हनवंत की आस फुरे ।

विधि—यंत्र लिख के पावे । एक अपने पास रखे तो गुप्त आवे गुप्त जावे ।

१६. सोलह घर तैं कारज सब सरे, आपा राखे मूल न मरे ।
इन जंत्र को जानो भेव, सब कोई करे तिसकी सेव ।।१६।।

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ ग्रीँ प्रीँ चउसठ जोगनी रक्षा करैंगी कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि.- यंत्र १३६ पीवणा एक आपण पास राखणा—रक्षा करे ।

समाप्त

नोट—इस कल्प में तेरहवें घर का मंत्र नहीं है—जो पड़त मुझे मिली उसमें ऐसा मालूम देता है कि भूल से नहीं लिखा गया है । (पृ० ३१ पर प्रकाशित यंत्रों का विधि-विधान)

नवग्रह पीड़ा निवारण-यंत्र

ग्रह जनित अनिष्ट तथा व्यथा के निवारणार्थ नीचे नौ ग्रहों के यंत्र दिए जा रहे हैं । जिसकी जन्म कुंडली में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु नेष्ट राशि में पड़े हों अथवा गोचर से अशुभ स्थानों में भ्रमण कर रहे हों, वे शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन सूर्य यंत्र को, सोमवार के दिन चन्द्र यंत्र को, मंगलवार के दिन मंगल यंत्र को, बुधवार के दिन बुध यंत्र को, गुरुवार के दिन गुरु यंत्र को, शुक्रवार के दिन शुक्र यंत्र को, शनिवार के दिन शनि यंत्र को, बुधवार के दिन राहु यंत्र को, रविवार के दिन केतु यंत्र को, अष्टगंध से, अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर, तांबे, चांदी या सोने के मादलिये में डालकर, लाल डोरे में पिरोकर पुरुष दाहिनी भुजा पर तथा स्त्री गले में धारण करे । शनि, राहु व केतु के यंत्र को काले डोरे में बांधना चाहिए । इन यंत्रों को धारण करने से उन ग्रहों के नेष्ट फल दूर होते हैं । यदि प्रत्येक ग्रह का यंत्र उस ग्रह के दिन से ४५ दिन तक रोज—१०८ यंत्र लिखे तथा ४५वें दिन नवग्रहों का पंचोपचार पूजन, हवन आदि करके सारे यंत्रों को आटे की गोलियों में भरकर नदी में वहा दे या मछलियों को खिला दे तो सर्व नेष्ट ग्रहों का अशुभ फल समाप्त हो जाता है ।

यंत्र

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

गुरु यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

नोट—इन यंत्रों का विधि-विधान पृष्ठ-३० पर दिया हुआ है।

एक अत्यन्त प्रभावशाली यंत्र

१३७	१४४	१३०	१३५	२४९	२५६	२४२	२४७	२५	३२	१८	२३	१०५	११२	९८	१०३
१३४	१३१	१४१	१४०	२४६	२४३	२५३	२५२	२२	१९	२९	२८	१०२	९९	१०९	१०८
१४३	१३८	१३६	१२९	२५५	२५०	२४८	२४१	३१	२६	२४	१७	१११	१०६	१०४	९७
१३२	१३३	१३९	१४२	२४४	२४५	२५१	२५४	२०	२१	२७	३०	१००	१०१	१०७	११०
८९	९६	८२	८७	४१	४८	३४	३९	२०१	२०८	१९४	१९९	१८५	१९२	१७८	१८३
८६	८३	९३	९२	३८	३५	४५	४४	१९८	१९५	२०५	२०४	१८२	१७९	१८९	१८८
९५	९०	८८	८१	४७	४२	४०	३३	२०७	२०२	२००	१९३	१९१	१८६	१८४	१७७
८४	८५	९१	९४	३६	३७	४३	४६	१९६	१९७	२०३	२०६	१८०	१८१	१८७	१९०
२३३	२४०	२२६	२३१	१५३	१६०	१४६	१५१	१२१	१२८	११४	११९	९	१६	२	७
२३०	२२७	२३७	२३६	१५०	१४७	१५७	१५६	११८	११५	१२५	१२४	६	३	१३	१२
२३९	२३४	२३२	२२५	१५९	१५४	१५२	१४५	१२७	१२२	१२०	११३	१५	१०	८	१
२२८	२२९	२३५	२३८	१४८	१४९	१५५	१५८	११६	११७	१२३	१२६	४	५	११	१४
५७	६४	५०	५५	७३	८०	६६	७१	१६९	१७६	१६२	१६७	२१७	२२४	२१०	२१५
५४	५१	६१	६०	७०	६७	७७	७६	१६६	१६३	१७३	१७२	२१४	२११	२२१	२२०
६३	५८	५६	४९	७९	७४	७२	६५	१७५	१७०	१६८	१६१	२२३	२१८	२१६	२०९
५२	५३	५९	६२	६८	६९	७५	७८	१६४	१६५	१७१	१७४	२१२	२१३	२१९	२३२

यह सोलह यंत्रों से बना एक अत्यन्त प्रभावशाली यंत्र है। इसकी रचना को देखने से मालूम होता है कि यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण यंत्र है। परन्तु यह यंत्र किस-लिये बना, इसका क्या विधि-विधान है, मुझे कहीं उपलब्ध नहीं हो सका। पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि इसके सम्बन्ध में किन्हीं को जानकारी हो तो मुझे अवश्य सूचित करने का कष्ट करें।

बत्तीसिया कष्ट-निवारण यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

विधि— इस यंत्र को हल्दी के पानी से, अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखे। नीचे कार्य का नाम लिखे। फिर रुई की खड़ी फूलबत्ती बना-कर वह यंत्र उसके बीच में दे दे। घृत से उस बत्ती को जलाये। रविवार के दिन पूर्व की ओर मुंहकर लिखे। हल्दी की माला बनाकर उस पर निम्नांकित मंत्र का ११०० जाप सूर्य के सामने बैठकर करे, सर्व कार्य सफल हो, विघ्न-बाधाओं का नाश हो।

मंत्र—ह्रीं हँस।

चौत्रीसिया लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

विधि - इस यंत्र को अनार की कलम व केसर से रवि पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर लिखकर दूकान में टांग दे व रोज पूजा करे तो लक्ष्मी की प्राप्ति हो।

.१६	.९	.४	.५
.३	.६	.१५	.१०
.१३	.१२	.१	.८
.२	.७	.१४	.११

पैंसठिया व्यापार-वृद्धि यंत्र

१०.	१८.	१.	१४.	२२.
११.	२४.	७.	२०.	३.
१७.	५.	१३.	२१.	९.
२३.	६.	१९.	२.	१५.
४.	१२.	२५.	८.	१६.

विधि—इस प्राचीन यंत्र को पूर्व की ओर मुंह कर अच्छे मुहूर्त में अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर एक गज कपड़ा व नारियल चढ़ाकर पूजा करे। फिर उस यंत्र को एक कोरे कुल्हड़िये में डालकर, दूकान में मालिक जहां बैठकर दुकानदारी करे, उस जगह जमीन में गाड़ दे उस स्थान पर गद्दी बिछाकर उस पर बैठे, दुकानदारी करे तो व्यापार में अत्यन्त वृद्धि हो।

वहत्तरिया वशीकरण यंत्र

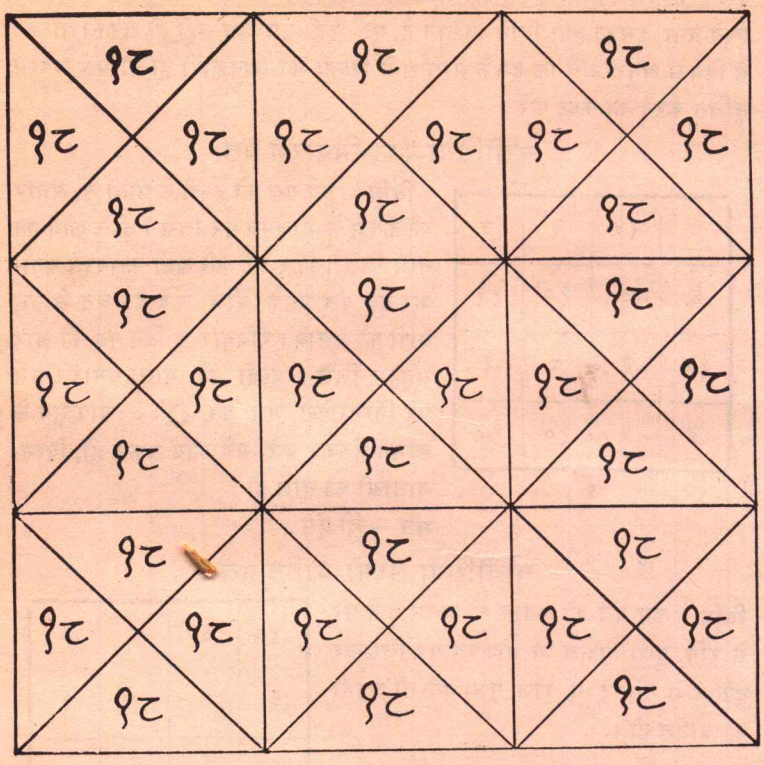

विधि—इस यंत्र को रविवार के दिन मध्याह्न के समय चीड़ी की बींठ पानी में घोलकर उससे भोजपत्र पर लिखे। यंत्र के नीचे जिसको वश करना हो, उसका नाम व नाम के आगे "वश्य थाय वश्य थाय" लिखे। फिर कबूतर की बींठ का धूप देकर जला दे, तो वह व्यक्ति साधक के वश में हो जायेगा।

वशीकरण यंत्र

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर चमेली की कलम से गोरोचन, चन्दन व कपूर की स्याही से लिखे। सात दिन तक विधिवत् पूजा करके दाहिनी भुजा पर बांधे। जिसके पास जाय, सम्मान करे, वश हो।

औं	बं	जैं	ऽ।
दें	डं	ही	ऽ=
तं	डं	जगत्	ऽ।।

पति वशीकरण यंत्र

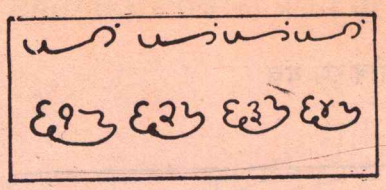

विधि— स्त्री के दूध में कपड़ा भिगोकर सुखाकर उस कपड़े पर कपूर व कस्तूरी से यह यंत्र लिखे। रविवार या शुक्रवार को वह कपड़ा जलाकर उसकी राख मिष्टान्न में अपने पति को खिला दे तो पति वश में रहे।

लड़की ससुराल रहे यंत्र

विधि—भोजपत्र पर अष्टगंध से इसी रूप में तीन यंत्र लिखे। फिर तीन दिन तक उन्हें घृत में रखकर मादलिये में डालकर लड़की के गले में बांध दे तो लड़की ससुराल में रहेगी।

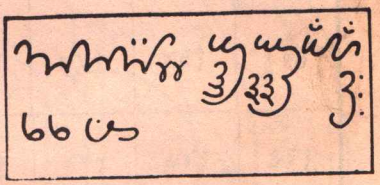

व्यक्ति व सभामोहक वशीकरण यंत्र

४८८८२	४८८८९	२	७
६	३	४८८८६	४८८८५
४८८८८	४८८८३	८	१
४	५	४८८८४	४८८८७

विधि— इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर आसन के नीचे दबा के रखे तो आने वाला व्यक्ति प्रभावित होगा तथा व्याख्यान के समय पास में रखे तो सभा मोहित होगी।

वर-वशीकरण यंत्र

२२५	११५	१५६	१३२	११४	१५३	१२७
१२६	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	१५७	१३०	१२५	१३५	१३६
१३९	१४७	१४४	११६	१४१	१४२	१४३
१४४	१२३	१४५	१२८	११६	१४७	१६६
१२२	१४६	१४९	१२९	१५०	१२०	१२१

विधि—इस यंत्र को हल्दी के रस से भोजपत्र पर लिखकर कुमारी कन्या के हाथ में बांध दे। कन्या का संबंध तय करने जो व्यक्ति देखने आयेगा, कन्या उसे पसन्द आयेगी, सम्बन्ध तय होगा।

उवसग्गहर स्तोत्र की प्रथम गाथा का लक्ष्मी वृद्धिकर यंत्र

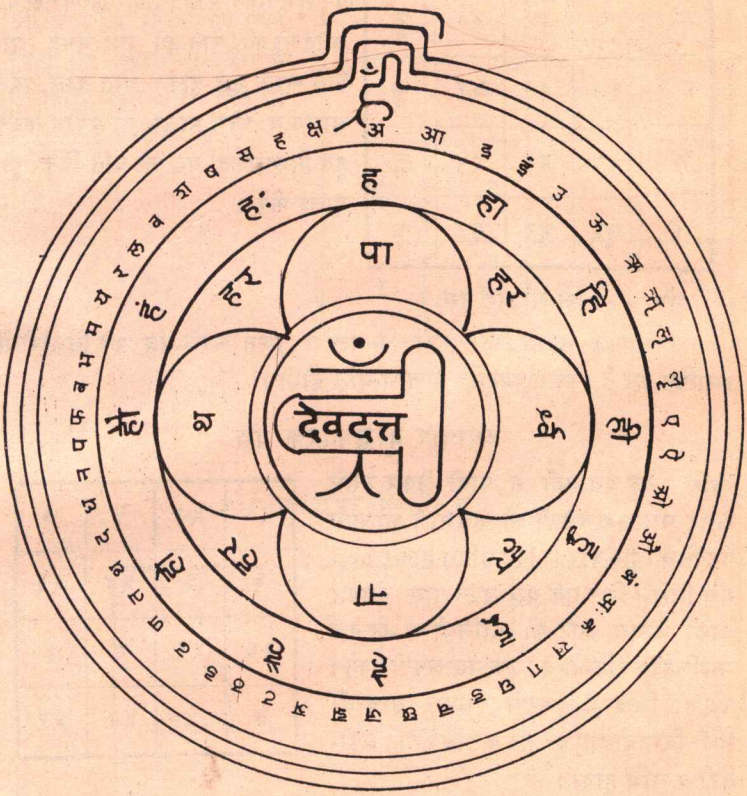

विधि— इस यंत्र को कुंकुम व गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर कुमारी कन्या के हाथ से कते सूत से बाईं भुजा पर धारण करे। परन्तु पहले तीन दिन तक प्रातः सायं पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्ति के आगे यंत्र रखकर निम्न मंत्र की एक माला फेरे।

मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

मंत्र को धारण करे तो धन-धान्य व लक्ष्मी की वृद्धि हो।

व्यापार में लाभ व वृद्धिकारक यंत्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ठः	४२	३५	४०	फु
ठः	३७	३६	४१	फु
ठः	३८	४३	३६	फु
हैं	भुर	भुर	भुर	फु

विधि—तांबे, चांदी या सोने के पत्र पर शुभ मुहूर्त में खुदवाकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात को शुद्ध जगह स्थापित करके शुद्ध होकर श्वेत वस्त्र, श्वेत आसन व श्वेत माला का प्रयोग करते हुए निम्नांकित मंत्र की प्रति दिन १० माला फेरे।

मंत्र —ओं ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

सफेद फूल चढ़ावे। २१ दिन तक जाप व पूजन करके यंत्र को तिजोरी में स्थापित कर दे। इससे व्यापार में लाभ-वृद्धि होगी।

व्यापार वृद्धिकारक यंत्र

विधि—यह यंत्र नदी से पानी लेकर उसमें केसर घोलकर चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिखे। शुक्रवार के दिन पवित्र होकर ७०० यंत्र लिखे। फिर एक यंत्र अपने पास रखकर बाकी के यंत्र आटे की गोलियों में भर कर मछलियों को खिला दे। एक यंत्र अपनी दूकान पर भी लिख दे। इससे व्यापार सम्बन्धी सभी विघ्नबाधाएं दूर हट कर बिक्री की बढ़ोतरी व लाभ होगा।

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५६	५१	८	१
४	५	५२	५५

भाग्य वृद्धिकारी यंत्र

अ	अ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में कस्तूरी, चन्दन व कर्पूर से लिखे। धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करे। फिर तांबे के ताबीज में डालकर पुरुष के दाहिने हाथ में तथा स्त्री के बायें हाथ में बांधे तो भाग्य की वृद्धि हो, मन प्रसन्न रहे, अष्टसिद्धि प्राप्त हो।

शत्रु विजयी यंत्र

विधि—इस यंत्र को यक्षकर्दम या अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर चांदी के मादलिये में डालकर अपने पास रक्खे तो शत्रु की पराजय हो।

२४२	२४९	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

मुकदमा विजयी यंत्र

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

विधि—इस यंत्र को रवि पुष्य, गुरु पुष्य, रवि हस्त, रविमूल व दीवाली के दिन जब अपना सूर्य स्वर चलता हो चांदी के पत्र पर खुदवाकर प्रतिष्ठा करे, फिर रोज पूजन करे। मुकदमे में अवश्य विजय होगी। जरूरत पड़े, तब जेब में रखे।

सर्वत्र विजयी यंत्र

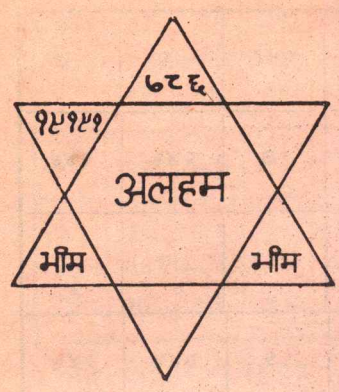

विधि—इस यंत्र को अनार की कलम से अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर गुग्गुल की धूनी देकर अपनी कमर से बांध ले। फिर निर्द्वन्द्व होकर अपने कार्य हेतु चले जायं, अवश्य सफलता होगी। किसी अफसर या बड़े आदमी के पास जाना हो, कोई आवश्यक कार्य अटक रहा हो, सफलता नहीं मिल रही हो तो इस यंत्र के कारण अवश्य सफलता मिलेगी, मुकदमे में विजय मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा, सब मनोरथ सफल होंगे।

विघ्नहरण यंत्र

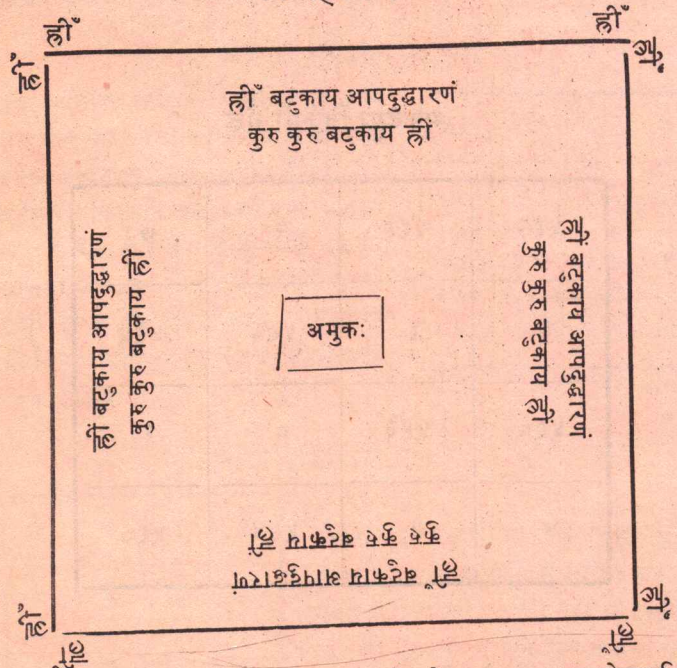

विधि—इस यंत्र को गोरोचन व कुंकुम से भोजपत्र पर स्वच्छ होकर लिखे। अमुक की जगह जिसके ऊपर विपत्ति हो, उसका नाम लिखे। धूप-दीप से पूजन कर मादलिये में डालकर हाथ के बांध दे। इससे आपत्तियों से उद्धार हो, लक्ष्मी बढ़े, शत्रु का नाश हो, कभी भी अनिष्ट न हो।

अकाल-मृत्यु-निवारण यंत्र

≡	=	।	–
।।	=	।।	–
–	।।	।।	–
।।।	।।	=	–

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर बांधे तो अकाल मृत्यु का भय दूर हो।

अकाल-मृत्यु-निवारण यंत्र—दूसरा

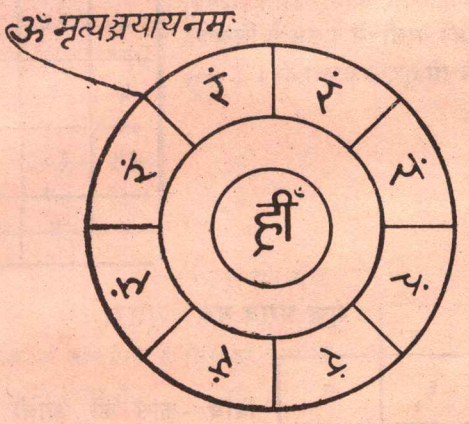

विधि—यंत्र को गोरोचन एवं कुंकुम से भोजपत्र पर लिखकर मंत्र का १०८ जाप करके मादलिये में डाल हाथ के बांधे तो अकाल मृत्यु योग टले।

सर्व रोग निवारण यंत्र

विधि—केसर से भोजपत्र पर लिखे, देवदत्त की जगह रोगी का नाम लिखे, फिर हाथ के बांधे, सर्व रोग मिटें।

द्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
द्रीं	दे	व	द्रीं
श्रीं	द	त्त	श्रीं
द्रीं	द्रीं	द्रीं	द्रीं

गर्भ स्तंभन यंत्र

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

विधि—रविवार मूल नक्षत्र में भोजपत्र पर लिखकर बायें हाथ में बांधने से गर्भ स्थिर रहता है।

सुख प्रसव यंत्र

विधि—कांसे की थाली में कुंकुम से लिखकर स्त्री को दिखाये तो तुरन्त बच्चा हो।

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

सुख प्रसव यंत्र—दूसरा

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

विधि—कांसे की थाली में कुंकुम से लिखकर स्त्री को दिखाने मात्र से प्रसव हो जाता है।

बालक की रक्षा का यन्त्र

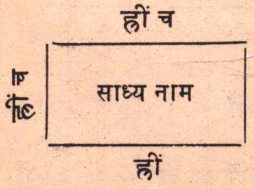

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर रविवार को पूजा करके ताबीज में डालकर गले के बांधे तो शारीरिक व मानसिक बाधा दूर हो, बालक के दांत बिना बाधा के आवें। ताबीज तीन धातु का हो। साध्य की जगह बालक का नाम लिखे।

मासिक धर्म बन्द हो यन्त्र

विधि—गुरुवार को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर कमर में बांधने से बहता हुआ रक्त बन्द हो जाता है।

ज	ज	ज	ज
।१	।१	।१	।१
१	१	१	१
८	८	८	८

पुराना-ज्वर-नाशक यंत्र

१०	१४०	११०	८०
१२०	७०	२०	१३०
६०	९०	१६०	३०
१५०	४०	५०	१००

विधि—"ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं" इस मंत्र को इस यंत्र के साथ भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर हाथ के बांधने से पुराना ज्वर शान्त होता है।

ज्वर निवारण यंत्र

विधि—भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर हाथ के बांधने से ज्वर शान्त होता है।

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

ज्वर निवारण बीसा यंत्र

२	९	२	७	श्री
६	३	६	५	श्री
८	३	८	१	श्री
४	५	४	७	श्री

विधि—भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर हाथ के बांधने से हर प्रकार का ज्वर शान्त होता है।

नित्य ज्वर निवारण यंत्र

विधि—यह यंत्र एक कोरी ठीकरी पर लिखकर मंगलवार के दिन पूजा करके ज्वर वाले के हाथ से कुए में गिरवा दे। ज्वर शान्त हो जाएगा।

८२	८९	२	७
६	३	८६	८५
८८	८३	८	१
४	५	८४	८७

एकान्तर ज्वर निवारण यंत्र

०	७१	७१	७१
०	७१	७१	७१
०	७१	७१	७१
०	०	०	०

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर हाथ के बांधने से एकान्तर ज्वर शान्त होता है।

एकान्तर ज्वर निवारण यंत्र – दूसरा

विधि—इस यंत्र को एक कोरी ठीकरी पर लिख कर लाल कपड़े में लपेट कर पुरुष के दाहिने हाथ में तथा स्त्री के बायें हाथ में बांधने से एकान्तर ज्वर शान्त होगा।

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

मस्तक पीड़ा दूर यंत्र

४१	३४	४	५
३	६	४०	३५
३८	३७	१	८
२	७	३९	३१

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर बांधने से मस्तक पीड़ा दूर होती है।

आंधाशीशी दूर यंत्र

७	६	०	१	०	०
८	०	०	३	०	०
२	०	०	०	०	०
५	६	७	८	९	१०
४	०	०	०	०	०
५	३	२	१	०	८

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर भुजा पर बांधने से आंधाशीशी दूर होती है।

आंधाशीशी दूर यंत्र—दूसरा

५३	४२
३११	७०

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर बांधने से आंधाशीशी दूर होती है।

आंधाशीशी दूर यंत्र—तीसरा

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

विधि—इस यंत्र को केसर से भोजपत्र पर लिखकर गुग्गुल की धूनी देकर नीले सूत से गले में बांधे तो आंधाशीशी दूर होती है।

आंख दूखती रहे यंत्र

१०	१७	६	५
१७	४	११	६
३	१४	९	१२
८	३	१२	१५

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर पुरुष के दाहिने हाथ तथा स्त्री के बायें हाथ में बांधने से आंख दूखती ठीक होती है।

कर्ण पीड़ा दूर यंत्र

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर कान के बांधे तो कर्ण पीड़ा शान्त हो।

भ	ज	व
क	ग	ज:
छ:	छ:	द:

बन्द नाक बहे यंत्र

१५	३५	२	८
७	३	२	९
३४	३९	९	१
	६	३०	३३

विधि—इस यंत्र को सरसों के पत्ते पर अष्टगंध से लिखकर उसको चबाकर खाने से बन्द नाक खुल जाएगी।

दांत दूखता वन्द हो यंत्र

विधि—इस यंत्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर रोगी का नाम लिखकर उस पर एक लोहे की कील ठोंके तो दांत का दर्द बन्द हो।

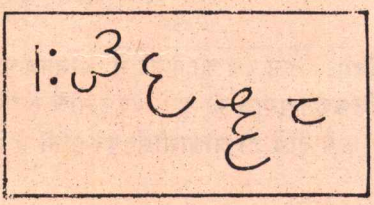

मुंह का छाला दूर हो यंत्र

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर गले के बांधने से मुंह के छाले मिट जाते हैं।

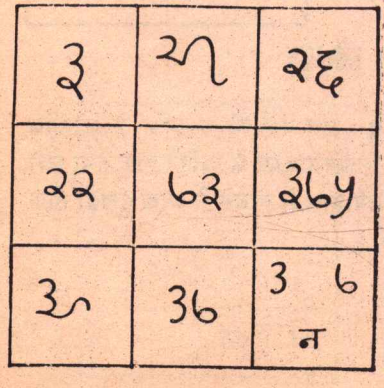

उदर रोग निवारण यंत्र

विधि—यह यंत्र प्रातःकाल स्नान कर गोरोचन से कांसे की थाली में लिखे, फिर पूजन कर पानी में डालकर उसको धोकर पी जाए। इस प्रकार २१ दिन करे, विविध प्रकार के पेट के रोग शान्त हों।

अ	ग	स्त्य	ऋ
ष	ये	न	मः
प	च	प	च

पेट का अफारा मिटे यंत्र

१६	२३	२	७
६	३	२०	१९
२२	१७	८	१
४	५	१८	२१

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर हाथ के बांधे तो पेट का अफारा दूर हो।

वायु-गोला-धारण दूर यंत्र

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर कमर के बांधे तो वायु-गोला या धरण दूर हो।

८	१	४५	१०
११	४४	४	५
२	७	९	४६
४३	१२	६	३

दाद दूर हो यंत्र

१६	२३	२	७
६	३	२०	१९
२२	१७	८	१
४	५	१८	२१

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर अपने पास रखे तो दाद मिटे।

बाला (नहरवा) दूर यंत्र

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधे तो बाला ठीक हो जाता है।

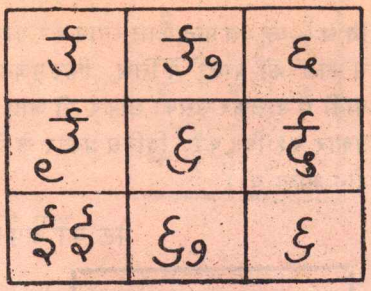

अण्डकोष वृद्धि रुके यंत्र

४४२	४४९	२	७
६	३	४४६	४४५
४४८	४४३	८	१
४	५	४४४	४४७

विधि—इस यंत्र को केसर से भोजपत्र पर रविवार को लिखकर दाहिने हाथ के बांधने से बढ़ते हुए अण्डकोष की वृद्धि रुक जाएगी।

नपंसकता ठीक हो यंत्र

विधि—इस यंत्र को पुष्य नक्षत्र में अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर कमर के बांधने से नपुंसकता मिटती है।

४	५	७४	७७
७८	७३	८	१
६	३	७६	७५
७२	७९	२	७

स्वप्नदोष मिटे यंत्र

हो।।	सो।।	हो।।
ल ओ	ल ओ	ल ओ
क ल	क ल	क ल
२	२५	३

विधि—पुष्य रविवार को भोजपत्र पर लिखकर कमर के बांधे तो स्वप्नदोष मिटे, स्तभंन बढ़े।

स्तंभन शक्ति बढ़े यंत्र

विधि—कागज या भोजपत्र पर काली स्याही से लिखे, संभोग के समय सामने रखे तो स्तंभन शक्ति बढ़े।

७	३।	43	नइ
त	१३	८३	९९
७	3७	त१	४१
त	।त	०	।१

मिरगी मिटे यंत्र

४२	४२	२	।।७
४५	४३	७	७।
।।१४।।	।।५।।	४४	४७।।
।।१४।।	।।५	४४	४७।।

विधि—अष्टगंध से भोजपत्र पर यह यंत्र लिखकर भुजा के बांधे तो मिरगी का रोग मिटे।

शीतला (चेचक) मिटे यंत्र

विधि—यह यंत्र पीपल के पत्ते पर अष्टगंध से लिखकर चूल्हे पर बांध कर रखे तो चेचक रोग शान्त हो।

श्री०	श्री०	श्री०	श्री०
श्री०	श्री०	श्री०	श्री०
श्री०	श्री०	श्री०	श्री०
००	००	००	००

बवासीर यंत्र

६	१२	१	२
६	२	१२	११
१४	६२	२	०
४	५	१२	४

विधि—भोजपत्र पर अष्टगंध से इस यंत्र को लिखकर हाथ के बांधे तो बवासीर रोग मिटे।

हैजा रोग मिटे यंत्र

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर पानी में घोलकर पिलावे तो हैजा रोग शान्त हो।

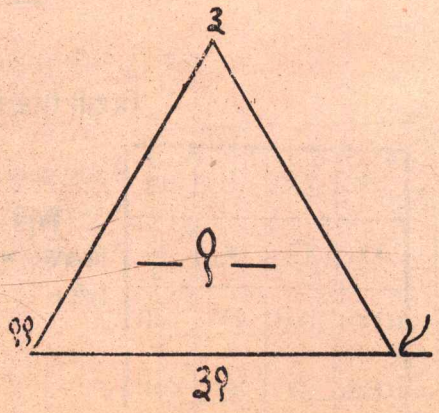

पीलिया रोग मिटे यंत्र

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखे। देवदत्त की जगह रोगी का नाम लिखे। इसे मस्तक पर बांधने से पीलिया रोग शांत होता है।

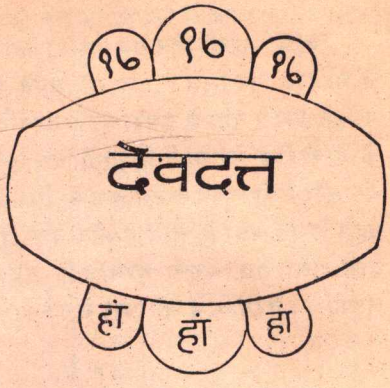

शीतला (चेचक) रोग मिटे यंत्र—दूसरा

N,	ɔ	५	०००
८	४	११	२५
१०	०ก२	२२	००२
२	८	६	००००००५

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर गले में धारण करने से चेचक रोग शान्त होता है।

गुमड़ा, फोड़ा मिटे यंत्र

हा क ७ स्वा	ख पा ६ र्श्व
८ घ	ग ३
र ६ म ५	२ ध १ य
भ ट	ध क्ष

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से या केसर से लिखकर भुजा के बांधने से किसी भी तरह के गुमड़े, फोड़े शान्त होते हैं।

बच्चे का सूखना बन्द हो यंत्र

२ १६	९ ९	२ १	७ २
६ ३	३ ४	६ १२	५ १३
८ १०	३ १५	८ ५	१ ६
४ ७	५ ८	४ १४	७ ११

विधि—अच्छे दिन इस यंत्र को केसर से भोजपत्र पर लिखे। एक तो बच्चे के दाहिने हाथ में बांध दे, दूसरा घर के दरवाजे के बीचोबीच लटका दें। ११वें दिन एक यंत्र और लिखे, बच्चे के उस हाथ में, जिसमें पहले से यंत्र बंधा है, बांध दे और बच्चे के हाथ वाला यंत्र घर के दरवाजे के बीच लटका दे। दरवाजे में जो पहले से लटकाया हुआ यंत्र है, उसे कुए में फिकवा दे।

बच्चे के बुरे स्वप्न दूर हों यंत्र

हं	सं	षं	फं
षं	दं	धं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	जं	दं

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर सोते समय मस्तक के नीचे रखे तो बुरे स्वप्न नहीं आयेंगे।

बच्चे का डब्बा रोग मिटे यंत्र

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर बच्चे के गले में बांधने से डब्बा रोग मिट जाता है।

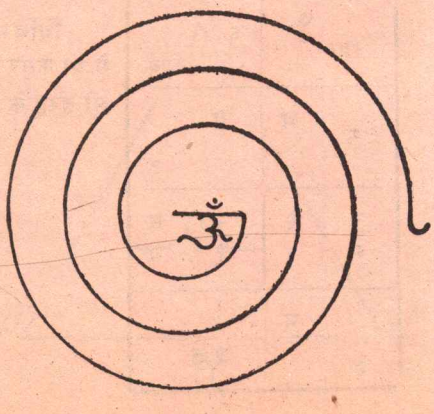

भैंस के दूध देने का यंत्र

२४—१८—३९

विधि— यह यंत्र अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर भैंस के सींग के बांध देने से भैंस बच्चे को दूध भी पिलाएगी व दूध भी देगी।

गाय का दूध बढ़ाने का यंत्र

विधि— इस यंत्र को गोरोचन या केसर से भोजपत्र पर लिखकर गाय के गले में बांध देने से गाय अधिक दूध देगी।

३८	४५	२	७
६	३	४२	४१
४४	३९	८	१
४	५	४०	४३

स्त्री-गाय-भैंस के दूध बढ़ाना यंत्र

७	२	३५	२८
३१	३२	३	६
१	८	२९	२४
३३	३०	५	४

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर से लिखकर तांबे के ताबीज में मंढ़वाकर गले में बांध देने से दूध कम आता हो, या सूख गया हो तो इससे अवश्य दूध की वृद्धि होगी। गुग्गुल की धूनी देकर बांधना चाहिए। भैंस के सींग में बांधना चाहिए।

मक्खन वृद्धि यंत्र

५३	७	४२
२१	३५	४९
२८	६३	१४

विधि—बिलोवने में घृत कम आता हो तो इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर से लिखकर बिलोवने के बांध देने से घृत की वृद्धि हो जाएगी।

खोया पशु वापस आए यंत्र

विधि—इस यंत्र को सेह की शूल से एक कागज पर लिखकर जिस खूंटे से पशु बांधा जाता था, उसी खूंटे के नीचे गाड़ दे तो गया पशु शीघ्र ही वापस आ जाएगा।

१६	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	६	१
४	६	२१	२४

अनाज में कीड़े नहीं पड़ें यंत्र

२२	३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१६	२५
१८	१४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

विधि—इस यंत्र को केसर से भोज-पत्र पर लिखकर अनाज के भंडार में रख देने से अनाज में कीड़ा नहीं लगेगा।

घर में आग नहीं लगे यंत्र

२६०००	१००००	१६०००	२२०००	२३०००
२१०००	२७०००	२८०००	६०००	१५०००
८०००	१४०००	२००००	२६०००	३२०००
२५०००	३१०००	१२०००	१३०००	१६०००
१७०००	१८०००	२४०००	३००००	११०००

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर मकान, गोदाम, दूकान—कहीं भी लटकाया जा सकता है या दीवार पर लिखा जा सकता है, जिससे आग नहीं लगेगी।

फल वृद्धि यंत्र

८७	९४	२	८
७	३	९१	९०
९३	८८	९	१
४	६	८९	९२

विधि—इस यंत्र को बिजौरा नींबू के रस से भोजपत्र पर लिखकर वृक्ष में बांध दे तो फल वृद्धि हो।

यात्रा सफल यंत्र

विधि—यह यंत्र खड़िया मिट्टी के चाक से एक तख्ते पर लिखे। बीच में शहर का नाम लिख दे। फिर मकान में उल्टा टांग कर धूप, दीप से पूजा करे। यात्रा अत्यन्त सफलतापूर्वक सम्पन्न कर देगी।

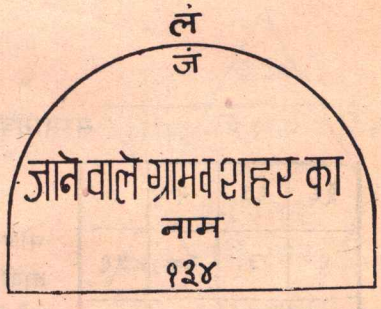

द्यूत-विजयकर यंत्र

मे	ख	रं	म्तं	द	ये	रू	पा
क	जि	ज	तं	द	नी	च	न
घ	दां	वीं	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्रं	मं	य	वीं	दां	घ
न	च	नी	द	तं	ज	जि	क
पा	रू	ये	द	म्तं	रं	ख	मे

विधि—रात्रि के समय एरण्ड के पत्ते पर कौए की पंख की कलम से काली स्याही से यंत्र लिखकर यथाविधि पूजन कर भुजा आदि के बांध कर जो व्यक्ति जुआ खेलने जाता है, उसकी जुए में जीत होती है। घर आने के बाद यंत्र को खोल कर शुद्ध जगह रख दे, फिर काम पड़े तब धूप देकर पहन ले।

काम नाशक यंत्र

विधि—यह यंत्र पुष्य नक्षत्र में स्वयं के वीर्य से भोजपत्र पर लिखकर अपने पास रक्खे, काम उत्पन्न नहीं होगा।

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
८१	७६	९	१
४	६	७७	८०

सम्मानवृद्धि यंत्र

५६	६३	२	७
६	३	६०	५९
६२	५७	८	६
४	५	५८	६१

विधि—इस यंत्र को कपूर व कस्तूरी से भोजपत्र पर लिखे। धूप, दीप से पूजा कर ताबीज में डालकर गले में या भुजा पर धारण करे तो राज्य व समाज में सम्मान हो।

ज्ञान वृद्धि यंत्र

विधि— शुक्ल पक्ष में हर रोज कांसे की थाली में इस यंत्र को केसर से लिखे और उस थाली में खीर खाये तो ज्ञान-वृद्धि हो।

७३	६१	२	८
७	३	७८	७६
६०	७४	९	१
४	६	८५	७९

वचन-सिद्धि यंत्र

८६	६३	२	८
७	३	६०	८६
६२	८७	६	१
४	६	८८	६१

विधि—इस यंत्र को कुलंजन के रस से भोजपत्र पर लिखकर गले में धारण करने से वचन-सिद्धि होती है।

वैराग्योत्पत्ति कर यंत्र

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर लोहे के मादलिए में मढ़ाकर मस्तक के बांध दे तो धीरे-धीरे स्त्री व धन आदि से मोह से छूटकर वैराग्य की ओर उन्मुखता होगी। अंततः वह व्यक्ति योगी या संन्यासी बन जाएगा। देवदत्त के स्थान पर व्यक्ति का नाम लिखा जाना चाहिए।

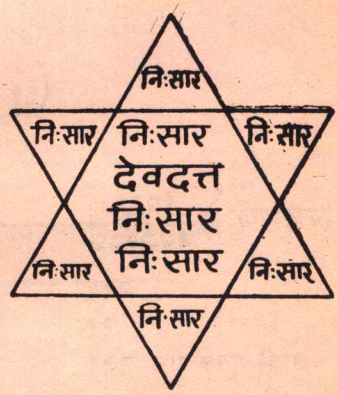

पक्षी आकर्षण यंत्र

विधि—इस यंत्र को काष्ठ के पट्ट पर लिखकर आसन लगाकर बैठे तो पक्षी चारों ओर से आ आकर पास में रहें।

६१	६८	२	७
६	३	६५	६४
६७	६२	८	१
४	५	६३	६६

ऋण मुक्ति यंत्र

७६५	५	३६	६६३
३७	६७	८६	६५
६८		३	८८
१०	८७	६६	२४

विधि—इस यंत्र को मंगलवार या रविवार को भोजपत्र पर अनार की कलम से लाल स्याही से लिखकर मोमजामे में लपेट कर अपने पास रखे, थोड़े ही दिनों में ऋण से मुक्ति हो जाएगी। दैवी सहायता प्राप्त होगी। यंत्र के खाली स्थान पर अपना नाम लिखे।

शस्त्र न लगे यंत्र

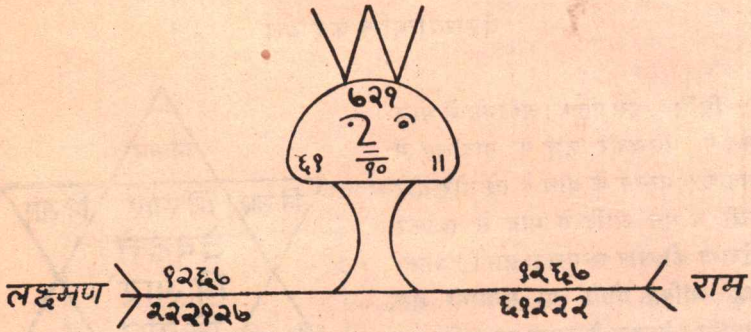

	२१५		५२
	२१	१६	२
आली मसक रोज	२२३	५	६२ नोरोज
	२७	.....	
	६	२	१६
	७		१७
	८		८
	२		२
हनुमान जी	२०		२ रावण

विधि—इस यंत्र को प्रातः ३ बजे जब तारे व सप्तर्षि मंगल के उतारे का समय हो, स्नान कर, नये वस्त्र पहन कर चीनी मिट्टी की प्लेट या टुकड़े पर अष्ट गंध स्याही व अनार की कलम से पूर्व की ओर मुंह करके लिखे। फिर अपने गले में डाल ले। किसी प्रकार का शस्त्र उस व्यक्ति पर नहीं चल सकेगा। शत्रु तलवार लेकर उस पर वार करे तो भी तलवार नहीं चलेगी।

नजर न लगे यंत्र

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्ट गंध स्याही से लिखकर चाहे जिसके गले के या किसी वस्तु के बांधने से उसे नजर नहीं लगेगी। इसे मकान पर लिखा भी जा सकता है।

व्यंतर देव दोष निवारण यंत्र

८	३३४	३३४
८	३३४	३३४
८	३३४	३३४

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध स्याही से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर चांदी के मादलिए में डालकर गले में बांधने से भूत-पिशाच जन्य दोष दूर होते हैं।

भूत, प्रेत, पिशाच आदि व्यंतर देवदोष निवारण यंत्र

२	क्लीं	ह्रीं	क्लीं	६
क्लीं	५		१	क्लीं
		शान्तिनाथाय पार्श्वनाथाय, धणेन्द्र देव महावीर स्वामी चक्रेश्वरी देवी		
	१		२	
६	क्लीं	ह्रीं	क्लीं	५

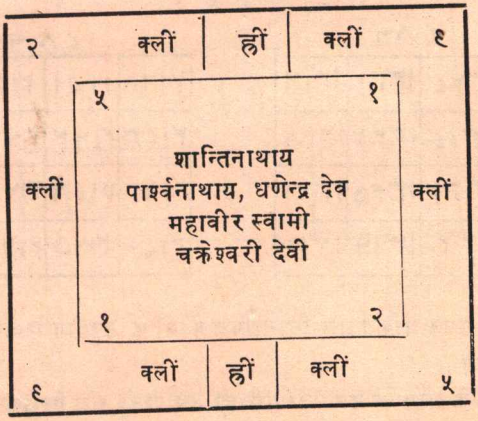

विधि—इस यंत्र को मैनसिल व गोरोचन से आक के पत्ते पर लिखकर धूप देकर गले, भुजा या कमर पर बांध दे तो व्यंतर-देव-जनित उपद्रव अवश्य शान्त हो जाएगा।

खुलखुलिया निवारण यंत्र

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर नीलगुली से लिखकर लोबान का धूप देकर गले में बांधे तो खुल-खुलिया मिटे।

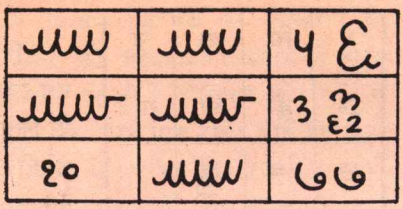

वृक्ष में फल अधिक लगे यंत्र

८	२	६५	८८
६१	६२	३	७
१	६	८६	६४
६३	६०	६	४

विधि—इस यंत्र को मंगलवार के दिन सूर्योदय के साथ भोजपत्र या बढ़िया सफेद कागज पर लाल चन्दन और वृक्ष के फल (जिसके फल कम आते हों) के रस से लिख कर बांधे तो बहुत फल लगें।

प्रभावशाली मुस्लिम यंत्र

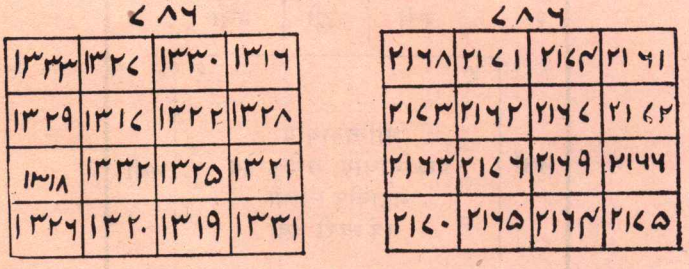

१३३३	१३२८	१३३०	१३१६
१३२९	१३१८	१३२२	१३२८
१३१८	१३३२	१३२५	१३२१
१३२५	१३२०	१३१९	१३३१

२१५८	२१८१	२१८४	२१५१
२१८३	२१५२	२१५८	२१८२
२१५३	२१८५	२१५९	२१५५
२१८०	२१५५	२१५४	२१८५

विधि— ऊपर अंकित यंत्र निम्नांकित कार्यों के उपयोग में आते हैं। ये दोनों साथ-साथ रहेंगे।

१. बच्चे के लाग व नजर हो गई हो तो दोनों यंत्र लिखकर, मादलिए में डालकर गले में डालें।

२. बच्चा रात को रोता हो तो दोनों यंत्र लिखकर मादलिए में डालकर गले में पहना दे।

३. बच्चा सूखने पड़ जाय तो दोनों यंत्रों को मिलाकर बच्चे के गले में डाल दे। फिर रोज दोनों यंत्रों के तीन-तीन यंत्र लिखें। दो यंत्रों को घोलकर बच्चे को पानी पिलाए, दो यंत्रों को घोलकर उस पानी से स्नान कराए तथा दो यंत्रों को बच्चे के ऊपर उंवार कर कुए में डाल दे।

४. जिस स्त्री का बच्चा अधूरा जाता हो या होने के बाद मर जाता हो तो बच्चा होने के पहले एक स्त्री के गले में पहना दे, एक उसकी कमर के बाँध दे। जब बच्चा होने वाला हो, उसके करीब १५ दिन पहले कमर वाला खोलकर जिस कमरे में जापा करना हो, उस कमरे में एक खूंटी पर लटका दे। जब बच्चा हो जाय, तब उस खूंटी वाले यंत्र को बच्चे के गले में पहना दे।

यंत्र दूसरा

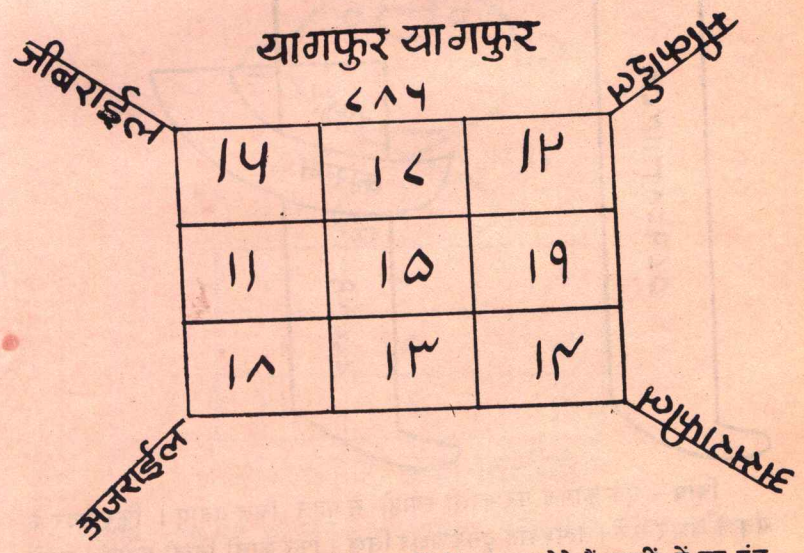

विधि—उपर्युक्त यंत्र जिन-जिन कामों में प्रयुक्त होते हैं, उन्हीं में यह यंत्र भी काम में लाया जाता है।

प्रेत निवारिणी पुतली

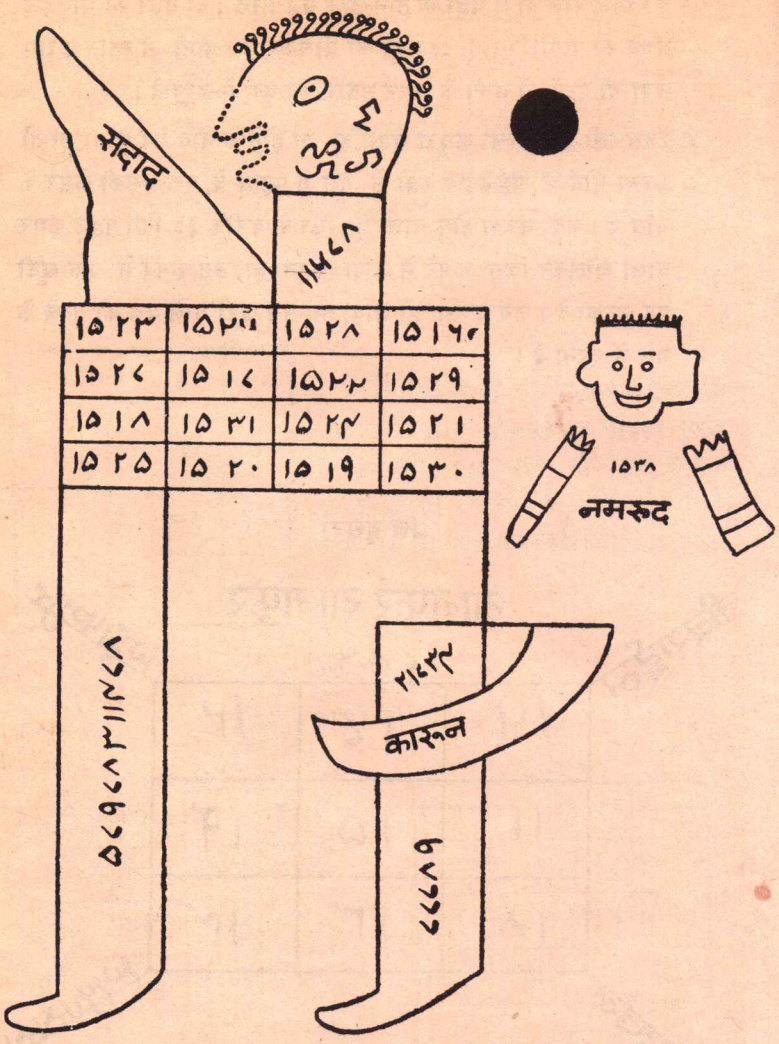

विधि—एक कागज पर काली स्याही से पहले चित्र बनाए। फिर उदर के यंत्र के अक्षर भरें। तत्पश्चात् दूसरे अक्षर लिखें। फिर काली बिन्दी बनाएं। उसके अनन्तर बगल वाली मूर्ति बनाए, नाम आदि लिखें। यह सब चाहे जिस समय कर सकते हैं। उसके बाद रोगी के सामने वह कागज प्रदर्शित करें। अपनी तरफ उल्टा रखकर रोगी से कहे कि कागज की तरफ देखो और कहो कि जो भी प्रेत-आत्मा है, वह इस पुतली के अन्दर प्रवेश करे। दो बार कहने से भी प्रेत-आत्मा

यदि न आए तो धमकी दिलाए कि यदि तू नहीं आएगा तो जला दिया जाएगा। तब निश्चित रूप से आ जायगा। तब प्रेत-आत्मा आते ही पास में स्थित प्रेत नमरूद वाली मूर्ति गायब हो जायगी। गायब होते ही एक कागज का टुकड़ा उल्टी तरफ उस मूर्ति पर लगा दे। उसको देखना नहीं चाहिए। जब प्रेतात्मा कागज में आ जाय उसके बाद रोगी से कहलाये कि 'हे नमरूद ! प्रेत आत्मा को अपने कब्जे में कर। उसके बाद कागज को बीचोबीच भांज कर बन्द करे। फिर दूसरी भांज करे, जिसमें सदाद वाली अंगुली ऊपर रहनी चाहिए। इसके बाद भांज करे, जिससे सदाद वाली अंगुली आधी मुड़ जानी चाहिए। फिर कच्चा या पक्का एक काले रंग का सूत उस पर लपेटना चाहिए। वैसा करने के बाद किसी कुए में या तीन हाथ नीचा एक गड्ढा खोदकर, उसमें इस कागज को रखकर ऊपर से मिट्टी डाल देनी चाहिए। यों प्रेत-आत्मा से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जायेगा।

प्रेत-निवारण पलीता

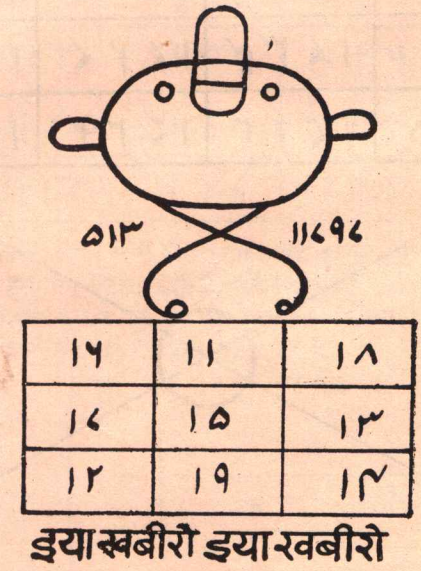

विधि—इस यंत्र को कागज पर लिखकर प्रेतात्मा से पीड़ित व्यक्ति को दिखाए। फिर उससे कहलाए—प्रेतात्मा आओ। जब उस व्यक्ति में प्रेतात्मा आ जाय और बोलने लगे तो इस यंत्र के पीछे एक कपड़ा लगाए और फिर कपड़े सहित यंत्र को भोंगली की तरह गोल कर ले। इसे सिरे पर से जलाकर रोगी को सुंघाने से प्रेतात्मा से छुटकारा हो जायगा।

प्रेत निवारण पलीता

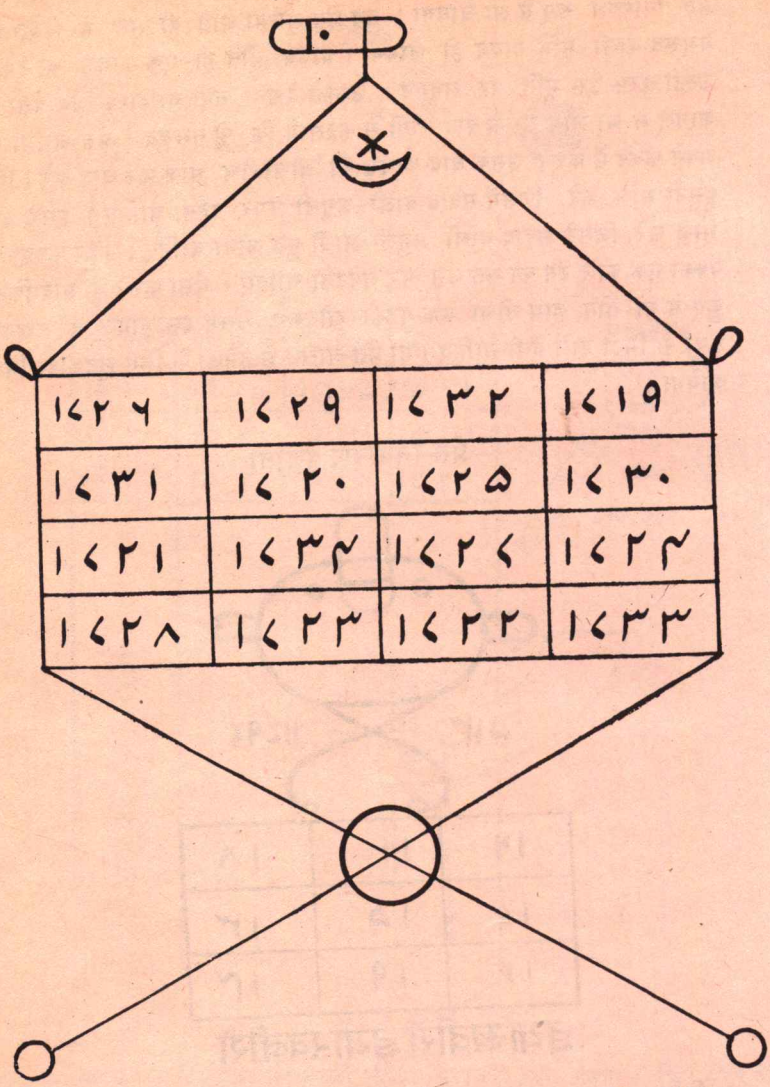

विधि—जिस व्यक्ति को प्रेतात्मा सता रही हो, उस व्यक्ति को काली स्याही से एक कागज पर यह यंत्र लिखकर दिखाए और उस रोगी से कहलाएं कि जो भी प्रेत आत्मा है, इसके अन्दर आ जाए। जब रोगी को प्रेत आत्मा इस कागज के अन्दर दिखाई देने लगे, तब इस यंत्र को गोल करके जला दें। फिर प्रेतात्मा उस व्यक्ति को नहीं सतायेगी।

चित्त नहीं उठे यंत्र

८५५

१२३३	१२३८	१२४०	१२२५
१२३९	१२२८	१२३२	१२३८
१२२८	१२४२	१२३५	१२३१
१२३५	१२३०	१२२९	१२४१

विधि—इस यंत्र को कागज पर लिखे, काले डोरे से बांधे, गले में कलेजे तक लटका कर रखे तो चित्त भ्रम दूर हो।

छिपकली गांठ का यंत्र

८५५

११३०	११३१	११२५
११२५	११२९	११३३
११३२	११२८	११२८

विधि—शरीर के पीछे यानी पीठ पर जो गांठ उठकर चलती है और गले में आकर व्यक्ति को मृत्यु तक पहुंचा देती है, उसे छिपकली गांठ कहते हैं। जब यह गांठ उठे तो तुरन्त एक कागज पर यह यंत्र लिखकर उस गांठ के चारों ओर यह यंत्र घुमावे। गांठ आगे नहीं बढ़ेगी, वहीं खत्म होगी।

गोला नहीं उतरने का यंत्र

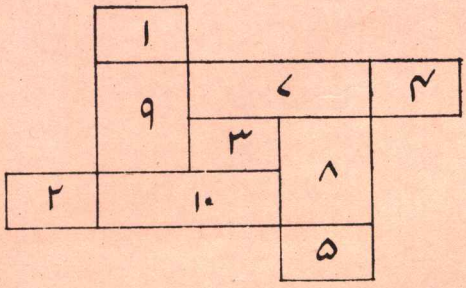

विधि—एक कागज पर यह यंत्र लिखकर स्त्री की कमर में बांध देने से गोला नहीं उतरेगा। यदि उतर गया है तो ठिकाने आ जायगा।

सड़फ (सरण) बन्द होने का यंत्र

۷۸۶

۵۳۹۱۲	۵۳۹۱۵	۵۳۹۱۸	۵۳۹۰۵
۵۳۹۱۷	۵۳۹۰۶	۵۳۹۱۱	۵۳۹۱۶
۵۳۹۰۷	۵۳۹۲۰	۵۳۹۱۳	۵۳۹۱۰
۵۳۹۱۴	۵۳۹۰۹	۵۳۹۰۸	۵۳۹۱۹

विधि—यह यंत्र एक भोजपत्र पर लिखकर गुग्गुल की धूनी देकर जिसके सरण चलती हो, उसकी दाहिनी भुजा पर बांध देने से सरण चलनी बन्द हो जायगी।

बच्चे का रोना बन्द होने का यंत्र

۷۸۶

۲۴	۲۸	۳۱	۱۷
۳۰	۱۸	۲۳	۲۹
۱۹	۳۳	۲۸	۲۲
۲۷	۲۱	۲۰	۳۲

विधि—जो बच्चा भयभीत रहता हो, चौंकता हो, बीमार रहता हो, रात को रोता रहता हो, यह यंत्र चांदी की तख्ती पर खुदवा कर काले डोरे से उस के गले में कलेजे तक लटका कर बांध दे। बच्चा बिल्कुल ठीक हो जायगा।

तृतीय खण्ड

तंत्र-विद्या

तंत्र-विद्या

भारतीय प्राक्तन विद्याओं में तंत्र-शास्त्र का अपना असाधारण महत्त्व है। वैसे 'तंत्र' शब्द अनेकार्थक है। प्रमुख वाद, सिद्धान्त या शास्त्र के रूप में इसका प्रयोग हुआ है। किन्हीं ग्रन्थों के अध्याय या अनुभाग के रूप में भी यह व्यवहृत हुआ है। राज्य, देश या प्रभुत्व के आशय में भी यह भिन्न-भिन्न स्थानों पर उपयोग में आता रहा है पर इसका जिस विशेष अर्थ में प्रयोग है, वह है अति मानवी शक्ति प्राप्त करने के लिए मंत्र, यंत्र-गर्भित विशिष्ट प्रयोगों का वैज्ञानिक संचयन। यहां इसी अर्थ से हमारा अभिप्रेत है। विद्वानों ने तंत्र शब्द की व्याख्या में दो आशयों को मुख्यतः केन्द्र में रक्खा है। एक—इसे उस ज्ञान के मार्ग-दर्शक के रूप में व्याख्यात करता है, जिससे लौकिक दृष्टया असाधारण शक्ति, चमत्कार तथा वैशिष्ट्य का लाभ होता है। इसका दूसरा दृष्टिकोण अलौकिक या मोक्षपरक है, इसलिए तंत्र की चरम सिद्धि उस ज्ञान की बोधिका है, जिससे जन्म-मरण के बन्धन से उन्मुक्त होकर जीव सत्-चित् आनन्दमय बन जाय, मोक्षगत हो जाय या सिद्धत्व प्राप्त कर ले।

भारतीय वाङ्मय में तंत्र-साहित्य का क्षेत्र बहुत विशाल है। यदि धर्म विशेष से संबद्धता को लेकर इसका विभाजन करें तो वह ब्राह्मण-तंत्र, बौद्ध-तंत्र तथा जैन-तंत्र इन तीन भागों में विभक्त होता है। ब्राह्मण-तंत्र की भी तीन शाखाएँ हैं—वैष्णव आगम (तंत्र), शैव आगम (तंत्र), शाक्त-आगम (तंत्र)। इन सभी में प्रचुर मात्रा में साहित्य सर्जित हुआ है। फिर भी ऐसा माना जाता है कि ब्राह्मण-तंत्र वाङ्मय में शाक्त तंत्र का साहित्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इनकी तरह बौद्ध तंत्र तथा जैन तंत्र में भी पुष्कल मात्रा में साहित्य का प्रणयन हुआ। एक समय भारत में बौद्ध तांत्रिकों का सर्वत्र जाल-सा बिछ गया था। उनके चार मुख्य पीठ थे—जालन्धर पीठ, कामाख्या पीठ, पूर्ण गिरि पीठ और औड्डियान पीठ। बीच के युग में स्वार्थान्ध, अल्पज्ञ लोगों ने तंत्र विद्या का बहुत दुरुपयोग किया, जिससे लोक-मानस में तंत्रों के प्रति अनास्था और अविश्वास का भाव पैदा हो गया। उनके अध्ययन और अनुशीलन का क्रम अवरुद्ध जैसा हो गया।

इस युग में प्राच्य-विद्याओं की विभिन्न शाखाओं में नये सिरे से अध्ययन का एक विशेष भाव जागा है। यद्यपि इसमें पहल करने वाले तो पाश्चात्य मनीषी ही हैं, जिन्होंने लगन और निष्ठा के साथ वर्षों तक प्राच्य-विद्या की अनेक शाखाओं में प्राणपण से कार्य किया पर, संप्रति भारत में भी इस ओर विद्वत्-समाज में विशेष जागरूकता दिखाई देती है। तांत्रिक वाङ्मय में भी विद्वानों ने विशेष रूप से गंभीर अध्ययन और गवेषणा का कार्य किया है। इस सन्दर्भ में हम भारत के महान् विद्वान्, परम सात्त्विकचेता महा महोपाध्याय डॉ० गोपीनाथ कविराज का नाम बड़े आदर से ले सकते हैं, जिन्होंने तांत्रिक तत्त्वों पर अत्यन्त विद्वतापूर्वक गवेषणा करते हुए सूक्ष्म तथा गूढ़ दार्शनिक तथ्यों को प्रकट किया है।

मंत्र और यंत्र से यह विषय विशेषतया संबद्ध है, इसलिए एतत्सम्बन्धी कतिपय व्यावहारिक तथा चामत्कारिक प्रयोग, तदनुरूप अभ्यास व साधना-पद्धति, विधि-विधान आदि पर इस खण्ड में संक्षेप में प्रकाश डाला जाएगा।

तंत्रों में मंत्र भी प्रयोग में आते हैं और यंत्र भी। तंत्र में मंत्र का प्रयोग कभी-कभी आवश्यक भी होता है क्योंकि उससे तंत्र की शक्ति द्विगुणित हो जाती है। बाह्य दृष्टि से तंत्र आकर्षण, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि का मार्ग बतलाता है किन्तु सूक्ष्म दृष्टि से जैसा कि ऊपर कहा गया है, वह मुक्ति का मार्ग भी बतलाता है। आकर्षण, मोहन व वशीकरण मंत्र वश्य-कर्म के तीन भाग हैं। मंत्र, यंत्र व तंत्र—इन तीनों के द्वारा इनका प्रयोग होता है। कल्प-प्रकरण में इनके अनेक प्रयोग दिए हैं। यहां कुछ फुटकर तांत्रिक प्रयोग दिए जा रहे हैं। उनमें भी विद्वेषण, उच्चाटन व मारण कर्म के प्रयोग सर्वथा छोड़ दिए गए हैं। ये बड़े उग्र व मलिन प्रयोग हैं, सर्वसाधारण में उन्हें प्रचलित करना मैंने उचित नहीं समझा। जो प्रयोग मैं दे रहा हूं, उसके लिए भी साधकों से निवेदन करूंगा कि किसी अनिष्ट व दुष्ट भावना से वे इनका प्रयोग न करें।

अब सर्व प्रथम आकर्षण, मोहन एवं वशीकरण क्या हैं, पहले इसे जान लेना आवश्यक है।

आकर्षण—कोई व्यक्ति निर्दिष्ट स्थान की ओर आकर्षित हो या किसी व्यक्ति या समूह का ध्यान व्यक्ति-विशेष की ओर विशेषतः खिंचे, उसे खूब चाहे, मान दे, इज्जत दे उसे आकर्षण कहते हैं।

मोहन—जो किसी प्राणी के मन पर अत्यन्त प्रभाव डाले, जो कहे वह करे, उसको सम्मोहन कहते हैं।

वशीकरण—किसी को दास के समान वश में करना, उससे मनचाहा काम लेना या साधक जो चाहे वह वैसा ही करे, उसे वशीकरण कहते हैं।

तांत्रिक प्रयोगों में कई जगह जल, पत्ते, बन्दा, फूल, मूल, पंचमैल, पञ्चांग आदि काम में लाए जाते हैं। जहां तांत्रिक प्रयोग किए जाते हैं, वहां औषधि को

नियत समय पर विधि-पूर्वक लाया जाना चाहिए। वही औषधि शक्ति-सम्पन्न होती है। कल्प व औषधियों के बाजीकरण प्रयोग भी तंत्र शास्त्र का ही अंग है। एतदर्थ वे दोनों ही इस विभाग में दिए गए हैं। जो सामान्यतया ध्यान देने योग्य बातें हैं, वे नीचे दी जा रही हैं :—

१. जिस दिन औषधि लानी हो उससे पहले दिन शुद्ध, पवित्र होकर निमंत्रण दे आए।

२. निमंत्रण वाले दिन व औषधि लाने वाले दिन एक समय भोजन करे, ब्रह्मचर्य से रहे, अभक्ष्य पदार्थ न खाए।

३. जो समय नियत हो, उसी में औषधि लानी चाहिए।

४. कुए, बिल, देवमन्दिर, श्मशान व मार्ग में पड़ने वाले वृक्ष के नीचे उगने वाली व सड़ी-गली औषधि नहीं लेनी चाहिए।

५. एकान्त स्थान, बगीचे व अच्छे वन में उगी हुई औषधि प्रयोग में लेनी चाहिए।

६. मूल यानी जड़ लेते समय काष्ठ-शस्त्र ही काम में लेना चाहिए।

७. अपने समय और वर्षा में वृक्ष बलवान रहा करते हैं। जड़ सूख जाने पर आधा बल रहता है। ग्रीष्म, वर्षा व शरद् ऋतु में सम्पूर्णता रहा करती है। वृक्षों के जब फल व बीज आते हैं, तभी उन्हें प्रयोग में लेना चाहिए। वन के वृक्ष रात में व जल के वृक्ष दिन में बली होते हैं।

८. औषधियों के नाम भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न रूपों में बोले जाते हैं अतः निघंटु-ग्रन्थों या आयुर्वेदज्ञों से उन्हें जान लेना चाहिए।

९. तंत्र में जिन औषधियों का प्रयोग किया जाता है, उन सब औषधियों के भिन्न-भिन्न शक्ति अधिष्ठाता हैं। इसलिए अधिष्ठाता देव को सर्वप्रथम नमस्कार कर लेना चाहिए। इसीलिए हर प्रयोग के लिए विश्वास व श्रद्धा रखना आवश्यक है। चंचलता व अविश्वास से प्रयोग निष्फल होता है।

१०. **पंचांग**—फल, फूल, जड़, पत्ते व छाल को पंचांग कहते हैं।

११. **पंच मैल**—कान का मैल, दांत का मैल, आंख का मैल, जिह्वा का मैल व स्ववीर्य को पंच मैल कहते हैं।

१२. **मूल**—किसी भी पौधे व वृक्ष की जड़ को मूल कहते हैं।

१३. **बन्दा**—किसी भी वृक्ष पर कोई दूसरा पौधा उग आए, उसे **बन्दा** कहते हैं। उदाहरणार्थ, जैसे एक बट वृक्ष है, उस पर धूल के साथ कोई **बीज गिर** गया हो, वह उग आए, उसे बन्दा कहा जाता है।

क्लीँ बीज मंत्र

आकर्षण तंत्र में सबसे पहले क्लीं बीज मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके सिद्ध होने के बाद ही आकर्षण मंत्रों व तंत्रों का प्रयोग करना चाहिए। उसके अभाव में सफलता प्राप्त करना संभव प्रतीत नहीं होता। क्लीं बीज मंत्र को काम बीज यानी कामकला बीज कहते हैं। त्रिकोण की ऊर्ध्वमुख तथा अधोमुख स्थापन से जो आकृति बनती है, उसे योनि-मुद्रा कहते हैं। इसके बीच में क्लीँ बीजाक्षर की स्थापना करके ध्यान करना चाहिए। इस मंत्र का जाप करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है :—

१. सर्व प्रथम भृकुटि के बीच में योनि मुद्रा की कल्पना करके उसके बीच में क्लीँ बीजाक्षर की स्थापना कर उसका ध्यान करना चाहिए।

२. ध्यान में इसका वर्ण लाल रंग का बनाकर ध्यान करना चाहिए।

३. प्रातः काल दो घंटे तक इसका ध्यान करना चाहिए।

४. स्वस्थ मन, शान्त चित्त होकर ही ध्यान व जप किया जाना चाहिए।

५. दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली पर माला फेरनी चाहिए।

६. दंडासन का उपयोग व दक्षिण दिशा की ओर मुंह रखना चाहिए।

७. प्रवाल (मूंगा) की माला का प्रयोग करना चाहिए।

८. छः महीने में यह बीज मंत्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद वशीकरण व आकर्षण आदि मंत्र, तंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

त्राटक

त्राटक के मुख्य तीन भेद हैं : १. आन्तर त्राटक, २. मध्य त्राटक, ३. बाह्य त्राटक।

आन्तर त्राटक—नेत्र बन्द कर भ्रू मध्य, नासिका का अग्रभाग, नाभि तथा हृदय आदि स्थानों पर चक्षु वृत्ति की भावना करके देखते रहना आन्तर त्राटक है।

मध्य त्राटक—धातु अथवा पत्थर निर्मित वस्तु, काली स्याही के धब्बे आदि पर खुले नेत्रों से टकटकी लगाकर देखते रहना मध्य त्राटक है।

बाह्य त्राटक—दीपक, चन्द्र, नक्षत्र व प्रातः उदित होते हुए सूर्य तथा अन्य दूरवर्ती दृश्यों पर दृष्टि स्थिर करने की क्रिया को बाह्य त्राटक कहते हैं।

वशीकरण तंत्र, मंत्र प्रयोग से पहले त्राटक को सिद्ध कर लेना जरूरी है। इसको सिद्ध करने के बाद ही वश्य आदि के प्रयोग करने चाहिए। मध्यम विधि से ही त्राटक करना चाहिए। उसके लिए सामान्य तथा निम्नांकित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

१. एक एकान्त कमरे में घी का दीपक व सुगन्धित धूप करके कमरे का वायु-मंडल शुद्ध कर लेना चाहिए।

२. एक नीले रंग का कपड़ा या कागज लेकर उसके ठीक बीच में चवन्नी के बराबर एक काली टिकिया (बिन्दी) अर्थात् वर्तुल बनाना चाहिए। फिर उसे दीवाल पर चिपका देना चाहिए।

३. प्रातः नौ बजे के पहले-पहले व सायंकाल छः बजे के पहले-पहले प्रयोग करना चाहिए।

४. उस वर्तुल यानी कागज के ठीक सामने दो फुट दूरी पर सिद्धासन या पद्मासन लगाकर बैठना चाहिए।

५. फिर उस वर्तुल पर अर्थात् काली बिन्दी पर अपनी दृष्टि को स्थिर करना चाहिए। आंख में पानी आ जाय तो उसको पोंछ कर फिर देखना शुरू कर दे।

६. छः सात दिन तक आंख से पानी निकलेगा फिर अपने आप बन्द हो जायगा।

७. छः मास तक इसका प्रयोग करते रहना चाहिए। आंख लाल हो जाय तो चिन्ता नहीं करनी चाहिए। दृष्टि छः सात दिन में ही स्थिर हो जायगी।

८. पलक झपके बिना २० मिनट तक जब दृष्टि स्थिर हो जायगी तब यह समझना चाहिए कि त्राटक सिद्ध हो गया है। काला बिन्दु सफेद दिखाई देगा। पर्वत, नदी, स्वर्ग व नरक के दृश्य, सिनेमा के पर्दे पर जैसे आते हैं वैसे दिखाई देंगे।

९. जितनी ज्यादा देर तक त्राटक कर सके अर्थात् बिना पलक झपके दृष्टि को स्थिर रख सके, उतनी ही शक्ति साधक में बढ़ती है।

१०. भोजन उत्तेजक नहीं होना चाहिए।

११. त्राटक के अभ्यास से नेत्र और मस्तिष्क में गर्मी बढ़ती है, अतः इस क्रिया के करने वालों के लिए त्रिफला व गुलाब जल से आंखों को धो लेना आवश्यक है। फिर धीरे-धीरे दृष्टि को दाएं-बाएं, ऊपर-नीचे घुमा लें ताकि तनाव निकल जाए।

आकर्षण संबंधी तंत्र प्रयोग

मंत्र—ओं नमो आदि पुरुषाय अमुकस्य आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—शुभ दिन, शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय मूंगे की माला से जाप शुरू करे। १२५०० जाप होने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जिसको भी अपनी ओर आकर्षित करना हो, उस व्यक्ति का अमुकस्य की जगह नाम बोलना चाहिए। जैसे—'रणजीतस्य' इस प्रकार षष्ठी विभक्ति—सम्बन्ध कारक में नाम बोलना चाहिए। फिर किसी भी वस्तु का प्रयोग करने से पहले उस पर एक माला फेरकर फिर उसे प्रयोग में लायें।

आकर्षण तंत्र—काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर श्वेत कनेर की कलम से भोजपत्र पर जिसको आकर्षित करना है, उस व्यक्ति का नाम लिखे। फिर बेर की लकड़ी जलाकर उसके अंगारों पर उसे तपाए। तपाते समय उपरोक्त मंत्र का १०८ जाप करे। इससे वह व्यक्ति प्रभावित होगा और शीघ्रातिशीघ्र साधक या प्रयोक्ता के पास आने को आतुर हो उठेगा, आएगा।

अनामिका अंगुली के रक्त से भोजपत्र पर सफेद कनेर की कलम से उपरोक्त मंत्र, जिस व्यक्ति को आकर्षित करना है, उस व्यक्ति के नाम सहित लिखकर मधु में छोड़ देना चाहिए। इससे उस व्यक्ति का आकर्षण होता है।

स्त्री आकर्षण बुरकी—रविवार पुष्य नक्षत्र के दिन ब्रह्मदण्डी लाकर उसका चूर्ण करे। उस चूर्ण को पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दे तो वह आकर्षित एवं काम पीड़ित होकर उद्योग करने वाले पुरुष के पीछे चली आती है।

सर्वजन आकर्षण चूर्ण—पंचमी के दिन सूर्यावर्त (हुल हुल) वृक्ष का मूल लाकर पीसकर चूर्ण बना ले। फिर पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर जिस स्त्री या पुरुष को पान के साथ खिलाये तो वह आकर्षित होकर आपके पास आवेगा।

सर्वजन आकर्षण पुतली—जिस व्यक्ति का आकर्षण करना हो, उसके बायें पैर की मिट्टी लाकर गिरगिट के रक्त से पुतला बनाए। पुतले के वक्षस्थल पर अभिलषित व्यक्ति का नाम लिखे तदुपरांत पूर्वोक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर पुतला धरती में गाड़ दे। जहां गाड़ा हो, उसी स्थान पर नित्य मूत्र त्याग करता रहे। ऐसा करने से निश्चय ही आकर्षण होगा।

सम्मोहन सम्बन्धी तंत्र-प्रयोग

मंत्र—ॐ उड्डामरेश्वराय सर्व जगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।

विधि—शुभ दिन, शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय, मूंगे की माला से जाप शुरू करे। एक लाख जाप होने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर किसी भी तंत्र का प्रयोग करने से पहले उस पर एक माला फेरकर फिर प्रयोग में लाना चाहिए।

सम्मोहन लेप—श्वेत गुंजा के पत्ते के रस में ब्रह्मदण्डी की जड़ घिस कर, पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर अपने शरीर पर लेप करे तो सबको मोहे।

सर्वजन मोहन गोली—ताजा तुलसी पत्र लाकर छाया में सुखावे। उसे भांग के बीज तथा अश्व गंधा के साथ कपिला गाय के दूध में घिसकर घुंघची (चिरमी) के बराबर गोली बना ले। फिर प्रातः काल रोज एक गोली पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर खाने से लोग मोहित होंगे। उस गोली पर रोज एक माला फेरनी चाहिए।

सर्वजन मोहन तिलक

१. श्वेतार्क की जड़ और सिन्दूर को केले के रस में पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

२. सिन्दूर, कुंकुम, गोरोचन को आंवले के रस में पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

३. रविवार को सहदेवी के रस में तुलसी का बीज पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

४. मैनसिल व कपूर को केले के रस में पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे सब मोहित हों।

५. हरताल व अश्वगन्धा को केले के रस में पीस कर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

६. सिन्दूर तथा श्वेतबच को नागर बेल के पान के रस में पीस कर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

७. सफेद दूब व हरताल पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

८. मनुष्य की खोपड़ी में धतूरा, शहद व कपूर मिलाकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

९. तगर, कुट, हरिताल, केसर समभाग मिलाकर पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

१०. मींढ़ा सिंगी, जल भांगरा व कुमारिका को समभाग पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करे तो सब मोहित हों।

सम्मोहन अंजन—श्वेतार्क मूल, मक्खन व अजारस का चूर्ण कर, मिलाकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर अंजन करे तो सब मोहित हों।

सम्मोहन भस्म—खंजन पक्षी की बींठ और मरा हुआ जुगनू इन दोनों को पीसकर टिकिया बनाये। फिर उन्हें पृथ्वी पर रखकर अग्नि में फूंके। जल जाने पर उनकी भस्म को पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर अपने अंग में लगाकर बड़े आदमी के पास जाय तो वह मोहित हों।

स्त्री मोहन पान—रविवार के दिन एक पान का बीड़ा लाकर धोबी के कपड़े धोने की शिला पर जावे। वहां नंगा होकर उस बीड़े को खोले तथा फिर लपेट कर बन्द कर ले और वस्त्र पहन कर घर लौट आवे। पीछे मुड़कर न देखे। पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर वह बीड़ा जिस स्त्री को खिलाया जायगा, वह मोहित हो जायगी।

वशीकरण सम्बन्धी तंत्र-प्रयोग

मंत्र—ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिली मिली ठः ठः स्वाहा।

विधि—शुभ दिन, शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय मूंगे की माला से जाप आरम्भ करे। ३० हजार जाप होने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर किसी भी तंत्र का प्रयोग करने से पहले उक्त वस्तु को सात बार अभिमंत्रित कर प्रयोग करे तो निश्चय ही वशीकरण होगा।

सर्व वशीकरण तिलक—

१. बिल्व पत्र तथा बिजौरा को बकरी के दूध में घिसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो सामने वाला तुरन्त वश हो।

२. ग्वारपाठा के मूल में भांग का बीज पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो उत्तम वशीकरण हो।

३. अपामार्ग की जड़ को कपिला गाय के दूध में या बकरी के दूध में पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले लोग वशीभूत होते हैं।

सर्व वशीकरण गोली—सरसों तथा देवदाल (भार बेर) को पीसकर गोली बनाए। उसे पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर अपने मुंह में रखकर जिससे वार्तालाप किया जाय, वही वश में हो जाता है।

सर्व वशीकरण चूर्ण—ब्रह्मदण्डी, वच व उपलेट का चूर्ण पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर पान में डाल कर रविवार को जिस व्यक्ति को खिलाए, वही वश में होता है।

सर्व वशीकरण लेप—श्वेत दूब को कपिला गाय के दूध में पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर अपने शरीर पर लेप करने से देखने वाले सब लोग वश में होते हैं।

सर्वजन वशीकरण धूप—मेंढ़ासिंगी, बच, राल, खस, चन्दन और छोटी इलायची—इन सबको समभाग लेकर कूट पीसकर छान ले तथा वशीकरण मंत्र से अभिमन्त्रित कर पहनने का कोई वस्त्र रखकर धूनी दे तो स्त्री वश में होती है, अधिकारी देखते ही प्रसन्न होता है तथा क्रय-विक्रय में लाभ होता है।

सर्वजन वशीकरण बुरकी—शनिवार के दिन जब धनिष्ठा नक्षत्र हो, बबूल की जड़ को लाकर चूर्ण करे, फिर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिसके मस्तक पर डाला जाय, वही वशीभूत होगा।

सर्वजन वशीकरण जल—तगर, कुट और तालीश पत्र को पीसकर रेशमी वस्त्र में लपेट कर बत्ती बनावे। फिर उस बत्ती को सरसों के तेल के दीपक में डाल कर जलाए तथा मनुष्य की खोपड़ी के ऊपर काजल पारे। यह क्रिया तब करनी चाहिए, जब रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र और अमावस्या तिथि हो। अर्ध रात्रि के समय यह कार्य करने का विधान है। आवश्यकता के समय इसके जल को पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर अपनी आंखों में लगाकर जिसकी ओर दृष्टिपात किया जायगा, वही वशीभूत हो जायगा।

सर्वजन वशीकरण चावल—रविवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी लाकर उसमें चावल भरकर अग्नि पर पकावे। पक जाने पर उन चावलों को सुखाकर रख ले। जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो, उसे एक रत्ती भर चावल अभिमन्त्रित कर खिला देने पर वह सदा के लिए दास बन जाता है।

पुरुष-वशीकरण सम्बन्धी प्रयोग

मंत्र—ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—शुभ दिन, शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह करके सूर्योदय के समय मूंगे की माला से जाप शुरू करे। १०००० की संख्या में जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र-जप से पूर्व यथाविधि पूजन आदि करना चाहिए। जब मंत्र सिद्ध हो जाय, तब पति को वशीभूत करने के लिए जो भी साधन करना हो, उसमें प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं को इस मंत्र द्वारा सात बार अभिमन्त्रित करने से साधन में विशेष सफलता प्राप्त होती है। इस मंत्र का जप तथा साधन केवल स्त्रियों के लिए ही है, अतः उन्हीं को इसका प्रयोग करना चाहिए।

पति वशीकरण तिलक—

१. गोरोचन, कुंकुम और केले का रस—इन तीनों वस्तुओं को पीसकर

पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर, अपने मस्तक पर तिलक करने वाली स्त्री पति को वशीभूत कर लेती है।

२. गोरोचन, योनि का रक्त और केले का रस एक साथ घिसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक लगाने से पति उस पर मुग्ध रहता है।

३. विष्णुकान्ता, भांगरा, गोखरू और गोरोचन को पीसकर गोली बना ले। फिर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर गोली को घिसकर तिलक करे तो पति वश में हो।

पति वशीकरण सुपारी—मंगलवार के दिन या ग्रहण के दिन पूरी सुपारी निगल जावे। फिर सुबह जब वह सुपारी मल में निकल आवे तो उसे धोकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर पति को खिला देने से पति वश में रहता है।

पति वशीकरण लेप—मालती पुष्पों को सरसों के तेल में पकाकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित करे। फिर उस तेल को अपने गुप्तांग में लगाकर जो स्त्री अपने पति के साथ मैथुन करती है, वह पति को वशीभूत कर लेती है। उसका पति भूल कर भी किसी अन्य स्त्री के प्रति आसक्त नहीं होगा।

पुरुष वशीकरण लौंग—स्त्री जब रजस्वला हो, उस समय वह अपने गुप्तांग में चार लौंग रखकर भिगोये। तदुपरान्त उनको पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर जिस पुरुष के मस्तक पर डाले, वह उनके वश में हो जायगा।

पुरुष वशीकरण रोटी—स्त्री अपने पांव के जूते के बराबर आटा तोलकर रविवार या मंगलवार के दिन आटे की चार रोटियां बनाकर, पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर जिस पुरुष को खिला दे, वह उसके वशीभूत हो जायगा।

पति वशीकरण लेप—अंधाहुली (चोर पुष्पी) जल-मोगरा, रुद्रवन्ती—इन सबको समभाग पीसकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर हाथ पर लेप कर पति को दिखावे तो पति वश में हो।

पति वशीकरण-भोजन—१. मयूर शिखा, मजीठ, शंख पुष्पी व धोल—ये सब समभाग लेकर अपने पंच मैल के साथ पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर खाने में दे तो पति वश में रहे।

२. सुकड़ी, तगर, प्रियंगु, काला धतूरा, स्याही जड़, उपलेट और अपना पंच मैल समभाग लेकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर भोजन में दे तो पति बश में रहे।

स्त्री वशीकरण सम्बन्धी प्रयोग

मंत्र—ॐ ऐं पूरं क्षोभय भगवती गम्भीरा ब्लं स्वाहा।

विधि—पुष्य नक्षत्र में बिसखपरा (पुनर्नवा) तथा रुद्रवन्ती की जड़ उखाड़ लाए। उन दोनों जड़ों के साथ थोड़े से जौ मिलाकर उक्त मंत्र से ७ बार अभिमन्त्रित करे। फिर उन्हें किसी पीले रंग के वस्त्र में लपेट कर धूप-दीप देकर पुरुष अपनी दायीं भुजा में बांध ले। इसके बाद सूर्योदय के समय मूंगे की माला से २० हजार जाप करके मंत्र सिद्ध कर ले। मंत्र सिद्ध हो जाने पर स्त्री वशीकरण सम्बन्धी किसी भी साधन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं को उक्त सिद्ध मंत्र द्वारा सात बार अभिमन्त्रित कर प्रयोग में लाना चाहिए।

स्त्री वशीकरण तिलक—१. रविवार के दिन काले धतूरे का पंचांग लाकर पीस ले। फिर उसके साथ कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन मिलाकर घोटे तथा उक्त मंत्र से सात बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक करे। जिस स्त्री की पहली बार नजर पड़ेगी, वह चाहे अरुन्धती ही क्यों न हो, उस पुरुष के वशीभूत हो जायगी।

२. लाजवन्ती, मुलैठी और कमलगट्टे को पीस कर अपने वीर्य के साथ मिला कर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो स्त्री वशीभूत होगी।

स्त्री वशीकरण लेप—१. रति के अन्त में पुरुष अपने बायें हाथ से अपना वीर्य लेकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर स्त्री के बायें पैर के तलुए में लगा दे तो वह स्त्री दूसरे को नहीं चाहेगी।

२. मयूर शिखा, कुमारिका, श्वेत रुद्रजटा, श्वेतार्क मूल और सहदेवी मूल इन सबका चूर्ण कर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर शिश्न पर लेप कर संभोग करे तो स्त्री अवश्य वश में हो।

३. जौ का चूर्ण, हल्दी, गौ मूत्र, घृत और सरसों—इन सबको एक साथ पीसकर लेप तैयार करे। फिर उस लेप को पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर अपने शरीर पर लगाकर अभिलषित स्त्री के पास ले जाय तो वह उसे देखते ही वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण लौंग—

१. काली कुतिया के दूध में लौंग को तीन दिन तक भिगोकर अपने वीर्य में भिगो ले। फिर सूखने के बाद पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर उसे स्व स्त्री को खिलाए तो वह वश में रहेगी।

२. मंगलवार के दिन अपने शिश्न के छिद्र में एक लौंग रखकर बुधवार के दिन निकाल ले फिर उसे पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर पान में रखकर अभिलषित स्त्री को खिला दिया जाए तो वह वश हो जाएगी।

स्त्री वशीकरण पान—अपने पंच मैल को पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर, पान में रखकर जिस स्त्री को खिला दिया जाए, वह वश में हो जाती है।

स्त्री वशीकरण-बुरकी—

१. ब्रह्मदण्डी तथा चिता की भस्म को एकत्र कर उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री के अंग पर फेंका जाय, वह वशीभूत हो जाती है।

२. थूहर के कांटों का चूर्ण, स्वरक्त, बानर की विष्ठा और कलिहारी की जड़ का चूर्ण कर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री के सिर पर डाला जाय, वह वश में हो जायगी।

३. कुट, कमल के पत्ते, भौंरे के पंख, तगर, कमल गट्टा और काक जंघा का चूर्ण करके उसमें अपनी अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर, सुखाकर बुरकी तैयार कर ले। फिर उस बुरकी को पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस किसी भी स्त्री के सिर पर डाल दें तो वह वश में हो जायगी।

४. पुष्य नक्षत्र में धोबी के पांव के नीचे की मिट्टी लाकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर फिर रविवार के दिन सन्ध्या के समय उस मिट्टी को अभिलषित स्त्री के मस्तक पर डाले तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण चूर्ण—

१. रविवार की रात को श्मशान की राख लाए, उसमें अपना थूक और वीर्य मिलाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर स्व स्त्री को खिलाया जाए तो वह वश में रहेगी।

२. राजा घुग्घू की बींठ, गोरोचन, चमक पाषाण, वीर्य व कनिष्ठा अंगुली का रक्त—इन सबको मिलाकर चूर्ण कर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर—जिस किसी स्त्री को अलूणी (बिना नमक) वस्तु के साथ खिला दे तो वह वश में होगी।

३. वच, उपलेट, काकजंघा, स्वरक्त व वीर्य—एक साथ मिलाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर स्त्री को खिला दे तो वह वश में रहेगी।

४. रविवार के दिन चील की आंख लाकर उसमें कस्तूरी और केसर मिला कर खूब महीन पीस कर रख ले। उसमें से एक रत्ती प्रमाण चूर्ण पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को खिला दिया जाए, वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री-वशीकरण-नस्य

बिजौरे की जड़, धतूरे के बीज तथा प्याज—इन सब वस्तुओं को एकत्र कर पीस ले फिर उसे पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को सुंघाया जाएगा—वह सूंघते ही वश में हो जाएगी।

स्त्री-वशीकरण गोली—मंगलवार अथवा रविवार के दिन रति करती हुई कुतिया के एक अंजीर की डाली की मारे। फिर उस डाली को जलाकर भस्म कर ले। उस भस्म को अपने मूत्र में सान कर गोलियां बनावे। उनमें से एक गोली पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को खिला दी जाय, वह वश में हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण काजल—जो स्त्री पहली बार रजस्वला हुई हो, उसके मासिक धर्म के रक्त युक्त वस्त्र को ले आवे। उसकी बत्ती बनाकर, दीपक में अंडी का तेल भरकर, उस बत्ती को डाल कर जलाए तथा काजल पारे। उस काजल को पूर्वोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री के उसकी रेख लगा दी जाय, वह भ्रमित चित्त होकर स्वयं ही साधन कर्त्ता के पास चली आती है।

कुछ अन्य तांत्रिक प्रयोग

१. **सुख प्रसव पर तंत्र**—अ. नीम की जड़ कमर के बांधे तो तुरन्त प्रसव हो।

ब. ऊंटकटाला की जड़ गर्भवती स्त्री की चोटी में रख दे तो तुरन्त प्रसव हो।

स. केले की जड़ अथवा हुलहुल की जड़ को गर्भिणी स्त्री के हाथ में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

द. प्रसव के समय कलिहारी की जड़ को रेशम के धागे में लपेटकर गर्भिणी स्त्री के बायें हाथ में बांध देने से प्रसव के समय कष्ट नहीं होगा।

नोट—सन्तान होने के बाद जड़ को अपने शरीर से तत्काल हटा देनी चाहिए।

२. **सर्व ज्वर निवारण तंत्र**—रविवार के दिन आक की जड़ को उखाड़ कर कान में बांधने से हर प्रकार का ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।

३. **विषम ज्वर नाशक तंत्र**—रविवार के दिन अपामार्ग की जड़ को उखाड़ कर सात डोरों में लपेट कर हाथ में बांधने से विषम ज्वर दूर होता है।

४. **रात्रि ज्वर नाशक तंत्र**—मकोय की जड़ को कान के बांधने से रात्रि में आने वाला ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।

५. **शीत ज्वर की पारी रोकने का तंत्र**—मंगलवार अथवा रविवार के दिन सात गांठ लहसुन की पीसकर काले कपड़े पर रखकर रोगी के पांव के अंगूठे से बांध दे। तीन घंटे का समय बीत जाने पर उस अंगूठे से खोलकर चौराहे पर फेंक देने से शीत ज्वर की पारी रुक जाती है।

६. **तिजारी ज्वर पर तावीज तंत्र**—सफेद ओंगा (अपामार्ग) की जड़ रविवार को लाकर लाल कपड़े में लपेटकर उसी दिन तिजारी ज्वर तथा चौथिया ज्वर वाले रोगी के बायें हाथ में बांध दे। फिर ज्वर नहीं आवेगा।

७. **संग्रहणी पर तंत्र**—गेहुंअन सर्प की केंचुली को कपड़े की थैली में सीकर पेडू के ऊपर बांधने से संग्रहणी के रोग में लाभ होता है।

८. **दस्तों पर तंत्र**—सहदेई की जड़ के सात टुकड़े करके लाल डोरे में लपेट कर कमर में बांधने से अतिसार दूर होता है।

९. **पथरी रोग पर तंत्र**—दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में लोहे की अंगूठी धारण करने से पथरी रोग का कष्ट दूर होता है।

१०. **आंधा शीशी का दर्द दूर करने का तंत्र**—जिस व्यक्ति को आंधा शीशी के दर्द का रोग हो, वह प्रातः काल दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके अपने हाथ में एक गुड़ की डली लेकर उसे दांत से काटकर चौराहे पर फेंक दे तो आंधा शीशी का दर्द दूर हो जाता है।

११. **आंधा शीशी पर तंत्र (अन्य)**—सफेद चिरमी की जड़ घिसकर सूंघे तो आंधा शीशी मिटे।

१२. **बच्चों की खांसी दूर करने का तंत्र**—एक कपड़े की थैली में कौए की बींठ बांधकर बालक के कंठ में लटका देने से खांसी में लाभ होता है। यदि बींठ की थैली रविवार के दिन लटकाई जायगी तो बालक का कव्वा उठ आवेगा।

१३. **भूत ज्वर का तंत्र**—हुलहुल की जड़ को कान में डालने से भूत ज्वर शीघ्र दूर होता है।

१४. **मासिक धर्म पर तंत्र**—रविवार के दिन कौए की चोंच लावे, धूप दे, योनि में रखे तो खून चालू हो, फिर धोकर मुंह में रखे तो खून बन्द हो।

१५. **दाँत की पीड़ा पर तंत्र**—सफेद चिरमी (गुंजा) की जड़ कान में बांधे तो दांत की पीड़ा मिटे।

१६. **खाँसी पर तंत्र**—लजालू की जड़ गले के बांधने से खांसी मिटती है।

१७. **बच्चों के दाँत आराम से निकलने का तंत्र**—

१. छछून्दर का होठ काटकर बालक के गले में लटका देने से उसके दांत आसानी से निकल आते हैं।

२. संभालू की जड़ बालक के गले में बांधने से दांत आसानी से आयेंगे।

३. सीपियों की माला बालक के गले में पहना देने से दांत आसानी से आयेंगे।

१८. **निद्रा पर तंत्र**—१. केंचुवे की जड़ पीसकर जिसके सिर पर डाल दी जाय, उसको खूब निद्रा आती है। २. सफेद चिरमी (गुंजा) की जड़ मस्तक के नीचे रखे तो नींद अति आवे।

१९. **स्वप्न दोष पर तंत्र**—१. अपनी मां का नाम एक कागज पर लिखकर मस्तक के नीचे देकर सो जावे तो स्वप्न दोष नहीं होगा।

२. काले धतूरे की जड़ लगभग छः मासा कमर के बांधे तो स्वप्न दोष की बीमारी मिटे।

२०. **बवासीर पर तंत्र**—काले धतूरे की जड़ लगभग छः मासा कमर के बांधे तो बवासीर मिटे।

२१. **स्तंभन पर तंत्र**—

१. फिटकरी के टुकड़े को कमर के बांध कर संभोग करने से अधिक समय तक स्तंभन होता है।

२. रविवार को चिड़ा-चिड़ी जिस लकड़ी पर बैठकर संभोग करें, उस लकड़ी का एक टुकड़ा डोरे में बांध कर कमर के बांधे। पेडू पर रखे तो स्खलित हो और जब तक पीछे रहेगा स्तंभन रहेगा।

३. सोमवार के दिन लाल अपामार्ग की जड़ को न्यौतकर मंगलवार को उखाड़ लाए। उस जड़ को अपनी कमर में बांधकर संभोग करने से अधिक समय तक स्तंभन होता है।

४. छिपकली की पूंछ के अनुभाग को काटकर सफेद धागे में लपेट कर, उसे एक अंगूठी के भीतर रखकर अंगूठी को कनिष्ठा अंगुली में पहन कर संभोग करने से तब तक स्खलन नहीं हो, जब तक अंगूठी को उतारा नहीं जाता।

५. ऊंट की हड्डी में छेद करके पलंग के सिरहाने की ओर बांधकर उसी शय्या पर संभोग करने से तब तक स्खलन नहीं होता, जब तक कि हड्डी को खोल नहीं दिया जाता।

६. ऊंट के बालों की रस्सी बनाकर अपनी जांघ में बांध कर संभोग करने से जब तक रस्सी को खोला नहीं जायगा, तब तक स्खलन नहीं होगा।

७. लंगड़े आम की जड़ को कमर में बांधकर संभोग करने से देर तक स्तंभन होता है।

८. काले बिलाव की दाहिनी जांघ की हड्डी लेकर कमर में बांधने से वीर्य का स्तंभन होता है।

९. कपिला गौ के घी से जलाया हुआ और इन्द्रगोप के चूर्ण से युक्त दीपक रात्रि में रति के समय पुरुष के वीर्य का स्तंभन करता है।

१०. छालिया सुपारी जितनी ज्यादा लम्बी हो उसको दोनों गलाफों में दबा कर रखे तो स्तंभन बढ़े।

११. शनिवार को गधा या भैंसा चौराहे पर लोटे उस जगह की पूर्व की ओर मुंह करके मिट्टी उठाये, धोती के किनारे बांधे तो स्तंभन बढ़े।

२२. **सर्पभय दूर तंत्र**—मेष राशि के सूर्य में एक मसूर का दाना, दो नीम के पत्तों के साथ खाने से एक साल तक सर्प का भय नहीं रहता।

२३. **बिच्छू भय दूर तंत्र**—शुभ नक्षत्र में अपराजिता का मूल लाकर दाहिने कान में धारण करने से बिच्छू काटने का भय नहीं रहता।

२४. **सर्प जहर पर तंत्र**—गोभी का रस घृत में पिलाए तो सर्प का विष मिटे।

२५. **बिच्छू के जहर पर तंत्र**—

१. सत्यानाशी की जड़ बिच्छू के काटने पर पान में दे तो जहर उतरे।

२. हुलहुल की जड़ बिच्छू के काटे हुए आदमी को ७ बार सुंघाने मात्र से जहर उतर जायगा।

३. जिसे बिच्छू काटा हो, उसे अपामार्ग की जड़ दिखा देने भर से बिच्छू का जहर उतर जायगा। यदि बिच्छू अधिक जहरी हो तो अपामार्ग की जड़ को घिसकर अथवा पत्तों को पीसकर डंक के स्थान पर लगा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

२६. **चोर भय दूर तंत्र**—१. शुक्ल पक्ष में, पुष्य नक्षत्र में, श्वेत गुंजा की मूल लाकर मस्तक या शय्या पर रखने से चोर भय दूर होता है।

२. आश्लेषा नक्षत्र में आंवले के वृक्ष की जड़ लाकर हाथ के बांधने से चोर, बाघ व राजा का भय नहीं होता है।

३. केतकी की जड़ को मस्तक पर धारण करने से चोरों का भय दूर हो जाता है।

२७. **शत्रु भय निवारण तंत्र**—

१. आर्द्रा नक्षत्र में बांस की जड़ कान में धारण करे तो शत्रु भय निवारण हो।

२. काले रंग के घोड़े व काले रंग के बकरे के पांव के बाल और मंगलवार या रविवार को काले मुर्गे व कौए के चार पंख ले, सबको जलाकर राख कर ले, राख को शीशी में भर ले। प्रयोग के समय पानी मिला कर तिलक करे तो शत्रु भय के मारे सामने न आए।

२८. **भूतादि दूर हो**—

१. हींग को लहसुन के पानी में पीसकर नाक में सुंघाए अथवा अंजन कराए तो भूत आदि दूर हो।

२. तुलसी के पत्ते ८, काली मिरच ८, सहदेवी की जड़ रविवार को पवित्र होकर लावे। इन तीनों को मिलाकर कंठ में बांधे तो भूत आदि दूर हो।

३. रविवार को काले धतुरे की जड़ बांह के बांध दे तो भूत आदि की बाधा दूर हो।

४. लहसुन का रस निकालकर उसमें हींग मिलाए। उसे आंखों में आंजने अथवा नस्य देने से भूत आदि तुरन्त भाग जाते हैं।

२९. **हाथी भय दूर तंत्र**—श्वेत अपराजिता का मूल हाथ में बांधने से हाथी का भय दूर होता है।

३०. **नौका स्तंभन तंत्र**—शतावरी वृक्ष की पांच अंगुल प्रमाण की कील को नाव में डाल देने से नाव का स्तंभन हो जाता है अर्थात् बहती हुई नाव जहां की तहां रुक जाती है।

३१. **भूख प्यास न लगे तंत्र**—आंवला, अपामार्ग, कमल का बीज और तुलसी की जड़—इन सबको एक साथ पीसकर गोली बना ले। प्रतिदिन प्रातः एक गोली खाकर ऊपर से गाय का दूध पीने से भूख प्यास दूर हो जाती है।

कमल के बीज और चावल को बकरी के दूध में पीसकर, घृत मिलाकर, फिर खीर बनाकर खाए तो चार दिन भूख नहीं लगे।

३२. **मुकदमे में विजय प्राप्ति का तंत्र**—गोभी और मयूर शिखा को मुंह में रखकर या मस्तक पर धारण कर न्यायालय में जाने से विजय प्राप्त होती है।

३३. **सर्व वशीकरण तंत्र**—पीली गाय के घृत का काजल दीपावली को बनाए, अंजन करे—सर्व वश हो।

३४. **खटमल पर तंत्र**—प्याज खाने वाले सात व्यक्तियों का नाम एक कागज पर लिखकर टांग दे, खटमल जायेगा।

३५. **बुरे स्वप्न पर तंत्र**—जिसको बुरे स्वप्न आते हों, उसके सिरहाने फिटकरी रख दे, स्वप्न बन्द हो जायेंगे।

३६. **भोजन भट्ट तंत्र**—गिरगिट का होठ लाकर शिखा के बांधकर भोजन करे तो बीस गुना अधिक खाए।

३७. **पशुओं के कीड़ों पर तंत्र**—

१. नीलकंठ चिड़िया जो नीले रंग की होती है, उसका एक, आधा या चौथाई पंख आटे में रखकर पशु को खिला दे, इसकी एक खुराक से ही सारे कीड़े मर जायेंगे।

२. लसोड़ा की लकड़ी चार अंगुल बराबर ले (दो सूत मोटी होनी चाहिए), फिर उसे दूनर कर (दोहरा कर) रस्सी से पशुओं के गले में बांध दे। ऐसा करने से पशु के, चाहे किसी भी अंग में कीड़े पड़े हों, सूख जायेंगे और आराम हो जायगा।

३८. **धरण पर तंत्र**—भिंडी की जड़ धरण पर थोड़े समय तक रखने से—धरण अपने स्थान पर आ जाती है।

३९. **मिरगी पर तंत्र**—

१. २१ जायफल की माला हरदम गले में रखने से मिरगी नहीं आती।

२. भेड़िया की विष्टा और हड्डी पास में रखने से मिरगी नहीं आती।

३. सुअर के नाखून की अंगूठी वनाकर मंगलवार के दिन दाहिने हाथ की छोटी अंगुली में पहनने से मिरगी रोग शान्त होता है।

४. रेशम के धागे में जायफल को गूंथ कर भुजा अथवा कंठ में धारण करने से मिरगी रोग जल्द दूर हो जाता है।

कल्प विभाग

संस्कृत का कल्प शब्द कई अर्थ लिए हुए है। वैसे सामान्य रूप से इसका अर्थ सर्जन या रचना है पर यह किन्हीं विशेष प्रकार की साधनाओं अथवा वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से निष्पन्न रचना के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह विधि-विधान, आचार पद्धति, शास्त्र-विशेष तथा कर्म-विशेष के लिए भी व्यवहार में आता रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में यहां जो कल्प संबंधी प्रकरण उपस्थित किया जा रहा है, वहां इसका आशय औषधि-विशेष के विशेष काल, विशेष पद्धति, विशेष प्रयोग तथा विशेष प्रक्रिया पूर्वक निष्पद्यमान चमत्कार पूर्ण कार्य-कलाप के सन्दर्भ में है। मंत्र यंत्र से संपद्यमान विविध चमत्कारों की श्रृंखला में वे सम्मोहन, वशीकरण, आकर्षण आदि के प्रयोग भी आते हैं, जिन्हें वनस्पति आदि पदार्थों के विशिष्ट प्रक्रियाओं के कल्प से—वैज्ञानिक प्रयोग से साधा जाता है।

यही कारण है कि कतिपय तांत्रिक ग्रन्थों, पड़तों व गुटकों आदि में अनेक वनस्पति के कल्प भी मिलते हैं। मारण, उच्चाटन, स्तंभन के प्रयोग भी इन कल्पों में उपलब्ध होते हैं। यहां १६ प्रकार के कल्प दिये गए हैं। इनके अतिरिक्त इन्द्रायण कल्प, पंवाड कल्प, सफेद कंटाई कल्प, लाजवन्ती कल्प, शंखपुष्पी कल्प, अपामार्ग कल्प, ऊंट कटारा कल्प, आदि तथा एक प्रकार का नक्षत्र-कल्प भी मुझे और मिला था, जिसमें केवल मारण, उच्चाटन आदि के ही प्रयोग थे। उपरोक्त कल्पों में कई एक के मुझे मंत्र नहीं मिले, किसी का पूरा विधि-विधान नहीं मिला। कुछ में मारण, उच्चाटन व स्तंभन के बड़े उग्र प्रयोग लिखे थे। एतदर्थ उनको मैंने छोड़ दिया। इन सबको सर्वसाधारण में प्रचलित करना मुझे उचित नहीं लगा। इसीलिए वे यहां नहीं दिये गए हैं। परन्तु जो कल्प दिये गए हैं, उनके लिए भी साधकों से मेरा नम्र निवेदन है कि किसी अनिष्ट व दुष्ट भावना से ये प्रयोग कभी काम में न लायें। अपने किये हुए दुष्कर्मों के पाप से किसी का भी छुटकारा होने वाला नहीं है।

रुद्राक्ष कल्प

भोग और मोक्ष की इच्छा रखने वाले चारों वर्णों के लोगों को रुद्राक्ष धारण

करना चाहिए। उत्तम रुद्राक्ष असंख्य पाप समूहों का भेदन करने वाला है। जाति भेद के अनुसार रुद्राक्ष चार तरह के होते हैं, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। उन ब्राह्मणादि जाति के रुद्राक्षों के वर्ण श्वेत, रक्त, पीत तथा कृष्ण जानने चाहिए। मनुष्यों को चाहिए कि वे क्रमशः वर्ण के अनुसार अपनी जाति का ही रुद्राक्ष धारण करें। जो रुद्राक्ष आंवले के फल के बराबर होता है वह समस्त अरिष्टों का विनाश करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष बेर के फल के बराबर होता है, वह उतना छोटा होते हुए भी लोक में उत्तम फल देने वाला तथा सुख सौभाग्य वृद्धि करने वाला होता है।जो रुद्राक्ष गुंजाफल के समान बहुत छोटा होता है, वह सम्पूर्ण मनोरथों और फलों की सिद्धि करने वाला होता है। रुद्राक्ष जैसे-जैसे छोटा होता है, वैसे-वैसे अधिक फल देने वाला होता है। एक-एक बड़े रुद्राक्ष से एक-एक छोटे रुद्राक्ष को विद्वानों ने दस गुना अधिक फल देने वाला बताया है। अतः पापों का नाश करने के लिए रुद्राक्ष धारण करना आवश्यक बताया है। रुद्राक्ष के समान फलदायिनी कोई भी माला नहीं है। समान आकार प्रकार वाले, चिकने, मजबूत, स्थूल, कण्टकयुक्त (उभरे हुए छोटे-छोटे दानों वाले) और सुन्दर रुद्राक्ष अभिलषित पदार्थों के दाता तथा सदैव भोग और मोक्ष देने वाले हैं। जिसे कीड़ों ने दूषित कर दिया हो, जो टूटा-फूटा हो, जिसमें उभरे हुए दाने न हों, जो व्रण युक्त हो तथा जो पूरा-पूरा गोल न हो, इन पांच प्रकार के रुद्राक्षों को त्याग देना चाहिए। जिस रुद्राक्ष में अपने-आप ही डोरा पिरोने योग्य छिद्र हो गया हो, वही उत्तम माना गया है। जिसमें मनुष्य के प्रयत्न से छेद किया गया हो, वह मध्यम श्रेणी का होता है। ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य जिस फल को पाता है, उसका वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी नहीं किया जा सकता। भक्तिमान् पुरुष साढ़े पांच सौ रुद्राक्ष के दानों का सुन्दर मुकुट बना ले और उसे सिर पर धारण करे। तीन सौ साठ दानों को लम्बे सूत्र में पिरोकर एक हार बना ले। वैसे-वैसे तीन हार बना कर भक्ति परायण पुरुष उनका यज्ञोपवीत तैयार करे और उसे यथास्थान धारण किये रहे।

कितने रुद्राक्ष की माला—कहां धारण की जाय

छः रुद्राक्ष की माला कान में, बारह की हाथ में, पन्द्रह की भुजा में, बाईस की मस्तक में, सत्ताईस की गले में, बत्तीस की कंठ में (जिससे झूल कर वह हृदय को स्पर्श करती रहे) धारण करनी चाहिए।

कौन सा रुद्राक्ष कहां धारण करना चाहिए

छः मुखा रुद्राक्ष दाहिने हाथ में, सात मुखा कंठ में, आठ मुखा मस्तक में, नौ मुखा बायें हाथ में, चौदह मुखा शिखा में, बारह मुख वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करना चाहिए। इसके धारण करने से आरोग्य लाभ, सात्विक प्रवृत्ति का उदय, शक्ति का आविर्भाव, और विघ्न नाश होता है।

रुद्राक्ष के मुखों के अनुसार उसका फल निम्न प्रकार से है :—

१. एक मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् शिव स्वरूप है। भोग व मोक्षरूप फल प्रदान करता है। जहां इसकी पूजा होती है, वहां से लक्ष्मी दूर नहीं जाती। उस स्थान में सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं तथा वहां रहने वाले लोगों की सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण होती हैं।

२. दो मुख वाला रुद्राक्ष देव देवेश्वर कहा गया है। वह सम्पूर्ण कामनाओं और फलों को देने वाला है। गर्भवती महिलाओं को कमर या बांह पर सूत से बांध देने पर गर्भावस्था में नौ महीने के अन्दर किसी भी प्रकार की बाधा, भय, बेहोशी, हिस्टीरिया, डरावने स्वप्न आदि दोष नहीं होंगे। साथ में एक रुद्राक्ष बिस्तर पर तकिये के नीचे एक डिबिया में रख देना चाहिए।

३. तीन मुख वाला रुद्राक्ष सदा साक्षात् साधन का फल देने वाला है। उसके प्रभाव से सारी विद्याएं प्रतिष्ठित होती हैं। तीन दिन के बाद आने वाला ज्वर इसके धारण करने से ठीक हो जाता है।

४. चार मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् ब्रह्मा का रूप है। वह दर्शन और स्पर्श से शीघ्र ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थों को देने वाला है। इससे जीव-हत्या का पाप नष्ट हो जाता है।

५. पांच मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् कालाग्नि रूप है। वह सब कुछ करने में समर्थ है। सबको मुक्ति देने वाला तथा सम्पूर्ण मनोवांछित फल प्रदान करने वाला है। इसके तीन दाने धारण करने से लाभ होता है।

६. छः मुखों वाला रुद्राक्ष कार्तिकेय का स्वरूप है। यदि दाहिनी बांह में उसे धारण किया जाय तो धारण करने वाला मनुष्य ब्रह्म हत्या आदि पापों से मुक्त हो जाता है। यह विद्यार्थियों के लिए उत्तम है।

७. सात मुख वाला रुद्राक्ष अनंग स्वरूप और अनंग नाम से ही प्रसिद्ध है। इसको धारण करने से दरिद्र भी ऐश्वर्यशाली हो जाता है। सभी रोगों का नाश होता है।

८. आठ मुख वाला रुद्राक्ष अष्ट मूर्ति भैरव रूप है। असत्य भाषण का पाप नष्ट करता है। उसको धारण करने से मनुष्य पूर्णायु होता है और मृत्यु के पश्चात् शूलधारी शंकर हो जाता है।

९. नौ मुख वाले रुद्राक्ष को भैरव तथा कपिल मुनि का प्रतीक माना गया है अथवा नौ रूप धारण करने वाली माहेश्वरी दुर्गा उसकी अधिष्ठात्री देवी मानी गई है, जो मनुष्य अपने बायें हाथ में इसको धारण करता है, वह सर्वेश्वर हो जाता है।

१०. दस मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भगवान् विष्णु का रूप है। उसको धारण करने से मनुष्य की सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। वह भूत-प्रेत-बाधा तथा सभी प्रकार की बीमारियों को हरण करने वाला है।

११. ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष रुद्र रूप है। उसको धारण करने से मनुष्य सर्वत्र विजयी होता है। वह गौरी शंकर—भगवान् शंकर और भगवती पार्वती का स्वरूप माना जाता है। इसे घर, पूजागृह अथवा तिजोरी में मंगल कामना के लिए रखना लाभदायक है। यह सबको मोहित करने वाला है।

१२. बारह मुख वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करे। उसको धारण करने से मानो मस्तक पर बारहों आदित्य विराजमान हो जाते हैं।

१३. तेरह मुख वाला रुद्राक्ष विश्व देवों का स्वरूप है। उसको धारण करके मनुष्य संपूर्ण अभीष्टों को पाता है तथा सौभाग्य और मंगल लाभ करता है।

१४. चौदह मुख वाला रुद्राक्ष परम शिव रूप है। उसे भक्ति पूर्वक मस्तक पर धारण करे। इससे समस्त पापों का नाश होता है।

इस तरह मुखों के भेद से रुद्राक्ष के मुख्यतः चौदह भेद बताये गये हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के मंत्र निम्नलिखित रूप में हैं :—

१—४—५—१०—१३ इन पांचों का मंत्र—ॐ ह्रीँ नमः है।

२—१४ इन दोनों का मंत्र—ॐ नमः है।

३—इसका मंत्र—क्लीँ नमः है।

६—९—११ इन तीन का मंत्र—ॐ ह्रीं हुं नमः है।

७—८ इन दोनों का मंत्र—ॐ हुँ नमः है।

१२—इसका मंत्र—ॐ क्रौं क्षौं रौं नमः है।

उपरोक्त चौदह ही मुखों वाले रुद्राक्षों को अपने-अपने मंत्र द्वारा धारण करने का विधान है। रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले पुरुष को देखकर भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा द्रोहकारी राक्षस आदि सर्व दूर भाग जाते हैं।

एक मुखी रुद्राक्ष को साधने का मंत्र

मंत्र—श्री गणेश जी को नमः ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ एक मुखाय भगवतेऽनुरूपाय सर्व युगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्व काम फलप्रदाय नमः।

विधि—चैत्र शुक्ला अष्टमी को १०८ रक्त वर्ण के पुष्पों से पूजन करे। धूप दीप, प्रसाद करे। केसर, चन्दन, कपूर का तिलक करे। प्रत्येक पुष्प पर एक मंत्र पढ़े। फिर इसी तरह दीपावली के दिन करे। तत्पश्चात् तिजोरी में रख दे या सोने में मंढ़ा कर गले में धारण करे।

[टिप्पणी : मैंने एक महानुभाव के पास एक मुख से लेकर २१ मुख के रुद्राक्ष देखे हैं। एक मुख से लेकर १३ मुख तक के रुद्राक्ष मेरे पास भी विद्यमान हैं। आज कल नकली रुद्राक्ष बहुत आते हैं, जिनमें एक मुखी रुद्राक्ष जिसका मूल्य ५-१० हजार रुपये तक भी हो जाता है, विशेष रूप से नकली आते हैं। लेते समय सावधानी बरतनी चाहिए। किसी विज्ञ व्यक्ति से पहचान करवाकर लेना चाहिए। —लेखक]

रक्त गुंजा कल्प

वनस्पति मूल ग्रहण करने की सामान्य विधि—जिस वृक्ष का मूल, पत्ता, पंचांग आदि लेना हो तो वृक्ष के समीप तदनुकूल नक्षत्र, तिथि व वार को संध्या समय जाए तथा 'मम कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्र का उच्चारण करके चन्दन, चावल, पुष्प, नैवेद्य और दीप द्वारा उसका पूजन करे। उसके मोली बांध दे। दूसरे दिन सूर्योदय से पूर्व वृक्ष के पास जाकर 'ॐ ह्रीं क्षौं फट् स्वाहा' मंत्र का उच्चारण कर मूल, पत्ते, पंचांग आदि लेना चाहिए। कोई लकड़ी का शस्त्र प्रयोग में लेना चाहिए। फिर उसको घर लाकर पंचामृत से धोकर अभिषेक करना चाहिए। धूप, दीप, नैवेद्य समर्पण करने के बाद उपयोग में लाते वक्त निम्न मंत्र को २१ बार पढ़कर प्रयोग में लें तो विशेष फलदायक माना गया है।

कल्प मंत्र

पुष्य हो आदित्य को तब लीजिये यह मूल।।
शुक्रवार की रोहिणी ग्रहण होय अनुकूल। १।।
कृष्ण पक्ष की अष्टमी, हस्त नक्षत्र जो होय।
चौदस स्वाती शतभिषा, पूनों को ले सोय।।२।।
अर्द्ध निशा कारज सरे, मन की संज्ञा खोय।
धूप दीप कर लीजिये, धरे दूध ले धोय।।३।।
जो काहू नर नारी कूं, विष कोई को होय।
विष उतरे सब तुरंत ही, जड़ी पिलावे धोय।।४।।
जो तिलक लगावे भाल पर, सभा मध्य नर जाय।
मान मिले स्तुति करे, सब ही पूजे पाय।।५।।
हां जी हां जी सब करे, जो वह कहे सो सांच।
एक जड़ी की जुगत से, सबै नचावे नाच।।६।।
तांबे मूल मढ़ाय के, बांधे कमर के सोय।
नवमासे वह नारी के, निश्चय बेटा होय।।७।।

ऋतुवंती के रक्त से, अंजन आंजे कोय ।
देखत भाजे सेन सब, महा भयानक होय ॥८॥
काजर हूं घिस आंजिये, मोहे सब संसार ।
गाली दे दे ताड़िये, तोय लग रहे लार ॥९॥
फेर अंकोल के तेल में, घिस ही आंजे कोय ।
धन दीखे पाताल को, दिव्य दृष्टि जो होय ॥१०॥
जो बाघिन के दूध में, घिस चोपड़े सब अंग ।
सर्व शस्त्र लागे नहीं, बढ़कर जीते जंग ॥११॥
घिस के तिल के तेल में, मर्दन करे शरीर ।
दीखे सब संसार कूं, महावीर रणधीर ॥१२॥
कस्तूरी सूं आंजिये, प्रात समय लो लाय ।
मौत जू लखिये सबन की, काल पुरुष दरसाय ॥१३॥
जो आंजे निज रक्त से, खुले रागिनी राग ।
जो घिस पावे दूध से, होय सिद्ध सोभाय ॥१४॥
रक्त गुंजा यह कल्प है, सूक्ष्म कह्यो बनाय ।
जो साधे सो सिद्ध हो, या में संशय नाय ॥१५॥

मयूरशिखा कल्प

कृष्ण पक्ष, अष्टमी, चतुर्दशी, पुष्य नक्षत्र या हस्त नक्षत्र या दीपावली के दिन नग्न होकर जहां मयूरशिखा हो, वहां जाकर चावल व तिल को निम्नलिखित मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर उस पर डाले। फिर काठ के शस्त्र से मूल को ले।

मंत्र—ॐ ह्रीँ मयूरशिखा महासुसर्वकार्यं साधय साधय स्वाहा।

तत्पश्चात् घर लाकर ऊंची भूमि पर बैठ कर सात दिन तक सिन्दूर, कपूर व कस्तूरी से पूजन करे और निम्नलिखित मंत्र की एक माला फेरे, जिससे यह जड़ी सिद्ध हो जायगी।

मंत्र—ॐ नमो महासेनाय शाक्ते हस्ताय महेश्वराय वरलखी प्रसादाय ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल औषधि सर्व दुष्ट नाशिनी सह मम भवतु स्वाहा।

इस मंत्र से जड़ी को सिद्ध कर लेना चाहिए। उसके बाद चैत्र शुक्ला ८ या आश्विन शुक्ला ८ तथा नवमी की रात्रि को उसका पूजन व हवन करना चाहिए और निम्नांकित मंत्र का जाप करना चाहिए।

मंत्र—ॐ ऐं क्लीं हसौं राजलक्ष्मी ज्ञायेन लाभं देहि देहि महालक्ष्म्यै नमः।

यदि उपरोक्त मंत्र का निर्दिष्ट समय पर हर साल १२५०० जाप कर लिया

जाय तो बहुत अच्छा हो फिर निम्नलिखित कार्यों में प्रयोग करें।

१. मयूरशिखा की जड़ को हाथ में बांध कर जिसके पास जाए और कुछ मांगे तो उसके पास जो होगा, वह देगा :

२. मयूरशिखा की जड़ को हाथ में बांधकर जाए तो विवाद में जय हो।

३. मयूरशिखा की जड़ को धूप देकर हाथ में बांधे तो हर तरह का ज्वर-नाश हो।

४. मयूरशिखा की जड़ को मस्तक में रक्खे तो सर्प, चोर आदि का भय नहीं होगा।

५. मयूरशिखा की जड़ को तिजोरी में रखे तो अखंड भंडार रहे।

सहदेवी कल्प

शनिवार के दिन जब वृक्ष को न्यौता देने जाए तो सर्वप्रथम "मम कार्य-सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" यह मंत्र वृक्ष के सामने हाथ जोड़कर बोले और चन्दन, चावल, फूल, नैवेद्य से पूजन करे, धूप दे और मोली बांधकर आ जाए। दूसरे दिन रवि पुष्य नक्षत्र को सुबह से पहले-पहले वृक्ष के पास नहा धोकर शुद्ध वस्त्र पहनकर जाए और 'ॐ ह्रीँ क्षौं फट् स्वाहा' इस मंत्र का उच्चारण कर मूल व पंचांग आदि ले ले। फिर घर आकर उसको पंचामृत से धोकर अच्छी जगह स्थापित कर पूजन करे और निम्न मंत्र से २१ बार पढ़कर अभिमंत्रित कर सिद्ध कर ले।

मंत्र—ॐ नमो रूपावती सर्व प्रीतेति श्री सर्व जन रंजनी सर्व लोक वशीकरणी सर्व सुख रंजनी महामाईल घोल थी कुरु कुरु स्वाहा।

तत्पश्चात् इसे निम्नलिखित प्रयोगों में लाया जा सकता है :—

१. कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी या अष्टमी को लाकर चूर्ण कर किसी को पान में दे तो वह सात रोज में आवे।

२. चूर्ण कर सिर पर डालकर जिसके पास जाए, वह इज्जत और प्रतिष्ठा से पेश आवे।

३. जड़ को गाय के घृत में मासिक होने के ५ दिन बाद ५ रोज तक खिलावे तो सन्तान हो।

४. जड़ को तेल में घिसकर योनि पर लगावे या जड़ को कमर में बांधे तो सुख से प्रसव हो।

५. जड़ को पानी में घिसकर अंजन करे तो जिसके पास जाए वह देखते ही वश हो।

६. जड़ को तिजोरी में रक्खे तो अखूट भंडार रहे।

७. जड़ को मादलिये में डालकर बच्चे के गले में बांधे तो कंठमाला रोग जावे।

८. सहदेवी के मूल को सूत की बत्ती बनाकर चमेली के तेल में काजल बनावे, फिर किसी बच्चे के अंगूठे पर हाजरात चढ़ावे तो हाजरात चढ़े।

बहेड़ा कल्प

शनिवार की संध्या को वृक्ष के पास जावे, "मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" इस मंत्र का उच्चारण करे, चन्दन, चावल, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीप द्वारा उसका पूजन करे व मोली बांधकर आ जावे। दूसरे रोज रविवार पुष्य नक्षत्र के दिन सूर्योदय से पहले जावे और निम्नलिखिन मंत्र पढ़कर मूल व पत्ते ले आवे।

मंत्र—ॐ नमः सर्व भूताधिपतये ग्रस ग्रस शोषय शोषय भैरवीञ्चाज्ञापयति स्वाहा।

घर पर लाकर पंचामृत से धोकर अच्छी तरह स्थापना कर उपरोक्त मंत्र में फिर अभिमंत्रित करना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग में लाया जा सकता है।

जैसे—

१. दाहिनी जांघ के नीचे रखकर भोजन करे तो अपनी खुराक से बीस गुना ज्यादा भोजन कर सकता है।

२. तिजोरी में रखे तो अखूट भंडार रहे।

निर्गुण्डी कल्प

विधि—रात्रि के समय अकेला निर्गुण्डी वृक्ष के पास जावे और २१ प्रदक्षिणा निम्नलिखित मंत्र को बोलते हुए सात रात्रि तक बराबर दे तो वृक्ष सिद्ध हो जाता है।

मंत्र—ॐ नमो गणपतये कुबेरये कद्रिके फट् स्वाहा।

तत्पश्चात् सातवें रोज वृक्ष का पंचांग ले आवे। फिर धूप दीप से पूजन करे। पंचामृत से धोकर शुद्ध जगह रखकर उपरोक्त मंत्र की एक माला से अभिमंत्रित कर निम्नलिखित प्रयोगों में काम ले। जैसे—

१. पुष्य नक्षत्र में निर्गुण्डी और सफेद सरसों दूकान के द्वार पर रखी जाय तो अच्छा क्रय-विक्रय होता है।

२. वृक्ष की छाल का चूर्ण, जीरे का चूर्ण समभाग आठ दिन तक सेवन करने से हर प्रकार का ज्वर दूर होता है।

३. एक महीने तक सेवन करने से भूमिगत द्रव्य दिखाई देता है।

४. चालीस दिन तक सेवन करने से आयुष्य में वृद्धि होती है।

५. पचास दिन तक सेवन करने से शरीर में बल अत्यंत बढ़ता है। मृत्यु पर्यन्त निरोग रहता है। इसका सेवन करते समय हलका भोजन, खिचड़ी आदि खाना चाहिए।

हाथा जोड़ी कल्प

शुभ दिन, शुभ योग में लें और निम्नलिखित मंत्र का १२५०० जाप करके इसको सिद्ध कर ले।

मंत्र—ॐ किलि किलि स्वाहा।

प्रयोग—१. किसी भी व्यक्ति से वार्ता करने में साथ रखे तो बात माने।

२. जिसको भी वश करना हो, उसका नाम लेकर जाप करे तो इसके प्रभाव से वह व्यक्ति वशीभूत होगा।

३. प्रयोग के बाद चांदी की डिबिया में सिन्दूर के साथ रखे।

श्वेतार्क कल्प

विधि—शनिवार के दिन वृक्ष के पास न्यौता देने जाय तो सर्वप्रथम 'मम कार्यं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा' यह मंत्र वृक्ष के सामने हाथ जोड़कर बोले और चन्दन, चावल, फूल, नैवेद्य से पूजन करे, धूप दे और मोली बांधकर आ आये। दूसरे रोज रवि पुष्य नक्षत्र को सुबह से पहले-पहले वृक्ष के पास नहा-धोकर, शुद्ध वस्त्र पहन कर जाये, और निम्नलिखित मंत्र बोलकर वृक्ष की जड़ को घर ले आवे। जड़ पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके लेनी चाहिए।

मंत्र—ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ॐ संजु स्वाहा।

इस मंत्र से मूल को लाकर पंचामृत से धोकर ऊंचे व शुद्ध स्थान पर रख दे। तत्पश्चात् पुष्य नक्षत्र रहते-रहते उस जड़ से भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति बनावे व निम्नलिखित मंत्र से पूजा करे। श्री गणेश जी की मूर्ति भी बनाई जाती है।

मंत्र—ॐ नमो भगवति शिव चके ! मालिनि स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर फिर किसी भी कार्यवश साथ में लेकर जाये तो अवश्य सफल हो। इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें और ज्ञातव्य हैं :—

१. जहां सफेद आक होता है, कहते हैं कि वहां आसपास गड़ा हुआ धन होना चाहिए।

२. सातवीं ग्रन्थि में ऐसी गांठ पड़ती है कि उससे गणेशजी की सूंडवाली आकृति बनती है। यदि दक्षिणावर्ती सूंडवाली आकृति के श्री गणेश मिल जायं तो बहुत चमत्कारी होती है।

३. पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बायें हाथ में इसे बांधने से सौभाग्य व लाभ होता है, ऐसा माना जाता है।

४. बंध्या स्त्री की कमर में बांधने से सन्तान प्राप्ति होती है।

५. मूल को ठंडे पानी में घिसकर लगाने से बिच्छू आदि हर प्रकार का जहर उतरता है।

६. मूल में गोरोचन मिलाकर गुटिका कर तिलक करे तो सर्वजन वश हों।

७. यह मूल, बच, हल्दी—तीनों बराबर मिलाकर तिलक करे तो अधिकारी वश में हो।

८. मूल, गोरोचन, मैनसिल, भृंगराज चारों मिलाकर तिलक करे तो सर्वजन वश हों।

९. मूल, हल्दी, कुट, (लाजकुरी) स्वरक्त से भोजपत्र पर लिखकर हाथ में बांधे सर्वजन वश हों।

१०. मूल, वीर्य, भृंगराज मिलाकर अंजन करे तो अदृश्य हो।

११. मूल का मघा नक्षत्र में कस्तूरी में अंजन करे तो अदृश्य हो।

१२. मूल का वच के साथ घिसकर हाथ के लेप करे तो हाथ नहीं जले।

१३. मूल को छाया में सुखाकर, चूर्ण कर घृत के साथ आधा रत्ती की मात्रा में खाने से भूत, प्रेत, दूर होते हैं, स्मरण-शक्ति बढ़ती है, देह की कान्ति कामदेव के समान हो जाती है। ४० दिन थोड़ी मात्रा में सेवन करे। उष्णता का अनुभव हो तो छोड़ दे।

नक्षत्र कल्प

अश्विनी—इस नक्षत्र के दिन बिल्व का पत्ता एकवर्णी गाय के दूध के साथ पीये तो बांझ के भी पुत्र हो।

भरणी—जिसके घर चोरी हुई हो, इस नक्षत्र के दिन उसके घर पान लगाकर डाले तो वस्तु मिले।

कृतिका—इस नक्षत्र को प्याज का पत्ता एकवर्णी गाय के दूध में पीए तो सर्व रोग शान्त हों।

रोहिणी—इस नक्षत्र को केले का पत्ता हाथ पर बांधे तो सभी आकर्षित हों।

मृगशिर— इस नक्षत्र के दिन केले का पत्ता हाथ पर बांधे तो सभी प्रसन्न हों।

आर्द्रा—इस नक्षत्र में मन्तुडा के आखिरी पत्ते को खेत में रखे, सौ गुनी खेती हो।

पुष्य—इस नक्षत्र को झाड़ी का पत्ता साफे, पाग, टोपी में रखकर जाये तो सर्व वश हों।

अश्लेषा—इस नक्षत्र को बड़ का पत्ता अनाज के कोठे में रखे तो व्यापार में लाभ हो।

मघा—इस नक्षत्र को बैर की झाड़ी (बोरटी) का पत्ता हाथ में बांधे तो मंत्र सत्य हो।

पूर्वा फाल्गुनी—इस नक्षत्र को बहेड़ा का पत्ता जिस किसी घर में रख दिया जाये तो उस घर पर मूठ नहीं चले।

हस्त—इस नक्षत्र को पलाश का पत्ता हाथ में बांधे तो सर्ववश हों।

चित्रा—इस नक्षत्र को धावड़ी वृक्ष का पत्ता जिसे खिलावे, उसके साथ प्रेम बढ़े।

स्वाति—इस नक्षत्र को बेलपत्र को पीली गाय के दूध में पीसकर तिलक करे तो वशीकरण हो।

मूल—इस नक्षत्र को सरपंखी पंचांग, विष खपरा पंचांग, इन्द्र वारुणी पंचांग, ईश्वरलिंगी पंचांग लाकर मिलाकर रखे। जब कोई भी पेट का रोग हो, पेट पर लेप करले, रोग शान्त होगा।

श्रवण—इस नक्षत्र को बेंत की लकड़ी का टुकड़ा दाहिने हाथ पर बांध कर युद्ध करे तो विजय हो।

धनिष्ठा—इस नक्षत्र को आक का फूल दाहिने हाथ पर बांधे तो जो मनुष्य सामने देखे, वही वश हो।

शतभिषा—इस नक्षत्र को लाल चिरमी (गुंजा) की जड़ हाथ में बांधे तो सर्व कार्य सफल हों।

पर्वा भाद्रपद—इस नक्षत्र को बट वृक्ष की जटा आठ अंगुल लेकर चोर के घर में डाले तो उसके कार्य में विघ्न हो।

रेवती—इस नक्षत्र को झाड़ी का पत्ता दाहिने हाथ के बांधे तो जुऐ, सट्टे में जीत हो।

बन्दा नक्षत्र कल्प

१. **अश्विनी**—इस नक्षत्र को बेल वृक्ष का बन्दा हाथ में धारण करे तो अदृश्य हो।

२. **भरणी**—इन नक्षत्र को कपास का बन्दा हाथ में धारण करे तो अदृश्य हो।

३. **कृत्तिका**—इस नक्षत्र को थूहर का बन्दा हाथ में धारण करे तो वाक्-सिद्धि हो।

४. **रोहिणी**—इस नक्षत्र को वट वृक्ष का बन्दा हाथ में धारण करे तो सर्ववश हों।

५. **मृगशिर**—इस नक्षत्र को सिंघोट वृक्ष का बन्दा पान द्वारा ग्रहण करे तो अदृश्य हो।

६. **चित्रा**—इस नक्षत्र को धावड़ी वृक्ष का बन्दा, जिसे खिलावे, उसके साथ प्रेम हो।

७. **स्वाति**—१. इस नक्षत्र को हरड़ वृक्ष का बन्दा लाकर पास में रखे तो राज-सम्मान मिले।

२. इस नक्षत्र में बेर वृक्ष का बन्दा हाथ में धारण करके जिससे जो मांगे, वह इन्कार न हो।

३. इस नक्षत्र में नीम वृक्ष का बन्दा हाथ में धारण करे तो अदृश्य हो।

८. **विशाखा**—इस नक्षत्र में महुवे का बन्दा सिर में रखे तो ताकत आवे।

९. **अनुराधा**—इस नक्षत्र में कनेर वृक्ष का बन्दा दाहिने हाथ पर बांधे तो शत्रु शत्रुता छोड़े। इस नक्षत्र में रोहितक का बन्दा ग्रहण कर मुख में रखे तो अदृश्य हो।

१०. **मूल**—इस नक्षत्र में खजूर वृक्ष का बन्दा हाथ में बांधे तो शत्रु की हार हो।

११. **पूर्वाषाढ़ा**—इस नक्षत्र में पूर्वा का बन्दा लाकर दाहिने हाथ पर बांधे व व्यापार करे तो लाभ हो।

१२. **उत्तराषाढ़ा**—इस नक्षत्र में अशोक वृक्ष का बन्दा ग्रहण करे तो अदृश्य हो।

१३. **शतभिषा**—इस नक्षत्र में सुपारी वृक्ष का बन्दा एक वर्णी गाय के दूध में पीने से वृद्धावस्था नहीं आती।

१४. **आश्लेषा**—इस नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष का बन्दा लाकर बकरी के मूत्र में घिस कर जिस किसी भी व्यक्ति के सिर पर डाला जायगा, वह आकर्षित होगा। सोमवार को जब यह नक्षत्र आये, बहेड़ा का बन्दा लाकर तिजोरी में रखे तो अखूट भंडार रहे।

१५. **उत्तरा फाल्गुनी**—इस नक्षत्र में आम का बन्दा दाहिने हाथ पर बांधे तो सर्व वश हों, पति पत्नी में प्रेम हो।

१६. **पूर्वा फाल्गनी**—इस नक्षत्र में बहेड़ा के बन्दा का चूर्ण कर खाये तो भूत जाये।

विधि—शुभ मुहूर्त में निम्नलिखित मंत्र का पूर्व की ओर मुंह करके सफेद माला से १० हजार जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। फिर उपरोक्त नक्षत्रों में किसी भी नक्षत्र के बन्दा का इस मंत्र को ९ बार जाप करके प्रयोग करे तो कार्य सिद्ध हो।

मंत्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय मृतार्क मध्ये संस्थिताय मम शरीरं अमृतं कुरु कुरु स्वाहा।

श्वेत सरपंखा तथा श्वेत लक्ष्मणा कल्प

सर्वप्रथम शनिवार की संध्या को वृक्ष के पास जावे तथा "मम कार्यं सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा" मंत्र बोलकर चन्दन, चावल, पुष्प नैवेद्य और दीप द्वारा उसका पूजन कर उसे निमन्त्रित करे। उसके मोली बांधकर लौट आवे। दूसरे दिन रविवार पुष्य नक्षत्र में सूर्योदय से पहले मूल मंत्र के साथ 'तुक्ष तुक्ष' कहकर निम्नलिखित विधि से लाए :—

पांच आदमी मिलकर जाएं। लेने वाला नंगा होकर ले। दो आदमी हाथ में तलवार लेकर खड़े रहें। एक आदमी दीपक लेकर खड़ा रहे। एक आदमी तीर लेकर खड़ा रहे। तीर वाला आदमी तीर छोड़े। वह तीर भूमि पर गिरे, उससे पहले-पहले वह नग्न व्यक्ति उसे उठा ले तथा पंचांग, मूल आदि ले ले। लकड़ी के शस्त्र का प्रयोग करे।

मंत्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्व वदनी त्रैलोक्य कास्तरणी ह्रूं फुट् स्वाहा।

यह मंत्र बोलकर पंचांग आदि लेकर घर आवे। पंचामृत से (पंचांग को) स्नान करावे। चन्दन की तीली से अभिषेक करे, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करे। फिर घर में अच्छी जगह स्थापना कर ले। तदनन्तर निम्नलिखित रूप से प्रयोग में लावे।

१. शुभ मुहूर्त में सोने या चांदी के मादलिये में (मूल आदि पंचांग) रखकर पास में रखे तो शस्त्र आदि की धार बन्द हो।

२. पंचांग की गोली बनाकर, उपर्युक्त मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर जिसको खिलावे, वह वश हो।

३. पंचांग की गोली गाय के दूध में २१ दिन तक स्त्री को दे तो वह गर्भ धारण करे।

४. सरपंखा के मूल को घिसकर, तिलक कर दूकान पर बैठे तो व्यापार बहुत हो।

५. श्वेत-लक्ष्मणा के मूल को मूलार्क में ले, ऊपर से गाय का दूध पीए तो सन्तान हो।

६. श्वेत-लक्ष्मणा के मूल को दीवाली के दिन लाकर पास रखे तो वीर्य स्तंभन हो।

७. श्वेत-लक्ष्मणा के मूल का तिलक करे तो शाकिनी जावे।

८. श्वेत-लक्ष्मणा को सूर्य-ग्रहण में लावे। फिर विवाद, वाद-संघर्ष में जाए तो जय हो।

९. श्वेत-लक्ष्मणा को सिन्दूर में मिलाकर सिर में रखकर जावे तो राज्याधिकारी वशंगत हो।

एकाक्षी नारियल कल्प

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऐं एकाक्षाय श्रीफलाय भगवते विश्वरूपाय सर्वयोगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकार्यप्रदाय नमः।

पूजन-विधि—हाथ में पानी लेकर प्रथम संकल्प करे—अत्राद्य संवत् मिलाब्दे महामांगलाय फलप्रद— अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे इष्ट-सिद्धये बहुधनप्राप्तये एकाक्षिश्रीफलपूजनमहं करिष्यामि। इस प्रकार कहकर पानी छांटे। फिर उपर्युक्त मंत्र बोलते हुए पंचामृत से श्रीफल का अभिषेक करे। चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, चावल, फल, नैवेद्य रखे, रेशमी वस्त्र ओढ़ाए, पूजन करे। तत्पश्चात् स्वर्ण, प्रवाल या रुद्राक्ष की माला पर जाप शुरू करे। १२५०० जाप सम्पन्न करे। फिर नित्य प्रति एक माला फेरे। दीवाली, सूर्य-ग्रहण या चन्द्र-ग्रहण के समय पूजन करे।

मंत्र—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ऐं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः सर्व-सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मंत्र रेशमी वस्त्र के ऊपर अष्टगन्ध या केसर से अनार की कलम द्वारा लिखे। उस वस्त्र के ऊपर एकाक्षी नारियल रखे। मंत्र बोलते हुए चन्दन, कुंकुम, चावल, पुष्प, धूप, दीप, फल, नैवेद्य से प्रातः, सायं पूजन करे। मूल मंत्र की एक माला फेरे।

मंत्र—ॐ ऐं ह्रीँ ऐं ह्रीँ श्रीँ एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इस मंत्र की एक माला फेरे। गुलाब के १०८ फूल चढ़ाए।

ॐ ह्रीँ ऐं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इस मंत्र की १० माला पांच दिन तक प्रतिदिन फेरे तथा कनेर के २१ फूल चढ़ावे। जिज्ञासित का स्वप्न में उत्तर प्राप्त हो।

फल निष्पत्ति

१. एकाक्षी नारियल गर्भवती स्त्रियों को सुंघाने मात्र से बिना किसी कष्ट के बच्चा हो जाता है।

२. वन्ध्या स्त्री को, ऋतु-स्नान के बाद घोलकर पानी पिलावे तो सन्तान हो।

३. भूत-प्रेत का घर में उपद्रव हो तो सात बार पानी में नारियल डुबोकर सात बार ही मंत्र पढ़े, सारे घर में छींटा दे तो उपद्रव मिटे।

४. कोई भी वैरी या शत्रु हो तो लाल कनेर का फूल लेकर, दक्षिण दिशा में बैठकर उस (शत्रु) का नाम लेकर एक माला फेरे, फूल शत्रु के सामने फेंके तो शत्रु-नाश हो।

श्री दक्षिणावर्त-शंख-कल्प

शंख भेद—जैसा कि पहले उल्लेख हुआ ही है, मनुष्यों की तरह शंखों में भी वर्ण या जाति-भेद माना जाता है। जैसे—सफेद शंख ब्राह्मण जाति का, लाल क्षत्रिय जाति का, पीला या धुएं जैसे रंग का वैश्य जाति का तथा काले रंग का शूद्र जाति का कहा जाता है। सफेद रंग का शंख उत्तम होता है। श्याम, राख के समान या धुएं जैसे रंग का शंख शंखली कहा जाता है।

तीन तोले वजन से ऊपर का शंख उत्तम होता है। २५ तोले से अधिक वजन का सर्वोत्तम होता है।

छाल सहित शंख हो तो अत्यंत उत्तम होता है।

ठंडे पानी में नमक डालकर उसमें शंख छोड़ देना चाहिए। यदि वह (शंख) नकली होगा तो पांच दिन में काला पड़ जायेगा। सात दिन पानी में रखा जाए तो नकली शंख फट जायेगा।

प्रयोग : फल

१. शंख में जल भरकर मस्तक पर रोज छांटने से पाप का नाश होता है।

२. शंख में जल लेकर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

३. पूजन के पश्चात् शंख में दूध भरकर यदि बन्ध्या स्त्री पीए तो उसके सन्तान होती है।

४. जहां शंख होता है, वहां भगवान् वास करते हैं, लक्ष्मी आती है, रोग, शोक, मोह का नाश होता है, प्रतिष्ठा बढ़ती है, राज्य में, समाज में सम्मान प्राप्त होता है, व्यापार में लाभ होता है।

पूजन-विधि

स्नान कर, श्वेत वस्त्र पहन कर प्रति दिन पहले दूध से, फिर शुद्ध जल से शंख को स्नान कराना चाहिए। तदनन्तर चांदी के बाजोट पर, सोने के पत्र पर उसे रखना चाहिए। उसको सोने में मंढ़ाना चाहिए। फिर चंदन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से उसकी षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय हाथ में पानी लेकर निम्नांकित रूप में संकल्प करना चाहिए—

ॐ अद्य अमुक वर्षे अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ मम मनोवाञ्छित कार्यसिद्धये ऋद्धिसिद्धिप्राप्त्यर्थं महं दक्षिणावर्त शंखस्य पूजनं करिष्यामि।

अमुक के स्थान पर वर्ष, मास, पक्ष, वार, तिथि, जो उस दिन हों, बोलने चाहिए।

शंख-पूजा का मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजाताय श्रीदक्षिणावर्तशंखाय ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्रीकराय पूज्याय नमः। इस मंत्र का उच्चारण कर शंख को दूध का अभिषेक करे, अष्टविधि पूजा करे। चन्दन, चमेली, हिना, गुलाब आदि इत्र चढ़ाए। नैवेद्य चांदी के बरतन में रक्खे। उसमें दूध, चीनी, केशर, कस्तूरी, बादाम, इलायची डाले। साथ में केला रक्खे। प्रतिदिन भोजन के समय जो रसोई में हो, वह चढ़ाए। स्त्री-पुरुष प्रतिदिन चन्दन, पुष्प, कुंकुम, धूप, दीप, नैवेद्य व फल से पूजन करे, कपूर की आरती उतारे। तत्पश्चात् निम्नांकित मंत्र से ध्यान करे :—

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजाताय लक्ष्मीसहोदराय चिन्तितार्थं संपादकाय श्रीदक्षिणावर्तशंखाय श्रीकराय पूज्याय क्लीँ श्रीँ ह्रीँ ॐ नमः सर्वाभरणभूषिताय प्रशस्याङ्गोपाङ्गसंयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनुचिन्तामणिनवनिधिरूपाय चतुर्दशरत्न परिवृताय अष्टादशमहासिद्धिसहिताय श्रीलक्ष्मीदेवता श्रीकृष्णदेवकरतललालिताय श्रीशंखमहानिधये नमः।

जप-मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्लूँ दक्षिणमुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभवाय शंखाय नमः।

प्रतिदिन एक या दश माला फेरे। जप करने के बाद मंत्र के साथ पानी आकाश की ओर छांट दे।

गोरखमुंडी-कल्प

अमावस्या के दिन गोरखमुंडी वृक्ष के पास जावे। उसके सामने पूर्व की ओर

मुंह करके खड़ा होकर हाथ जोड़कर बोले—"मम कार्यसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" यह मंत्र बोलकर जड़ सहित उखाड़कर ले आवे। फिर पंचामृत से धोकर साफ करे तथा छाया में सुखाए। तदनन्तर चूर्ण बनाले और निम्नांकित रूप में प्रयोग में लाए :—

१. एक तोला चूर्ण गाय के दूध के साथ ४० दिन सेवन करे तो शरीर स्वस्थ हो।

२. एक तोला चूर्ण गाय के दूध के साथ एक साल तक खाए तो महाबली हो।

३. एक तोला चूर्ण पानी में भिगोए और प्रातःकाल बालों में मले तो बाल काले हों।

४. एक तोला चूर्ण गाय के दूध के साथ खाए, ब्रह्मचर्य से रहे तो अग्नि में मुंह न जले, पानी में न डूबे।

५. बिना फल, फूल लगी मुंडी उखाड़ कर लावे, छाया में सुखावे, चूर्ण बनावे। उसे दूध के साथ पीए तो ब्रह्मज्ञानी हो, आगम जाने, महा बुद्धिमान् हो।

६. चूर्ण को पानी में भिगोकर आंख में डाले तो आंख के रोग जाएं।

७. चूर्ण गाय के दूध की छाछ के साथ जौ के आटे में मिलाकर रोटी बनाए, गाय के घृत के साथ खाए तो काया-कल्प हो, स्वर्ण जैसा शरीर हो।

८. मुंडी का रस निकाल कर शरीर में मले तो शरीर की पीड़ा दूर हो।

९. मुंडी के बीज एक तोला नित्य एक वर्ष तक खाए तो बूढ़ा नहीं हो।

१०. मुंडी के पंचांग का चूर्ण शहद के साथ कुछ दिन खाए तो कवि हो।

विजया कल्प

इसका भिन्न-भिन्न मास में भिन्न-भिन्न अनुपान से सेवन करने से अलग अलग फल है जो निम्न प्रकार से है :—

१. चैत्र मास में पान के साथ खाने से पण्डित बने।

२. बैसाख मास में अकलकरा के साथ खाने से जहर नहीं चढ़ेगा।

३. जेठ मास में तींदु से खाने से तांबा के से रंग का शरीर हो।

४. आषाढ़ मास में चित्रवल से खाने से केशकल्प हो।

५. श्रावण मास में शिवलिंगी से खाने से बलवान बने।

६. भाद्र मास में रुद्रवंती से खाने से सबका प्रिय होता है :

७. आश्विन मास में मालकांगनी से खाने से अमरी उतरे, स्वस्थ हो।

८. कार्तिक मास में बकरी के दूध के साथ खाने से सम्भोग शक्ति बढ़े।

९. मार्गशीर्ष मास में गाय के घृत के साथ खाने से दृष्टि-दोष मिटे।

१०. पोष माह में तिलों के साथ खाने से जल के भीतर की वस्तु भी दृष्टि गोचर हो।

११. माघ मास में मोथा की जड़ के साथ खाने से शक्तिशाली हो।

१२. फाल्गुन मास में आंवला के साथ खाने से पैदल यात्रा की शक्ति बढ़े।

गोरोचन-कल्प

मंत्र—ॐ ह्रीँ हन हन ॐ ह्रीँ हन ॐ ह्रीँ हन ॐ ह्रां ह्रीँ ह्रो ह्रां ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—गोरोचन की टिकड़ी बनाये—२१ दफे उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके शुद्ध जगह रख दें जब भी जरूरत हो उपरोक्त मंत्र से २१ दफे अभिमंत्रित करके प्रयोग में लावें गुगुल का धूप खेवें।

प्रयोग—१. ललाट पर तिलक कर राज्य सभा में राज्य प्रमुख के पास व सरकारी किसी भी कार्य के लिए जावें तो सफल हो।

२. हृदय पर तिलक करके जहां भी जावे तो मनोकामना सफल हो, किसी स्त्री के पास जावे तो वश में हो।

३. मस्तक पर तिलक करके जावे तो रास्ते में सिंह, व्याघ्र, चोर आदि का भय मिटे, स्त्री-पुरुष सब वश हो, लोकप्रिय हो।

•••

नीलम

कौन धारण करे—नीलम शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। शनि की दशा में नीलम धारण करना चाहिए।

धारण विधि—५ या ७ रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए। शनिवार को सूर्यास्त से दो घण्टे पहले से ४० मिनट बाद तक इसे एक नीले कपड़े में बांध कर भुजा पर धारण कर तीन दिन परीक्षा करनी चाहिए। यदि अनुकूल सिद्ध हो तो धारण किये रहना चाहिए। हृदय पर धारण करने से यह उसे शक्ति प्रदान करता है।

इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु
पीतये। शं यो रभिस्रवन्तु नः।

गोमेद

कौन धारण करे—गोमेद राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। राहु की दशा में इसको धारण करने से लाभ होता है।

धारण विधि—गोमेद ६, ११ या १३ कैरट का होना चाहिए। ७, १० या १६ रत्ती का कभी नहीं होना चाहिए। इसे धारण करने का समय सायंकाल के अनन्तर दो घण्टे रात तक है।

गोमेद को धारण करने का मंत्र निम्नलिखित है—

ॐ कया नश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः
सखा। कया शचिष्ठया वृत्ता।

लहसुनिया

लहसुनिया केतु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। केतु की दशा में इसे धारण करना लाभप्रद है। ३, ५ या ७ कैरट या लहसुनिया धारण करना चाहिए। २, ४, ११ या १३ रत्ती का निषिद्ध है। इसको चांदी में जड़वाकर अर्द्धरात्रि में धारण करना चाहिए।

इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है—

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या
अपेषसे। समुषद्भिरजायथाः।

राशि व ग्रह के अनुसार
रत्न-धारण-विधान

राशि	स्वामी गृह	अनुकूल रत्न	अपेक्षित वजन
मेष	मंगल	मूंगा	छः कैरट
वृष	शुक्र	हीरा	चार कैरट
मिथुन	बुध	पन्ना	पांच कैरट
कर्क	चन्द्रमा	मोती	पांच कैरट
सिंह	सूर्य	माणिक्य	सवा दो कैरट
कन्या	बुध	पन्ना	छः कैरट
तुला	शुक्र	हीरा	तीन कैरट
वृश्चिक	मंगल	मूंगा	आठ कैरट
धनु	वृहस्पति	पुखराज	ग्यारह कैरट
मकर	शनि	नीलम	नौ कैरट
कुम्भ	शनि	नीलम	नौ कैरट
मीन	वृहस्पति	पुखराज	ग्यारह कैरट
ग्रह	राहु	गोमेद	ग्यारह कैरट
,,	केतु	लहसुनिया	आठ कैरट

•••